

नवीन

# अनुवाद-चन्द्रिका

चक्रधर नौटियाल 'हंस'

संस्कर्ता

जगदीशलाल शास्त्री

## विषय-सूची

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
विषय-प्रवेश	१	यङन्त धातुएँ	१४१
धातु-रूप	१४	नाम-धातुएँ	१४२
शब्दों के रूप (अजन्त)	१६	कृतृवाच्य, कर्मवाच्य, भाववाच्य	१४३
प्रथमा विभक्ति	३१	वाच्य परिवर्तन	१४५
द्वितीया विभक्ति	३६	सोपसर्ग धातुएँ	१४७
तृतीया विभक्ति	४४	कृदन्त-कृतृवाचक और भाववाचक	१६२
चतुर्थी विभक्ति	५१	वर्तमानकालिक कृदन्त	१६५
पञ्चमी विभक्ति	५३	भूतकालिक कृदन्त	१६८
षष्ठी विभक्ति	५६	भविष्यत्कालिक कृदन्त	१७१
सप्तमी विभक्ति	६४	पूर्वकालिक कृदन्त	१७२
सम्बोधन	६६	तुम् प्रत्ययान्त शब्द	१७५
विभक्तियों की पुनरावृत्ति	६६	कृत्य प्रत्यय (तव्यत्, तव्य,	
कारक (एक दृष्टि में)	७४	अनीयर्, यत्)	१७७
सर्वनाम शब्द	७६	तद्धितान्त शब्द	१७९
सर्वनाम शब्द और उनका प्रयोग	८२	समास प्रकरण	१८५
सन्धियाँ	८८	स्त्री-प्रत्यय प्रकरण	१९२
शब्दोच्चारण (हलन्त)	१०४	संस्कृत-व्यावहारिक शब्द	१९६
विशेषण (संख्यावाचक शब्द)	१०७	संज्ञावाचक शब्द	२१३
विशेषण (क्रमवाचक आदि)	११७	लिङ्ग ज्ञान	२१५
अजहल्लिग (विशेषण)	११९	लेखोपयोगी चिह्न	२२१
क्रिया-विशेषण	१२२	पत्रलेखन प्रणाली	२२३
क्रिया-प्रकरण	१३६	अनुवादार्थ संस्कृत वाक्य	२२६
प्रेरणार्थक (णिजन्त) क्रियाएँ	१३६	वाग्व्यवहार के प्रयोग	२२८
मन्तन्त धातुएँ		लोकोक्तियाँ	२३५



विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
शुद्धागुद्धिविवेक	२४५	काशी-मध्यमा परीक्षा	२६६
अनुवादार्थ गद्य-पद्य संग्रह	२५२	पटना मैट्रिकयूलेशन	३०१
अनुवादार्थ नीतिसम्बन्धी पद्य	२५६	पंजाब मैट्रिकयूलेशन परीक्षा	३०४
संस्कृत अनुवाद के उदाहरण	२६२	पंजाब प्राज्ञ परीक्षा	३१३
अनुवादार्थ गद्य-संग्रह	२७१	यू० पी० इंटरमीडिएट	३१६
उ० प्र० हाई स्कूल परीक्षा	२८४	निबन्धरत्नमाला	३२३
काशी-एडमिशन परीक्षा	२८८	नक्षिप्त धातु-पाठ	३४३
काशी प्रथमा परीक्षा	२९१		



ओं नमः परमात्मने

तद्दिव्यमव्ययं धाम सारस्वतमुपास्महे ।

यत्प्रसादात्प्रलीयन्ते मोहान्धतमसश्छटाः ॥

## विषय-प्रवेश

**रचना का उद्देश्य**—भारतीय संस्कृति का स्रोत एवं राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं की जननी, संस्कृत भाषा का अध्ययन यद्यपि उसके नियमबद्ध व्याकरण की दुरुहता के कारण कठिन हो गया है तथापि इस तथ्य को तो सभी देश-विदेशी भाषा-विशारदों ने स्वीकार किया है कि संस्कृत भाषा का व्याकरण अत्यन्त वैज्ञानिक एवं सुव्यवस्थित है । निःसंदेह उसके प्राचीन ढंग के अध्ययन तथा अध्यापन से आजकल के सुकुमार बालकों का अपेक्षित बुद्धिविकास नहीं होता और न उन्हें वह रुचिकर ही प्रतीत होता है । इस कठिनाई को ध्यान में रखते हुए हमने संस्कृत भाषा के अध्ययन एवं अध्यापन को आजकल के वातावरण के अनुकूल सरल तथा सुबोध बनाने का प्रयत्न किया है ।

**वाक्य-रचना**—वाक्य-रचना में भाषा का प्रयोग होता है । भाषा ही एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा मानव-समाज अपने भाव और विचार दूसरों पर प्रकट करता है । भाषा में वाणी का ही नहीं, अपितु संकेतों का भी समावेश है । लिखने और बोलने में हम भाषा का ही प्रयोग करते हैं । भाषाएँ अनेक प्रकार की हैं, जैसे—संस्कृत, अंग्रेजी, हिन्दी, आदि ।



‘संस्कृत भाषा’ उस भाषा को कहते हैं जो संस्कृत अर्थात् शुद्ध एवं परि-  
माजित हो। भाषा वाक्यों से बनती है; वाक्य में अनेक शब्द रहते हैं और  
प्रत्येक शब्द में ध्वनियाँ<sup>१</sup> रहती हैं। उदाहरणार्थ—

“चन्द्रगुप्त एक प्रतापी राजा था।”—इस वाक्य में पाँच शब्द हैं और  
प्रत्येक शब्द में पृथक्-पृथक् ध्वनियाँ हैं। ‘चन्द्रगुप्त’ शब्द में ‘च् + अ + न् +  
द + र् + अ + ग् + उ + प् + त् + अ’ ग्यारह ध्वनियाँ हैं। ‘एक’ में ‘ए + क् +  
अ’ तीन ध्वनियाँ हैं।

यह लिपि, जिसमें हम इन अक्षरों को लिख रहे हैं, ‘देवनागरी’ कहलाती  
है। आजकल संस्कृत भाषा तथा हिन्दी भाषा इसी लिपि में लिखी जा रही  
हैं। प्राचीन काल में संस्कृत भाषा ब्राह्मी लिपि में लिखी जाती थी।

स्वर और व्यंजन—ये ध्वनियों के दो भेद हैं। स्वर और व्यञ्जन में  
ध्वनि का अन्तर है। स्वर के बोलने में मुख-द्वार कम या अधिक खुलता है,  
वह बिलकुल बन्द या संकुचित नहीं किया जाता कि हवा रगड़ खाकर बाहर  
निकल सके। व्यञ्जन के उच्चारण में मुख-द्वार या तो सहसा खुलता है या  
इतना संकुचित हो जाता है कि हवा रगड़ खाकर बाहर निकलती है। इसी  
रगड़ या स्पर्श के कारण व्यंजन स्वरों से भिन्न हो जाते हैं। स्वर तीन प्रकार  
के होते हैं—ह्रस्व, दीर्घ और मिश्रित। दीर्घ स्वर के उच्चारण में ह्रस्व स्वर  
की अपेक्षा दुगुना समय लगता है। व्यंजनों को हल् अक्षर भी कहते हैं,  
जैसे—क्, ख्, ग् आदि। संस्कृत एवं हिन्दी भाषा में इन्हीं स्वरों, व्यंजनों का  
उपयोग होता है।

स्वर	{	अ	इ	उ	ऋ	लृ—ह्रस्व (एकमात्रिक)
		आ	ई	ऊ	ॠ	—दीर्घ (द्विमात्रिक)
		ए	ऐ	ओ	औ	—मिश्रित <sup>२</sup>

१—मानव-वाणी के उस छोटे-से-छोटे अंश को ध्वनि कहते हैं, जिसके  
टुकड़े न किए जा सकें। ध्वनि के उस छोटे से लिखित अंश को ही वर्ण अथवा  
अक्षर कहते हैं।

२—मिश्रित स्वर विकृत और दीर्घ है, जैसे—अ + इ = ए।



व्यंजन	(कु)	क्	ख्	ग्	घ्	ङ्—कवर्ग	} स्पर्श <sup>१</sup>
	(चु)	च्	छ्	ज्	झ्	ञ्—चवर्ग	
	(टु)	ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्—टवर्ग	
	(तु)	त्	थ्	द	ध्	न—तवर्ग	
	(पु)	प्	फ्	ब	भ्	म्—पवर्ग	
			य्	र्	ल्	व्—अन्तःस्थ	
			श्	ष्	स्	ह्—ऊष्म	

<sup>१</sup> अनुस्वार

<sup>२</sup> अनुनासिक

: विसर्ग

२५ वर्ण—क् से लेकर म् तक वर्ण—स्पर्श कहलाते हैं। ४ वर्ण—य् र् ल् व्—अन्तःस्थ वर्ण हैं, अर्थात् इनके उच्चारण करने में भीतर से कुछ अधिक बल से साँस लानी पड़ती है। पाँचों वर्गों में प्रथम और द्वितीय अक्षर (क् ख् च् छ् आदि) तथा ऊष्म वर्णों (श्, ष्, स्, ह्) को 'पुरुष व्यंजन' और शेष वर्णों (ग् घ् आदि) को 'कोमल-व्यंजन' कहते हैं। व्यंजनों के दो और प्रकार हैं—अल्पप्राण तथा महाप्राण। पाँचों वर्गों के पहले और तीसरे वर्ण (क्, ग् च् आदि) अल्पप्राण हैं तथा दूसरे और चौथे वर्ण (ख्, घ्, छ्, झ् आदि) महाप्राण हैं। वर्णों के पञ्चम वर्ण (ङ् ञ् ण् न् म्) अनुनासिक व्यंजन कहलाते हैं। ध्वनि के विचार से वर्णों के कण्ठ आदि स्थान हैं।<sup>२</sup>

१—व्यंजन के उच्चारण में मुख के किसी न किसी भाग का दूसरे भाग से कुछ न कुछ स्पर्श अवश्य होता है, जैसे च् के उच्चारण में जिह्वा का तालु से तथा त् के उच्चारण में जिह्वा का दाँतों से स्पर्श होता है :

२—ध्वनि के विचार से वर्णों का स्थान—अ अः ह् क् ख् ग् घ् ङ् (कण्ठ)

इ ई य् श् च् छ् ज् झ् ञ् (तालु)

ऋ ॠ र् ष् ट् ठ् ड् ढ् ण् (मूर्धा)

लृ लृ स् त् थ् द् ध् न् (दन्त)

उ ऊ ँ प् फ् प् फ् ब् भ् म् (ओष्ठ)

ए ऐ (कण्ठ तालु), ओ औ (कण्ठ ओष्ठ)

क् ख् का स्थान जिह्वामूल (जीभ का मूलभाग) है।



अनुवाद—किसी भाषा के शब्दार्थ को दूसरी भाषा में प्रकट करने को अनुवाद कहते हैं ।

[अनु=पश्चात्, वद्=वाद=कहना; एक बात को फिर से कहना अर्थात् एक बात को अन्य शब्दों में कहना । इस योगिक अर्थ के अनुसार अनुवाद एक भाषा से उसी भाषा में भी हो सकता है, परन्तु लोकव्यवहार में अनुवाद शब्द का योगरूढ अर्थ ही प्रसिद्ध है, अर्थात् एक भाषा के शब्दार्थ को दूसरी भाषा के शब्दार्थ में प्रकट करना ।]

अनुवाद-प्रणाली पर कुछ लिखने से पूर्व वाक्य में जो सुबन्त, तिङन्त आदि शब्द रहते हैं उनका विवेचन करना तथा कारकों पर प्रकाश डालना यहाँ पर उचित होगा ।

कारक (कर्त्ता, कर्म आदि)—“गोपाल पुस्तक पढ़ता है ।” इस वाक्य में पढ़ने वाला ‘गोपाल’ है । “राम ने रावण को मारा ।” इस वाक्य में मारने वाला ‘राम’ है । ‘पढ़ना’ और ‘मारना’ ये दो क्रियाएँ हैं । इन क्रियाओं के करने वाले ‘गोपाल’ और ‘राम’ हैं । क्रिया के करने वाले को कर्त्ता कहते हैं । अतः इन दो वाक्यों में ‘गोपाल’ और ‘राम’ कर्त्ता हैं ।

प्रथम वाक्य में पढ़ने का विषय ‘पुस्तक’ है और द्वितीय वाक्य में मारने का विषय ‘रावण’ है । ‘पुस्तक’ और ‘रावण’ के लिए ही कर्त्ताओं ने क्रियाएँ कीं, अतः मुख्यतः जिस चीज के लिए कर्त्ता क्रिया को करता है, उसको कर्म कहते हैं ।

‘राजा ने अपने हाथ से ब्राह्मण को दान दिया ।’ इस वाक्य में दान-क्रिया की पूर्ति हाथ से हुई, अतः हाथ करण हुआ । इसी वाक्य में दान-क्रिया ‘ब्राह्मण’ के लिए हुई, अतः ‘ब्राह्मण’ सम्प्रदान हुआ ।

“आम के वृक्षों से भूमि पर फल गिरे ।” इस वाक्य में वृक्षों से फल पृथक् हुए, अतः ‘वृक्ष’ अपादान हुआ । फल भूमि पर गिरे, अतः ‘भूमि’ अधिकरण हुई । आम का सम्बन्ध वृक्षों से है, अतः ‘आम’ सम्बन्ध हुआ ।

उपरिलिखित चार वाक्यों में ‘पढ़ना’ ‘मारना’ ‘देना’ और ‘गिरना’ क्रियाओं के सम्प्रदान में जिन कर्त्ता, कर्म आदि शब्दों का उपयोग हुआ है,

ङ्, ब्र्, एर्, न्, म् का स्थान कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त और ओष्ठ के अति-रिक्त नासिका भी है ।



उन्हें कारक कहते हैं। कारक वह वस्तु है जिसका उपयोग क्रिया की पूर्ति के लिए किया जाता है। अतः सम्बन्ध का क्रिया के सम्पादन में सीधा सम्बन्ध न होने के कारण उसे कारक नहीं माना जाता, किन्तु कतिपय वैयाकरणों ने सम्बन्ध को भी कारक माना है।

कारकों को जोड़ने के लिये हिन्दी में 'ने' 'को' आदि चिह्न काम में आते हैं जो 'विभक्ति' (कारक-चिह्न) कहलाते हैं। संस्कृत में सात विभक्तियाँ और एक सम्बोधन होता है।

विभक्तियाँ (Case-signs)	कारक (Cases)	हिन्दी चिह्न
प्रथमा	कर्ता (Nominative)	ने
द्वितीया	कर्म (Accusative)	को
तृतीया	करण (Instrumental)	ने, से, द्वारा
चतुर्थी	सम्प्रदान (Dative)	के लिए
पञ्चमी	अपादान (Ablative)	से <sup>२</sup>
षष्ठी	सम्बन्ध (Genitive)	का, के, की
सप्तमी	अधिकरण (Locative)	में, पर
सम्बोधन	सम्बोधन (Vocative)	हे, अरे, आदि

हिन्दी में कर्ता, कर्म आदि सम्बन्ध दिखाने के लिए 'ने' 'को' आदि शब्द संज्ञा या सर्वनाम के पीछे जोड़ दिये जाते हैं, किन्तु संस्कृत में यह सम्बन्ध दिखाने के लिए संज्ञा या सर्वनाम का रूप ही बदल जाता है, जैसे—रामः (राम ने), रामम् (राम को), रामस्य (राम का)।

इन प्रथमा आदि विभक्तियों से कारकों का ही निर्देश नहीं होता, अपितु ये विभक्तियाँ वाक्य में प्रति, बिना, अन्तरेण, अन्तरा, ऋते, सह, साकम् आदि निपातों के योग से भी 'नाम' से परे प्रयुक्त होती हैं। ये विभक्तियाँ नमः,

१—कर्तृवाच्यप्रयोगे तु प्रथमा कर्तृकारके ।

द्वितीयान्तं भवेत् कर्म कर्त्रधीनं क्रियापदम् ॥

कर्ता कर्म च करणं च सम्प्रदानं तथैव च ।

अपादानाधिकरणो चेत्याहुः कारकाणि षट् ।

२—जब पृथक् होने या हटने का ज्ञान हो तब अपादान (पञ्चमी) होता है और जब संज्ञा से क्रिया के साधन का ज्ञान हो तब करण (तृतीया) होता है।



स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम् आदि अव्ययों के योग से भी व्यवहृत होती हैं। ऐसी दशा में इन्हें “उपपद विभक्तियाँ” कहते हैं।

कारकों को समझने के लिए छात्रों को अन्य भाषाओं का सहारा नहीं लेना चाहिए। उन्हें कारकों के ज्ञान अथवा शुद्ध संस्कृत भाषा के बोध के लिए संस्कृत साहित्य का परिशीलन करना चाहिए। कहाँ कौन सा कारक होना चाहिए, इसका ज्ञान शिष्टों अथवा प्रसिद्ध संस्कृत ग्रन्थकारों के व्यवहार से ही हो सकता है।

संस्कृत व्याकरण में सुबन्त और तिङन्त रूपों का प्रतिपादन किया गया है। छात्रों को ये कठिन और शुष्क प्रतीत होते हैं, क्योंकि सुबन्त तथा तिङन्त शब्दों के समस्त रूपों को याद कर लेना सुगम नहीं है। अतः हमने आचार्य पाणिनि के नियमों के आधार पर छात्रों के लिए वैज्ञानिक एवं सुव्यवस्थित ढंग पर विषय का प्रतिपादन किया है।

नाम या सुबन्त शब्दों के साथ सात विभक्तियों के तीन वचनों में २१ प्रत्यय लगते हैं। उन विभक्तियों का साधारण ज्ञान प्राप्त करने के लिये हम यहाँ पर ‘सरित्’ शब्द के रूप दे रहे हैं। इनमें प्रायः सभी प्रत्यय (सु को छोड़कर) अपने रूपों में स्पष्ट हैं।

### सरित् (नदी)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सरित्	सरितौ	सरितः
द्वितीया	सरितम्	सरितौ	सरितः
तृतीया	सरिता	सरिद्भ्याम्	सरिद्भिः
चतुर्थी	सरिते	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्यः
पञ्चमी	सरितः	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्यः
षष्ठी	सरितः	सरितोः	सरिताम्
सप्तमी	सरिति	सरितोः	सरित्सु
सम्बोधन	हे सरित्	हे सरितौ	हे सरितः



## सुबन्त के २१ प्रत्यय

	अर्थ	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	(ने)	स् (सु)	औ	अस् (जस्)
द्वि०	(को)	अम्	औ (औट्)	अस् (शस्)
तृ०	(ने, से, द्वारा)	आ (टा)	भ्याम्	भिस्
च०	(के लिए)	ए (डे)	भ्याम्	भ्यस्
पं०	(से)	अस् (डसि)	भ्याम्	भ्यस्
प०	(का, के, की)	अस् (डस्)	ओस्	आम्
स०	(में, पर)	इ (डि)	ओस्	सु (सुप्)

विकारी तथा अविकारी शब्द—ऊपर कहा जा चुका है कि वाक्य में अनेक शब्द रहते हैं; यथा (१)—“छात्रः सदा पुस्तकं पठति” (विद्यार्थी हमेशा पुस्तक पढ़ता है) । इस वाक्य को इस ढंग से भी कह सकते हैं—

(२) छात्रः सदा पुस्तकानि पठति (विद्यार्थी हमेशा पुस्तकें पढ़ता है) ।

इन वाक्यों को देखने से ज्ञात होता है कि शब्दों में कुछ ऐसे शब्द हैं जिनके रूप हमेशा एक से रहते हैं, जैसे इन वाक्यों में ‘सदा’ शब्द है । कुछ शब्द ऐसे हैं जिनके रूपों में परिवर्तन हो जाता है, जैसे—छात्राः सदा पुस्तकानि पठन्ति (विद्यार्थी हमेशा पुस्तकें पढ़ते हैं) । यहाँ छात्रः पुस्तकं पठति—इन रूपों में परिवर्तन हो गया है किन्तु ‘सदा’ के रूप में परिवर्तन नहीं हुआ । अतः यह निष्कर्ष निकला कि—

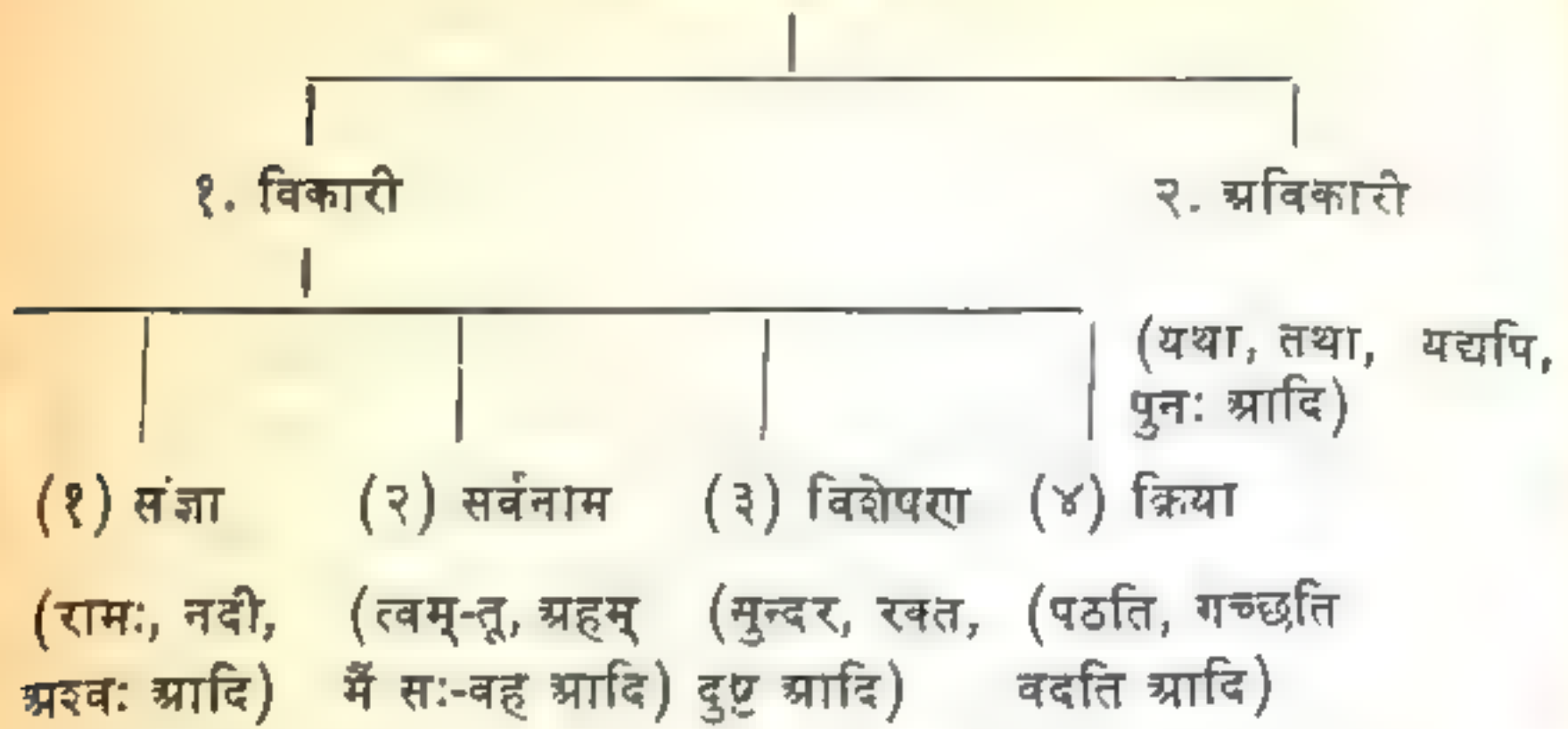
जिन शब्दों के रूपों में किसी भी दशा में परिवर्तन या विकार नहीं होता वे अव्यय कहलाते हैं, जैसे ऊपर के वाक्यों में ‘सदा’ शब्द है । और जिन शब्दों के रूपों में परिवर्तन हो जाता है, वे विकारी शब्द कहलाते हैं ।

विकारी शब्द अनेक प्रकार के होते हैं, उदाहरणार्थ—

राष्ट्रपतिः तुभ्यं सुन्दरं पारितोषिकम् अददात् (राष्ट्रपति ने तुम्हें सुन्दर इनाम दिया) ।” इस वाक्य में ‘राष्ट्रपतिः’ शब्द संज्ञा या नाम है; तुभ्यम् (तुम्हें) संज्ञा के स्थान पर आया है, अतः सर्वनाम है; ‘सुन्दरम्’ शब्द पारितोषिक (इनाम) की विशेषता बतलाता है, अतः विशेषण है; अददात् (दिया) किसी कार्य के करने को सूचित करता है, अतः क्रिया है ।



## शब्दों के भेद



**वाक्य-रचना**—“नलः दमयन्तीं परिणिनाय” (नल ने दमयन्ती से विवाह किया ।) इस वाक्य में पहले कर्ता (नलः), फिर कर्म (दमयन्तीम्), और अन्त में क्रिया (परिणिनाय) आयी है । अतः संस्कृत के वाक्यों का क्रम भी हिन्दी के समान ही है—पहले कर्ता, फिर कर्म और अन्त में क्रिया । किन्तु हम ऊपर लिख आए हैं कि संस्कृत में विकारी शब्द अधिक हैं और अविकारी कम । अतः हम इन्हीं वाक्यों को इस प्रकार भी लिख सकते हैं—

- (१) दमयन्तीं नलः परिणिनाय ।
- (२) परिणिनाय दमयन्तीं नलः ।
- (३) परिणिनाय नलः दमयन्तीम् ।

इन वाक्यों में शब्दों का क्रम चाहे जैसा भी हो, ‘नलः’ कर्ता, ‘दमयन्तीम्’ कर्म और ‘परिणिनाय’ क्रिया ही रहती है । कारण, इन सब शब्दों में सुप् विभक्ति अथवा तिङ् विभक्ति रहती है, अतः इनके स्थान परिवर्तन करने से भी ये विभक्ति-चिह्नों द्वारा भट पहचाने जाते हैं । यह क्रम अंग्रेजी आदि अविकारी भाषाओं में नहीं पाया जाता । हिन्दी में अंग्रेजी के समान क्रिया का निश्चित स्थान रहता है । हिन्दी में क्रिया वाक्य के अन्त में आती है, किन्तु अंग्रेजी में कर्ता और कर्म के बीच । संस्कृत में अधिकांश शब्दों के विकारी होने के कारण (कर्ता, कर्म, क्रिया आदि) आगे पीछे भी आ सकते हैं और यह संस्कृत की अपनी विशेषता है ।



अब इस वाक्य को देखिए—

धर्मज्ञो नलः सर्वगुणालङ्कृतां दमयन्तीं विधिना परिणिनाय । (धर्मात्मा नल ने सब गुणों से सम्पन्न दमयन्ती से विधिपूर्वक विवाह किया ।)

इस वाक्य में 'धर्मज्ञ' शब्द 'नल' संज्ञा का विशेषण है और 'विधिना' शब्द 'परिणिनाय' क्रिया का विशेषण, अतः जिन शब्दों की ये विशेषता बतलाते हैं, उनके पूर्व ही इनका मुख्यतः प्रयोग होता है, अर्थात् संज्ञा शब्द का विशेषण उसके पूर्व और क्रिया-विशेषण क्रिया के पूर्व आता है, किन्तु कभी-कभी आगे पीछे भी इनका प्रयोग हो सकता है, जैसे—

नलः सर्वगुणालङ्कृतां विधिना परिणिनाय दमयन्तीम् ।

नलः सर्वगुणालङ्कृतां दमयन्तीं परिणिनाय विधिना ।

### लिंग और वचन

उक्त वाक्यों में 'नल' एक ऐसा नाम है जिससे पुरुष जाति का बोध होता है, अतः यह शब्द पुल्लिङ्ग है ।

'दमयन्ती' शब्द से स्त्री जाति का बोध होता है, अतः यह स्त्रीलिङ्ग शब्द है ।

छात्रः पुस्तकानि क्रीणाति (विद्यार्थी पुस्तकें खरीदता है ।) इस वाक्य में 'पुस्तकानि' शब्द से न तो पुरुष जाति का बोध होता है और न स्त्री जाति का, अतः यह शब्द नपुंसकलिङ्ग है ।

संस्कृत में लिंग-ज्ञान कोष की सहायता अथवा साहित्य के पारायण से ही होता है । लिंग के निर्धारण में 'लिंगानुशासनम्' में दिए गए नियम उपयोगी हैं ।

संस्कृत में एक ही व्यक्ति या वस्तु के वाचक शब्द भिन्न-भिन्न लिंगों के हैं, यथा—तटः, तटी, तटम्—(तीनों का अर्थ किनारा है) । इसी प्रकार परिग्रहः, भार्या, कलत्रम्—(तीनों का अर्थ पत्नी है) । इसी भांति सगरः, आजिः, युद्धम्—(तीनों का अर्थ युद्ध है) ।

कभी-कभी एक ही शब्द का कुछ अर्थभेद के कारण भिन्न-भिन्न लिंगों में प्रयोग होता है, यथा—सरस्वत् (पुल्लिङ्ग) का अर्थ है समुद्र, किन्तु सरस्वती (स्त्रीलिङ्ग) का अर्थ है नदी । अरण्यम् का अर्थ है वन, किन्तु अरण्यानी



का अर्थ है बड़ा वन । कृन् प्रत्यय भी लिंग-ज्ञान में सहायता देते हैं, किन्तु पूर्ण ज्ञान तो पाणिनि के लिंगानुशासन से ही हो सकता है ।

उपर्युक्त वाक्यों में (दे० पृ० ६) 'नलः' या 'छात्रः' से एक संख्या का बोध होता है, अतः ये शब्द एकवचनान्त है । 'पुस्तकानि' से बहुत सी पुस्तकों का बोध होता है, अतः यह शब्द बहुवचनान्त है । संस्कृत में द्विवचन भी होता है, जैसे—छात्रः पुस्तके अक्रीणान् (छात्र ने दो पुस्तकें खरीदीं) । इस वाक्य में 'पुस्तके' द्विवचन है ।

संस्कृत भाषा में श्रोत्र, चक्षुस्, कर, बाहु, स्तन, चरण आदि शब्द प्रायः द्विवचन में ही प्रयुक्त होते हैं, यथा—श्रान्तायास्तस्याश्चरणी न प्रसरतः (उम थकी हुई के पाँव आगे नहीं बढ़ते) । कोमलविटपानुकारिणी बाहु (उसकी भुजाएँ कोमल तरह शाखा के समान हैं) ।

संस्कृत में अपने लिए बहुवचन का भी प्रयोग होता है, यथा—'वयमिह पग्निप्राः बल्कलैस्त्वं दुकूलैः' (भर्तृहरि) (मुझे छाल पहनकर ही सन्तोष है और तुम्हें महीन वस्त्र में) ।

संस्कृत में कुछ ऐसे शब्द भी हैं जिनका बहुवचन में ही प्रयोग होता है तथा दार (पत्नी) पुं०, अक्षत (पूजार्ह अदृष्ट चावल) पुं०, लाज (खील) पुं० । इस प्रकार अप् (जल), मुमनस् (फूल) इन स्त्रीलिंग शब्दों का बहुवचन में ही प्रयोग होता है । गृह (पुं०) पाँमु (धूलि) पुं०, घाना (भूने जाँ) स्त्री०, सक्तु अयु (प्राण), (पुं०) प्रजा, प्रकृति (मन्त्रिगण, या प्रजावर्ग), स्त्री० कश्मीर (पुं०) शब्द बहुवचन में ही प्रयुक्त होते हैं । जब क्रिया से कोई वचन सूचित न हो तब एकवचन ही प्रयुक्त होता है, यथा—इदं ते कर्त्तव्यम् ।

**सर्वनाम शब्द**—वातचीत करने में एक व्यक्ति वह होता है जो बातचीत करता है; दूसरा वह होता है जिससे बातचीत की जाती है और तीसरा (चेतन अथवा अचेतन) वह होता है जिसके विषय में बातचीत की जाती है । बोलने वाला उत्तम पुरुष, जिससे बातचीत की जाती है वह मध्यम पुरुष और जिसके विषय में बातचीत की जाती है वह प्रथम पुरुष अर्थात् अन्य पुरुष कहलाता है ।

एकवचन	{ अहम् (मैं)	{ त्वम् (तू)	{ सः (वह) सा (वह) तः (वह)
द्विवचन	{ आवाम् (हमदो)	{ युवाम् (तुमदो)	{ तौ (वे दो) ते (वे दो) ते (वे)
बहुवचन	{ वयम् (हम सब)	{ यूयम् (तुम)	{ ते (वे) ताः (वे) तानि (वे)



युष्मद् और अस्मद् को छोड़कर सर्वनाम शब्द तीनों लिंगों में विशेष्य के अनुसार होते हैं।

एक शब्द एकवचन में होता है किन्तु प्रथमा बहुवचन में भी प्रयोग मिलता है। जैसे—इत्येके। द्वि शब्द द्विवचन में और त्रि से लेकर अष्टादशन् तक शब्दों का बहुवचन में ही प्रयोग होता है। 'एक' से 'चतुर्' तक शब्दों का लिंग विशेष्य शब्द के अनुसार होता है, यथा—चत्वारः मानवाः, चतस्रः स्त्रियः, चत्वारि फलानि। इसके बाद लिंग का भेद नहीं होता, यथा—पञ्च मानवाः, पञ्च स्त्रियः, विशतिः मानवाः, विशतिः स्त्रियः।

एकोनविंशति से नवविंशति तक सभी शब्द एकवचनान्त स्त्रीलिंग हैं। इनके रूप एकवचन में ही चलते हैं। इकारान्त विशति, षष्टि, सप्तति, अशीति, नवति आदि शब्दों के रूप 'मति' शब्द के समान होते हैं। तकारान्त त्रिशत्, चत्वारिंशत्, पञ्चाशत् शब्दों के रूप 'सरित्' शब्द की भाँति होते हैं। शतम्, सहस्रम्, अयुतम्, लक्षम्, नियुतम् शब्द नपुसक हैं।

मन्यावाचक शब्दों के सम्बन्ध में एक बात स्मरणीय है कि उनका तत्पुरुष समाम में अन्य सुबन्तों के साथ समास नहीं हो सकता, यथा—'विशतिनार्यः' शुद्ध है, किन्तु 'विशतिनार्यः' अशुद्ध है। इस प्रकार 'शत पुरुषाः' शुद्ध है, किन्तु 'शतपुरुषाः' यह समस्त शब्द अशुद्ध है। इसी भाँति 'सप्तसप्ततिनार्यः' शुद्ध है किन्तु 'सप्तसप्ततिनार्यः' अशुद्ध है। 'पञ्चाशतं फलानि क्रीणाति' शुद्ध है, किन्तु 'पञ्चाशत्फलानि' अशुद्ध है। हम कह सकते हैं कि 'शतस्य पुस्तकानां कियन्मूल्यम्' किन्तु 'शतपुस्तकानां कियन्मूल्यम्' यह प्रयोग अशुद्ध है। 'चत्वारिंशत् कर्मकरैः परिखां खानयति' शुद्ध है, किन्तु 'चत्वारिंशत्कर्मकरैः परिखां खानयति' यह अशुद्ध है। यदि समास से संज्ञा का बोध होता हो तो संख्यावाचक शब्द के साथ समास हो सकता है, यथा सप्तर्षयः आदि।

तिङन्त पद (क्रिया)—“छात्रः पठति, बालकाः क्रीडन्ति” इन दो वाक्यों को देखने से ज्ञात होता है कि संस्कृत में तिङन्त क्रिया का लिंग नहीं होता; चाहे कर्ता पुल्लिंग हो या स्त्रीलिंग या नपुसकलिंग, किन्तु क्रिया एक-सी रहती है, यथा—बालकः क्रीडति, बालिका क्रीडति (बालक खेलता है, बालिका खेलती है); बालकः अगच्छत्, बालिका अगच्छत् (लड़का गया, लड़की गई)। हिन्दी भाषा में क्रियाओं के रूप कर्तृवाच्य में कर्ता के अनुसार तथा कर्मवाच्य



में कर्म के अनुसार पुल्लिङ्ग एवं स्त्रीलिङ्ग में बदल जाते हैं, जैसे—लड़का जाता है, लड़की जाती है।

क्रिया के बिना कोई वाक्य नहीं होता; प्रत्येक वाक्य में एक क्रिया होती है (एकतिङ् वाक्यम्)। संस्कृत भाषा में लगभग २००० धातु हैं और वे १० गणों<sup>१</sup> (समूहों) में बँटी हैं। इनकी जटिलता इस कारण बढ़ गई है कि इनका प्रयोग तभी किया जाता है जब दस गणों का ठीक-ठीक ज्ञान हो। फिर प्रत्येक गण में ये धातु, परस्मैपद, आत्मनेपद और उभयपद में विभक्त हैं। पचति, पचते भ्वादिगणीय है और हन्ति अदादिगणीय, इनके रूप दोनों पदों में अलग-अलग चलते हैं। धातुओं के मूल रूप—पठति-पठतः-पठन्ति, अपठत्-अपठताम्-अपठन् आदि चलते हैं; इन्हीं के प्रत्ययान्त रूप भी चलने हैं, जैसे—णिजन्त में 'पाठयति' (पढ़ाता है) और सन्नन्त में 'पिपठिषति' (पढ़ने की इच्छा करता है)।

कुछ धातु सकर्मक होती हैं और कुछ अकर्मक। सकर्मक धातुओं के रूपों के साथ किसी कर्म की आकांक्षा रहती है, किन्तु अकर्मक धातुओं के रूपों के साथ नहीं रहती है।

संस्कृत भाषा में पद दो होते हैं—परस्मैपद तथा आत्मनेपद। परस्मैपद अर्थात् वह पद जिसका फल दूसरे के लिए होता है, जैसे सः पचति (वह पकाता है)। यहाँ पकाने की क्रिया का फल दूसरे के लिए होगा, पकाने वाले के लिए नहीं; किन्तु आत्मनेपद में क्रिया का फल अपने लिए होगा।

धातुओं के तीन वाच्य होते हैं—कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य तथा भाववाच्य। भाववाच्य तभी होता है जब क्रिया अकर्मक हो। भाववाच्य में कर्ता तृतीयान्त होता है और क्रिया केवल प्रथम पुरुष के एकवचन में प्रयुक्त होती है। जैसे—

कर्तृवाच्य—सेवकः ग्रामं गच्छति (नौकर गाँव जाता है)।

कर्मवाच्य—मया पुस्तकं पठ्यते (मुझसे पुस्तक पढ़ी जाती है)।

भाववाच्य—मनुष्यैर्म्रियते (मनुष्यों से मरा जाता है)।

१. दस गण ये हैं—भ्वाद्यदादी जुहोत्यादिः दिवादिः स्वादिरेव च।

तुदादिश्च रुधादिश्च तनादिः क्री-चुरादयः ॥

(१) भ्वादि, (२) अदादि, (३) जुहोत्यादि, (४) दिवादि, (५) स्वादि,

(६) रुधादि, (७) तनादि, (८) क्रीयादि और (९) चुरादि।



संस्कृत भाषा में १० लकार<sup>१</sup> क्रियासूचक तथा आज्ञादि सूचक दोनों प्रकार के हैं। लट् आदि सब 'ल्' से आरम्भ होते हैं, अतः इनको लकार भी कहते हैं। इनमें से लोट् और विधिलिङ् आज्ञा, अनुज्ञा, विधान आदि अर्थों में प्रयुक्त होने हैं, यथा—गोपालः पठतु, पठेत् वा (गोपाल पढ़े)। आशीलिङ् आशीर्वाद अर्थ में आता है। लृङ् लकार हेतुहेतुमद्भूत (जहाँ एक क्रिया के होने पर दूसरी क्रिया हो) अर्थ में आता है, यथा—यदि त्वमपठिष्यः तदावश्यम् परीक्षायाम् उत्तीर्णोऽभविष्यः (यदि तुम पढ़ते तो अवश्य परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाते)। इन चार लकारों के अतिरिक्त शेष लकार काल-सूचक हैं। लट् वर्तमान काल में होता है, यथा—देवः पठति (देव पढ़ता है)। तीन लकार<sup>२</sup> भूत-कालसूचक हैं—लुङ् सामान्य भूत, लङ् अनद्यतन भूत और लिट् परोक्ष भूत में आता है।

संस्कृत भाषा में दस लकार अथवा वृत्तियाँ होती हैं। वे इस प्रकार हैं—

(१)	वर्तमानकाल	लट्	(Present)
(२)	अनद्यतनभूत	लङ्	(Past imperfect)
(३)	सामान्यभूत	लुङ्	(Aorist)
(४)	परोक्षभूत	लिट्	(Past perfect)

१—लट् वर्तमाने लेट् वेदे भूते लुङ् लङ् लिटस्तथा ।

विध्याशिषौ तु लिङ्लोटौ लुट् लृट् लृङ् च भविष्यति ॥

इस कारिका में १० लकारों के अतिरिक्त लेट् भी है। लेट् का प्रयोग वैदिक भाषा में ही पाया जाता है।

२—संस्कृत व्याकरण में इन तीनों लकारों में अन्तर किया गया है। लुङ् सामान्य भूत में आता है अर्थात् सब प्रकार के भूतकाल में; लङ् अनद्यतन भूत में, अर्थात् जो बात आज से पहले की है। अतः व्याकरण की दृष्टि से 'अहमद्य पुस्तकमपठम्' (मैंने आज पुस्तक पढ़ी) अशुद्ध है। ऐसे स्थल पर लुङ् का प्रयोग होना चाहिए (अपाठिषम्)। लिट् का प्रयोग परोक्ष (जो आँख के सामने न हो) ऐतिहासिक बात के लिए होता है, यथा—रामः रावणं जघान (राम ने रावण को मारा)।



(५)	{ सामान्य भविष्यत् लृट्	(Simple Future)
(६)	{ अनद्यतन भविष्यत् लुट्	(First Future)
(७)	आज्ञा लोट्	(Imperative mood)
(८)	विधि विधिलिङ्	(Potential mood)
(९)	आशीर्वाद आशीर्लिङ्	(Benedictive)
(१०)	क्रियानिपत्ति लृङ्	(Conditional)

क्रियाओं की क्लृप्ता के कारण छात्र ही नहीं, अपितु कुछ अध्यापक भी तिङन्त क्रिया के स्थान पर कृदन्त शब्द का प्रयोग करते हैं, यथा 'सेवकः ग्रामं गतः (गतवान्)' किन्तु इसका अर्थ होगा—'सेवक गाँव को गया हुआ है या जा चुका है।' 'सेवक गाँव को गया' का अनुवाद 'सेवकः ग्रामम् अगच्छत्' ही है। इसी प्रकार कुछ लोग क्लृप्तर क्रियाओं से वचने के उद्देश्य से मुख्य क्रिया को बतलाने वाली धातु से व्युत्पन्न द्वितीयान्त शब्द के साथ तिङन्त 'कृ' का प्रयोग करते हैं। जैसे 'लज्जते' के स्थान पर 'लज्जां करोति', 'विभेति' के स्थान पर 'भयं करोति' परन्तु ऐसे प्रयोग त्याज्य हैं। क्योंकि 'लज्जां करोति' का अर्थ है 'लज्जा करता है' और 'भयं करोति' का अर्थ है 'भय पैदा करता है'। इनके शुद्ध प्रयोग हैं 'लज्जामनुभवति' तथा 'भयमनुभवति'।

### धातुओं के रूप

अस्—होना (परस्मैपद)

वर्तमान काल (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अस्मि (वह है)	मः (वे दो हैं)	सन्ति (वे हैं)
मध्यम पुरुष	असि (तू है)	स्थः (तुम दो हो)	स्थ (तुम हो)
उत्तम पुरुष	अस्मि (मैं हूँ)	स्वः (हम दो हैं)	स्मः (हम हैं)
		प्रत्यय	
प्र० पु०	(सः) ति	(तौ) तः	(ते) अन्ति
म० पु०	(त्वम्) सि	(युवाम्) थः	(यूयम्) थ
उ० पु०	(अहम्) मि	(आवाम्) वः	(वयम्) मः



अनद्यतन भूतकाल (लङ् लकार)

प्र० पु०	आसीन् (वह था)	आस्ताम् (वे दो थे)	आसन् (वे थे)
म० पु०	आसीः (तू था)	आस्तम् (तुम दो थे)	आस्त (तुम थे)
उ० पु०	आमम् (मैं था)	आस्व (हम दो थे)	आस्म (हम थे)

प्रत्यय

प्र० पु०	(सः)	त्	(तौ)	ताम्	(ते)	अन्
म० पु०	(त्वम्)	:	(युवाम्)	तम्	(यूयम्)	त
उ० पु०	(अहम्)	अम्	(आवाम्)	व	(वयम्)	म

पठ् पढ़ना (परस्मैपद)

वर्तमान (लट्)

(क्रिया का संक्षिप्त रूप)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पठति	पठतः	पठन्ति	प्र० पु० अति	अतः	अन्ति
पठसि	पठथः	पठथ	म० पु० असि	अथः	अथ
पठामि	पठावः	पठामः	उ० पु० आमि	आवः	आमः

अनद्यतन भूत (लङ्)

(क्रिया का संक्षिप्त रूप)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अपठत्	अपठताम्	अपठन्	प्र० पु० अत्	अनाम्	अन्
अपठः	अपठतम्	अपठत	म० पु० अः	अतम्	अत
अपठम्	अपठाव	अपठाम	उ० पु० अम्	आव	आम

सामान्य भूत (लुङ्)

(क्रिया का संक्षिप्त रूप)

अपाठीत्	अपाठिष्टाम्	अपाठिषुः	प्र० पु० आईत्	आईष्टाम्	आईषुः
अपाठीः	अपाठिष्टम्	अपाठिष्ट	म० पु० आईः	आईष्टम्	आईष्ट
अपाठिषम्	अपाठिष्व	अपाठिष्म	उ० पु० आईषम्	आईष्व	आईष्म

परोक्ष भूत (लिट्)

(क्रिया का संक्षिप्त रूप)

पपाठ	पेठतुः	पेठुः	प्र० पु०	आअ	एअतुः	एअः
पेठिथ	पेठथुः	पेठ	म० पु०	एइथ	एअथुः	एअ
पपाठ }	पेठिव	पेठिम	उ० पु०	आअ	एइव	एइम
पपठ }						



सामान्य भविष्यत् (लृट्)

(क्रिया का संक्षिप्त रूप)

पठिष्यति पठिष्यतः पठिष्यन्ति प्र० पु० (इ) स्यति (इ) स्यतः (इ) स्यन्ति  
 पठिष्यसि पठिष्यथः पठिष्यथ म० पु० (इ) स्यसि (इ) स्यथः (इ) स्यथ  
 पठिष्यामि पठिष्यावः पठिष्यावः उ० पु० (इ) स्यामि (इ) स्यावः (इ) स्यामः

अनद्यतन भविष्यत् (लुट्)

(क्रिया का संक्षिप्त रूप)

पठिता पठितारौ पठितारः प्र० पु० (इ) ता (इ) तारौ (इ) तारः  
 पठितासि पठितास्थः पठितास्थ म० पु० (इ) तासि (इ) तास्थः (इ) तास्थ  
 पठितास्मि पठितास्वः पठितास्मः उ० पु० (इ) तास्मि (इ) तास्वः (इ) तास्मः

आज्ञा (लोट्)

(क्रिया का संक्षिप्त रूप)

पठतु	पठताम्	पठन्तु	प्र० पु०	अतु	अताम्	अन्तु
पठ	पठतम्	पठत	म० पु०	अ	अतम्	अत
पठानि	पठाव	पठाम	उ० पु०	आनि	आव	आम

अनुज्ञा, आज्ञा (विधिलिङ्)

(क्रिया का संक्षिप्त रूप)

पठेन्	पठेताम्	पठेयुः	प्र० प्र०	एन्	एताम्	एयुः
पठेः	पठेतम्	पठेत	म० पु०	एः	एतम्	एत
पठेयम्	पठेव	पठेव	उ० पु०	एयम्	एव	एम

आशीर्वाद (आशीर्लिङ्)

(क्रिया का संक्षिप्त रूप)

पठ्यात्	पठ्यास्ताम्	पठ्यासुः	प्र० पु०	यात्	यास्ताम्	यासुः
पठ्याः	पठ्यास्तम्	पठ्यास्त	म० पु०	याः	यास्तम्	यास्त
पठ्यासम्	पठ्यास्व	पठ्यास्म	उ० पु०	यासम्	यास्व	यास्म

हेतु-हेतुमद्भाव (लृङ्)

(क्रिया का संक्षिप्त रूप)

अपठिष्यन् अपठिष्यताम् अपठिष्यन् प्र० पु० (इ) स्यत् (इ) स्यताम् (इ) स्यन्  
 अपठिष्यः अपठिष्यतम् अपठिष्यत म० पु० (इ) स्यः (इ) स्यतम् (इ) स्यत  
 अपठिष्यम् अपठिष्याव अपठिष्याम उ० पु० (इ) स्यम् (इ) स्याव (इ) स्याम

आत्मनेपद—मुद्ग (प्रसन्न होना)

वर्तमान (लट्)

(क्रिया का संक्षिप्त रूप)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
मोदते	मोदेते	मोदन्ते	प्र० पु०	अते	एते	अन्ते
मोदसे	मोदेथे	मोदध्वे	म० पु०	असे	एथे	अध्वे
मोदे	मोदावहे	मोदामहे	उ० पु०	ए	आवहे	आमहे



अनद्यतन भूत (लङ्)

(क्रिया का संक्षिप्त रूप)

अमोदत	अमोदेताम्	अमोदन्त	प्र० पु०	अत	एताम्	अन्त
अमोदथाः	अमोदेथाम्	अमोदध्वम्	म० पु०	अथाः	एथाम्	अध्वम्
अमोदे	अमोदावहि	अमोदामहि	उ० पु०	ए	आवहि	आमहि

सामान्य भूत (लुङ्)

(क्रिया का संक्षिप्त रूप)

अमोदिष्ट	अमोदिषाताम्	अमोदिषत	प्र० पु०	(इ) स्त	(इ) साताम्	(इ) सत
अमोदिष्टाः	अमोदिषाथाम्	अमोदिष्वम्	म० पु०	(इ) स्थाः	(इ) साथाम्	(इ) ध्वम्
अमोदिषि	अमोदिष्वहि	अमोदिष्महि	उ० पु०	(इ) सि	(इ) स्वहि	(इ) स्महि

परोक्ष भूत (लिट्)

(क्रिया का संक्षिप्त रूप)

मुमुदे	मुमुदाते	मुमुदिरे	प्र० पु०	ए	आते	इरे
मुमुदिषे	मुमुदाथे	मुमुदिध्वे	म० पु०	इषे	आथे	इध्वे
मुमुदे	मुमुदिवहे	मुमुदिमहे	उ० पु०	ए	इवहे	इमहे

सामान्य भविष्यत् (लृट्)

(क्रिया का संक्षिप्त रूप)

मोदिष्यते	मोदिष्येते	मोदिष्यन्ते	प्र० पु०	(इ) स्यते	(इ) स्येते	(इ) स्यन्ते
मोदिष्यसे	मोदिष्येथे	मोदिष्यध्वे	म० पु०	(इ) स्यसे	(इ) स्येथे	(इ) स्यध्वे
मोदिष्ये	मोदिष्यावहे	मोदिष्यामहे	उ० पु०	(इ) स्ये	(इ) स्यावहे	(इ) स्यामहे

अनद्यतन भविष्यत् (लुट्)

(क्रिया का संक्षिप्त रूप)

मोदिता	मोदितारौ	मोदितारः	प्र० पु०	(इ) ता	(इ) तारौ	(इ) तारः
मोदितासे	मोदितासाथे	मोदिताध्वे	म० पु०	(इ) तासे	(इ) तासाथे	(इ) ताध्वे
मोदिताहे	मोदितास्वहे	मोदितास्महे	उ० पु०	(इ) ताहे	(इ) तास्वहे	(इ) तास्महे

आज्ञा (लोट्)

(क्रिया का संक्षिप्त रूप)

मोदताम्	मोदेताम्	मोदन्ताम्	प्र० पु०	अताम्	एताम्	अन्ताम्
मोदस्व	मोदेथाम्	मोदध्वम्	म० पु०	अस्व	एथाम्	अध्वम्
मोदै	मोदावहै	मोदामहै	उ० पु०	ऐ	आवहै	आमहै

अनुज्ञा, आज्ञा (विधिलिङ्)

(क्रिया का संक्षिप्त रूप)

मोदेत	मोदेयाताम्	मोदेरन्	प्र० पु०	एत	एयाताम्	एरन्
मोदेथाः	मोदेयाथाम्	मोदेध्वम्	म० उ०	एथाः	एयाथाम्	एध्वम्
मोदेय	मोदेवहि	मोदेमहि	उ० पु०	एय	एवहि	एमहि



आशीर्वाद (आशीर्लिङ्)

(क्रिया का सक्षिप्त रूप)

मोदिषीष्ट मोदिषीयास्ताम् मोदिषीरन् प्र. पु. (इ) ईष्ट (इ) ईयास्ताम् (इ) ईरन्

मोदिषीष्ठाः मोदिषीयाम्थाम् मोदिषीध्वम् म. पु. (इ) ईष्ठाः (इ) ईयाम्थाम् (इ) ईध्वम्

मोदिषीय मोदिषीवहि मोदिषीमहि उ. पु. (इ) ईय (इ) ईवहि (इ) ईमहि

हेतुहेतुमद्भाव (लृङ्)

(क्रिया का सक्षिप्त रूप)

अमोदिष्यत अमोदिष्येताम् अमोदिष्यन्त प्र. पु. (इ) म्यत (इ) म्येताम् (इ) म्यन्त

अमोदिष्यथाः अमोदिष्येथाम् अमोदिष्यध्वम् म. पु. (इ) म्यथा. (इ) म्येथाम् (इ) म्यध्वम्

अमोदिष्ये अमोदिष्यावहि अमोदिष्यामहि उ. पु. (इ) म्ये (इ) म्यावहि (इ) म्यामहि

### कृदन्तों का क्रिया के रूप में प्रयोग

धातुओं में बने हुए कृदन्त<sup>१</sup> भी क्रिया के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं। क्रियाओं के १० लकार तीनों कालों को या आज्ञा, अनुज्ञा आदि को प्रकट करते हैं। यही कार्य कृदन्तों में होता है। शतृ और शानच्<sup>२</sup> वर्तमान क्रिया को प्रकट करते हैं, वन और वनवन् भूतकालिक क्रिया को, तव्य एवं अनीयर् आज्ञा तथा भविष्यन् काल की क्रिया को प्रकट करते हैं।

तव्य, अनीयर्, यत्—ये कृत प्रत्यय भाववाच्य या कर्मवाच्य में होते हैं। ये सकर्मक धातु में कर्मवाच्य में तथा अकर्मक धातु में भाववाच्य में होते हैं। ऐसी दशा में कर्त्ता तृतीया विभक्ति में होता है और कर्म प्रथमा में, तथा तव्यादि प्रत्ययान्त शब्द के लिंग और वचन कर्म के अनुसार होते हैं, यथा—

सकर्मक धातु (कर्म में)	}	छात्रैः पुस्तकानि पठितव्यानि ।
		मया बालिका द्रष्टव्या ।
		त्वया ग्रन्थः पठितव्यः ।

१. भाववाचक कृदन्त शुद्ध क्रिया के द्योतक हैं जैसे—हामः, पाकः, रागः आदि। कर्तृवाचक कृदन्त क्रिया के कर्त्ता के द्योतक हैं, जैसे—पाठकः, पाचकः आदि। कर्मवाचक कृदन्त क्रिया के आधार कर्म को प्रकट करते हैं, जैसे—सुकरः (आमानी में किया जाने वाला कार्य)।

२. शतृ एवं शानच् का प्रयोग प्रायः विशेषण रूप में ही होता है, मुख्य वर्तमान क्रिया के रूप में नहीं।



द्वितीया	अम्	औ	अः <sup>१</sup>
तृतीया	(आ) एन <sup>२</sup>	भ्याम्	भिः (ऐस्)
चतुर्थी	ए <sup>३</sup>	भ्याम्	भ्यः
पञ्चमी (अस्)	आत् <sup>४</sup>	भ्याम्	भ्यः
षष्ठी (अस्)	स्य	ओस् (ओः)	आम्
सप्तमी	इ <sup>५</sup>	ओस् (ओः)	सु (षु)

## पुंल्लिङ्ग-शब्द

## (१) राम

प्र० रामः (राम)	रामौ (दो राम)	रामाः (बहुत राम)
द्वि० रामम् (राम को)	रामौ (दो रामों को)	रामान् (रामों को)
तृ० रामेण (राम ने) <sup>६</sup>	रामाभ्याम् (दो रामों ने)	रामैः (रामों ने)

१. अकारान्त, इकारान्त, उकारान्त और ऋकारान्त शब्दों को दीर्घ होकर अन्त में 'न्' हो जाता है। जैसे—रामान्, हरीन्, गुरुन्, पितृन्।

२. इकारान्त, उकारान्त शब्दों के अन्त में 'ना' होता है। जैसे—कविना, साधुना।

३. अकारान्त शब्द के अन्त में 'आय' होता है। जैसे—देवाय।

४. इकारान्त, उकारान्त और ऋकारान्त शब्दों के पञ्चमी और षष्ठी के एकवचन में इ उ ऋ को गुण होकर 'स्' को विसर्ग (:) होता है। जैसे—हरेः, गुरोः, पितुः।

५. इकारान्त तथा उकारान्त शब्दों के अन्त में 'औ' हो जाता है। जैसे—हरी, कवी, गुरौ, साधौ।

६. म्वरों (अ, आ, इ, ई, आदि); ह्, य्, व्, र्, कवर्ग (क्, ख् आदि), पवर्ग (प्, फ् आदि) आ और न् के बीच में आने पर भी र्, ऋ, ॠ और 'ष्' के बाद 'न्' को 'ण्' हो जाता है (अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि)। इससे नपुंसकलिङ्ग शब्द की प्रथमा तथा द्वितीया के बहुवचन में, तृतीया के एकवचन में और षष्ठी के बहुवचन में, पुल्लिङ्ग की तृतीया के एक० में तथा षष्ठी के बहु० में, स्त्रीलिङ्ग की षष्ठी के बहु० में 'न्' को 'ण्' हो जाता है। यथा—नपुं० में—गृहाणि, गृहेण, गृहाणाम्। पत्राणि, पत्रेण, पत्राणाम्। पुं० में—नृपेण, नृपाणाम्, हरिणा, हरीणाम्; स्त्री० में—नारीणां स्।



अकर्मक धातु { शिगुना शयितव्यम् ।  
(भाव मे) { त्वया न हसितव्यम् (हसनीयं वा) ।

अकर्मक धातु से कृदन्त प्रत्यय भाववाच्य में होता है और कृदन्त शब्द सदा नपुमकलिंग और एकवचन में होता है । जैसे—शयितव्यम्, हसनीयम्, स्थातव्यम् ।

क्त (त), क्तवतु (तवत्)—क्त प्रत्यय सकर्मक धातु से कर्मवाच्य में होता है और अकर्मक धातु से कर्तृवाच्य में । यथा—अस्माभिः ग्रन्थः पठितः । छात्रैः पुस्तकानि पठितानि । दमयन्त्या लता दृष्टा ।

किन्तु 'बालिका सुप्ता' आदि वाक्यों में अकर्मक धातु के प्रयोग के कारण कृदन्त (सुप्ता आदि) पद कर्त्ता (बालिका आदि) के अनुसार होते हैं ।

क्तवतु (तवन्) प्रत्यय सकर्मक एवं अकर्मक धातुओं से कर्तृवाच्य में ही होता है, यथा—सः पुष्पं दृष्टवान्, सा पुष्पं दृष्टवती, स हसितवान्, सा हसितवती ।

शतृ और शानच्—शतृ प्रत्यय परस्मैपद में और शानच् प्रत्यय आत्मनेपद में होता है । ये प्रत्यय मुख्य क्रिया के रूप में न होकर विशेषण रूप में होते हैं, यथा—पठन् छात्रः (पढ़ता हुआ विद्यार्थी), शयानः बालः (सोता हुआ बालक) । ये भविष्यत्कालसूचक भी होने हैं, जैसे—पठिष्यन् छात्रः (वह छात्र जो पढ़ता हुआ होगा), एधिष्यमाणः पुरुषः (वह पुरुष, जो बड़ता हुआ होगा)।

### सुबन्त शब्दों की रूपावली

तिङन्त (पठति, पठतः, पठन्ति) शब्दों का वर्णन संक्षिप्त रूप में ऊपर किया गया है । सुबन्त (रामः, रामौ, रामाः) शब्दों के रूप यहाँ दिये जा रहे हैं । सुबन्त और तिङन्त शब्दों को ही पद कहते हैं (मुप्तिङन्तं पदम्) । सुबन्त शब्दों की मान विभक्तियों के तीन-तीन वचनों में २१ प्रत्ययों को पृथक्-पृथक् याद करने की अपेक्षा उनके मूल रूपों पर ध्यान देना चाहिए ।

### पुंल्लिङ्ग में विभक्तियों के रूप

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स् (ः)	औ	अस् (अः)



च० रामाय (राम के लिए)	रामाभ्याम् (दो रामों के०)	रामेभ्यः (रामों के लिए)
पं० रामात् (राम से)	रामाभ्याम् (दो रामों से)	रामेभ्यः (रामों से)
ष० रामस्य (राम का, के, की)	रामयोः (दो रामों का के)	रामाणाम् (रामों का, के)
स० रामे (राम में, पर)	रामयोः (दो रामों में, पर)	रामेषु (रामों में, पर)
सं० हे राम (हे राम) <sup>१</sup>	हे रामौ (हे दो रामों)	हे रामाः (हे रामों)

राम की भाँति इनके रूप चलते हैं—

नरः—मनुष्य	शिष्यः—शिष्य	मयूरः—मोर
बालः—बालक	सूर्यः—सूर्य	प्रश्नः—प्रश्न
पुत्रः—पुत्र	चन्द्रः—चाँद	क्रोशः—कोस
जनकः—पिता	खगः—पक्षी	लोकः—संसार, लोग
नृपः—राजा	करः—हाथ	धर्मः—धर्म
प्राज्ञः—विद्वान्	पिकः—कोयल	अनलः—आग
सज्जनः—अच्छा आदमी	वंशः—कुल	अनिलः—वायु
दुर्जनः—बुरा आदमी	वानरः—बन्दर	नक्रः—नाका
खलः—दुष्ट	गजः—हाथी	उपहारः—भेंट

## (२) हरि (विष्णु)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	इसी प्रकार—
प्र० हरिः	हरी	हरयः	कविः, मुनिः, विधिः (भाग्य),
द्वि० हरिम्	हरी	हरीन्	निधिः (खजाना), गिरिः
तृ० हरिणा	हरिभ्याम्	हरिभिः	(पर्वत), अग्निः, अरिः (शत्रु),
च० हरये	हरिभ्याम्	हरिभ्यः	नृपतिः (राजा) उदधिः (समुद्र),
पं० हरेः	हरिभ्याम्	हरिभ्यः	यतिः (योगी), असिः (तल-
ष० हरेः	हर्योः	हरीणाम्	वार,) अतिथिः (मेहंमान),
स० हरौ	हर्योः	हरिषु	कपिः (बन्दर), पाणिः (हाथ),
सं० हे हरे	हे हरी	हे हरयः	सेनापतिः, प्रजापतिः, रश्मिः
			(किरण), व्याधिः (रोग) आदि ।

१. सम्बोधन के एकवचन में विसर्ग नहीं होता ।



## (३) सखि (मित्र)

सखा	सखायी	सखायः
सखायम्	सखायी	सखीन्
सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः
सख्ये	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
सख्युः	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
सख्युः	सख्योः	सखीनाम्
सख्यौ	सख्योः	सखिषु
हे सखे	हे सखायी	हे सखायः

## (४) पति (स्वामी) १

प्र०	पतिः	पती	पतयः
द्वि०	पतिम्	पती	पतीन्
तृ०	पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः
च०	पत्ये	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
पं०	पत्युः	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
ष०	पत्युः	पत्योः	पतीनाम्
स०	पत्यौ	पत्योः	पतिषु
सं०	हे पते	हे पती	हे पतयः

## (५) गुरु

इसी प्रकार—

प्र०	गुरुः	गुरु	गुरवः	भानुः (सूर्य), कृशानुः (आग),
द्वि०	गुरुम्	गुरु	गुरुन्	विधुः (चन्द्रमा), शम्भुः, शिशुः,
तृ०	गुरुणा	गुरुभ्याम्	गुरुभिः	मृत्युः, मृदुः (कोमल), साधुः,
च०	गुरवे	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः	पांशुः (धूल), वायुः, पशुः, तरुः,
पं०	गुरोः	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः	(वृक्ष), इषुः (बाण), शत्रुः,
ष०	गुरोः	गुरवोः	गुरुणाम्	प्रभुः, बिन्दुः (बूंद), परशुः,
स०	गुरौ	गुरवोः	गुरुषु	बाहुः आदि ।
सं०	हे गुरो	हे गुरु	हे गुरवः	

जिन शब्दों में ऋ, ए या ष नहीं हैं उनमें 'न्' को 'ण्' नहीं होता । अतः 'साधु' शब्द की तृतीया के एकवचन में 'साधुना' और षष्ठी के बहुवचन में 'साधूनाम्' रूप होते हैं ।

## (६) कर्तृ (करने वाला)

प्र०	कर्ता	कर्तारो	कर्तारिः	इसी प्रकार—
द्वि०	कर्तारम्	कर्तारो	कर्तारून्	नेतृ (ले जाने वाला),

१. पति शब्द के रूप तृतीया एक० में पत्या, चतुर्थी एक० में पत्ये, पञ्चमी और षष्ठी एक० में पत्युः और सप्तमी एक० में पत्यौ बनते हैं । ध्यान रखें कि ये रूप हरि शब्द के रूपों के समान नहीं हैं । किन्तु यदि पति शब्द किसी शब्द के अन्त में समस्त हो जाता है तो उसके सभी रूप हरि शब्द के समान चलते हैं । जैसे—भूपतिना (तृ० एक०), भूपतये (च० एक०), भूपतेः (पं० और ष० एक०), भूपतौ (स० एक०) ।

तृ०	कर्त्रा	कर्तृभ्याम्	कर्तृभिः	वक्तृ (बोलने वाला),
च०	कर्त्रे	कर्तृभ्याम्	कर्तृभ्यः	प्रष्टृ (पूछने वाला),
पं०	कर्तुः	कर्तृभ्याम्	कर्तृभ्यः	रक्षितृ (रक्षा करने-
ष०	कर्तुः	कर्त्रोः	कर्तृणाम्	वाला), श्रोतृ, (सुनने-
स०	कर्तरि	कर्त्रोः	कर्तृषु	वाला,) नप्तृ (नाती),
सं०	हे कर्तः	हे कर्तारौ	हे कर्तरिः	सवितृ (सूर्य) आदि ।

(७) पितृ (पिता)

प्र०	पिता	पितरौ	पितरः	इसी प्रकार
द्वि०	पितरम्	पितरौ	पितॄन्	भ्रातृ—भाई ।
तृ०	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः	देवृ—देवर ।
च०	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः	जामातृ—दामाद ।
पं०	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः	नृ—मनुष्य आदि
ष०	पितुः	पित्रोः	पितृणाम्	
स०	पितरि	पित्रोः	पितृषु	
सं०	हे पितः	हे पितरौ	हे पितरः	

(८) गो (गाय या बल)

प्र०	गौः	गावौ	गावः	गो शब्द स्त्रीलिङ्ग में भी पुंलिङ्ग के समान ही चलेगा ।
द्वि०	गाम्	गावौ	गाः	
तृ०	गवा	गोभ्याम्	गोभिः	
च०	गवे	गोभ्याम्	गोभ्यः	
पं०	गोः	गोभ्याम्	गोभ्यः	
ष०	गोः	गवोः	गवाम्	
स०	गवि	गवोः	गोषु	
सं०	हे गौः	हे गावौ	हे गावः	

स्त्रीलिङ्ग-शब्द

(१) रमा

प्र०	रमा	रमे	रमाः	इसी प्रकार—लता,
द्वि०	रमाम्	रमे	रमाः	पाठशाला, क्रीडा, कथा, कन्या,
तृ०	रमया	रमाभ्याम्	रमाभिः	वसुधा (पृथ्वी), सुधा (अमृत),
च०	रमायै	रमाभ्याम्	रमाभ्यः	अजा (बकरी), व्यथा, बाला,



पं०	रमायाः	रमाभ्याम्	रमाभ्यः	प्रभा, कान्ता, श्रद्धा, निष्ठा आदि ।
ष०	रमायाः	रमयोः	रमाणाम्	
स०	रमायाम्	रमयोः	रमासु	
सं०	हे रमे	हे रमे	हे रमाः	

## (२) मति

प्र०	मतिः	मती	मतयः	इसी प्रकार— गतिः, श्रुतिः, (वेद) स्मृतिः, भूमिः, ओषधिः, पङ्क्तिः, धूलिः, अङ्गुलिः, प्रीतिः, श्रेणिः, शान्तिः, प्रकृतिः, शक्तिः, समितिः (सभा), नियतिः (भाग्य), व्रततिः (लता) आदि
द्वि०	मतिम्	मती	मतीः	
तृ०	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः	
च०	मत्यै, मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः	
पं०	मत्याः, मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः	
ष०	मत्याः, मतेः	मत्योः	मतीनाम्	
स०	मत्याम्, मतौ	मत्योः	मतिषु	
सं०	हे मते	हे मती	हे मतयः	

## (३) नदी

प्र०	नदी	नद्यी	नद्यः	इसी प्रकार— गौरी, कुमारी, नारी, सखी, पुत्री, रजनी, महिषी, प्राची, प्रतीची, कौमुदी (ज्योत्स्ना), मही, मृगी, मिही, नगरी, वापी, श्रीमती, दासी आदि ।
द्वि०	नदीम्	नद्यी	नदीः	
तृ०	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः	
च०	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः	
पं०	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः	
ष०	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्	
स०	नद्याम्	नद्योः	नदीषु	
सं०	हे नदि	हे नद्यी	हे नद्यः	

लक्ष्मी शब्द की प्रथमा के एकवचन में विसर्ग होता है (जैसे, लक्ष्मीः) ।  
शेष रूप नदी की भाँति होते हैं ।

## (४) स्त्री

प्र०	स्त्री	स्त्रियो	स्त्रियः	'स्त्री' शब्द तथा 'नदी' शब्द में अन्तर यह है कि 'नदी' शब्द में स्वरादि विभक्ति आने पर 'ई' के स्थान में 'य्' हो जाता है ।
द्वि०	स्त्रियम्, स्त्रीम्	स्त्रियो	स्त्रीः, स्त्रियः	
तृ०	स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभिः	
च०	स्त्रियै	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः	
पं०	स्त्रियाः	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः	

ष०	स्त्रियाः	स्त्रियोः	स्त्रीणाम्
स०	स्त्रियाम्	स्त्रियोः	स्त्रीषु
सं०	हे स्त्रि	हे स्त्रियो	हे स्त्रियः

यथा—नद्यौ, नद्यः । और 'स्त्री' शब्द में 'ई' के स्थान में 'इय्' होता है । यथा—स्त्रियो, स्त्रियः ।

#### (५) धेनु (गाय)

प्र०	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वि०	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृ०	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
च०	धेन्वै, धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पं०	धेन्वाः, धेनोः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
ष०	धेन्वाः, धेनोः	धेन्वोः	धेनूनाम्
स०	धेन्वाम्, धेनौ	धेन्वोः	धेनुषु
सं०	हे धेनो	हे धेनू	हे धेनवः

इसी भाँति—

रेणुः (धूल), चञ्चुः (चोच), तनुः, उडुः (तारा), रज्जुः (रस्सी), हनुः (ठोड़ी) आदि ।

#### (६) वधू (बहू)

प्र०	वधूः	वध्वौ	वध्वः
द्वि०	वधूम्	वध्वौ	वधूः
तृ०	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
च०	वध्वै	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
पं०	वध्वाः	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
ष०	वध्वाः	वध्वोः	वधूनाम्
स०	वध्वाम्	वध्वोः	वधूषु
सं०	हे वधु	हे वध्वौ	हे वध्वः

इसी प्रकार—

चमूः (सेना), तनूः, (शरीर) श्वश्रूः (सास), जम्बूः (जामुन) आदि ।

वधू आदि शब्दों के रूप 'नदी' की भाँति चलते हैं, केवल प्रथमा के एक-वचन में विसर्ग का अन्तर है । यथा—नदी, वधूः ।

#### (७) मातृ (माता)

प्र०	माता	मातरौ	मातरः
द्वि०	मातरम्	मातरौ	मातृः
तृ०	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः
च०	मात्रे	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
पं०	मातुः	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
ष०	मातुः	मात्रोः	मातृणाम्
स०	मातरि	मात्रोः	मातृषु
सं०	हे मातः	हे मातरौ	हे मातरः

मातृ (स्त्री०) शब्द भी 'पितृ (पुं०) शब्द की भाँति चलता है, केवल द्वितीया के बहुवचन में अन्तर है, यथा—पितृन्, मातृः ।



## (८) नौ (नाव)

प्र०	नौ:	नावौ	नावः	ग्लौ (चन्द्रमा) (पुं०) के रूप भी 'नौ' (स्त्री०) की भांति चलेगे, जैसे ग्लौः ग्लावौ ग्लावः ।
द्वि०	नावम्	नावौ	नावः	
तृ०	नावा	नौभ्याम्	नौभिः	
च०	नावे	नौभ्याम्	नौभ्यः	
पं०	नावः	नौभ्याम्	नौभ्यः	
ष०	नावः	नावोः	नावाम्	
स०	नावि	नावोः	नौषु	
सं०	हे नौः	हे नावौ	हे नावः	

## नपुंसकलिङ्ग-शब्द

## (१) फल

फलम्	फले	फलानि
फलम्	फले	फलानि
फलेन	फलाभ्याम्	फलैः
फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
फलान्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
फलस्य	फलयोः	फलानाम्
फले	फलयोः	फलेषु
हे फल	हे फले	हे फलानि

## (२) गृह (घर)

प्र०	गृहम्	गृहे	गृहाणि
द्वि०	गृहम्	गृहे	गृहाणि
तृ०	गृहेण	गृहाभ्याम्	गृहैः
च०	गृहाय	गृहाभ्याम्	गृहेभ्यः
पं०	गृहान्	गृहाभ्याम्	गृहेभ्यः
ष०	गृहस्य	गृहयोः	गृहारणाम्
स०	गृहे	गृहयोः	गृहेषु
सं०	हे गृह	हे गृहे	हे गृहाणि

## इसी प्रकार—

रत्नम्—मणि	सुवर्णम्—सोना	जलजम्—कमल	कुसुमम्—जल
विषम्—विष	मांसम्—मांस	नेत्रम्—आँख	उद्यानम्—बगीचा
तत्त्वम्—सचाई	नखम्—नाखून	मित्रम्—मित्र	नयनम्—आँख

बलम्, दुःखम्, मुखम्, नेत्रम्, पुष्पम्, पापम्, आकाशम्, भोजनम्, वचनम्, मौनम् आश्रमम्, दाडिमम् आदि ।

## (३) वारि (जल)

वारि	वारिणी	वारीणि
वारि	वारिणी	वारीणि
वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः

## (४) दधि (दही)

प्र०	दधि	दधिनी	दधीनि
द्वि०	दधि	दधिनी	दधीनि
तृ०	दध्ना	दधिभ्याम्	दधिभिः

वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः	च०	दध्ने	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः	पं०	दध्नः	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्	ष०	दध्नः	दध्नोः	दध्नाम्
वारिणि	वारिणोः	वारिषु	स०	दध्नि, दधनि	दध्नोः	दधिषु
हे वारि(वारे)हे	वारिणी	हे वारीणि	सं०	हे दधि, हे दधे	हे दधिनी	हे दधौ

इसी प्रकार—अक्षि (आँख), अस्थि (हड्डी), सक्थि (जाँघ) आदि ।

### (५) मधु (शहद)

प्र०	मधु	मधुनी	मधूनि	इसी प्रकार—
द्वि०	मधु	मधुनी	मधूनि	वस्तु, अश्रु (आँसू), जानु
तृ०	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः	(घुटना), तालु, दारु
च०	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः	(लकड़ी), वसु (घन) अम्बु
पं०	मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः	(पानी), सानु (पर्वत की
ष०	मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्	चोटी), श्मश्रु (दाढ़ी), जतु
स०	मधूनि	मधुनोः	मधुषु	(लाख) आदि ।
सं०	हे मधो, हे मधु	हे मधुनी	हे मधूनि	

### अकारान्त पुल्लिङ्ग सर्वनाम 'सर्व' (सब)

प्र०	सर्वः	सर्वो	सर्वे	इसी प्रकार—विश्व, अन्य,
द्वि०	सर्वम्	सर्वो	सर्वान्	कतर, कतम, अन्यतर,
तृ०	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः	इतर इत्यादि ।
च०	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः	अन्तर पर ध्यान दें—
पं०	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः	देवाः सर्वे
ष०	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्	देवाय सर्वस्मै
स०	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु	देवात् सर्वस्मात्
नपुंसकलिङ्ग की प्र०, द्वि०, तृ० में—				देवानाम् सर्वेषाम्
सर्वम् सर्वे सर्वाणि शेष पुल्लिङ्गवत्				देवे सर्वस्मिन्

### आकारान्त स्त्रीलिङ्ग 'सर्वा'

प्र०	सर्वा	सर्वे	सर्वाः	इसी प्रकार—
द्वि०	सर्वाम्	सर्वे	सर्वाः	विश्वा, अन्या, कतरा, कतमा
तृ०	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः	अन्यतरा, इतरा ।
च०	सर्वम्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः	अन्तर पर ध्यान दें—



पं०	सर्वस्याः	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः	लतायै	सर्वस्यै
ष०	सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वासाम्	लतायाः	सर्वस्याः
स०	सर्वस्याम्	सर्वयोः	सर्वासु	लतानाम्	सर्वासाम्
				लतायाम्	सर्वस्याम्

## पुंल्लिङ्ग

## पूर्व

## स्त्रीलिङ्ग

पूर्वः	पूर्वो	पूर्वे (पूर्वाः)	प्र०	पूर्वा	पूर्वे	पूर्वाः
पूर्वम्	पूर्वो	पूर्वान्	द्वि०	पूर्वाम्	पूर्वे	पूर्वाः
पूर्वेण	पूर्वाभ्याम्	पूर्वेः	तृ०	पूर्वया	पूर्वाभ्याम्	पूर्वाभिः
पूर्वस्मै	पूर्वाभ्याम्	पूर्वेभ्यः	च०	पूर्वस्यै	पूर्वाभ्याम्	पूर्वाभ्यः
पूर्वस्मात्, पूर्वान्	पूर्वाभ्याम्	पूर्वेभ्यः	पं०	पूर्वस्याः	पूर्वाभ्याम्	पूर्वाभ्यः
पूर्वस्य	पूर्वयोः	पूर्वेषाम्	ष०	पूर्वस्याः	पूर्वयोः	पूर्वासाम्
पूर्वस्मिन्, पूर्वे	पूर्वयोः	पूर्वेषु	स०	पूर्वस्याम्	पूर्वयोः	पूर्वासु

## नपुंसकलिङ्ग

प्र०	पूर्वम्	पूर्वो	पूर्वाणि
द्वि०	पूर्वम्	पूर्वो	पूर्वाणि
तृ०	पूर्वेण	पूर्वाभ्याम्	पूर्वैः

शेष विभक्तियों में पुंल्लिङ्ग के समान ।

## उभ (दोनों) नित्य द्विवचन

	पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग
प्र०	उभौ	उभे
द्वि०	उभौ	उभे
तृ०	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्
च०	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्
पं०	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्
ष०	उभयोः	उभयोः
स०	उभयोः	उभयोः

‘उभय’ शब्द के रूप एक-वचन तथा बहुवचन में ही होते हैं, यथा—

उभयः	उभये
उभयम्	उभयान्
उभयेन	उभयैः
उभयस्मै	उभयेभ्यः
	आदि ।

### विसर्ग की अशुद्धियाँ क्यों होती हैं ?

विभक्तियों में विसर्ग की अशुद्धियाँ इसलिए होती हैं कि छात्र इस बात का ध्यान नहीं रखते कि किसी भी शब्द की तृतीया, चतुर्थी और पञ्चमी के बहुवचन में तथा षष्ठी और सप्तमी के द्विवचन में विसर्ग अवश्य होता है। जैसे—देवैः, देवेभ्यः, देवयोः। परन्तु किसी भी शब्द की द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी और सप्तमी के एकवचन में, (जैसे—देवम्, देवेन, देवाय, देवे), तृतीया, चतुर्थी और पञ्चमी के द्विवचन में (जैसे—देवाभ्याम्) और षष्ठी एवं सप्तमी के बहुवचन में (जैसे देवानाम्, देवेषु) कदापि विसर्ग नहीं होता।

### अविकारी शब्द

#### (१) अव्युत्पन्न शब्द

अथ—मङ्गल, आरम्भ  
इति—समाप्ति, हेतु  
अति—अधिक  
अपि—भी  
अवश्यम्—जरूर  
अद्य—आज  
अधुना—अब  
अलम्—बस  
शनैः-शनैः—धीरे-धीरे  
श्वः—कल (आने वाला)  
ह्यः—कल (बीता हुआ)  
साकम्, सह—साथ में  
स्वयम्—अपने आप  
हा—दुःख  
(२) क-व्युत्पन्न (कृदन्त)  
गातुम्—गाने के लिए  
ज्ञातुम्—जानने के लिए  
कर्तुम्—करने के लिए  
  
पठितुम्—पढ़ने के लिए  
हसितुम्—हँसने के लिए  
कृत्वा—कर के

असकृत्—बार-बार  
सकृत्—एक बार  
आदि—वगैरह  
इदानीम्—इस समय, अब  
इव—भाँति, तरह  
इह—यहाँ  
किम्—क्या ? क्यों ?  
च—और  
चेत्—यदि  
आरुह्य—चढ़कर  
विलप्य—विलाप करके  
परित्यज्य—छोड़कर  
आगत्य—आकर  
(२) ख-व्युत्पन्न (तद्धित)  
अतः—इसलिए  
इतः—यहाँ से  
अग्रतः—आगे से  
ततः—वहाँ से,  
कुतः—कहाँ से

यतः—जहाँ से, क्योंकि  
सर्वतः—सब ओर से  
तथा—वैसे

तत्—पूर्वकथित  
न, नो—नहीं  
नमः—प्रणाम  
पश्चात्—पीछे  
पृथक्—अलग  
प्रायः—बहुधा, अक्सर  
वरम्—उत्तम, बेहतर  
वा—अथवा, या  
विना—वगैर  
कथम्—कैसे  
एकत्र—एक जगह  
अत्र—यहाँ  
तत्र—वहाँ  
कुत्र—कहाँ  
सर्वत्र—सब जगह  
यत्र—~~उ~~हाँ  
द्वेधा—दो प्रकार से,  
दो भागों में  
त्रेधा—तीन भागों में  
तीन प्रकार से  
तावत्—तब तक  
यावत्—जब तक  
अनेकशः—अनेक बार



गत्वा—जाकर  
पठित्वा—पढ़ कर  
हसित्वा—हँस कर

यथा—जैसे  
इत्थम्—इस प्रकार

पञ्चकृत्वः—पाँच बार

**अव्यय (अविकारो शब्द) क्या है ?**

अव्यय एक ऐसा शब्द है, जिसके तीनों लिङ्गों, सातों विभक्तियों तथा तीनों वचनों में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता, जैसा कि कहा भी है—

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वांस्तु च विभक्तिषु ।  
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम् ॥

## प्रथमोऽध्यायः

### प्रथम अभ्यास

कर्ता (प्रथमा) (—, ने)

संज्ञा-शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पुंलिङ्ग	देवः	देवी	देवाः
स्त्रीलिङ्ग	लता	लते	लताः
नपुंसकलिङ्ग	ज्ञानम्	ज्ञाने	ज्ञानानि

सर्वनाम शब्द

(पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग तथा नपुं० में एक समान)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अस्मद् (मैं)	अहम् (मैं)	आवाम् (हम दो)	वयम् (हम सब)
युष्मद् (तू)	त्वम् (तू)	युवाम् (तुम दो)	यूयम् (तुम सब)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तत् (वह) पुं०	सः	तौ	ते
स्त्री०	सा	ते	ताः
नपुं०	तत्	ते	तानि
इदम् (यह) पुं०	अयम्	इमौ	इमे
स्त्री०	इयम्	इमे	इमाः
नपुं०	इदम्	इमे	इमानि
किम् (कौन) पुं०	कः	कौ	के
स्त्री०	का	के	काः
नपुं०	किम्	के	कानि
यत् (जो) पुं०	यः	यौ	ये
स्त्री०	या	ये	याः
नपुं०	यत्	ये	यानि



## (१) भ्वादिगण

पठ्—(पढ़ना) परस्मैपद

वर्तमानकाल (लट्)\*

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु० पठति (वह पढ़ता है)	पठतः (वे दो पढ़ते हैं)	पठन्ति (वे पढ़ते हैं)
म० पु० पठसि (तू पढ़ता है)	पठथः (तुम दो पढ़ते हो)	पठथ (तुम पढ़ते हो)
उ० पु० पठामि (मैं पढ़ता हूँ)	पठावः (हम दो पढ़ते हैं)	पठामः (हम पढ़ते हैं)

## संक्षिप्त रूप

प्र० पु०	(सः)	अति	(तौ)	अतः	(ते)	अन्ति
म० पु०	(त्वम्)	असि	(युवाम्)	अथः	(यूयम्)	अथ
उ० पु०	(अहम्)	आमि	(आवाम्)	आवः	(वयम्)	आमः

## इसी प्रकार कुछ भ्वादिगणीय धातुएँ

धातु	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
भू (भव्)—होना	भवति	भवतः	भवन्ति
लिख्—लिखना	लिखति	लिखतः	लिखन्ति
वद्—बोलना	वदति	वदतः	वदन्ति
हस्—हँसना	हसति	हसतः	हसन्ति
धाव्—दौड़ना	धावति	धावतः	धावन्ति
रक्ष्—रक्षा करना	रक्षति	रक्षतः	रक्षन्ति
क्रीड्—खेलना	क्रीडति	क्रीडतः	क्रीडन्ति

\* (१) 'ति' 'सि' 'मि' और 'अन्ति' इनमें ह्रस्व 'इ' है, दीर्घ 'ई' मत लिखो। इन चारों ह्रस्व इकारों के बाद कभी विसर्ग (:) मत रखो। (२) तीनों पुरुषों के द्विवचन 'तः' 'थः' 'वः' में और उत्तम पुरुष बहुवचन के 'मः' में विसर्ग है, अन्यत्र नहीं।

गम्—जाना	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
आगम्—आना	आगच्छति	आगच्छतः	आगच्छन्ति
पत्—गिरना	पतति	पततः	पतन्ति
*नृत्—नाचना	नृत्यति	नृत्यतः	नृत्यन्ति

कर्ता—वाक्य में जिस व्यक्ति या वस्तु के विषय में कुछ कहा जाता है उसे कर्ता कहते हैं और वह प्रथमा विभक्ति में रखा जाता है। क्रिया का पुरुष और वचन कर्ता के अनुसार होते हैं।

### संस्कृत-अनुवाद

इन वाक्यों को ध्यान से देखो—

- (१) बालकः हसति (लड़का हँसता है)।
- (२) यूयं कुत्र गच्छथ (तुम कहाँ जाते हो) ?
- (३) आवाम् अत्र क्रीडावः (हम (दो) यहाँ खेलते हैं)।
- (४) भवन्तः कथं न पठन्ति (आप क्यों नहीं पढ़ते हैं) ?

प्रथम वाक्य में 'हसति' क्रिया का कार्य 'बालकः' करता है, द्वितीय में 'गच्छथ' क्रिया का कार्य 'यूयम्' करता है, तृतीय में 'क्रीडावः' क्रिया का कार्य 'आवाम्' करता है और चतुर्थ वाक्य में 'पठन्ति' क्रिया का कार्य 'भवन्तः' करता है। ये चारों 'बालकः', 'यूयम्', 'आवाम्' और 'भवन्तः' कर्ता हैं क्योंकि क्रिया के करने वाले को कर्ता कहते हैं।

प्रथम वाक्य में 'हसति' क्रिया प्रथम पुरुष के एकवचन में है और उसका कर्ता 'बालकः' भी प्रथम पुरुष के एकवचन में; द्वितीय वाक्य में 'गच्छथ' क्रिया मध्यम पुरुष के बहुवचन में है और उसका कर्ता 'यूयम्' भी मध्यम पुरुष के बहुवचन में; तृतीय वाक्य में 'क्रीडावः' क्रिया उत्तम पुरुष के द्विवचन में है, और उसका कर्ता 'आवाम्' भी उत्तम पुरुष के द्विवचन में; चतुर्थ वाक्य में 'पठन्ति' क्रिया प्रथम पुरुष के बहुवचन में है और उसका कर्ता 'भवन्तः' भी प्रथम पुरुष के बहुवचन में है।

इससे निष्कर्ष यह निकला कि संस्कृत भाषा से अनुवाद करने में यदि कर्ता प्रथम पुरुष का हो तो क्रिया भी प्रथम पुरुष की और यदि कर्ता मध्यम

\*नृत् (नृत्य) (नाचना)—दिवादिगणीय धातु है। इसके रूप भ्वादिगणीय धातुओं की भाँति चलते हैं, अतः इसे भ्वादिगणीय धातुओं के साथ रखा गया है।



पुरुष का हो तो क्रिया भी मध्यम पुरुष की और यदि कर्ता उत्तम पुरुष का हो तो क्रिया भी उत्तम पुरुष की होती है । इसके अतिरिक्त यदि कर्ता एकवचन में होता है तो क्रिया भी एकवचन में और कर्ता द्विवचन में होता है तो क्रिया भी द्विवचन में और कर्ता बहुवचन में होता है तो क्रिया भी बहुवचन में होती है । परन्तु भवान् (आप), भवन्ती, (आप दो), भवन्तः (आप सब) के साथ क्रिया मध्यम पुरुष की नहीं लगती, जैसे कि त्वम्, युवाम्, यूयम् के साथ लगती है । अतः 'भवान् गच्छसि' अशुद्ध है, 'भवान् गच्छति' ही शुद्ध वाक्य है । इसी प्रकार 'भवन्ती गच्छतः', 'भवन्तः गच्छन्ति' शुद्ध वाक्य हैं ।

'बालकः हसति' इसी वाक्य को हम 'हसति बालकः' इस तरह भी कह सकते हैं । यह प्रणाली संस्कृत भाषा की अपनी विशेषता है, क्योंकि इसमें विकारी शब्दों का बाहुल्य है । अंगरेजी भाषा के वाक्य में पहले कर्ता, फिर क्रिया और अन्त में कर्म आता है ; हिन्दी में पहले कर्ता, फिर कर्म और अन्त में क्रिया आती है; किन्तु संस्कृत में कर्ता, कर्म और क्रिया आगे-पीछे भी रखे जा सकते हैं, यथा—

भवान् कुत्र गच्छति ? (आप कहाँ जाते हैं), अथवा—कुत्र गच्छति भवान् ?

इन वाक्यों में क्रिया कर्ता के अनुसार है, अतः इन वाक्यों को कर्तृवाच्य कहते हैं ।

### संस्कृत में अनुवाद करो—

(क) १—गोपाल खेलता है । २—शकुन्तला हँसती है । ३—केशव धीरे-धीरे लिखता है । ४—बन्दर (वानराः) दौड़ते हैं । ५—हाथी (गजाः) यहाँ आते हैं । ६—घोड़े (अश्वाः) कहाँ जाते हैं ? ७—पत्ते (पत्राणि) और फल गिरते हैं । ८—सुशीला क्या पढ़ती है ? ९—रमेश और सुरेश खेलते हैं । १०—लड़के आते हैं और लड़कियाँ जाती हैं ।

(ख) ११—वह जोर से (उच्चैः) हँसता है । १२—वे कहाँ जाते हैं ? १३—तू कहाँ जाता है ? १४—आप (भवन्तः) क्यों हँसते हैं ? १५—तुम कहाँ जाते हो ? १६—हम यहाँ नहीं खेल रहे हैं । १७—तुम इस प्रकार क्यों दौड़ते हो ? १८—तुम दो क्यों नहीं खेलते हो ? १९—वे अब क्यों नहीं पढ़ते हैं ? २०—मैं इस समय नहीं खेलता हूँ । २१—वे अवश्य पढ़ते हैं । २२—हम सब अलग-अलग (पृथक्) पढ़ते हैं । २३—वह वैसे ही नाचती है । २४—आप यहाँ क्यों नहीं आते ? २५—तुम सब पढ़कर (पठित्वा) खेलते हो ।

## द्वितीय अभ्यास

अनद्यतन भूत (लङ्)\*

एकवचन

द्विवचन

बहुवचन

प्र० पु० अपठन् (उसने पढ़ा)	अपठताम् (उन दो ने पढ़ा)	अपठन् (उन्होंने पढ़ा)
म० पु० अपठः (तूने पढ़ा)	अपठतम् (तुम दो ने पढ़ा)	अपठत (तुमने पढ़ा)
उ० पु० अपठम् (मैंने पढ़ा)	अपठाव (हम दो ने पढ़ा)	अपठाम (हमने पढ़ा)

संक्षिप्त रूप

एकवचन

द्विवचन

बहुवचन

प्र० पु० (सः) अन्	(तौ) अताम्	(ते) अन्
म० पु० (त्वम्) अः	(युवाम्) अतम्	(यूयम्) अत
उ० पु० (अहम्) अम्	(आवाम्) आव	(वयम्) आम

इसी प्रकार

लिख्—लिखना	अलिखत्	अलिखताम्	अलिखन्
वद्—कहना	अवदन्	अवदताम्	अवदन्
हस्—हँसना	अहसत्	अहमताम्	अहसन्
धाव्—दौड़ना	अधावत्	अधावताम्	अधावन्
रक्ष्—रक्षा करना	अरक्षत्	अरक्षताम्	अरक्षन्
क्रीड्—खेलना	अक्रीडत्	अक्रीडताम्	अक्रीडन्
गम्—जाना	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
आगम्—आना	आगच्छत्	आगच्छताम्	आगच्छन्
पत्—गिरना	अपतत्	अपतताम्	अपतन्
नृत्—नाचना(दि०)	अनृत्यत्	अनृत्यताम्	अनृत्यन्
भू (भव्)—होना	अभवत्	अभवताम्	अभवन्

भूतकाल—संस्कृत भाषा में भूतकाल के सूचक तीन लकार हैं—लिट् (परोक्षभूत), लङ् (अनद्यतन भूत) और लुङ् (सामान्य भूत)। संस्कृत व्याकरण में इन तीनों में अन्तर माना गया है। परोक्षभूत—अर्थात् वह वात जो

\*अनद्यतन भूत (लङ्) में केवल मध्यम पुरुष के एकवचन में विसर्ग (:) होता है, और कहीं नहीं। हल् अक्षरों का पाँच स्थानों पर ध्यान रखो, जैसे—‘अपठत्’ में त् हलन्त अक्षर है।



आँख के सामने की न हो, एक प्रकार से ऐतिहासिक हो, उसमें लिट् होता है। जैसे—‘रामो राजा बभूव’ (राम राजा हुए)। अनद्यतन भूत—जो बात आज की न हो पिछले दिन की हो, उसमें लङ् होता है। जैसे ‘देवदत्तः ह्यः काशीमगच्छत्’ (देवदत्त कल काशी गया)। इस प्रकार व्याकरण की दृष्टि से ‘रमा अद्य प्रातः पुस्तकमपठत्’ (रमा ने आज सुबह पुस्तक पढ़ी) अशुद्ध वाक्य है। इस वाक्य के स्थान में ‘रमा अद्य प्रातः पुस्तकमपाठीत्’ शुद्ध वाक्य है किन्तु व्यवहार में यह भेद नहीं रह गया है। लङ् और लुङ् का किसी भेद के बिना प्रयोग किया जा रहा है, बल्कि लङ् का भूतकाल में प्रायः प्रयोग होता है।

भूतकाल के ‘लङ्’ का प्रयोग करते समय छात्र प्रायः भूल करते हैं। वे ‘उसने पढ़ा’ का अनुवाद ‘तेन अपठत्’ कर देते हैं। यहाँ पर ‘उसने’ का अनुवाद ‘सः’ होगा, क्योंकि प्रथमा विभक्ति का अर्थ भी ‘ने’ है, अतः इस वाक्य का अनुवाद ‘सः अपठत्’ होगा; इसी प्रकार कुछ अन्य उदाहरण—

१. शीला अपठत् (शीला ने पढ़ा)। २. तौ अवदताम् (उन दो ने कहा)।
३. ते अहसन् (वे हँसे)। ४. अहम् अघावम् (मैं दौड़ा)। ५. युवाम् अक्रीडतम् (तुम दो खेले)।

### संस्कृत में अनुवाद करो

- (क) १. बन्दर आया। २. लड़के दौड़े। ३. रमेश ने आज नहीं पढ़ा। ४. सोहन और श्याम वहाँ खेले। ५. गोपाल यहाँ क्यों नहीं आया? ६. देवेन्द्र कहाँ खेला? ७. पिता जी कल आये। ८. हम नहीं हँसे। ९. इस समय सोहन कहाँ गया? १०. कमला ने कल सायंकाल नहीं पढ़ा। ११. हाथी और घोड़े दौड़े। १२. छात्रों ने क्यों नहीं पढ़ा? १३. ईश्वर ने रक्षा की। १४. गुरु जी क्यों हँसे? १५. साधु ने क्या कहा?

- (ख) १६. वे क्यों नहीं खेले? १७. तुम क्यों हँसे? १८. तूने क्या कहा? १९. हमने कुछ नहीं (किमपि न) पढ़ा। २०. तूने ऐसा क्यों लिखा? २१. शीला नहीं नाची। २२. वे दो कहाँ गये? २३. वे क्यों हँसे? २४. तुमने क्या पढ़ा? २५. क्या वह हँसी थी?

### तृतीय अभ्यास

#### सामान्य भविष्यत् (लृट्)

- प्र० पु० पठिष्यति (वह पढ़ेगा) पठिष्यतः (वे दो पढ़ेंगे) पठिष्यन्ति (वे पढ़ेंगे)  
 म० पु० पठिष्यसि (तू पढ़ेगा) पठिष्यथः (तुम दो पढ़ोगे) पठिष्यथ (तुम पढ़ोगे)  
 उ० पु० पठिष्यामि (मैं पढ़ूँगा) पठिष्यावः (हम दो पढ़ेंगे) पठिष्यामः (हम पढ़ेंगे)

संक्षिप्त रूप

प्र० पु०	(सः) इष्यति	(तौ) इष्यतः	(ते) इष्यन्ति
म० पु०	(त्वम्) इष्यसि	(युवाम्) इष्यथः	(यूयम्) इष्यथ
उ० पु०	(अहम्) इष्यामि	(आवाम्) इष्यावः	(वयम्) इष्यामः

इसी प्रकार—

धातु	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लिख्—लिखना	लेखिष्यति	लेखिष्यतः	लेखिष्यन्ति
वद्—कहना	वदिष्यति	वदिष्यतः	वदिष्यन्ति
हस्—हँसना	हसिष्यति	हसिष्यतः	हसिष्यन्ति
धाव्—दौड़ना	धाविष्यति	धाविष्यतः	धाविष्यन्ति
रक्ष्—रक्षा करना	रक्षिष्यति	रक्षिष्यतः	रक्षिष्यन्ति
क्रीड्—खेलना	क्रीडिष्यति	क्रीडिष्यतः	क्रीडिष्यन्ति
गम्—जाना	गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
आगम्—आना	आगमिष्यति	आगमिष्यतः	आगमिष्यन्ति
पत्—गिरना	पतिष्यति	पतिष्यतः	पतिष्यन्ति
नृत्—नाचना (दि०)	नतिष्यति	नतिष्यतः	नतिष्यन्ति
भू (भव्)—होना	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति

भविष्यत् काल—भविष्यत् काल के सूचक दो लकार हैं—लृट् (सामान्य भविष्यत्) और लुट् (अनद्यतन भविष्यत्) । यह अन्तर भी व्यवहार में नहीं रह गया है । लुट् का प्रयोग बहुत कम देखने में आता है, केवल लृट् का ही प्रयोग होता है ।

लृट् बनाने का सरल ढंग यह है कि शुद्ध धातु पर 'इ' \*लगाकर आगे 'ष्य' रखो और फिर वर्तमान काल की भांति 'ति' 'तः' 'न्ति' आदि प्रत्यय जोड़ दो ।

उदाहरणार्थ—

१. देवः पठिष्यति (देव पढ़ेगा) २. वानराः घाविष्यन्ति (वानर दौड़ेगे) ।
३. पत्राणि पतिष्यन्ति (पत्ते गिरेगे) । ४. त्वं कदा गमिष्यसि ? (तू कब जायगा ?)
५. वयं क्रीडिष्यामः (हम खेलेगे) । ६. के लेखिष्यतः (कौन दो लिखेंगे ?)

\*कुछ ऐसी भी धातुएँ हैं जिनमें 'इ' नहीं लगता, ऐसी दशा में शुद्ध धातु के आगे 'स्यति', 'स्यतः', 'स्यन्ति' लगेंगे; पा—पास्यति (पीयेगा), वत्स्यति (वास करेगा), दास्यति (देगा) आदि । ये अनिट् धातु कहलाती हैं ।



## संस्कृत में अनुवाद करो—

(क) १. गोविन्द कल आयेगा । २. श्यामा यहाँ नाचेगी । ३. हरि कल वहाँ दौड़ेगा । ४. घोड़े नहीं दौड़ेंगे । ५. लड़कियाँ जरूर नाचेंगी । ६. रमेश सुबह पढ़ेगा । ७. ईश्वर रक्षा करेगा । ८. पके हुए (पक्वानि) फल गिरेंगे । ९. कमला नहीं हँसेगी । १०. छात्र शाम को खेलेंगे । ११. हाथी यहाँ आयेंगे । १२. दो छात्र यहाँ पढ़ेंगे । १३. रजनी कब नाचेगी ? १४. दो ब्राह्मण यहाँ आयेंगे । १५. मेहमान (अतिथयः) कल जायेंगे ।

(ख) १६. तुम कब जाओगे ? १७. मैं नहीं दौड़ूँगा । १८. तुम दो कब आओगे ? १९. वे क्यों हँसेंगे ? २०. मैं यहीं पढ़ूँगा । २१. हम नहीं जायेंगे । २२. वे कब नाचेंगी ? २३. तुम सब वहाँ खेलोगे । २४. क्या आप यहाँ नहीं आयेंगे ? २५. राजा (नृपः) रक्षा करेगा ।

## चतुर्थ अभ्यास

## आज्ञायक लोट्

एकवचन			द्विवचन		बहुवचन	
प्र० पु०	पठतु (वह पढ़े)		पठताम् (वे दो पढ़ें)		पठन्तु (वे पढ़ें)	
म० पु०	पठ (तू पढ़)		पठतम् (तुम दो पढ़ो)		पठत (तुम पढ़ो)	
उ० पु०	पठानि (मैं पढ़ूँ)		पठाव (हम दो पढ़ें)		पठाम (हम पढ़ें)	
			संक्षिप्त रूप			
प्र० पु०	(सः)	अतु	(तौ)	अताम्	(ते)	अन्तु
म० पु०	(त्वम्)	अ	(युवाम्)	अतम्	(यूयम्)	अत
उ० पु०	(अहम्)	आनि	(आवाम्)	आव	(वयम्)	आम

## इसी प्रकार

लिख्—लिखना	लिखतु	लिखताम्	लिखन्तु
वद्—कहना	वदतु	वदताम्	वदन्तु
हस्—हँसना	हसतु	हसताम्	हसन्तु
धाव्—दौड़ना	धावतु	धावताम्	धावन्तु
रक्ष्—रक्षा करना	रक्षतु	रक्षताम्	रक्षन्तु
क्रीड्—खेलना	क्रीडतु	क्रीडताम्	क्रीडन्तु
गम्—जाना	गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु

आगम्—आना	आगच्छतु	आगच्छताम्	आगच्छन्तु
पत्—गिरना	पततु	पतताम्	पतन्तु
नृत्-नाचना (दि०)	नृत्यतु	नृत्यताम्	नृत्यन्तु
भू (भव्)—होना	भवतु	भवताम्	भवन्तु

आज्ञार्थक लोट्—विचिलिङ् और लोट् लकार आज्ञा, अनुज्ञा तथा प्रार्थना आदि अर्थों के सूचक हैं। आशीर्वाद के अर्थ में भी लोट् का प्रयोग होता है।

### उदाहरण

१—सुशीला गच्छतु (सुशीला जाये)। २—छात्राः क्रीडन्तु (विद्यार्थी खेलें)। ३—परमात्मा रक्षतु (ईश्वर रक्षा करे)। ४—यूयम् गच्छत (तुम जाओ)। ५—बालिकाः नृत्यन्तु (लड़कियाँ नाचें)। ६—गच्छाम किम् ? (क्या हम जावें ?)। ७—इदानीं छात्राः पठन्तु (इस समय छात्र पढ़ें)।  
(विशेष अध्ययन के लिए आगे क्रिया-प्रकरण देखिये।)

### संस्कृत में अनुवाद करो

१—गोपाल और कृष्ण पढ़ें। २—नौकर (सेवकः) जाये। ३—लड़के दौड़ें। ४—भगवान् क्षमा करे। ५—मैं जाऊँ ? ६—हम खेलें ? ७—वे न हँसें। ८—अब आप खेलें। ९—तुम लोग पढ़ो। १०—हम दो पढ़ें ? ११—तुम दो मत हँसो। १२—तुम सब दौड़ो। १३—नर्तकियाँ (नर्तक्यः) नाचें। १४—क्यों हँसते हो ? १५—यहाँ आओ। १६—वहाँ न जाओ। १७—दौड़ो मत। १८—हँसो मत। १९—पढ़ो। २०—आओ, नाचो। २१—अब खेलो मत, पढ़ो। २२—सब छात्र पढ़ें। २३—तुम वहाँ जाओ। २४—दो छात्र दौड़ें।

### पञ्चम अभ्यास

### कर्म कारक (द्वितीया) 'को'

#### संज्ञा शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पुं०	देवम्	देवौ	देवान्
स्त्री०	लताम्	लते	लताः
नपुं०	ज्ञानम्	ज्ञाने	ज्ञानानि



## पुंलिंग

## स्त्रीलिंग

शब्द—	एकव०	द्वि०	बहुव०	एकव०	द्वि०	बहुव०
अस्मद्—	माम्	आवाम्	अस्मान्	माम्	आवाम्	अस्मान्
युष्मद्—	त्वाम्	युवाम्	युष्मान्	त्वाम्	युवाम्	युष्मान्
तद्—	तम्	तौ	तान्	ताम्	ते	ताः
इदम्—	इमम्	इमौ	इमान्	इमाम्	इमे	इमाः
किम्—	कम्	कौ	कान्	काम्	के	काः
यद्—	यम्	यौ	यान्	याम्	ये	याः
भवत्—	भवन्तम्	भवन्तौ	भवतः	भवतीम्	भवत्या	भवन्तीः

## विधिलिङ्

	एकव०	द्विव०	बहुव०
प्र० पु०	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
म० पु०	पठेः	पठेतम्	पठेत
उ० पु०	पठेयम्	पठेव	पठेम

## संक्षिप्त रूप

	(सः)	एत्	(तौ)	एताम्	(ते)	एयुः
प्र० पु०	(त्वम्)	एः	(युवाम्)	एतम्	(युयम्)	एत
म० पु०	(अहम्)	एयम्	(आवाम्)	एव	(वयम्)	एम
उ० पु०						

भू(भव्)—होना	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
लिख्—लिखना	लिखेत्	लिखेताम्	लिखेयुः
वद्—कहना	वदेत्	वदेताम्	वदेयुः
हस्—हँसना	हसेत्	हसेताम्	हमेयुः
धाव्—दौड़ना	धावेत्	धावेताम्	धावेयुः
रक्ष्—रक्षा करना	रक्षेत्	रक्षेताम्	रक्षेयुः
क्रीड्—खेलना	क्रीडेत्	क्रीडेताम्	क्रीडेयुः
गम्—जाना	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः
आगम्—आना	आगच्छेत्	आगच्छेताम्	आगच्छेयुः
पत्—गिरना	पतेत्	पतेताम्	पतेयुः
नृत्—नाचना(दि०)	नृत्येत्	नृत्येताम्	नृत्येयुः

इन वाक्यों को ध्यान से देखो—

- (१) छात्राः गुरुं नमेषुः (छात्र गुरु को प्रणाम करें) ।
- (२) शिशुः दुग्धं पिबेत् (बच्चा दूध पीये) ।
- (३) सुधाकरः सुधां वर्षेत् (चन्द्रमा अमृत की वर्षा करे) ।
- (४) नृपः शत्रुं जयेत् (राजा शत्रु को जीते) ।
- (५) गुरुः शिष्यं प्रश्नं पृच्छेत् (गुरु शिष्य से प्रश्न पूछे) ।

### कर्म

जिस वस्तु या पुरुष के ऊपर क्रिया का फल (प्रभाव) समाप्त होता है उसे कर्म कारक कहते हैं और कर्म कारक में द्वितीया विभक्ति होती है (कर्मणि द्वितीया) ।

“नृपः शत्रुं जयेत् (राजा शत्रु को जीते) । इस वाक्य में ‘जीतना’ क्रिया का फल ‘नृपः (राजा)’ कर्ता पर समाप्त न होकर ‘शत्रु’ पर समाप्त हुआ, क्योंकि शत्रु ही जीता जाएगा । अतः ‘शत्रु’ कर्म कारक हुआ और उसमें द्वितीया विभक्ति (शत्रुम्) हुई । जब क्रिया का व्यापार कर्ता पर ही समाप्त हो जाता है, तब क्रिया अकर्मक होती है । जैसे ‘बालकः हसति’ इस वाक्य में ‘हँसने’ का व्यापार कर्ता तक ही समाप्त हो जाना है, अतः ‘हसति’ अकर्मक क्रिया का रूप है ।

कर्म का उपर्युक्त लक्षण ठीक नहीं, क्योंकि साहित्य में ऐसे अनेक उदाहरण हैं जिन पर क्रिया का फल तो समाप्त होता है, पर वे कर्मकारक नहीं माने जाते । “वह घर जाता है” यहाँ यद्यपि जाने का कार्य ‘घर’ पर समाप्त होता है तथापि ‘घर’ प्रायः कर्म नहीं माना जाता है और न ‘जाना’ ही सकर्मक क्रिया है । घर को कर्म मानने के लिए विशेष नियम है । पाणिनि के अनुसार कर्म की यह परिभाषा है—“कर्ता सबसे अधिक जिस पदार्थ को चाहता है वह कर्म है ।” (कर्तुरीप्सिततमं कर्म) । यथा—पयसा ओदनं भुङ्क्ते (दूध से भात खाता है); यहाँ दूध की अपेक्षा भात कर्ता को अधिक पसन्द है ।

### उपपद विभक्तियाँ

कर्ता, कर्म, करण आदि कारकों से प्रथमा, द्वितीया, तृतीया आदि विभक्तियों का निर्देश होता है, किन्तु ये विभक्तियाँ वाक्य में प्रति, विना, अन्तरा, सह आदि निपातों तथा नमः, स्वाहा, अलम् आदि अवयवों के योग से भी व्यवहृत होती हैं । ऐसी दशा में ये “उपपद विभक्तियाँ” कहलाती हैं । उपपद विभक्तियों के उदाहरण—



(१) अन्तरा, अन्तरेण और विना के साथ द्वितीया होती है (अन्तरान्तरेण युक्ते) यथा—

(अन्तरा) गंगां यमुनां चान्तरा प्रयागराजः अस्ति (गङ्गा और यमुना के बीच में प्रयागराज है) ।

(अन्तरेण) ज्ञानमन्तरेण (ज्ञानं विना वा) नैव मुखम् (ज्ञान के विना सुख नहीं है) ।

(२) अभितः, परितः, समया, निकषा, हा, प्रति, अनु और यावन् के साथ द्वितीया विभक्ति होती है । यथा—

(अभितः) प्रयागम् अभितः नद्यौ वहनः (प्रयाग के दोनों ओर नदियाँ बहती हैं) ।

(समया, निकषा) वनं समया निकषा वा सरः वर्तते (वन के समीप एक तालाब है) ।

(प्रति) दीनं प्रति दयां कुरु (दीन पर दया करो) ।

(हा) हा नास्तिकं यः ईश्वरं न मन्यते (नास्तिक पर शोक है कि वह ईश्वर को नहीं मानता) ।

(अनु) स्वामिनमनु सेवकः गच्छति (स्वामी के पीछे सेवक जाता है) ।

(यावन्) स वनं यावन् गच्छति (वह वन तक जाता है) ।

(ः) गत्यर्थक (जाना, चलना आदि) धातुओं के साथ द्वितीया होती है ।

यथा—

कृषकः ग्रामं गच्छति (किसान गाँव जाना है) । सिंहः वनं विचरति (सिंह वन में घूमता है) ।

(४) अधिशीङ्, अधिस्था, अध्याम् धातुओं के साथ द्वितीया होती है (अधिशीङ्स्थासां कर्म) । यथा—

शिष्यः आसनम् अधिनिष्ठति, अध्यास्ते, अधिशेते वा (शिष्य आसन पर बैठता है या सोता है) ।

\* (५) उभयतः, सर्वतः, धिक्, उपर्युपरि, अधोऽधः, अध्यधि के साथ द्वितीया होती है । यथा—

\* उभयसर्वतमोः कार्या धिगुपर्यादिषु त्रिषु ।

द्वितीयाम्नेडितान्तेषु ततोऽन्यत्रापि दृश्यते ॥

नगरमुभयतः सर्वतः वा वनम् । (नगर के दोनों ओर या चारों ओर वन है) । धिक् नास्तिकं यः ईश्वरलीलां न पश्यति (नास्तिक को धिक्कार है जो ईश्वर की लीला को नहीं देखता) । उपर्युपरि लोकं हरिः (हरि लोक के ठीक ऊपर है) । अधोऽधः लोकं पातालः (पाताल लोक के ठीक नीचे है) ।

(६) समय और स्थानवाची शब्दों में द्वितीया होती है, यदि अन्त तक पूरे काल या मार्ग का ज्ञान हो (कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे) । यथा—रमेशः पञ्च वर्षाणि अधीते (रमेश पूरे पाँच वर्षों तक पढ़ता है) । क्रोश गोमती नदी (गोमती नदी पूरे एक कोस की दूरी पर है) ।

(७) एनप् प्रत्ययान्त शब्द की जिमसे निकटता प्रतीत होती है, उसमें द्वितीया या षष्ठी होती है (एनपा द्वितीया) । जैसे—नगरं नगरस्य वा दक्षिणेन (नगर के दक्षिण की ओर); उत्तरेण यमुनाम् (यमुना के उत्तर) । तत्रागारं घनपतिगृहानुत्तरेणास्मदीयम् (वहाँ पर कुवेर के महलों के उत्तर में मेरा घर है) ।

द्विकर्मक धातुएँ—“गोपः गां पयः दोग्धि” (ग्वाला गाय से दूध दुहता है) । ‘गाय मे’ का अनुवाद पञ्चमी विभक्ति (गोः) द्वारा होना चाहिए था, किन्तु दुह् धातु का प्रयोग होने से पञ्चमी न होकर द्वितीया (गाम्) हो जाती है । इसी प्रकार निम्न १६ धातुएँ तथा इनके अर्थवाली धातुएँ द्विकर्मक हैं—

१—दुह् (दोहना) गोपः गां पयः दोग्धि (ग्वाला गाय से दूध दुहता है) ।

२—याच् (माँगना) दरिद्रः राजान वस्त्रं याचते (दरिद्र राजा से वस्त्र माँगता है) ।

३—पच् (पकाना) सः तण्डुलान् ओदनं पचति (वह चावलों से भात पकाता है) ।

४—दण्ड् (सजा देना) राजा चौरं शतं दण्डयति (राजा चोर को सौ रुपये जुर्माना करता है) ।

५—रुध् (रोकना) व्रजमवरुणद्वि गाम् (वह व्रज में गाय को रोकता है) ।

६—प्रच्छ् (पूछना) मुनिं मार्गं पृच्छति (मुनि से मार्ग पूछता है) ।

७—चि (बटोरना) लतां चिनोति पुष्पाणि (बेल से फूल चुनता है) ।

८—ब्रू (बोलना) शिष्यं धर्मं ब्रूते (शिष्य के लिए धर्म कहता है) ।

९—शास् (शासन करना) गुरुः शिष्यं धर्मं शास्ति (गुरु शिष्य को धर्म से बात बताता है) ।



१०—जि (जीतना) शत्रुं शतं जयति (शत्रु से सौ रूपये जीतना है) ।

११—मन्थ् (मथना) क्षीरसागरममृतं मथन्ति (क्षीरसागर में अमृत मथते हैं) ।

१२—मुष् (चुराना) चौरः राजानं सहस्रं मुष्णाति (चोर राजा के हजार रूपये चुराता है) ।

१३—१४—नी, वह् (ले जाना) सः ग्राममजां नयति वहति वा (वह गाँव को बकरी ले जाता है) ।

१५—ह् (चुराना) चौरः कृपणं धनमहरत् (चोर कंजूस का धन ले गया) ।

१६—कृष् (खोदना) नराः वसुधां रत्नानि कर्षन्ति (लोग जमीन से रत्न निकालते हैं) ।

### संस्कृत में अनुवाद करो—

१—अलकनंदा तथा भागीरथी के बीच में देवप्रयाग है । २—मैं पत्र लिखता हूँ । ३—ग्राम के दोनों ओर वन हैं । ४—ज्ञान के बिना सुख नहीं होता । ५—शकुन्तला ने पत्र लिखा । ६—सदा सच बोलना चाहिए । ७—छात्र दस वर्षों तक अध्ययन करता है (अधीते) । ८—सीता कोम भर चलती है । ९—नगर के नीचे-नीचे जल है । १०—विद्यालय के चारों ओर फूल हैं (सन्ति) । ११—नगर और विद्यालय के बीच में (अन्तरा) तालाब है । १२—सोहन घर को कब जायगा ? १३—गुरु के पास शिष्य बैठा है । १४—राजा चोर को दण्ड देता है । १५—दुर्जन सज्जन को दुःख देता है । १६—विद्या धर्म की ओर जाती है । १७—परिश्रम के बिना विद्या नहीं होती है । १८—सिपाही (राजपुरुषः) वन तक (यावत्) चोर का पीछा करता है । १९—मेरा गाँव काशी के समीप है । २०—हम ईश्वर को नमस्कार करते हैं (नमस्कुर्मः) ।

### षष्ठ अभ्यास

करण कारक (तृतीया)—ने, से, द्वारा

संज्ञा-शब्द

	एकव०	द्विव०	बहुव०
पुं०	देवेन	देवाभ्याम्	देवैः
स्त्री०	लतया	लताभ्याम्	लताभिः
नपुं०	ज्ञानेन	ज्ञानाभ्याम्	ज्ञानैः

पुंल्लिङ्ग			स्त्रीलिङ्ग		
एकव०	द्विव०	बहुव०	एकव०	द्विव०	बहुव०
मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
तेन	ताभ्याम्	तैः	तया	ताभ्याम्	ताभिः
अनेन	आभ्याम्	एभिः	अनया	आभ्याम्	आभिः
केन	काभ्याम्	कैः	कया	काभ्याम्	काभिः
येन	याभ्याम्	यैः	यया	याभ्याम्	याभिः
भवता	भवद्भ्याम्	भवद्भिः	भवत्या	भवतीभ्याम्	भवतीभिः

अदादिगण

अस् (होना) परस्मैपद

वर्तमान (लट्)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अस्ति (वह है)	स्तः (वे दो हैं)	सन्ति (वे हैं)
म० पु०	असि (तू है)	स्थः (तुम दो हो)	स्थ (तुम हो)
उ० पु०	अस्मि (मैं हैं)	स्वः (हम दो हैं)	स्मः (हम हैं)

अनद्यतन भूत (लङ्)

प्र० पु०	आसीत् (वह था)	आस्ताम् (वे दो थे)	आसन् (वे थे)
म० पु०	आसीः (तू था)	आस्तम् (तुम दो थे)	आस्त (तुम थे)
उ० पु०	आसम् (मैं था)	आस्व (हम दो थे)	आस्म (हम थे)

आज्ञार्थक (लोट्)

प्र० पु०	अस्तु	स्ताम्	सन्तु
म० पु०	एधि	स्तम्	स्त
उ० पु०	असानि	असाव	असाम

भविष्यत् (लट्) — भविष्यति भविष्यतः भविष्यन्ति आदि ।

विधिलिङ्

प्र० पु०	स्यात्	स्याताम्	स्युः
म० पु०	स्याः	स्यातम्	स्यात
उ० पु०	स्याम्	स्याव	स्याम



## हन् (मारना) वर्तमान (लट्)

प्र० पु०	हन्ति	हतः	घनन्ति
म० पु०	हसि	हयः	हय
उ० पु०	हन्मि	हन्वः	हन्मः

## अनद्यतन भूत (लङ्)

प्र० पु०	अहन्	अहताम्	अघ्नन्
म० पु०	अहन्	अहतम्	अहत
उ० पु०	अहनम्	अहन्व	अहन्म

## आज्ञार्थक (लोट्)

## विधिलिङ्

हन्तु	हताम्	घनन्तु	प्र० पु०	हन्यात्	हन्याताम्	हन्युः
जहि	हतम्	हत	म० पु०	हन्याः	हन्यातम्	हन्यात
हनानि	हनाव	हनाम	उ० पु०	हन्याम्	हन्याव	हन्याम

भविष्यत् (लृट्)—हनिष्यति हनिष्यतः हनिष्यन्ति आदि ।

## अदादिगणीय कुछ धातुएँ

	लट्	लङ्	लृट्	लोट्	विधिलिङ्
अद्—खाना	अत्ति	आदत्	अत्स्यति	अत्तु	अद्यात्
या—जाना	याति	अयात्	याम्यति	यातु	यायात्
स्ना—नहाना	स्नाति	अस्नात्	स्नास्यति	स्नातु	स्नायात्
भा—चमकना	भाति	अभात्	भास्यति	भातु	भायात्
रुद्—रोना	रोदति	अरोदीत्	रोदिष्यति	रोदितु	रुद्यात्
दुह्—दोहना	दोग्धि	अधोक्	धोक्ष्यति	दोग्धु	दुह्यात्

इन वाक्यों को ध्यान से देखो—

- (१) गोपालः जलेन मुखं प्रक्षालयति (गोपाल पानी से मुँह धोता है) ।
- (२) सेवकः स्कन्धेन भारं वहति (नौकर कन्धे पर भार ले जाता है) ।
- (३) शशिना सह याति कौमुदी (चाँदनी चाँद के साथ जाती है) ।
- (४) कुम्भकारः दण्डेन चक्रं चालयति (कुम्हार डंडे से चक्र चलाता है) ।
- (५) स्वर्णकारः स्वर्णेन अलङ्कारान् निर्माति (मुनार सोने से गहने बनाता है) ।
- (६) गोपालः अध्ययनेन अत्र वसति (गोपाल अध्ययन के लिए यहाँ रहता है) ।

करण कारक (तृतीया)—क्रिया की सिद्धि में जो अत्यन्त सहायक होता है उसे करण कहते हैं (साधकतमं करणम्)। करण में तृतीया विभक्ति होती है और कर्मवाच्य या भाववाच्य के कर्त्ता में भी तृतीया होती है (कर्तृकरणयो-स्तृतीया)। ऊपर के उदाहरण में (जलेन प्रक्षालयति) धोने में 'जल' अत्यन्त सहायक है, अतः उसमें 'तृतीया' विभक्ति हुई है। माधारण रूप से तो मुँह धोने में गोपाल अपने हाथ तथा जलपात्र दोनों की सहायता लेता है, हाथ न लगावेगा तो मुँह किस प्रकार धो सकेगा तथा जलपात्र न होगा तो जल किसमें रखेगा? अतः यह मानी हुई बात है कि गोपाल मुँह धोने में हाथ और जलपात्र की सहायता लेता है; किन्तु मुँह धोने में सबसे अधिक आवश्यकता पानी की है, अतः यहाँ अधिक सहायक हुआ कर्मवाच्य एवं भाववाच्य के कर्त्ता में तृतीया होती है, यथा—(कर्मवाच्य)—मया पुस्तकं पठ्यते। (भाववाच्य)—तेन हस्यते। इनका विस्तृत वर्णन द्वितीय अध्याय के पञ्चदश अभ्यास में दिया गया है।

'कर्मकारक' में बताया गया है कि 'मह, साकम्' आदि निपातों तथा अव्ययों के योग में भी ये विभक्तियाँ व्यवहृत होती हैं। अतः ये उपपद विभक्तियाँ कहलाती हैं। इनके कुछ उदाहरण यहाँ दिये जा रहे हैं—

१—जिस लक्षण (चिह्न) से किसी व्यक्ति या वस्तु का ज्ञान होता है, उस लक्षणबोधक शब्द में तृतीया विभक्ति होती है (इत्थभूतलक्षणे); यथा—जटाभिस्तापसः (जटा से तपस्वी ज्ञान होता है), स्वरेण रामभद्रमनुहरति (स्वर में राम के समान है)।

२—यदि शरीर में किसी अंग में विकृति दिखाई पड़े तो विकृत अंग के वाचक शब्द में तृतीया विभक्ति होती है (येनाङ्गविकारः), यथा नेत्रेण कारणः (आँख से काना), कर्णेन बधिरः (कान से बहरा)।

३—कारण (हेतु) बोधक शब्दों में तृतीया होती है, यथा—सः अध्ययनेन वसति (वह पढ़ने के लिए रहता है)। विद्यया यशः भवति (विद्या से यश होता है)। वास का हेतु 'अध्ययन' और यश का हेतु 'विद्या' है। गुरौः आत्मसदृशी कन्यामुद्वहेत् (गुरों में अपने समान कन्या से विवाह करे)। सीता वीणावादनेन शीलामतिशेते (सीता वीणा बजाने में शीला से बढ़ गयी है)। सा श्रियमपि रूपेणातिक्रामति (वह सुन्दरता में लक्ष्मी से भी बढ़ चढ़ कर है)।



४—पृथक् (अलग), विना, नाना शब्दों के साथ द्वितीया, तृतीया तथा पञ्चमी, विभक्तियों में से कोई एक हो सकती है (पृथग्विनानानाभिस्तृतीया-न्यतरम्याम्) । जैसे—दशरथो रामेण, रामान्, रामं वा विना नाजीवत् । कौरवाः पाण्डवेभ्यः पृथगवसन् । विना या वज्रं अर्थ के होने पर ही नाना के योग में द्वितीया, तृतीया या पञ्चमी होती है । जैसे—नाना नारी निष्फला लोकयात्रा (स्त्री के विना जीवन निष्फल है) ।

५—प्रकृति (स्वभाव) आदि क्रियाविशेषण शब्दों में तृतीया विभक्ति होती है (प्रकृत्यादिभ्यः उपसंख्यानम्) । यथा—मोहनः सुखेन जीवति (मोहन सुख से रहता है) । प्रकृत्या गवां पयः मधुरम् (स्वभावतः गौओं का दूध मीठा होता है) । स स्वभावेन कोमलः (वह स्वभाव से प्रिय है) ।

६—किम्, कार्यम्, अर्थः, प्रयोजनम् और अलम् के साथ तृतीया होती है । यथा—धनेन किम् (धन से क्या ?), तृणेन अपि कार्यं भवति (तिनके से भी कार्य होता है), कोऽर्थः पुत्रेण जातेन यो न विद्वान् न धार्मिकः (उस पुत्र के पैदा होने से क्या लाभ, जो न विद्वान् हो और न धार्मिक हो) ? मूर्खाणां किं पुस्तकैः प्रयोजनम् (मूर्खों का पुस्तकों से क्या प्रयोजन) ? अलं हसितेन (हँसो मत) ।

७—मह, सकम्, सार्धम्, समम् के साथ वाले शब्दों में तृतीया विभक्ति होती है (सहयुक्तेऽप्रधाने) । यथा—शिष्यः गुरुणा सह विद्यालय गच्छति ।

८—फलप्राप्ति(अपवर्ग) में भी तृतीया विभक्ति होती है । यथा—दशभिः वर्षैः अध्ययनं समाप्तम् (दस वर्षों में अध्ययन समाप्त हो गया) । अर्थात् दस वर्षों में अध्ययन का फल मिल गया ।

९—तुल्य अर्थ में भी तृतीया विभक्ति होती है । यथा—स देवेन समानः (वह देव के समान है), धर्मेण सदृशः (धर्म के समान है) ।

संस्कृत में अनुवाद करो—

१—वह कलम (लेखनी) से लिखता है । २—श्यामा जल से मुख धो रही है (प्रक्षालयति) । ३—सीता और लक्ष्मण के साथ राम वन को गये । ४—किस कारण यहाँ रहते हो (वससि) ? ५—इन्स्पेक्टर (निरीक्षकः) मोटर से (मोटरयानेन) पटना जायगा । ६—नाई (नापितः) उस्तरेसे (क्षुरेण) हजामत बनाता है (शिरः मुण्डयति) । ७—धन से ही मनुष्य दुःखी रहता है (सन्तपति) । ८—मनोरथों से कार्य सिद्ध नहीं होते हैं (सिध्यन्ति) । ९—पुत्र के विना माता दुःख से समय बिताती है (गमयति) । १०—बुरे लड़कों के साथ मत

खेलो । ११—रमेश स्वभाव से अच्छा (साधुः) है । १२—वह साबुन से (केनिलेन) भुँह धोता है । १३—विद्यार्थी दोस्तों के साथ गेंद (कन्दुक) खेलते हैं । १४—वीरेन्द्र ने तलवार (खड्गेन) मेचीते को (द्वीपिनम्) मारा । १५—जटा से वह तपस्वी लगता है (प्रतीयते) । १६—बालक बंदरों के साथ खेलते हैं । १७—राष्ट्रपति के साथ सेनापति यहाँ आया । १८—यात्रियों ने (यात्रिका.) साधुओं के साथ स्नान किया । १९—बहुमत से प्रस्ताव स्वीकृत हो गया । २०—सिपाहियों ने लाठी से (यष्टिकया) चोरों को पीटा (अताडयन्)।

सप्तम श्रम्यास

सम्प्रदान कारक (चतुर्थी) (को, के लिए)

संज्ञा-शब्द

	एकव०	द्विव०	बहुव०
पुं०	देवाय	देवाभ्याम्	देवेभ्यः
स्त्री०	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः
नपुं०	ज्ञानाय	ज्ञानाभ्याम्	ज्ञानेभ्यः

सर्वनाम शब्द

पुंल्लिंग			स्त्रीलिंग		
एकव०	द्विव०	बहु०	एकव०	द्विव०	बहुव०
मह्यम्	आवाभ्याम्	अस्मभ्यम्	मह्यम्	आवाभ्याम्	अस्मभ्यम्
तुभ्यम्	युवाभ्याम्	युष्मभ्यम्	तुभ्यम्	युवाभ्याम्	युष्मभ्यम्
तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः	यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः
भवते	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः	भवत्यै	भवतीभ्याम्	भवतीभ्यः

(३) जुहोत्यादिगण

दा (देना), परस्मैपद

वर्तमान (लट्)

	एकव०	द्विव०	बहुव०
प्र० पु०	ददाति	दत्तः	ददति
म० पु०	ददासि	दत्थः	दत्थ
उ० पु०	ददामि	दद्वः	दद्यः



## अनद्यतन भूत (लङ्)

प्र० पु०	अददात्	अदत्ताम्	अददुः
म० पु०	अददाः	अदत्तम्	अदत्त
उ० पु०	अददाम्	अदद्व	अदद्य

## सामान्य भविष्यत् (लृट्)

प्र० पु०	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
म० पु०	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ
उ० पु०	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः

## आज्ञार्थक लोट्

प्र० पु०	ददातु	दत्ताम्	ददतु
म० पु०	देहि	दत्तम्	दत्त
उ० पु०	ददानि	ददाव	ददाम

## विधिलिङ्

प्र० पु०	दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः
म० पु०	दद्याः	दद्यातम्	दद्यात
उ० पु०	दद्याम्	दद्याव	दद्याम

## जुहोत्यादिगणीय कुछ अन्य धातुएँ

	लट्	लङ्	लृट्	लोट्	विधिलिङ्
धा—धारण करना	दधाति	अदधात्	धाम्यति	दधातु	दध्यात्
अभि + धा—कहना	अभिदधाति	अभ्यदधात्	अभिवास्यति	अभिदधातु	अभिदध्यात्
वि + धा—करना	विदधाति	व्यदधात्	विवास्यति	विदधातु	विदध्यात्
भी—डरना	विभेति	अविभेत्	भेप्यति	विभेतु	विभीयात्
हा—छोड़ना	जहाति	अजहात्	हास्यति	जहातु	जह्यात्

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो—

(१) उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये (मूर्खों को उपदेश देना केवल उनका क्रोध बढ़ाना है, वह शान्ति के लिए नहीं होता) ।

(२) कृषकेभ्यः कर्मकरेभ्यश्च कृशलं भूयात् (किमानों तथा मजदूरों का भला हो) ।

(३) अलमिदम् उत्साहभ्रंशाय भविष्यति (यह उत्साह भंग करने के लिए पर्याप्त है) ।

(४) अल मल्लो मल्लाय (यह पहलवान उस पहलवान के जोड़ के लिए पर्याप्त है) ।

(५) आर्तत्राणाय वः शस्त्रं न प्रहर्तुमनागसि (तुम्हारा हथियार पीड़ितों की रक्षा के लिए है, न कि निर्दोषों को मारने के लिए) ।

(६) परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम् (परोपकार पुण्य के लिए और दूसरे को सताना पाप के लिए होता है) ।

(७) इन्द्राय वज्रं प्राहरत् (इन्द्र पर वज्र फेंका) । [जिस पर अस्त्र या शस्त्र फेंका जाता है (प्र+ह), उसमें चतुर्थी होती है ।]

सम्प्रदान कारक(चतुर्थी)—दान के द्वारा जिसे कर्ता सन्तुष्ट करना चाहता है, वह पदार्थ सम्प्रदान कहा जाता है (कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्) । सम्प्रदान में चतुर्थी होती है । यथा—ब्राह्मणेभ्यः गाः ददाति (ब्राह्मणों को गौएँ देता है) । यहां गोदान कर्म के द्वारा ब्राह्मणों को ही सन्तुष्ट करना कर्ता को अभीष्ट है । सम्प्रदान का अर्थ है अच्छा दान; अर्थात् जिसमें दी हुई वस्तु सदा के लिए दी जाती है; दान दाता के पास वापस नहीं आता । “स रजकस्य वस्त्रं ददाति” (वह धोबी को कपड़े देता है) । इसमें वह कपड़े धोबी को सदा के लिए नहीं देता है, अपितु उन्हें वापस ले लेता है, इस कारण ‘रजकस्य’ में चतुर्थी\* नहीं हुई । न केवल कर्म द्वारा, अपितु किसी विशेष क्रिया द्वारा जो अभिप्रेत हो वह भी सम्प्रदान समझा जाता है (क्रियया यमभिप्रैति, सोऽपि सम्प्रदानम्) । जैसे—‘पत्ये शेते’ यहां पति को अनुकूल बनाने की क्रिया का अभिप्रेत पति ही है, अतः पति सम्प्रदान हुआ ।

सम्प्रदान कारक में ही चतुर्थी नहीं होती, अपितु उपपद विभक्तियों के साथ भी चतुर्थी होती है ।

\* ‘के लिए’ देखकर भट्ट में चतुर्थी का प्रयोग नहीं करना चाहिए । ‘तादर्थ्य’ (एक वस्तु दूसरी वस्तु के लिए) में ही चतुर्थी होती है । अतः निम्न उदाहरणों में चतुर्थी नहीं हुई—(१) “नैष भारो मम” (यह मेरे लिए भार नहीं है) । (२) अप्युपहासस्य समयोऽयम् (क्या यह समय हँसी करने के लिए है) ? (३) प्राणोभ्योऽपि प्रिया सीता रामस्यासीन्महात्मनः (महात्मा राम के लिए सीता प्राणों से भी प्यारी थी) । इन उदाहरणों में ‘के लिए’ है, किन्तु ‘तादर्थ्य’ नहीं है, अतः चतुर्थी नहीं हुई ।



१—जिस प्रयोजन के लिए कोई क्रिया की जाती है उसमें चतुर्थी होती है (तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या) यथा—भक्तः मुक्तये हरिं भजति (भक्त मुक्ति के लिए हरि का भजन करता है) । बालः दुग्धाय क्रन्दति (बालक दूध के लिए रोता है) । घनाय प्रयतते (वह घन के लिए प्रयत्न करता है) ।

२—रुच् (अच्छा लगना) तथा रुच् के अर्थ वाली धातुओं के योग में चतुर्थी होती है (रुच्यर्थानां प्रीयमाणः) । यथा—शिशवे स्त्रीजनकं रोचते (बच्चे को खिलौना अच्छा लगता है) । रमायै रामायणं रोचते (रमा को रामायण अच्छी लगती है) ।

३—\*क्रुध्, द्रुह्, ईर्ष्य्, अमूय अर्थवाली धातुओं के साथ जिस पर क्रोध किया जाता है, उसमें चतुर्थी होती है (क्रुधद्रुहेर्ष्यामूयार्थानां यं प्रति क्रोधः) । यथा—गुरुः शिष्याय क्रुध्यति (गुरु शिष्य पर क्रोध करता है) । मूर्खः पण्डिताय द्रुह्यति (मूर्ख पण्डित से द्रोह करता है) । शिक्षकः छात्राय कुप्यति (अध्यापक छात्र पर क्रोध करता है) ।

४—नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम्, वषट् के योग में चतुर्थी होती है (नमःस्वस्तिस्वाहास्वधालंवषड्योगाच्च) । यथा—ईश्वराय नमः (ईश्वर को नमस्कार), नृपाय स्वस्ति (राजा को कल्याण हो), अग्नये स्वाहा, पितृभ्यः स्वधा, दुर्गा मधुकुण्डभाभ्याम् अलम् । इन्द्राय वषट् ।

५—हित और सुख शब्दों के योग में चतुर्थी होती है । यथा—ब्राह्मणाय हितं सुखं वा भवेत् (ब्राह्मण का हित हो) ।

६—कथ् (कथय्), निवेदय्, उपदिश्, धारय (ऋणी होना) स्पृह्, कल्पते, संपद्यते (होना) के साथ चतुर्थी होती है । यथा—विद्या ज्ञानाय कल्पते, संपद्यते वा (विद्या जानने के लिए होती है) । गुरुः शिष्याय कथयति, उपदिशति वा । (गुरु शिष्य को उपदेश करता है) । स मह्यं शतं धारयति (उसे मेरे सौ रुपये देने हैं) । मुक्तये तपस्वी स्पृह्यति (तपस्वी मुक्ति की इच्छा करता है) ।

\*क्रुध् आदि धातुओं के रूप “पठति—पठतः—पठन्ति” की भाँति चलेंगे । यथा—क्रुध्यति, कुप्यति, द्रुह्यति, ईर्ष्यति, अमूयति, कथयति, उपदिशति, धारयति, क्रन्दति । ‘रोचते’ के रूप (पृष्ठ ५४) ‘जायते’ की भाँति चलेंगे ।

३—निमित्त अर्थ में चतुर्थी होती है। यथा—विद्या ज्ञानाय भवति, घनं च सुखाय (विद्या ज्ञान के लिए और घन मुख के लिए होता है)।

८—समर्थ अर्थवाली धातुओं के साथ चतुर्थी होती है। यथा—प्रभवति मल्लो मल्लाय (एक पहलवान दूसरे पहलवान के साथ लड़ने को समर्थ है)।

९—तुम् के अर्थ में चतुर्थी होती है, यथा—मः यज्ञाय (यष्टुं) याति (वह हवन करने के लिए जाता है)।

१०—चतुर्थी के अर्थ में 'कृते' और 'अर्थम्' का भी प्रयोग होता है, यथा—पठनार्थम्; पठनस्य कृते (पढ़ने के लिए)।

### संस्कृत में अनुवाद करो

१—मैं धन की इच्छा नहीं करता हूँ (स्पृहयामि)। २—सज्जन मदैव परोपकार की चेष्टा करता है (चेष्ट्)। ३—गुरु शिष्यों को उपदेश करता है। ४—बालक को लड्डू (मोदकः) अच्छा लगता है। ५—वह मूर्ख तुमसे ईर्ष्या करता है। ६—वह दुर्जन उस सज्जन से द्रोह करता है। ७—पिता पुत्र पर क्रोध करता है। ८—सोहन मेरा सौ रुपये का ऋणी है। ९—मुनि मोक्ष के लिए ईश्वर को भजता है। १०—राजा ने ब्राह्मणों को धन दिया। ११—इन्स्पेक्टर ने मोहन को इनाम (पारितोषिक) दिया। १२—विद्या ज्ञान के लिए होती है। १३—पढ़ने के लिए विद्यालय जाओ। १४—तुम मुझसे क्यों ईर्ष्या करते हो? १५—यह दवा (अगदम्) रोगी (रुग्ण) को दे दो। १६—वह धन की इच्छा करता है। १७—घोड़े के लिए घास लाओ। १८—उन प्राचीन मुनियों के लिए नमस्कार हो। १९—ब्राह्मणों और गौओं का कल्याण हो। २०—उम रोगी को पतली-सी खिचड़ी (तरलं कृशरम्) दे दो। २१—उसे दस्त आते हैं (सः अतिसारकी), इससे लंघन ही अच्छा (लंघनं हितम्) है। २२—बालकों को अमण अच्छा लगता है।

### अष्टम अभ्यास

अपादान कारक (पञ्चमी) 'से'

संज्ञा शब्द

	एकव०	द्विव०	बहुव०
पुं०	देवात्	देवाभ्याम्	देवेभ्यः
स्त्री०	लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः
नपुं०	ज्ञानात्	ज्ञानाभ्याम्	ज्ञानेभ्यः



## सर्वनाम शब्द

	पुंल्लिङ्ग				स्त्रीलिङ्ग		
	एकव०	द्विव०	बहुव०		एकव०	द्विव०	बहुव०
मत्	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्	मत्	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
त्वत्	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्	त्वत्	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
तस्मात्	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः	तस्याः	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
अस्मात्	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः	अस्याः	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
कस्मात्	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः	कस्याः	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
यस्मात्	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः	यस्याः	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
भवतः	भवतः	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः	भवत्याः	भवत्याः	भवतीभ्याम्	भवतीभ्यः

## (४) दिवादिगण

जन् (पंदा होना), आत्मनेपद

वर्तमान (लट्)

प्र० पु०	जायते	जायेते	जायन्ते
म० पु०	जायसे	जायेये	जायध्वे
उ० पु०	जाये	जायावहे	जायामहे

अनद्यतन भूत (लङ्)

प्र० पु०	अजायत	अजायेनाम्	अजायन्त
म० पु०	अजायथाः	अजायेथाम्	अजायध्वम्
उ० पु०	अजाये	अजायावहि	अजायामहि

सामान्य भविष्यत् (लृट्)

प्र० पु०	जनिष्यते	जनिष्येते	जनिष्यन्ते इत्यादि
----------	----------	-----------	--------------------

आज्ञार्थक (लोट्)

विधिलिङ्

जायताम्	जायेताम्	जायन्ताम्	प्र० पु०	जायेन	जायेयाताम्	जायेरन्
जायस्व	जायेथाम्	जायध्वम्	म० पु०	जायेथाः	जायेयाथाम्	जायेध्वम्
जायै	जायावहे	जायामहे	उ० पु०	जायेय	जायेवहि	जायेमहि

दिवादिगणोप्य कुछ अन्य धातुर्

विद्—होना	लट्	लङ्	लृट्	लोट्	विधिलिङ्
	विद्यते	अविद्यत	वेत्स्यते	विद्यताम्	विद्येत

युष्—लड़ना	युध्यते	अयुध्यत	योत्स्यते	युध्यताम्	युध्येत
सिब्—सीना	सीव्यति	असीव्यत्	सेविष्यति	सीव्यतु	सीव्येत्
नश्—नाश होना	नश्यति	अनश्यत्	नशिष्यति	नश्यतु	नश्येत्
नृत्—नाचना	नृत्यति	अनृत्यत्	नर्तिष्यति	नृत्यतु	नृत्येत्

इन वाक्यों को ध्यान से देखो—

(१) धीराः मनस्विनः न धनात्प्रतियच्छन्ति मानम् (धीर मनस्वी लोग धन के बदले मान को नहीं छोड़ते) ।

(२) स्वार्थात् सतां गुरुतरा प्रणयिक्रियैव (सत्पुरुषों के लिए अपने प्रयोजन से मित्रों का प्रयोजन बड़ा है) ।

(३) नास्ति सत्यात्परो धर्मो नानृतात् पातकं महत् (सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं, झूठ से बढ़कर कोई पाप नहीं) ।

(४) असज्जनात् कस्य भयं न जायते (दुष्ट से किसको डर नहीं लगता) ?

(५) आमूलात् रहस्यमिदं श्रोतुमिच्छामि (आरम्भ से इस रहस्य को सुनना चाहता हूँ) ।

(६) हिमालयात् गंगा प्रभवति (गंगा हिमालय से निकलती है) ।

**अपादान कारक (पञ्चमी)**—जिससे कोई वस्तु पृथक् (अलग) हो, उसे अपादान कहते हैं (ध्रुवमरापेऽपादानम्)। अपादान में पञ्चमी होती है। यथा—वृक्षात् पत्राणि पतन्ति (पेड़ से पत्ते गिरने हैं) । यदि अपादान में पृथक्करण का भाव न हो तो पञ्चमी नहीं होती, जैसे—“कां वेलां त्वामन्वेष्यामि” (कितने समय से मैं तुम्हें ढूँढ़ रहा हूँ) । यहाँ पर ‘वेला’ अवधि नहीं है, अन्वेषण-क्रिया से व्याप्त काल है; अतः ‘अत्यन्त सयोग’ में द्वितीया हुई । इसी प्रकार “वृक्षशाखामु अवलम्बन्ते मुनीनां वासासि” (मुनियों के वस्त्र वृक्ष की शाखाओं से लटक रहे हैं) । यहाँ पर वृक्षशाखा अपादान कारक नहीं, अपितु ‘अधिकरण कारक’ (वस्त्रों की अवलम्बन क्रिया का आधार) है ।

१—भय और रक्षा के अर्थवाली धातुओं के साथ भय के कारण में पञ्चमी होती है, (भीत्रार्थानां भयहेतुः) । यथा—असज्जनात् कस्य भयं न जायते ?  
बालकः सिंहात् बिभेति ।

२—जुगुप्सते, विरमति, प्रमाद्यति के साथ पञ्चमी होती है । (जुगुप्सा-विरामप्रमादार्थानामुपसख्यानम्), सः धर्मात् प्रमाद्यति ।



३—जिस वस्तु से किसी को हटाया जाय, उसमें पञ्चमी होती है (वार-णार्थानामीप्सितः) । यथा—यवेभ्यो गां वारयति क्षेत्रे (खेत में जी में गाय को हटाता है) । गुरुः शिष्यं पापात् वारयति ।

४—जिस गुरु या अध्यापक से नियमपूर्वक विद्या सीखी जाय, उसमें पञ्चमी होती है (आख्यातोपयोगे) । यथा—उपाध्यायात् अधीते (गुरु से पढ़ता है) । तेभ्योऽधिगन्तुं निगमान्तविद्यां वाल्मीकिपाश्चादिह पर्यटामि (उत्त०) (उन लोगों से वेद पढ़ने के लिए मैं वाल्मीकि के यहाँ से इस स्थान पर चली आयी हूँ) ।

५—जायते, प्रभवति, उद्गच्छति, उद्भवति, निलीयते, प्रतियच्छति के साथ पञ्चमी होती है । यथा—प्रजापतेः लोकः प्रजायते (प्रजापति में संसार पैदा होता है) । हिमालयात् गंगा प्रभवति, उद्गच्छति वा (हिमालय में गंगा निकलती है) । राजपुरुषात् चोरः निलीयते (सिपाही से चोर छिपता है) । तिलेभ्यः माषान् प्रतियच्छति (तिलों में उड़द बदलता है) ।

६—अन्य, आरात्, इतर, (इनके अर्थ वाले शब्द भी), ऋते, (पूर्व आदि) दिशावाचक और कालवाचक तथा प्रभृति और वहिः शब्दों के साथ पञ्चमी होती है—अन्यारादिनरनेदिक्) । यथा—जानात् ऋते न सुखम् (ज्ञान के बिना सुख नहीं है) । नगरात् पूर्वः, पश्चिमः, उत्तरः, दक्षिणः, प्राक् (नगर से पूर्व की ओर) । शैशवात् प्रभृति सोऽतीव चतुरः (बचपन से वह बहुत चतुर है) । नगराद् वहिः (नगर से बाहर) ।

७—तरप् अथवा ईयमुन् प्रत्ययान्त पद के द्वारा अथवा साधारण विशेषण या क्रिया द्वारा जिससे तुलनात्मक भेद दिखाया जाता है उसमें पञ्चमी होती है । यथा—धनात् ज्ञानं गुह्यतरम् (धन से ज्ञान अच्छा है), देवात् रमेशः पटुतरः (देव से रमेश निपुण है) ।

८—पृथक् और विना के साथ पञ्चमी, द्वितीया और तृतीया विभक्तियाँ होती हैं (पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम्) । यथा—स भ्रातुः (भ्रातरम्, भ्रात्रा वा) पृथक् तिष्ठति; श्रमाद् (श्रमं श्रमेण वा) विना विद्या न भवति (परिश्रम के बिना विद्या नहीं आती) ।

\*जिसमें कोई चीज पैदा होती है, उसमें सप्तमी विभक्ति भी होती है । जैसे—शुकनासस्यापि रेणुकायां तनयो जातः (काद०), परदारेषु जायेते द्वौ सुतौ कुण्डगोलकौ । (मनु० ३.१७४) ।

६—दूर और समीपवाचक शब्दा में सम्बन्ध, द्वितीया और तृतीया जानते हैं, दूरान्तिकाथंभ्यो द्वितीया च, । यथा नगरात्, दूरात् दूर दूरंश वा ।

१०—जब लय प्रत्ययान्त (आनीय बौध धर्म) धसवा क्त्वा-प्रत्ययान्त, उद्धा गत्वा आदि किये शक्य में प्रकट नहीं की जाती किन्तु छिपी रहती है तब उस क्रिया के कम साधारणजन्मों में रहते हैं । यथा—आसादात् प्रेक्षते अर्थात् आसादमकाले प्रेक्षते, (महल में देखता है) । आसनात् प्रेक्षते अर्थात् आसने उपविष्ट प्रेक्षते आसन पर बैठकर देखता है । अश्रुगद् जिह्म ति अर्थात् अश्रु बौध जिह्मेति । अश्रु को देख कर लज्जा करती है

### संस्कृत में अनुवाद करो—

१—बालक ऊँचे महल से गिर पड़ा । २—घर में मुख और धधम से पुष्प होता है । ३—पद से बके हुए (गम्बरानि) फल गिर रहे हैं । ४—मैं सिंह में नहीं डरता हूँ दुश्मन से डरता हूँ । ५—लज्जा और श्रुतः विमानय से निकलती हैं । ६—पाप से परिचय को छोड़ हरिजन रहते हैं । ७—लिंग की बचपन में ही बहुत थे । ८—प्राज्ञ के पाँचवें दिन म्रिये था गया । ९—अविद्या अशुभ । आश्रमों (नन्दन) में उदर नहीं बचलता है । १०—गुरु विषय को पाप से दूरता है । ११—विमानय नगर से दूर नहीं है । १२—ब्रह्मा से ब्रह्मण । भौक पैदा होने हैं । १३—सम्बन्ध पाप से भरा करता है । १४—बालक माना में स्थित है । १५—उस नाटककार में धत कवि बहुत चतुर है । १६—बुद्धशब्द (माते) धीरे न गिर पड़ा । १७—गुरु से बिछा गयो । १८—वह साम्यकाल में यही रहता है । १९—गोविन्द प्रसाध में अधिक बुद्धिमान् (बुद्धिमत्तर) है । २०—अश्रु में वह लज्जा करती है । २१—आन के बिना मुख नहीं है । २२—कोर मध नगरकर (रश्मि छिन्ना) खीकी दागे से ग्रहणिये) छिप गये (निगमवन्) । २३—मूढ मृत्यु में डरन है

### नवम अध्याय

सम्बन्ध (षष्ठी) का, के, की

संज्ञा-शब्द

पुं०	तकः०	द्वि०	बहु०
देवस्य		देवयो	देवाताम्



स्त्री०	लतायाः	ननयोः	ननानाम्
नपुं०	ज्ञानम्	ज्ञानयोः	ज्ञानानाम्

## तृतीयानां शब्द

	पुंल्लिङ्ग			स्त्रीलिङ्ग	
एकव०	द्विव०	वत्स०	एकव०	द्विव०	वत्स०
मम	आवयोः	धम्ममाकम्	मम	आवयोः	धम्ममाकम्
तव	युवयोः	मुत्तमाकम्	तव	युवयोः	मुत्तमाकम्
तस्य	तयोः	तेषाम्	तस्य	तयोः	तेषाम्
स्य	अनयोः	अस्याम्	स्य	अनयोः	अस्याम्
कस्य	कयोः	केषाम्	कस्य	कयोः	केषाम्
यस्य	ययोः	येषाम्	यस्य	ययोः	येषाम्
भवत्	अवयोः	अवस्याम्	भवत्	अवयोः	अवस्याम्

## (५) स्वादिगण

तु (स्वप्न कान्ता, या २३ निकालया), परस्परवत्

## कर्मण्यल (कृ०)

प्र० प०	मुनीयि	मुनेन	मन्त्रिभिः
म० प०	मुनीयि	मुनेभ्यः	मन्त्रिभ्यः
उ० प०	मुनीयि	मुनेभ्यः मुनेभ्यः	मन्त्रिभ्यः मन्त्रिभ्यः

## अनन्तरत्वं कृत (कृ०)

प्र० प०	अनुत्तर	अनुत्तरात्	अनुत्तरान्
म० प०	अनुत्तर	अनुत्तरात्	अनुत्तरान्
उ० प०	अनुत्तरम्	अनुत्तरम् अनुत्तरम्	अनुत्तरम् अनुत्तरम्

## सामान्य मन्त्रिण्यन् (कृ०)

प्र० प०	मोक्षयन्	मोक्षयन्	मोक्षयन्
म० प०	मोक्षयन्	मोक्षयन्	मोक्षयन्
उ० प०	मोक्षयन्	मोक्षयन्	मोक्षयन्

## आज्ञापक लोटः

प्र० प०	मुनीन्	मुनीनाम्	मुनीन्	मुनीनाम्	मुनीनाम्	मुनीनाम्
म० प०	मुनीन्	मुनीनाम्	मुनीन्	मुनीनाम्	मुनीनाम्	मुनीनाम्
उ० प०	मुनीनाम्	मुनीनाम्	मुनीनाम्	मुनीनाम्	मुनीनाम्	मुनीनाम्

७५ (सुनता) परस्मैपद

कतमान (सद्)

प्र० प०	श्रुतांति	श्रुतान	श्रुष्वन्ति
म० प०	श्रुतांसि	श्रुताय	श्रुतुषु
उ० प०	श्रुतामि	श्रुतुक श्रुतवः	श्रुतुमः, श्रुतवः

अनङ्गत्वेन धृत (सद्)

प्र० प०	अश्रुतांति	अश्रुतानाम्	अश्रुष्वन्
म० प०	अश्रुता	अश्रुतानम्	अश्रुतान
उ० प०	अश्रुतानम्	अश्रुतवः अश्रुतवः	अश्रुतुमः अश्रुतवः

आवाच्ये विवरणम् (सद्)

प्र० प०	आवाच्यति	आवाच्यः	आवाच्यन्ति आदि ।
आवाच्यक (सौट)			विधित्वम्
श्रुतांति	श्रुतानाम्	श्रुतानु	प्र० प० श्रुतवाः श्रुतवाणाम् श्रुताम्
श्रुतः	श्रुतानाम्	श्रुताय	म० प० श्रुतया श्रुतवानम् श्रुतायान
श्रुतवानि	श्रुतवाः	श्रुतवामि	उ० प० श्रुतवाम् श्रुतवः श्रुतवामि

स्वादिगणेषु कृत् अन्त्ये वाच्यम्

	नञ्	सद्	पठ	संद्	विभाजित्
शकः शकता	शकन्ति	शकन्ताः	शकन्ति	शकन्तः	शकन्तुः
चिन्तः—सुनता	चिन्तन्ति	चिन्तन्ताः	चिन्तन्ति	चिन्तन्तः	चिन्तन्तुः
क्षिप्यः—पाता	क्षिपन्ति	क्षिपन्ताः	क्षिपन्ति	क्षिपन्तः	क्षिपन्तुः
भुजः—क्रीडता	भुजन्ति	भुजन्ताः	भुजन्ति	भुजन्तः	भुजन्तुः
क्षि—रूप दाना	क्षिपन्ति	क्षिपन्ताः	क्षिपन्ति	क्षिपन्तः	क्षिपन्तुः

इन शकता का ध्यान में रखते —

१ न हि धर्मगुणानां विद्यमानता उक्तता भवति त्वमे कं गुणो का तावमे वाच्य कहन कथं नञ् है ।

२ तुय लोकावस्थायां भवति त्वमे कं गुणो का तावमे वाच्य कहन कथं नञ् है ।

उक्त शकता को जानते हैं । किन्तु इसके रूप स्वरान्तों की वाच्यता की मान्यता नहीं है ।



(३) गन्तव्या ते चरान्तिन्तका नाम यमेश्वरस्याम् तुह्यं यक्षेत्रगं की नगरी पलका को जाना है )

(४) विचित्रा हि सुचारुणां कृतिः पाणिनः (पाणिनि के सुत्रों की रचना विचित्र है) !

(५) अतस्तस्य कृतां विद्यां अधिष्ठस्य तत्ता घनम् अथतस्य कृतां मिश्रम् अतिशयस्य कृतं सुखम् (सत्यजी की विद्या कहां ? विद्या के बिना घन कहा ? घन के बिना मिश्र कहा ? मिश्र के बिना सुख कहा ?)

● **सम्बन्ध षष्ठी** — स्वामी तथा अन्य अन्य तथा जनक, कार्य तथा कारण आदि सम्बन्ध दिखाने के लिए षष्ठी का प्रयोग होता है। उसका लिंगा से साक्षात् सम्बन्ध नहीं होता जैसा कि प्रथमा द्वितीया आदि विभक्तियों का होता है। जैसे— यम पञ्चकम् (मेरी पञ्चक गणना) जलम् (जल का शाल)

षष्ठी विभक्ति में स्वामी अथवा स्वतन्त्र वस्तु का बोध होता है जो स्वतन्त्र रूप से जानी है अथवा जिस पर स्वामित्व होता है वह प्रथमा में जानी जाती है तथा अन्य नामों में अन्य प्रतीति। जो स्वतन्त्र नहीं समझा उसे जो वृद्ध (य हमारे घर है) स्वतन्त्र मनुष्याणां यम (जानती करना मनुष्य का स्वामी है) ।

( हेतु वाच्य के साथ पठ्य होती है। तथा अन्तर्भव होता है अन्तः के कारण रहता है) ।

२. अधिष्ठक इ (स्मरणा करना) दत्त (दिया करना) ईष्ट (समर्पण करना), तथा इन्ही अर्थों वाली अन्य धातुओं के रूप में षष्ठी होती है, अधी-शब्दोंवाणी कमलि। यथा—मातृ स्मरति माता की याद करना है। स इन्द्रियस्य वयते प्रमथति निद्रास्य गन्धकाजस्य महाशब्द महाशब्द अथवा पृथ्वी के ऊपर क्षय है) ।

● **द्वितीये से 'का' के की' में जो संबंध व्यक्त होता है, उन सभी अर्थों का बोध षष्ठी नहीं करा सकती जैसे 'भोजन का वस्त्र' का अनुवाद 'हेमपात्रम्' का हेम पात्रम् होगा न कि 'हेम पात्रम्'। 'मिट्टी का बर्तन' का अनुवाद 'मृद्भाण्डम्' या 'मृत्पात्रम् भाण्डम्' होगा न कि 'मृद भाण्डम्'। 'सत्यजी नर' न कि 'नलम्प नर'। 'वैशाखमास' या 'वैशाखे मासे' न कि 'वैशाखस्य मासे'। 'महार्ह मुक्ताफलम्' 'मुम्बापरी' मुम्बा नाम पुरी ही जुद्ध प्रयोग है**

३ उपरि उपरिहानु श्रव घघन्तानु पर वस्तानु परंवाते श्रव  
उपरित दक्षिणत के माय बन्धी होती है (घघन्तसमप्रत्ययन)। यथा -  
तमस्य उपरन दक्षिणत नम्य स्थित्वा कथमपि पूर कोतुकाधानहनी  
पतिव्रतानामये कोननीया मुदक्षिणा

४ निमित्त ग्रथ जाल बन्धी (निमित्त कारण प्रयोजन हेत के माय  
प्राय सभी विभक्तिवा होती है (विभक्तिवर्तविप्रयोग मर्वाया प्रयवधानम्)  
यथा कि निमित्त वर्गति केन निमित्तन, कस्य निमित्ताय, कस्य हेतो,  
कसमाय प्रयोजनानु केन कारणेन ?

५ बहुरी में से एक छांटने के ग्रथ में जिससे छाँटा जाय उसमें बन्धी  
होती है (पदरथ निर्धार्यतम्), यथा—साधवाणा छात्रेषु वा गोविन्द श्रेष्ठ.  
पदुहमी वा ।

६ कृते लिए। ग्रथे समक्षम् ग्रन्थे घन्त के माय बन्धी होती है  
यथा—रहन्त्य कृते गुरो समक्षम् जानानां ग्रथे गुरन्त्य घन्त ग्रन्थे वा ।

७ घासीर्वावसूचक शब्दों के माय बन्धी छोरे अनुधो होने ही होती है  
यथा—नयस्य नृपस्य वा भद्र कुशल वा भूषात् ।

८ विसर्गता घनादर (विरम्भकार) करने के लिए कोई कार्य किया जाता है  
उसमें बन्धी या सप्तमी होती है (बन्धी बाधादरे)। जैसे—स्वयं शिरो रुक्मि  
वा शिरो, माता बहिर्गमकृत् (गले हुए बालक का विरम्भकार कण्ठे माता  
वाहुर बन्धी गई) ।

९ अंगवाची बन्धी जिसके सम्पूर्ण का बोध कराने के लिए एक अंग  
का ही नाम लिया जाता है। जैसे—जन्म्य विन्दु (जन्म की इंद) यथा दार-  
सहस्राणि (हजारों गाय, गृहजन्मिनधोरन्यनरा (दो में से एक स्वीकार कर  
नी जाय, स्वयं कल्याणि नयोभूनीया (हे कल्याणि तुम्ही तीसरी हो,

### सम्बन्ध में अनुवाद करो

१ हमारा गाँव नगर के निकट है। २ अनेक कवियों ने हिमालय की  
प्रशंसा की है। ३ मंगल का जन पवित्र छोरे मधुर है। ४ वह पदत के लंगु  
बाधो में रहता है। ५ हिमालय भारतवर्ष की उत्तर दिशा में है।  
६ गोपाल पिता को स्मरण करना है। ७ पुस्तकों में गीता श्रेष्ठ है और  
वेद सबसे प्राचीन हैं। ८ मूल घन के निमित्त ही जीते हैं। ९ यह घर के  
आगे पृथ्वी सादता है (भरति)। १० अनुध्या में ब्राह्मण श्रेष्ठ हैं। ११.



पक्षियों में कौवा (कायम) चतुर है और पशुओं में भृंगाल : १२ पत्थर का फल अवश्य मिलना है १३ गुरु की निन्दा वाय है । १४ वह ब्रह्म की (सजाया) दूब चाहता है । १५ इस नगर के उत्तर की ओर शोभती है । १६ देवताओं ने भी भारत की प्रशंसा की १७ बालक पिता का अनुकरण करना है (अनुकरण) १८ यह छात्र सब में चतुर है । १९ बाराणसी के आगे प्रीति होती है २० बाल की गोष्ठा देखो ।

### दशम अध्याय

अधिकरण काक (सप्तमो) (वे, पर)

काकः

	अवयव	द्विवचन	बहुवचन
पुं०	एक	द्वयोः	तत्रेषु
स्त्री०	एकस्याय	तयोः	तत्रासु
नपुं०	आने	आने	आनेषु

वचनानि च

	पुं० वचन			स्त्री० वचन	
एकवच०	द्विव०	बहुवच०	एकवच०	द्विव०	बहुवच०
मयि	आवसी	अस्मात्	मयि	आवसी	अस्मात्
त्वयि	सुखी	तुमात्	त्वयि	सुखी	तुमात्
तस्मिन्	तयोः	तेषु	तस्मात्	तयोः	तसु
अस्मिन्	अनया	अग	अस्मात्	अनया	असु
तस्मिन्	कथा	केषु	तस्मात्	कथा	कसु
तस्मिन्	परा	येषु	तस्मात्	परा	पसु
भवत्	भवता	भवसु	भवत्	भवता	भवसु

### (६) तुदादिगण

तुद (तुल्य देना), परस्मैपद

कर्मण्य (तद)

प्र० पुं०	तुदति	तुदत	तुदन्ति
म० पुं०	तुदति	तुदथ	तुदथ
उ० पुं०	तुदामि	तुदाक	तुदाम

अनुदानमनुत् (नट्)

प्र० पृ०	अनुदान	अनुदानम्	अनुदान्
म० पृ०	अनुद	अनुदानम्	अनुदान
उ० पृ०	अनुदम्	अनुदानम्	अनुदान

साध्याम् अधिकारम् (नट्)

प्र० पृ०	नोत्स्यति	नोत्स्यति	नोत्स्यति
म० पृ०	नोत्स्यति	नोत्स्यति	नोत्स्यति
उ० पृ०	नोत्स्यति	नोत्स्यति	नोत्स्यति

आज्ञा (नट्)

प्र० पृ०	तुदम्	तुदम्	तुदम्
म० पृ०	तुद	तुदम्	तुदम्
उ० पृ०	तुदम्	तुदम्	तुदम्

विधिनिष्ठ

प्र० पृ०	तुदम्	तुदम्	तुदम्
म० पृ०	तुद	तुदम्	तुदम्
उ० पृ०	तुदम्	तुदम्	तुदम्

तुदादिशब्दोपेक्षुः अथ वातुर्

	नट	नट	नट	नट	विधिनिष्ठ
विधि — विधिना	विधिति	विधिति	विधिति	विधिति	विधिनिष्ठ
मुच — मुचिता	मुचिति	मुचिति	मुचिति	मुचिति	मुचिति
मिच्छ — मिच्छिता	मिच्छिति	मिच्छिति	मिच्छिति	मिच्छिति	मिच्छिति
तुप — तुपिता	तुपिति	तुपिति	तुपिति	तुपिति	तुपिति
विधि — विधिना	विधिति	विधिति	विधिति	विधिति	विधिति
प्रत्यक्ष — प्रत्यक्षिता	प्रत्यक्षिति	प्रत्यक्षिति	प्रत्यक्षिति	प्रत्यक्षिति	प्रत्यक्षिति
वृत्ति (वृत्ति) — वृत्तिना	वृत्तिनि	वृत्तिनि	वृत्तिनि	वृत्तिनि	वृत्तिनि

विशेष— तुदादिशब्दों की धातुएँ अर्थात् तुदादिशब्दों की धातुओं के समान हैं इनमें अन्तर दृष्टता ही है कि अर्थात् तुदादिशब्दों में धातु की उपधा को यद्यपि अन्तिम अक्षर को गुण होता है किन्तु तुदादिशब्दों में नहीं होता तुदादिशब्दों की धातुओं के

अर्थात् तुदादिशब्दों में धातु के रूप तुप्यति (नट्) अनुप्यति (नट्), तप्यति (नट्) तप्यति (नट्) तुप्यति (नट्) तुप्यति (नट्) तुप्यति (नट्) इस प्रकार चलेगा



रूप परस्परपद में 'गन्ति' की भाँति घोर आत्मवेगद में 'मेवते' या 'जायते' की भाँति होते हैं।

## (७) कथादिमरण

बुद्ध (जीवन करना), आत्मतेषव

यतामान (मर)

	एकवच०	द्विवच०	बहुवच०
प्र० पृ०	भुङ्कते	भुङ्कताम्	भुङ्कन्ते
म० पृ०	भुङ्क्षे	भुङ्क्षाथ	भुङ्क्षाथे
उ० पृ०	भुङ्क्ते	भुङ्क्थाहे	भुङ्क्थामहे

अनसत्तनमूत (मर)

	एकवच०	द्विवच०	बहुवच०
प्र० पृ०	अभुङ्कते	अभुङ्कताम्	अभुङ्कन्ते
म० पृ०	अभुङ्क्षे	अभुङ्क्षाथ	अभुङ्क्षाथे
उ० पृ०	अभुङ्क्ते	अभुङ्क्थाहे	अभुङ्क्थामहे

सामान्य भविष्यत् मृद,

	भोक्ष्यते	भोक्ष्यते	भोक्ष्यते
प्र० पृ०	भोक्ष्यते	भोक्ष्यथे	भोक्ष्यामहे
म० पृ०	भोक्ष्यसे	भोक्ष्यथे	भोक्ष्यामहे
उ० पृ०	भोक्ष्ये	भोक्ष्याथे	भोक्ष्यामहे

आगत्यर्थक (लोट)

विधिलिङ्

भुङ्कताम्	भुङ्कताम्	भुङ्कताम्	प्र० पृ०	भुङ्क्ती	भुङ्क्ती	भुङ्क्ती
भुङ्क्ष्व	भुङ्क्षाथ	भुङ्क्षाथ	म० पृ०	भुङ्क्तीथ	भुङ्क्तीथ	भुङ्क्तीथ
भुङ्क्ते	भुङ्क्थाहे	भुङ्क्थाहे	उ० पृ०	भुङ्क्तीथ	भुङ्क्तीथ	भुङ्क्तीथ

कथादिमरणाय धातुर्

	मर	मर	मर	मर	विधिलिङ्
रुध—रोकना	क्यादि	आगत्य	रोक्यति	क्यादि	क्यात्
मिद—काटना	मिनति	अभिनत	मिनति	मिनत्	मिन्यात्
चिद—काटना	चिनति	अभिचिन	चिनति	चिनत्	चिन्यात्

इन वाक्यों की ध्यान से पढ़ो—

(१) कस्मिन्तपि पूजाहोमपराद्धा शकुन्तला (शकुन्तला ने किसी गुरुजन के प्रति अपराध किया है)।

(२) यावत्तन्निधे न्यस्त समस्तो भर (समस्त राज्यभार योग्य मन्त्री पर छोड़ दिया है)।

१. न क्षनु न क्षनु आणु सन्निवास्याऽयमस्मिन् । इत सुकुमार हरिणा पर बाण पर छोड़ो) ।

४. पुनश्चनी अतुगहे अस्मिन्दात, पाण्डवास्तु प्राप्तेन ततो निरक्रामन् (पुनश्चने ने बाण के पर ना पास सगा दो किन्तु पाण्डव पहने ही वहाँ से निकल चुके थे) ।

५. यनीना वन्कलानि कृत्वाजास्त्वचलम्बन्त अतस्मिन्पोषननामेन श्वितव्यम् मुनियों के वन्कल वृक्षों की छायाओं से ढके रहते हैं अतः यह तथा-वन ही होता है) ।

**अधिकरण कारक (सप्तमी) —**किसी क्रिया के साधन को अधिकरण कहते हैं जहाँ पर या जिसमें वह कार्य किया जाता है वह अधिकरण है (आगत्यधिकरणम्) । अधिकरण में सप्तमी विभक्ति होती है । यथा — छात्रोऽध्यासेन पुत्रः (शुभ छात्रने पर जाँभा बना है) । गुरुणां वर्तते मुनिः (मुनि गुरु से रहता है) ।

१. अथ एक कार्य के हो जाने पर हमने कार्य का होना मान्य होता है तब हो एक कार्य से सप्तमी होती है (यथा च मासेन भाववक्षणम्) यथा — रामे वर्तते दशम्यः प्राणान् मरणम् (राम के वन चले जाने पर दशम्य ने प्राण त्याग दिए) । सर्वेषु सप्तमेषु विभक्तौ लोटिनि (मर के यों जाने पर विभक्ता होती है) । सूर्यो उडिते कान्त प्रकाशने (सूर्य के उडित होने पर कान्त मिलता है) ।

२. जिसका अनादर करने काई कार्य किया जाता है उससे सप्तमी होती है (यथा चानादरः) निषादयनोऽपि पितु निवारणायपि धित्वि वा रमेशोऽज्ययनं पण्डितवतशाम्, पिता के बना करने पर भी उसका निरन्कार करने रमेश ने पढ़ना छोड़ दिया) ।

३. जिसमें में जाने में अथ में तथा समय-बोधक शब्दों में सप्तमी होती है यथा — मोक्षे इच्छन्ति मोक्ष के विषय में इच्छा है) । दिने प्रातःकाले मध्याह्ने, सायंकाले कार्य कर्त्तव्ये ज्ञाते, योजने, बाधने (प्रथम में) ।

४. निर्वारण में पाण्डो या सप्तमी होती है (यथा च निवारणम्) यथा जीवेषु दीवानां वा प्राणवा श्रेष्ठः मानवेषु (मानवानां वा) पण्डितः कविषु कवीनां वा) कर्त्तव्याम् श्रेष्ठः । द्वागु (द्वाराणां वा) कमनेषु पटु (सिद्धिर्वायों में कमनेषु चतुर है) ।

५. संदानाधिक शब्दों (युक्तः तन्पर आपृतः आदि, तथा चतुरायण



पावो कृशितं निपुणं दृष्टुं चादि। के योगं ये सत्त्वमो ह्रीनीते यथा कामं भोगं तत्परः । शास्त्रे निपुणं दक्षं प्रकीर्यते ।

६—विमं कृत्वा को प्राप्ति के लिए शीघ्र प्रयास की शक्ती है वह फल यदि उस क्रिया के फल न युक्त हो तो उगने वाला ही विभीषण होता है । त्रिभिस्तान्त्रिकयोगैः, १. त्रैमं - त्रैमंशोऽपि न हि तन्त्राचार्यो वदन्ति केशव चोपाधौ चोपाधौ इति मोक्षोपपन्नकः इति । यदा परं त्रैमंशुषु यम के साथ उसका समं फलप्राप्ति है उसी के निमित्त इत्यादी ज्ञान है । इसी प्रकार तन्त्रियों केशव तथा मोक्षोपपन्न के भी गणनों हों ।

### तन्त्रम में अनुवाद करो -

१—विद्यालय में बालक शीघ्र बालिका है । २—यम ने सचपन में विद्याएँ सीखी । ३—मंद के मंद (बन्धु के परिवर्तमान) में तन्त्रम विद्यालय प्रथम आया । ४—इतिहास में नमः छात्रों की (गवय सारगु) मिटाई जाती (तिथीकोष) । ५—मन्द (गवय) पर शीघ्र होर रहे है । ६—प्राप्त फल में शरीर) दक्ष में मन्द नामक है । ७—युक्त पर मन्द (विद्यालय) है । ८—युक्त के गले (गठ) में मन्द है । ९—यदा वह मृदुले मन्द में मही विद्या ? १०—तुम्हारी कक्षा में कौन लड़का प्रथम रहा ? ११—विद्यालय प्रथम में विद्यालय सभा की बंदक (उपनिवेश) होती है । १२—मन्द में विद्यालय शीघ्र है और पशुधरा में मन्द । १३—पशुधरा में मन्द मन्द बहुत मन्द है । १४—यदा तन्त्रम में मन्द के फल मिले है । १५—यदा तन्त्रम में मन्द है । १६—विमं ज्ञानी (योग) में नहीं यदा वह बुद्धि (विद्यालय) में मन्द पड़ता ? १७—यौवन के पद में मन्द मन्द हो ज्ञान है । १८—कर्मों में मन्द आध्र) उत्तम है । १९—विमं देश में नमः उत्तम हुआ है । यदा शरीर नहीं मार जान न तन्त्रम । २०—मन्दुर ज्ञानका कार्य करना ।

### एकादश सम्प्रदाय

सम्प्रदाय (प्रथम) है मो.

	एकदश	द्विदश	तृदश
पक्ष	है देव	है देवी	है देवा
मन्त्र	है नमो	है नमो	है नमो
तन्त्र	है ज्ञान	है ज्ञान	है ज्ञानानि

विशेष - मन्त्रात्मक शरीर का सम्प्रदाय नहीं होता ।

(क) तनादिगण  
कृ (करना) परस्मैपद

	(लट्)				(लङ्)	
करोति	कृतम्	कृतम्	५० ५०	करोति	कृतम्	कृतम्
करोति	कृतम्	कृतम्	५० ५०	करोति	कृतम्	कृतम्
करोति	कृतम्	कृतम्	५० ५०	करोति	कृतम्	कृतम्

नट् मे करिष्यति करिष्यति करिष्यति आदि ।

	(लट्)				(लङ्)	
करोति	कृतम्	कृतम्	५० ५०	करोति	कृतम्	कृतम्
करोति	कृतम्	कृतम्	५० ५०	करोति	कृतम्	कृतम्
करोति	कृतम्	कृतम्	५० ५०	करोति	कृतम्	कृतम्

तनादिगणोप कृष्य प्राय धातुर्

	(लट्)		(लङ्)		(लङ्)	
करोति	कृतम्	कृतम्	५० ५०	करोति	कृतम्	कृतम्
करोति	कृतम्	कृतम्	५० ५०	करोति	कृतम्	कृतम्
करोति	कृतम्	कृतम्	५० ५०	करोति	कृतम्	कृतम्

(२) कृष्यादिगण

प्रह. (पकटना), परस्मैपद

	(लट्)				(लङ्)	
करोति	कृतम्	कृतम्	५० ५०	करोति	कृतम्	कृतम्
करोति	कृतम्	कृतम्	५० ५०	करोति	कृतम्	कृतम्
करोति	कृतम्	कृतम्	५० ५०	करोति	कृतम्	कृतम्

नट् मे कृष्यति कृष्यति कृष्यति आदि ।

	(लट्)				(लङ्)	
करोति	कृतम्	कृतम्	५० ५०	करोति	कृतम्	कृतम्
करोति	कृतम्	कृतम्	५० ५०	करोति	कृतम्	कृतम्
करोति	कृतम्	कृतम्	५० ५०	करोति	कृतम्	कृतम्

कृष्यादिगणोप कृष्य प्राय धातुर्

	(लट्)		(लङ्)		(लङ्)	
करोति	कृतम्	कृतम्	५० ५०	करोति	कृतम्	कृतम्
करोति	कृतम्	कृतम्	५० ५०	करोति	कृतम्	कृतम्
करोति	कृतम्	कृतम्	५० ५०	करोति	कृतम्	कृतम्



प्री—सूत्र करना	प्रीणाति	प्रीणात्	प्रीष्यति	प्रीणातु
पू—पवित्र करना	पूनाति	पूनात्	पूषिष्यति	पूनातु
चु—स्वीकार करना	चुणाति	चुणात्	चुषिष्यति	चुणातु
धु—काँचना	धुनाति	धुनात्	धुषिष्यति	धुनातु
धश—खाना	धशनाति	धशनात्	धशिष्यति	धशनातु
मुध—चुराना	मुधनाति	मुधनात्	मुधिष्यति	मुधनातु
बन्ध—बाँधना	बन्धनाति	बन्धनात्	बन्धिष्यति	बन्धनातु
ज्ञा—ज्ञानना	ज्ञानाति	ज्ञानात्	ज्ञानिष्यति	ज्ञानातु

विधिलिङ् में — (प्री) प्रीणीयात् (पू) पूनीयात् (चु) चुनीयात् (धु) धुनीयात् (धश) धशनीयात् (मुध) मुधनीयात्, बन्ध बन्धीयात् (ज्ञा) ज्ञानीयात् ।

### (१०) कुराविगल

कुर (कुराना परस्मैपद

पद

प्र० पु०	कौरयति	कौरयन्	कौरयति
म० पु०	कौरयसि	कौरयस्य	कौरयथ
उ० पु०	कौरयामि	कौरयाम	कौरयाम

लिट्

प्र०	कौरयन्	कौरयन्नाम्	कौरयन्
म० पु०	कौरयन्	कौरयन्नाम्	कौरयन्
उ० पु०	कौरयम्	कौरयाम	कौरयाम

लृट्

प्र० पु०	कौरयिष्यति	कौरयिष्यन्	कौरयिष्यति
म० पु०	कौरयिष्यसि	कौरयिष्यस्य	कौरयिष्यथ
उ० पु०	कौरयिष्यामि	कौरयिष्याम	कौरयिष्याम

लोट्

प्र० पु०	कौरयन्तु	कौरयन्ताम्	कौरयन्तु
म० पु०	कौरयन्तु	कौरयन्ताम्	कौरयन्तु
उ० पु०	कौरयाम	कौरयाम	कौरयाम

॥ स्व दिनाश्रीय ३ ॥ चुरना चुरणात् (लट्) चुरणीयात् (लृट्) चुरिष्यति (लृट्) चुरातु (लिट्) चुरातु (लृट्) चुरातु (लृट्) ।

विधिलिङ्

प्र० पु०	चोरयेत्	चोरयेताम्	चोरयेयुः
म० पु०	चोरये	चोरयेतम्	चोरयेत
ल० पु०	चोरयेयम्	चोरयेव	चोरयेम

धुरादिजहोष कृत् सम्ब वातुरे

	(सट्)	(लङ्)	(लृट्)	(लोट्)
गशा—गितना	गशयति	गशल्यत्	गशयिष्यति	गशयतु
कष्—कड़ना	कषयति	कषलयत्	कषयिष्यति	कषयतु
मश—मासा	मशयति	मशल्यत्	मशयिष्यति	मशयतु
तश्—पीटना	तशयति	तशल्यत्	तशयिष्यति	तशयतु
रश्—रवाना	रशयति	रशल्यत्	रशयिष्यति	रशयतु
तुल—तोसना	तोलयति	तोलयत्	तोलयिष्यति	तोलयतु
पूज—पूजा करना	पूजयति	पूजयत्	पूजयिष्यति	पूजयतु
धक्—पूजा करना	धक्कयति	धक्कयत्	धक्कयिष्यति	धक्कयतु
धाह्—कुल करना	धाहयति	धाहयत्	धाहयिष्यति	धाहयतु
चिन्त—तोचना	चिन्तयति	चिन्तयत्	चिन्तयिष्यति	चिन्तयतु
क्षज—खोना	क्षजयति	क्षजयत्	क्षजयिष्यति	क्षजयतु
कष्ट—कटना	कष्टयति	कष्टयत्	कष्टयिष्यति	कष्टयतु
बुध्—बोषणा करना	बोधयति	बोधयत्	बोधयिष्यति	बोधयतु
प्री—पूरा करना	प्रीत्ययति	प्रीत्ययत्	प्रीत्ययिष्यति	प्रीत्ययतु
स्पृह्—इच्छा करना	स्पृहयति	स्पृहयत्	स्पृहयिष्यति	स्पृहयतु
भृग्—भूडना	भृगयति	भृगयत्	भृगयिष्यति	भृगयतु
भृष्—सजाना	भृषयति	भृषयत्	भृषयिष्यति	भृषयतु
वर्ग—वर्तन करना	वर्गयति	वर्गयत्	वर्गयिष्यति	वर्गयतु
लोक—देखना	लोकयति	लोकयत्	लोकयिष्यति	लोकयतु
साम्ब—साम्ब करना	साम्बयति	साम्बयत्	साम्बयिष्यति	साम्बयतु
वृक्क—भौकना	वृक्कयति	वृक्कयत्	वृक्कयिष्यति	वृक्कयतु

विधिलिङ् में —(कश्) गरायत, (न्य) कषयत आदि ।

सम्बोधन (प्रथमा)

एत वाक्यों को ध्यान से पढ़ो

(१) हे ईश्वर ! देहि मे मुक्तिम् (ईश्वर मुझे मुक्ति दो) ।



(२) या मित्र समस्त प्रजानां भवा एवं साधितम् (मित्र क्षमा करो, प्रजानां भवा मैंने ऐसा कहा)

(३) हे बान्धव मनुष्यिष्ठमि ? (बान्धव कहीं जाना चाहती हो ?)

(४) या महात्मन्, किं भवता भोजनं कृतम् ? (महात्मन्, क्या भोजन भोजन कर लिया ?)

(५) हे पुत्र तदा मया वद, वम चर (पुत्र, तदा तब बोल और वम का आचरण कर) ।

सम्बोधन (शब्द) किसी को पुकार कर ध्वनी और प्राकट्य करने को सम्बोधन कहते हैं । सम्बोधन में शब्दों की प्रवृत्ति होती है और सम्बोधनवाचक शब्द के पूर्व श्री, हे, आदि चिह्न लगते हैं

सर्वनाम शब्दों का सम्बोधन नहीं होता और प्रकाशना शब्दों के सम्बोधन एकवचन में विभक्त नहीं होता । प्रकाशना और इकारान्त शब्दों के सम्बोधन एकवचन में ए (हे) लगते हैं (हे) और इकारान्त शब्दों के सम्बोधन एकवचन में इ (हे) नहीं और उकारान्त शब्दों के सम्बोधन एकवचन में ओ (हे) लगता है ।

### संस्कृत में अनुवाद करो

१ महाराज, आपके राज्य में राजा को तुम है । २ मित्र कम तुम हमारे घर आओगे ? ३ बान्धव भगवान् पाठ भगवान् में पढ़ो ४ बान्धवों गुठ की सेवा करो कल मिलेगा । ५ सदा विश्राम करा अवश्य परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाओगे । ६ राजा उठो हाथ पैर पोछो और पढ़ो । ७ विश्रामियों अध्यापकों का उपदेश ग्रहण करने और उस घर चलो । ८ मित्र, आपकी पिता कुशल से तो हैं ? (अपि कुशल) ९ हे पुत्र कभी भूट न बोल सदा घर चल । १० नवकियों तुम प्राज्ञ स्कूल क्या नहीं गयीं ? ११ महाशय क्या कम तुमसे दर्शन दोगे ? १२ बन्धवी, समय पर उठो और व्यायाम करो १३ वित्तजी, मैं भोजन कसेगा और परीक्षा में पास होऊँगा । १४ भक्त तुम्हारे जैसा (तुम्हारा) भाई भगवान् में नहीं है १५ हे भोजन जंगल में कष्ट है तुम घर पर ही रहो ।

कारण बताओ कि काले टाइपवाले शब्दों में उन्मिश्रित विभक्तियाँ क्यों हुई हैं ?

### (क) विनोया

१ विनोय वृद्धों का अत्यन्त प्रिय (आचार्य और पृथ्वी के बीच में अत्यन्त प्रिय है) २ आचरन्तः किं नु चित्तवृत्त्याचार्य इति विनोय आचरते (आचार्य से विषय में क्या विचार करते हैं वह चित्त वृत्ति वृद्ध दे रही है) ३ विनोय स्वयं यः कार्योन्मुखविचारमन्त्रणं कार्यं करोति (मुझे विचार है जो कार्य के फल पर विचार किये बिना कार्य करते हों) ४ परिहृयन् विनोय एका परिहृय या मर्षय जलपूरिता (नगर के चारों ओर एक खाई है जो मर्षय पानी से भरी रहती है) ५ नृप प्रति स्वं नमि वीर, स्व हि कामान्तराति-मित्रम् (मेरा विचार है तुम वीर नहीं हो, तुम तो एक कामर से अधिक भ्रम्य नहीं हो) ।

६—विना वासं विना सर्वं विनोयतम विना ।

विना हस्तिपुताम्बोवात्मकंमो वातिनी वृषो ॥

शेषः वर्षा ओर विनोय गिरने के बिना तथा हाथियों के उत्पान के बिना किमने दुःख हो वृषों को दिया है ?

### (क) विनोया

७ शशिना सह यमि कोमुटी सह मेघेन तविः प्रवीयते (चाँदनी चन्द्रमा के साथ चली जाती है और मेघ के साथ विचरती) । ८ कष्टं व्याकरणम् इदं हि ह्यवशमिच्छं व्यसने (आकरण कठिन है वह व्याकरण में पढ़ा जाता है) ९ सहस्रंरपि सुधागामिक कोमोऽन गविदगम् (हजारों मुखों के बदन में एक पण्डित खगोल विद्वान् है) । १० स स्वरेण रामचन्द्रमनुहरति (वह स्वर में प्यारे राम से मिलता जुलता है) । ११ हिमध्वन्याचिनो भवन्ति राजान न च ते प्रसक्तं नम्रयन्ति (राजाओं को स्वयं की भावप्रकटा रहती है, चित्तु के सभी से तो नम्र नहीं होते) ।

### (ध) वृषो

१२ एवं यन्तो मन्त्राय (वह पहनवान उस पहनवान के लिए काफी है) १३ उपदेशो हि सुधागामं प्रकोषाय न ज्ञानवे (मुखों की उपदेश देना केवल उनके क्रोध को बढ़ाता है, न कि उनको ज्ञान के लिए) । १४ नमस्ते-म्यः पुनराशुमुनिभ्यो ये मानकमाकम् कृते आचार्यद्वित आचरन्तः (द्वि प्रवीण मुनियों की प्रशंसा है जिन्होंने अनुष्ठान के लिए आचरण के नियम बनाये) ।



१५ गोम्यो दाहरोम्यश्च स्वस्मि (गीर्णों और बहुरों का कल्याण है) १६ अन्तर्मदम् उत्साहश्च आय प्रविष्ट्यानि (यह उत्साह को मिराने के लिए काफी है) १७ कुचकम्पः कलंकरोम्यश्च कुञ्जलं भूयात् (जितानों और मजदूरों का भला है) १८ प्रथमति न एकंनैव हावनेन साहित्यमध्यमपरीक्षीत्तराण्यं (वह एक ही वष में साहित्य मध्यम परीक्षा में उभराएँ ज्ञान के योग्य है) १९ मध्वन्धर्विणे तस्यै स्पृष्टव्यामि न मुक्तये । भवान् पथुरह दास दति यत्र विमुक्तये धोहन्वन ) (जिस मुक्ति में घाघ प्रभु हैं और मे दाम है—एह मानसा विमुक्त हो जाती है भवन्वन के नाम के लिए मैं उस मुक्ति की इच्छा नहीं करता) ।

### (घ) चरित्र

२०—धीरा मनस्थितो न क्षणतश्चिन्तयन्ति मानम् (धीर मनस्थी सांग एन के वशले मान को नहीं छोड़ते) । २१—स्वाधीत् सता गुरुतरा प्रजापि-  
क्षितैव (मत्पुत्रा के लिए सतन प्रजापति से विश्व का प्रयोजन ही कहा है) ।  
२२—नास्ति सम्पत्सता मयो नान्ततम् यत्नक महत् सत्य मे कद्वार काहु  
घने नहीं छोड़ भूट मे वष कर काई गण नहीं) २३—साम्प्रदायिकतायाम् यत्र  
व्यक्तावर्तिनृत्तार वागीत्या वागमन्ति (गीर्ण के पास एक बात है जहाँ काम  
बंध से छुट्टी पाकर सामान्यो मानन्द मनाते हैं) । २४—श्रुते वसन्ताम्नाप  
श्रुतराज (वसन्त को श्रुत कर श्रम्य श्रुत को श्रुतराज नहीं कहते) २५  
सूक्तो हि ज्ञापनमिदमे वचिष्ठतम् (सूक्त का ज्ञापन के कारण पवित्र से  
भय समझा जाता है) ।

### (ङ) चरित्र

२६—तस्यै कोपित्यामि यदि न प्रेक्षमाणाऽऽत्मनः प्रमविष्ट्यामि (जिससे मैं  
कोप करोगी यदि मैं उसे देखने हुई क्षमने घायकी जवा में रख सकी) । २७—  
मया नश्य किमपराद्ध म मां परधमवादीन (मैंने उसका क्या अपराध किया  
जो वह मुझ परीक्षी करी मनान नगर) ? २८—तस्य दशमोऽक्षरं, चिर दृष्ट-  
स्य तस्य युक्त उमके वशन की उत्कृष्टा है उसे मिले हुए चित्रबाल हो गया  
है) । २९—कल्पितमात्र समर्थां किं दूर अवसाधिताम् ? को विवेक सविद्यानो  
का पर प्रियवादिताम् ? (काय में समथ लोगों के लिए क्या कठिन है ? व्य-  
साय काने लोगों के लिए क्या दूर है ? विद्वानों के लिए कोनसा विवेक है ?  
प्रिय जानने वालों के लिए कोनसा पयाय है ?) ३०—कच्चिभूतः स्मरामि सुमो,

त्वं हि तस्य शिष्येति (हे सुन्दरि, क्या तुम्हें अपने गुरुजी की याद है कि तुम उनकी प्यारी हो ३१) एवं लोकस्य वात्स्यीकि कम पुनस्तत एव (तुम ससार के लिए वात्स्यीकि हो, किन्तु घरे तो तुम पिता हो) ।

३२ द्रवद्रुतजटानज्वानजालाहनानाम्

परिगन्तितमेतन्ना म्मायतां नृपहासाम्

अथि जनधर ! गीतधेलिभृगोन् नांय

वितर्तति बहु कोऽयं क्षीयटस्तावकीम

हे मेरा प्यारा गुरु कैसा गर्व है कि जगत् की राग की उबालाघो से जैसे हुए गनित सनाथों वाले भुग्ग्राये हुए वृक्षों का घनादर करके नू पवनों के शिखरों को बहुत घाना देता है ।

### (क) कलसी

३३ पुनर्वसुनामी गयी मुक्ति तस्य न वन्त (मानवों में धर्म, राम संसार में कितने नमस्कार-योग्य नहीं) ३४— एह पुनर्वसुनाम् प्रेक्षयतीषु मन स्व-तथायोग नगामि (मैं तो तुम्हारे देखने ही शक्ते इस (शुमार वृषभने) को बार बारता है) । ३५ योग्ये कर्मगती कालमि कोऽविमयमाचारति प्रजाम्; पीरक के पूषवी पर राज्य करते हुए कोन प्रजापति के प्रति घनाचार करता है) ? ३६ जलपायां पुनर्वसुनायां प्रभुमः प्रामथ कुन (जगत् के पहले ही बट जाने पर कुन कहीं से आ सकते हैं) ? ३७ अविमयतायां चन्द्रिकायां कि कीर्तिप्राप्तोत्तमयोग (शुभ उपोत्पत्ता में अथ हीक जलाने में क्या लाभ) ? ३८ विषमि हन्त मुच्यति विषयने (विषमि में विष भी शत्रु हो जाने हैं) । ३९ जीवन्मु तालपायेषु नवे वारमविषदे मातृमिश्रित्तन्मयमाता ते हि नो दिवसा गता (पिताजी के जीने जब हमारा नया नया बिकार हुआ था निवधम ही हमारे में विन जीन गये जब हमारी माताएँ हमारी देख भाव करती थीं) । ४० इदमवस्थान्तर गते ताहमेऽनुहायो वि वा स्मृतिनेत (तस प्रकार के प्रेम के इस अवस्था में पहुँच जाने पर याद लगने में क्या) । ४१—वर्मलि द्वीपिनं हन्ति व्याघ्रः (शिकारी बीने को चम के लिए घारता है) ।

४२ गते मोक्षे हन्त श्रोत्रे कर्णं च विनिपातिते ।

माया बलवती राजन् अन्यो ब्रह्मणि पादवान् ।

सौम्य द्रोण और कर्ण के मार जाने पर राजन् सारा ही चतुर्दशी है कि शत्रु पाण्डवों को जीतना ।

### कारक (एक दृष्टि में)

प्रथमा—१ कर्ता में सिन्धु रोदिनि यह एष पदपरि ।

२ कर्मवाच्य के कर्म में वटनि पञ्चने चंद पशुनि पीयते जलम्

३ सम्बोधन में—ओ गुरो ! क्षमस्व ।

४ प्रथम के साथ—अशोक इति विष्णोरा राजा सर्वजगद्विप ।

५ नाम साथ में—सामीन राजा विक्रमादित्यो नाम ।

द्वितीया—१ कर्म में—प्रजा संरक्षति नृप, मा वक्ष्यति पराध्वम् ।

२ श्रुते धर्मार्थ विना के साथ—विद्यामन्त्रेण विना, ज्ञाने वा नैव मुक्तम् ।

३ एतत् के साथ—तथावाच अनपत्तिगृहानुत्तराणामधीपम्

४ अभित के साथ—अभितो वचन वारिका ।

५ परित के साथ—परितो ज्ञानिनं यक्षत

६ सवत् के साथ—सवत् पवत् कृता ।

७ उभयत् के साथ—सौमलीमुभयतस्तरण ।

८ अन्तरा (भीष में) के साथ—अन्तरा त्वा व मा व स ।

९ समया विकथा (भगीप) के साथ—समं समया निकथा वा तवी

१० व्याप्ति के साथ में—व्याप्यधीने कोण कुटिला नदी ।

११ अनु के साथ—अनुमन् शिष्यो बन्धुः ।

१२ प्रति के साथ—दीन प्रति दया कुरु ।

१३ चिक के साथ—चिक वाप मुष्मन्जीवतम्

१४ अविगीष्ट के साथ—अविगीष्ट मुवन्तिनापट्टमधिजेते

१५ अविष्ठा के साथ—अविष्ठा बहुमवितिष्ठति (अथवा रमेश गृहे तिष्ठति) ।

१६ अज्ञात के साथ—नृप सिंहासनमध्यास्ते (नृप सिंहासने ध्यास्ते)

१७ अनु, उप पूर्वक वत् के साथ—हरि वैकुण्ठमुपवसति अनु-वसति वा ।

१८ आवत् एवं अविवत् के साथ—अविवसति काशीं विश्वनाथ भक्तः देवमन्दिरम् आवसति ।



- १६ अति-नि-पूर्वक त्रिम् के साथ—अतो अयम् अतिनिविष्टो  
२० अतिविशेषस्तु मे—तत्त्वः शब्दोऽपि भूः । सत्यं वचनमाचरेत् ।

तृतीया—१ करण मे—न वचन मुख प्रधानवति । इत्येतत् बुद्धवते ।

- २ कामवाच्य कर्ता मे—रामेण रावणो हत  
३ स्वभावविषय मे—राम प्रकृष्टा सात् । नाना गोपालाजम् ।  
४ मत्त साकम् साधम् के साथ—अतिना सह शक्ति कोमुदी ।  
५ सहस्र के अर्थ मे—अर्थेण सहस्रो वारिणः अन्तर्गते  
६ हत के अर्थ मे—कन हतना अर्थ वारिणः ?  
७ होन के साथ—विशेषा तु विहोवन्ति किं कृत्वा जीवितेन ते  
८ विना के साथ—अर्थेण विना विना लभ्यते न कश्चित्  
९ अर्थ के साथ—अर्थेण लभ्यते न कश्चित्

- १० प्रयोजन के अर्थ मे—अर्थेण किं न दर्शयति तादृशे  
११ लक्षण-बोध मे—अतिविशेषस्तु प्रयोजन ।  
१२ कर्मवर्ति (अर्थेण) मे—अतिविशेषस्तु प्रयोजन । अतिविशेषे  
सीतोयो वात ।  
१३ विदुषः अर्थ मे—अतिविशेषस्तु प्रयोजन । अतिविशेषे  
वादेन वचन बुद्धोऽपि कृत्वा वृष्टेन लभ्यते ।

चतुर्थी—१ सम्प्रदान मे—रामो रामायणं ददाति ।

- २ निमित्त के अर्थ मे—अर्थेण मत्तम्, विद्या ज्ञानम्  
३ अर्थ के अर्थ मे—अतिविशेषस्तु प्रयोजन ।  
४ शब्द (अर्थेण) के अर्थ मे—अर्थेण अर्थेण शब्दोऽपि  
५ स्मृति के साथ—अर्थेण स्मृतिः स्मृतिः ।  
६ अर्थेण स्वस्ति के साथ—अर्थेण स्वस्तिः स्वस्तिः ।  
७ अर्थेण अर्थेण अर्थेण के साथ—अर्थेण अर्थेण अर्थेण ।  
८ अर्थेण (अर्थेण) के अर्थ मे—अर्थेण अर्थेण अर्थेण ।  
९ अर्थेण (अर्थेण) के अर्थ मे—अर्थेण अर्थेण अर्थेण ।  
१० अर्थेण (अर्थेण) के अर्थ मे—अर्थेण अर्थेण अर्थेण ।  
११ अर्थेण (अर्थेण) के अर्थ मे—अर्थेण अर्थेण अर्थेण ।  
१२ अर्थेण (अर्थेण) के अर्थ मे—अर्थेण अर्थेण अर्थेण ।

- पञ्चमी १ पृथक् ग्राम में नृणां कमानि पतन्ति न शीमाद् घागन्दसि  
 २ मय के ग्राम में अलज्जनान् कस्य ग्रामं न जायते ?  
 ३ बहला करने के लिये—कृपात् अल नृजानि ।  
 ४ पुत्रादि के योग में स्त्रानान् पूर्व न मुञ्चीत न घावेत् भोजनान्  
 परम् ।  
 ५ अन्त्याय के योग में ईश्वरादन्त्य के लक्षणं सम्यक् ?  
 ६ उत्कृष्ट-वाय में जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी  
 ७ विना कृते के योग में—परिचिन्नाद् विना (कृतं) विद्या न भवति  
 ८ शरान् (दूर वा समीप) के योग में—शामाद् शरान् मुक्तामुप-  
 बसम् ।  
 ९ प्रभृति के योग में—शंसकास्तप्रभृति लोकोश्च वतुर ।  
 १० शब्द के साथ—आभूलात् रहस्यमिदं श्रोतुमिच्छामि ।  
 ११ विरामार्थक लक्ष्य के साथ—न नवः प्रभूराकलावयात् विरामार्थं  
 विरामो कर्मणः ।  
 १२ काल शीघ्र मार्ग की व्यवधि में—विद्याहारा मयमे दिते ।  
 १३ जायते शक्ति ग्राम में—लोकेभ्यः शङ्क वा जायते  
 १४ उद्भवति, प्रभवति, निवीयते प्रतिपद्यति के साथ—हिमाजयान्  
 यथा प्रभवति उद्भवत्यति वा + नृपात् नीर निवीयते तिमेभ्यः  
 मायात् प्रतिपद्यति ।  
 १५ जुगुप्सते प्रमादति के साथ—न पपराद् जुगुप्सते । स्व धर्मान्  
 प्रमादति ।  
 १६ निवारण ग्राम में—निबं दयात् निवारयति ।  
 १७ जिसमें कोई विद्या लोको जाय तममें छात्राभ्यापकात् घडीति ।
- षष्ठी १ सम्बन्ध में—मूषस्य बहवो दाया मता च बहवो गुहा  
 २ कृदन्त कर्ता में—मञ्जनस्य लवि श्वा वन्धीकस्य च मंचयम् ।  
 अत्रन्ध्य शिवस्य कृपात् दानाभ्ययनकर्मणि ।  
 ३ तुभ्याम् के साथ—गामस्य तुन्वी भुवि पाल्ति राजा ।  
 ४ कृदन्त कर्म में—अन्नस्य पाक, पत्रस्य दानम् ।  
 ५ स्मरणार्थक प्रागृथा के साथ—म मातु म्याति  
 ६ दूर एवं समीपवासी शब्दों के साथ—नगरस्य दूर, (नगराद् वा  
 दूरम्, समीपम् मकानम् वा ।

७. कृतं समक्षम् मध्ये, अन्तरे, अन्त के साथ मूलस्थ कृतं,  
आचार्यस्य समक्षम्, वाताना कर्म मूलस्थ अन्तरे अन्त वा
८. अन्तं प्रत्यक्ष जाने अन्त के साथ नगरस्थ दक्षिणतः, उत्तरा ।
९. अन्तरे मे - अन्त गिरी, अन्त वयो ।
१०. हेतु शब्द के प्रयोग में - अन्तस्य हेतुर्भवति । निबन्धस्य हेतुर्भवति ।

- साक्ष्यी १. अधिकरण में - समाया गोमले शुभ । घातने सोचते गुरु ।  
२. घात में - अन्त कृत यदि न सिध्यति कोऽप्य दोष ?  
३. अन्तरे मे - अन्त गिरी (अन्त धिरी का) गता भगता ।  
४. निर्धारण में - हेतुं मानवा धर्म, मानवम् च परिहृता ।  
५. एक क्रिया के परस्पर रूपों क्रिया हान पर - भूयं वदिते विक-  
सति कमलम् ।  
६. विषय के अन्त में तथा समयसोचक अर्थों में - बोले दृष्टव्यम्  
दिने प्रातःकाले, मध्याह्ने, सायंकाले वा कार्यं करोमि  
७. संख्यार्थक शब्दों योग अनुसारक शब्दों के साथ - कार्यं लग्न  
नगरम् । शोकने निपुण, प्रवीण, एत आदि ।

### इत वाक्यों की शुद्ध करो—

७१. शास्त्रज्ञः नृपम् यमं वाक्ये । २. त्वम् गुणे निम्बसि ३. भक्तम्  
अग्निम् भारे भागवत्तम् । ४. अक्षम् कर्म बीदेना विभक्ति ? ५. इमा वासिका  
पठनं रोचते । ६. पिता पुत्रं जल्पति । ७. आचार्यं माधुपदिशति ८. रामस्य  
विना अधीष्टा शुभ्या बभूव । ९. मय आगा गजराज वन्द्यमदात् । १०. सिंह  
धृष्टस्य प्रति चार्कति ११. जब साक राहं जीवितव्यामि १२. पवतेभ्य हिमा-  
लय अधोमुखं अस्ति । १३. नगरस्य अग्निं निवातपोर्जति । १४. इमं प्रदेशं  
राम्यात् विध्यात् पुष्पम् । १५. कालकालं हवितम् । १६. शुक्लन्दन नेत्रस्य  
काण १७. विद्याया हीनस्य नरस्य किं प्रयोजनं जीवितम् । १८. एवं

७. शुद्धिया १. नृपम् । २. नृपम् । ३. इव नगरम् । ४. जीवान । ५.  
अस्मै नाजिकार्यम् । ६. पुत्राय । ७. मद्यम् । ८. राम विना । ९. राजकन्या १०.  
भुजं प्रति । ११. त्वया साकम् । १२. पवतेम् । १३. नगरम् अग्निं १४. तं  
विध्याम् । १५. हवितम् । १६. नेत्रम् । १७. विद्याया हीनस्य नरस्य किं  
प्रयोजनं जीवितम् ।



कथं मां कुप्यसि ? १६ गोप गो पया दाग्त्र । १७ देवेन्द तस्मिन्ना दित्ति ।  
 १८ स स्वरात् स्वपितरम् अनृत्ति । १९ इत्यत नगदीन पथा धरेत्  
 २० स्वाधिलिप्ता जना दत्तेन मान प्रत्यिच्छन्ति २१ लताया पुवंचूनायाम्  
 प्रसूनस्यागम कुत ? २२ सत्येन परा धर्मो नान्ति दत्तयेन च पशुभ्याप  
 नान्यत् । २३ इह तव कथनेन ममान्तराहभ गम् धतम् २४ केदाव मर्षो  
 माविन्दममितम् । २५ प्रात प्रमृति कर्षा भर्षा न कथा विरमति

१६ मायम् १७ गोम् १८ लेखन्या । १९ स्वरात् । २० रत्नम्  
 २१ लताया २२ पुवंचूनायाम् । २३ सत्तात् , धर्मस्यात् । २४  
 उत्साहप्रसाधे , २५ माविन्दन (मिन् प्रातृ अक्षयक है) । २६ प्रात प्रमृति  
 कर्षति देव , न चैव विरमति । 'कर्षा' भर्षाणि प्रयोग व्याकरण सम्मेलन होते हुए  
 भी व्यवहार के प्रतिकूल है । संस्कृत-व्याकरण में 'कर्षा' निम्नवद्व्युत्पन्नान्त  
 शब्द है और उसका अर्थ 'विरमति' है ।

## सर्वनाम शब्द

### हम्यद्

एकवच०	द्विवच०	बहुवच०
(प्र०) अहम् (मैं)	आकांम् (हम दो)	वयम् (हम)
(द्वि०) माम् (मुझको)	आवाम् (हम दो को)	वस्मान् (हमको)
(तृ०) मया (मेरे)	आवाभ्याम् (हम दो में)	वस्माभिः (हमने)
(च०) मयाम् (मेरे लिए)	आवाभ्याम् (हम दो के लिए)	वस्माभ्याम् (हमारे लिए)
(पंच०) मयि (मुझ से)	आवाभ्याम् (हम दो से)	वस्मात् (हम से)
(षष्ठ०) मय (मेरा)	आवयोः (हम दो का)	वस्माकम् (हमारा)
(सप्त०) मयि (मुझ पर)	आवयोः (हम दो पर)	वस्मासु (हम पर)

### तुभ्यद्

(प्र०) त्वम् (तु)	तुभ्याम् (तुम दो)	तुभ्यम् (तुम सब)
(द्वि०) त्वाम् (तुझको)	तुभ्याम् (तुम दो को)	तुभ्याम् (तुम को)
(तृ०) त्वया (तु ने)	तुभ्याभ्याम् (तुम दो में)	तुभ्याभिः (तुमने)
(च०) तुभ्यम् (तेरे लिए)	तुभ्याभ्याम् (तुम दो के लिए)	तुभ्याभ्याम् (तुम्हारे लिए)
(पंच०) त्वत् (तुझ से)	तुभ्याभ्याम् (तुम दो से)	तुभ्यात् (तुम से)
(षष्ठ०) त्व (तेरा)	तुभ्योः (तुम दो का)	तुभ्याकम् (तुम्हारा)
(सप्त०) त्वयि (तुम पर)	तुभ्योः (तुम दो पर)	तुभ्यासु (तुम पर)

### अव्यय (आप)

एकवच०	द्विवच०	बहुवच०	एकवच०	द्विवच०	बहुवच०
अवाम्	अवन्तौ	अवन्तः	प्र० अवन्ती	अवन्तयो	अवन्तयः
अवन्तसु	अवन्तौ	अवन्तः	द्वि० अवन्तीम्	अवन्तयो	अवन्ती
अवन्ता	अवन्तभ्याम्	अवन्तः	तृ० अवन्तया	अवन्तीभ्याम्	अवन्तीभिः

भवते	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः	४०	भवत्वं	भवतीभ्याम्	भवतीभ्यः
भवत	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः	५०	भवत्या	भवतीभ्याम्	भवतीभ्यः
भवत	भवतो	भवताम्	६०	भवत्याः	भवत्यां	भवतीनाम्
भवति	भवतो	भवत्सु	७०	भवत्याम्	भवत्यां	भवतीषु

तत् (वह), तस्मिन्

(३०) त (वह)	तो (उसको)	ते (वे,
द्वि०) तद् (उसको)	तो (उन दो को)	ताम् (उनको)
(तृ०) तत् (उसके,	ताभ्याम् (उन दो के)	तं (उसके)
(च०) तस्मै (उसके लिए),	ताभ्याम् (उन दो के लिए)	तेभ्यः (उनके लिए),
(प०) तस्मात् (उससे),	ताभ्याम् (उन दो से)	तेभ्यः (उनसे)
(प०) तस्य (उसका)	तया (उनका)	तस्याम् (उसका)
(स०) तस्मिन् (उस पर)	तया (उन दो पर)	तेषु (उन पर)

तत् (वह)

सप्तमकनिग

होतीतिग

तत्	तै	तानि	३०	ता	ते	ताः
तद्	तै	तानि	द्वि०	ताम्	ते	ता
तैव	ताभ्याम्	तै	तृ०	तया	ताभ्याम्	तस्मै
तस्मै	ताभ्याम्	तस्मै	च०	तस्या	ताभ्याम्	ताभ्यः
तस्मात्	ताभ्याम्	तस्या	प०	तस्या	तया	तस्मात्
तस्य	तयो	तस्याम्	प०	तस्या	तया	तस्मात्
तस्मिन्	तयो	तेषु	प०	तस्याम्	तया	ताम्

इदम् (वह)

पृ०

स्त्री०

एकव०	द्विव०	बहुव०	एकव०	द्विव०	बहुव०
अयम्	इमी	इम	अयम्	इमे	इमा
अयम्	इमी	इमान्	द्वि०	इयम्	इमा

सप्तमकनिग में (३० द्वि० में) भवन् भवती भवन्ति और द्वितीया के बाद पुल्लिङ्ग के लिंगान् रूप बताने । भवन् गन्त के साथ प्रथम पुरुष की क्रिया लगती है यथा—भवान् गच्छतु (जाय जायें) ।



अनेत	आभ्याम्	एनि	नृ०	अनया	आभ्याम्	आभिः
अन्तै	आभ्याम्	एन्त्य	च०	अन्तै	आभ्याम्	आभ्य
अन्त्यान्	आभ्याम्	एन्त्य	प०	अन्त्या	आभ्याम्	आभ्य
अस्य	अनयोः	एषाम्	प०	अस्या	अनयोः	आसां
अस्मिन्	अनयोः	एषु	प०	अस्याम्	अनयोः	आसु

१ एतन् (बह)

पूर्वलिङ्ग			स्त्रीलिङ्ग		
एत	एतो	एत	इ०	एता	एते
एतम्	एतो	एतान्	द्वि०	एताम्	एतं
एतन्न	एताभ्याम्	एतैः	तृ०	एतया	एताभ्याम्
एतस्मै	एताभ्याम्	एतभ्य	च०	एतभ्ये	एताभ्याम्
एतस्मान्	एताभ्याम्	एतभ्य	प०	एतस्या	एताभ्याम्
एतस्य	एतयोः	एतयोः	च०	एतस्या	एतयोः
एतस्मिन्	एतयोः	एतयोः	प०	एतस्याम्	एतयोः

१ अस्मन् (बह)

पूर्वलिङ्ग			स्त्रीलिङ्ग		
अस्मै	अस्मू	अस्मै	प्र०	अस्मै	अस्मू
अस्मन्	अस्मू	अस्मन्	द्वि०	अस्मन्	अस्मू
अस्मन्ता	अस्मभ्याम्	अस्मभिः	तृ०	अस्मया	अस्मभ्याम्
अस्मभ्यै	अस्मभ्याम्	अस्मभ्यः	च०	अस्मभ्यै	अस्मभ्याम्
अस्मभ्यान्	अस्मभ्याम्	अस्मभ्यः	प०	अस्मन्ता	अस्मभ्याम्
अस्मभ्य	अस्मयोः	अस्मयोः	च०	अस्मभ्याः	अस्मयोः
अस्मभ्यस्मिन्	अस्मयोः	अस्मयोः	प०	अस्मभ्याम्	अस्मयोः

१ नपुंसकलिङ्ग में एकत्र शब्द को प्रथमा और द्वितीया विभक्तियों में एतन्, एतौ एतानि और तेष विभक्तियों पूर्वलिङ्ग को आभिः होते हैं

२ नपुंसकलिङ्ग में शब्द शब्द को प्रथमा और द्वितीया विभक्तियों में एतं अस्मै अस्मिन् और तेष विभक्तियों पूर्वलिङ्ग को आभिः होते हैं

१ यत् (यो)

पुंलिङ्ग				स्त्रीलिङ्ग		
य	यी	ये	अ०	वा	वे	या
यम्	यी	यान्	द्वि०	याम्	वे	या
येन	याभ्याम्	ये	तृ०	यया	याभ्याम्	याभिः
यस्मै	याभ्याम्	तेभ्यः	च०	यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः
यस्मात्	याभ्याम्	तेभ्यः	प०	यस्या	याभ्याम्	याभ्यः
यस्य	ययो	येषाम्	प०	यस्या	ययो	यास्याम्
यस्मिन्	ययो	येषु	अ०	यस्याम्	ययो	याम्

२ किम् (कीम्) ?

पुंलिङ्ग				स्त्रीलिङ्ग		
क	की	के	अ०	का	के	का
कम्	की	कान्	द्वि०	काम्	के	का
केन	काभ्याम्	कै	तृ०	कया	काभ्याम्	काभिः
कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः	च०	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः	प०	कस्या	काभ्याम्	काभ्यः
कस्य	कयो	केषाम्	प०	कस्या	कयो	कास्याम्
कस्मिन्	कयो	केषु	अ०	कस्याम्	कयो	काम्

सर्वनाम शब्द और उनका प्रयोग

सर्वनाम का प्रयोग सामान्यतया नाम के स्थान पर किया जाता है किन्तु जब एक से अधिक बार नाम का प्रयोग करने की आवश्यकता होती है तब सर्वनाम का ही प्रयोग किया जाता है। वाक्य में एक ही पद की धातुलिङ्ग सुन्दर नहीं होती अतः नाम के स्थान पर सर्वनाम का प्रयोग करते हैं जो कि नाम के ही निङ्ग, विभक्ति और शब्द रहस्य करते हैं (यो यस्मात्तस्मात् स तच्छस्मैस्तभ्यः)

१ नपुंसकलिङ्ग में यत् की प्र० द्वि० विभक्तियों में यत्, ये यानि और द्वेष विभक्तियाँ पुंलिङ्ग की भाँति होती हैं।

२ नपुंसकलिङ्ग में किम् शब्द को प्र० द्वि० विभक्तियों में निम् के, कानि और द्वेष विभक्तियाँ पुंलिङ्ग की भाँति होती हैं।

इत्यादि सर्वनाम शब्दों में इदम् (यह), अदम् (वह), त्वम् (तू, तुम), अस्मद् में हम और भवान् (आप) इन सभी के रूप निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त होते हैं—

१—समीप की वस्तु या व्यक्ति के लिए 'इदम्' अर्थात्, दृष्टिक समीप की वस्तु या व्यक्ति के लिए 'एतद्' शब्द सामान्य के दूरवर्ती पदार्थ या व्यक्ति के लिए अदम् और पराश्र, जो सामान्य नहीं है, के पदार्थ या व्यक्ति के लिए तद् शब्द का प्रयोग किया जाता है जैसा कि कहा गया है

इदमस्तु मल्लिकार्जुन समीपवर्तिनश्चैतदो कणम्  
अदमस्तु विप्रकृष्टं तदिदं पराश्रं विजानीयात् ।

०—जिस व्यक्ति या वस्तु के सम्बन्ध में एक बार कुछ कह कर फिर उसके विषय में कुछ कहना हो तो द्वितीया विभक्ति में तृतीया विभक्ति के एकवचन में छोटी बड़ी तथा सगुण विभक्तियों के द्विवचन में इदम् शब्द के स्थान में 'एतद्' आदेश होता है यथा—एतन् व्याकरणाभासीतम् गमं ध्वन्य-  
उदात्तम् इसके व्याकरणात्क मिया है, शब्द इसे इदम् कहाइय, एतयो पक्षिणं  
कुलम् एतयो वधून् शब्द इनका पक्षिण कुल है इनके नाम बहुत धन है)

इदम् और एतन् के वैकल्पिक रूप —

प० एतम्, एतौ, एतान् एतेन एतयो एतसौ ।

श्री०—एताम्, एते एता एतौ, एतयो ।

तृ०—एतद्, एत एतान् एतेन एतयो एतसौ ।

३—इदम् और अदम् शब्दों की द्वितीया अतृतीया और चतुर्थी के एक-  
वचन में क्रमशः 'त्वा न ते—मा मे मे' द्विवचन में क्रमशः 'वाम् वाम् वाम्  
नौ नौ नौ और बहुवचन में क्रमशः 'व व, व 'न, न न आदेश होते हैं ।  
इनकी प्रयोग में जाने के नियम ये हैं—

ये सब आदेश त्वा न ते आदि। वाक्य या क्लोक के चरण के आरम्भ में 'व वा वा, यह एवं' इन पांच ध्वनियों के शब्द में छोटी सम्बोधन के परे

०ओशङ्काज्जनु माउपीह इन्नाने सेउपि शयं स ।

स्वाधो ने माउपि स हरिं पातु वामपि नो विभु ।

सुधं वा नो दद्यात्स्वैश पवित्रमपि नो हरि ।

सोऽप्याहो न शिव को नो दद्यात्स्वैवोऽन व स न ।



नहीं होता, यथा वाक्यारम्भ म—मम गृह गच्छ मेरे घर जाओ इसमें 'मम' के स्थान पर 'मे' का प्रयोग नहीं होता। पाँच अव्ययों के योग म—म स्वयं मां च जानाति (वह तुम्हें और मुझ जानता है)। इस पुस्तक में विशेष्यित यह पुस्तक तेरी ही है। हा मम मन्दबोध्यम् (हम मनुष्य दुर्बोध्य) इनमें क्रमशः स्वा मां त मे आदेश नहीं हुए सम्बोधन के टीक पर—ममो मम आश मागच्छ, आई, मेरे गाँव चलो,। यहाँ मम के स्थान पर 'मे' का प्रयोग नहीं होता।

४—जब 'व' यादि अव्ययों का वृत्त, सम्बन्ध के स्थान मां मे आदि संक्षिप्त रूपों से कोई सम्बन्ध नहीं होता तब वे आदेश ११ संपात हैं यथा—  
केदार शिवश्च मे हृदये (केदार और शिव मेरे हृदय में हैं)। यहाँ 'मे' का सम्बन्ध हृदये से है और 'व' केदार और शिव को एक वाक्य के साथ मिलाता है।

५—जब सम्बोधन के साथ कोई विशेषण हो तब वृत्त और सम्बन्ध की उक्त आशंका हो सकती है। यथा—हरे वर्यान् न पाहि न वर्यान् हरि, हारोरी रखा करो।

६—सम्मान के अर्थ में वृत्त के स्थान पर भवन् शब्द का प्रयोग होता है। यथा—रत्नमुक्तेन न प्रोक्तः—श्री भवान् अभ्यागतः अतिथि तद् वसयतु (भवान्) यथा इत्यादि सम्बोधनानि" (रत्नमुक्त ने उससे कहा—भूतिदेव आप अभ्यागत और अतिथि हैं यान् आप मेरे शिष्य हुए जामुन के फल खाइये)

७—सम्मान बोध के अभाव में भी वृत्त के स्थान में भवन् शब्द का प्रयोग होता है। यथा—महर्षि भवन् किमपि पृच्छामि (मैं श्री आपसे कुछ पूछता हूँ)।

८—सम्मान बोध होने से कभी कभी 'भवत्' शब्द के पढ़ते 'वत्' और 'तत्' का प्रयोग मिलता है। सम्मान का पात्र यदि उपस्थित हो तो 'भवत्' और उपस्थित न हो तो 'तत्' भवत्। यथा—भवत्प्रवन्त विद्याधुर्यन्त, अस्ति तत्र भवत् मद्भूति नाम काव्यकः। पात्र लोक यह जान कि श्री पूज्यपाद भवभूति काव्यप्रणेता हैं। भवत्प्रवन्त विद्याधुर्यन्त (पूज्यपाद वर्तिष्ठ श्री

१ तत्र १ शब्द तत्रापि मध्यम पुरुष के स्थान में प्रयुक्त होता है तत्रापि उसके साथ सदा प्रथम पुरुष की क्रिया लगती है।

आज्ञा देते हैं) । यदि कुतूहली उत्तमवान् कथं ? (पुत्रनीम कण्वजी कुशान में तो है?) अथभवान् अमाशीपविश्वविद्यालय कुलपति अभिभाषते (मे इनातगद युतिचसिटी के कुलपति महोदय भाषण कर रहे हैं)

६ भवः शब्द के पूर्व 'एष' और 'मः' का भी प्रयोग होता है, यथा—  
एष भवान् यच्च वतन् (आप यही है) । म भवान् मममदुक्तवान् (धीमान् ने मुझे ऐसा कहा है) ।

इन सर्वनामों के अतिरिक्त त्वन् त्वं त्वद् आदि सर्वनाम भी हैं जिनका बहुत कम प्रयोग किया जाता है।

१०. युष्मद् अस्मद् और मय् अहं शब्दों को छोड़कर सब सर्वनाम विशेष्य और विशेष्यता दाना हैं। सन्त है। यथा—सर्वस्य हि परीक्ष्यन्ते स्वभावा नन्तरं गुणा। सर्वके स्वभाव की ही परीक्षा होती है यन्त्र गुणों को नहीं) । पालीत्य हि गुणान् सर्वान् स्वभावाः मुञ्चिन् वतन् (कर्मिक सब गुणों के ऊपर स्वभाव ही रहता है)। इन उदाहरणों में सर्वत्र विशेष्य और सर्वान् विशेष्यता है।

११.—सर्वनाम शब्दों के बाद लकाराद्यं में ईद्वय प्रत्यय प्रांत हैं जैसे—मदीयं भाषकं भाषकीय (मित्र), अस्मदीयं आत्माकं आत्माकीय (समाज), त्वदीयं तावकं तावकीय (नेत्र)। अस्मदीयं यौग्याकं यौग्याकीय (अवधीय तुम्हारा), त्वदीयं स्वकीय (मित्र), पन्थीय (दूरार का), तदीय (उत्सव)।

कुछ अन्य सामान्यवाचक विशेष्यता या स्वस्वत्व मुक्त मां धर्मा-दृशी अस्मीत्याम तम मां। स्वस्वत्व स्वस्वत्व, (गुरु मां, पुत्रमाहं सुप्रमत्तम (तुम मां) यथा वा भवन्मम (आप मां) इति ऐसा, कीदृश कौमा ?

१२. प्रधानक और आह्वयक तथा का अनुवाद 'किम्' यदि 'किम्' अवका सन् और 'ननु' से किया जाता है यथा—

किमिदमापन्नम् (औं) यह क्या या पडा)

अपि गतः प्राध्यापकः (क्या प्रोफेसर साहब चले गये) ?

किमप्यस्ति किञ्चिदस्ति अवका किञ्चनस्ति (कुछ है) ?

ननु अलक्षणं मनम् (क्या अलक्ष्य चला गया) ।

७. एष और म के बाद कश्चिद् न। छोड़कर कोई भी शब्द नहीं जो विमर्श का लोप हो जाता है।

१३—'यत्' शब्द के साथ 'तत्' शब्द का नित्य सम्बन्ध होता है। यत् दोनित्यसम्बन्धः। किन्तु जहाँ यत् शब्द उत्तर के वाक्य में आता है वहाँ पूर्व के वाक्य में 'तत्' शब्द का रचना करनी नहीं, बल्कि—

सौम्यं तम पुत्रं आगतं यं देव्या स्वकरकर्मत्तरूपतान्तिष्ठ। यह तुम्हारा वह पुत्र आगया, जिसका देवी ने अपने हस्तकर्मों से लालन-पालन किया था। किन्तु पाँचमाईकीया आसीत् वा बहुभार्यराणोऽहं (जो सातह बर्षों की थी उसके साथ बहुचारी न बिवाह किया)।

यत् वरामि तत् शृणु (जो कहता है वह मुना) किन्तु  
शृणोमि यत् वदसि (सुनता है जो कहते हैं)।

१४—संस्कृत भाषा में यह वा 'एमा' का अनुवाद 'यत्' शब्द से होता है, किन्तु कभी-कभी 'इति' शब्द से भी होता है, यथा—

ममेति निवक्ष्यो यदहं पठिष्यामि (मैं यह निवक्ष्य है कि मैं पढ़ूँगा)

ममैव-शासकस्य हितमप्येषा दया भविष्यतीति की जानति स्म। यह कीन जानता था कि ब्रह्मर्षी के शासक हितम की यह दया होगी।

### हिन्दी में अनुवाद करो

१—आमोपकण्ठे विप्रस्य सरोजिन तस्मिन्मम स्नान्ति घासीणः ।  
२—रामो राजा मत्तमाश्रुषः । ३ पितृवचनं पातयन् वने प्रायजनः । ४—  
वृत्तेन वर्गार्थोपा रमेणमुना कयता याम । ५ परोक्षमपि प्रयति लोक । ६—  
अमुं पुरः पश्यसि देवदान पुत्रीकृतोऽस्मी नृपभण्डजेन । ७ म सम्बन्धी इत्यप्य-  
प्रियमुद्बसो हृष्य हृष्टयम् । ८ निव्यन्ति कर्मम् मन्त्रस्त्वपि यमिन्योऽप्या  
संभावमापुलमवेहि तयोऽवराणाम् । ९ यदेते भृङ्गागतेषु मधुपव्यप्यन्तिपेया  
प्रवन्ति स एषा कुलधर्मः ।

### संस्कृत में अनुवाद करो—

१—विना ने कहा—वह मेरा योग्य शिष्य है। प्रिय पुत्र है। २—मारत वासी अपने घर आये हुए अनु का भी जो धार्मिक करने हैं, वह उनका कुल धर्म है। ३—इन प्राणों के लिए धन्य क्या पाप नहीं करता? ४—कोई जन्म स देवता होता है और कोई कर्म से। दोनों का, उभयेधार्मिक, दुबारा जन्म नहीं होता। ५—गुरुजी मेरा अपराध क्षमा कीजिये। ६—महाराज क्या मुझे बुझा रहे हैं? ७—जो जिसको प्यारा है, वह उसके लिए यपूर्व



वस्तु है । कियवि इत्थम् । ८ योवान तुम किन जगह से आ रहे हो ?  
 ९ मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि आप हमारे रिश्तेदार (भाष्यन्वी) हैं ।  
 १० आप दोनों की विभक्ता कब से (कटाप्रसूति) है ? ११ देवता घोर  
 समुद्र यात्रा हो । उभयों प्रवार्ति की मल्लान हैं । इनका आपन में (विष)  
 सिद्धाई मगटा होना यह है । १२ कहिय क्या यह आपका कमर नहीं है ?  
 १३ तुम स्वयं यहाँ चले आना । १४ हे परमेश्वर आप हमारी रक्षा करें ।  
 १५ क्या हेतुगहो (वाष्पमानम्) धनो मई ? १६-सहको, तुम क्या पुछना  
 चाहते हो ? १७ वे लुप्तहारे कौन होते हैं ? १८ यह हाथी किमका है ?  
 १९-लीगितवे यह आपकी चिटटी है । २० जो ठण्डक है वह पानी का  
 लवसाध है । (स्रेष्ठ हि यन सा प्रकृतिजंमय्य) ।

## सन्धियाँ

ध्यान से देखें वे शब्द कौनसे मिलते हैं— देव + शरि = देवशरि वाक् + ईश = वागीश । देव + लिप्यति = देवलिप्यति । देव + इन्द्र = देवेन्द्र तन् + भुक्त्वा = तन्भुक्त्वा । हय + प्रसवन् = हयप्रसवन् । यदि + क्षपि = यक्षपि । हरिश्च + वाये = हरिश्च वाये । स गच्छति = स गच्छति

ऊपर के शब्दों का देखने से ज्ञान हुआ कि सम्पूर्ण क प्रत्यय शब्द के अन्त में कोई स्वर, व्यञ्जन अनुस्वार शब्दों के विना नहीं रहता है और उस शब्द के बाद जब किसी दूसरे शब्द के जाने पर उनका सम्बन्ध होता है तब पूर्व शब्द के अन्त वाले स्वर, व्यञ्जन आदि में कुछ परिवर्तन हो जाता है । इस प्रकार का सेव हो जाने से जो परिवर्तन होता है, उसे सन्धि कहते हैं । इस परिवर्तन से कहीं पर (१) दो शब्दों के स्थान पर एक नया शब्द हो जाता है जैसे— रमा + ईश = रमेका (२) कहीं पर एक शब्द का नाश हो जाता है जैसे— शोभा + लक्ष्मि = शोभा लक्ष्मि, और (३) कहीं पर दो शब्दों के बीच से एक नया शब्द हो जाता है जैसे— वाक् + शय = वाक्शय । यही एक 'व' और दो नया ।

सन्धियाँ तीन प्रकार की हैं—स्वरसन्धि, व्यञ्जनसन्धि और विसर्गसन्धि ।

शकुन्ति अन्वयापक छात्रों में सामान्य प्रचार करते हैं कि वाक्य में सन्धि वैयर्थ्य है और वे इस कारिका को उद्धृत करते हैं— संहितैवापदे नित्या नित्या धातुपसंगो । नित्या मयाम् वाक्ये नु मा विषयामपेक्षते । नित्यापदे षट् कारिका शक्य के अन्तर्गत पदों के बीच सन्धि को वैयर्थ्य कहती है, किन्तु इसका विकल्प से होता सीमा-बद्ध है । संहिता शब्द का भाव है स्वरों एवं व्यञ्जनों का एक-दूसरे के अनन्तर आना, परन्तु सन्धि के नियम तभी लागू होते हैं जब वाक्यगत शब्दों में संहिता हो अर्थात् विग्रह न हो विग्रह होने पर सन्धि नहीं होती, यथा— मिथ, एहि, प्रवृत्तहारणं

## स्वरसन्धि

एक स्वर के साथ दूसरे स्वर के मेल होने से जो परिवर्तन होता है, उसे स्वरसन्धि कहते हैं। स्वरसन्धि में निम्नलिखित सन्धिर्वा मुख्य हैं—

### १. दीर्घसन्धि

जब ह्रस्व या दीर्घ स्वर के बाद ह्रस्व या दीर्घ स्वर आये तब दोनों के स्थान में दीर्घ स्वर हो जाता है (यक सवर्ण दीर्घ) जैसे रत्न + धाकर = रत्नाकर।

यहाँ पर रत्न के र्त में श्री ह्रस्व धाकर है उसके बाद धाकर का दीर्घ आ जाता है इसलिए ऊपर के निधम के अनुसार दोनों (रत्न के ह्रस्व 'र' और धाकर के दीर्घ 'र') के स्थान में दीर्घ आ जाता है। इसी प्रकार—

मुर + धरि = मुरारि।

मिरि + दम्भ = मिरिदम्भ

हिम + धाजय = हिमाजय।

क्षिति + दम्भ = क्षितीक्ष

वया + धाजय = वयाजय।

मृषी + दम्भ = मृषीक्ष

विद्या + धाजय = विद्याजय।

वी + ईश = वीशः।

गुप्त + उपदेश = गुप्तोपदेश।

बभ्रु + उपदेश = बभ्रुपदेश

लघु + ऊमि = लघूमि।

पितृ + ऊमि = पितृमि

### २. गुणसन्धि

यदि 'घ' अक्षर 'वा' के बाद ह्रस्व 'इ' या दीर्घ 'ई' हो तो दोनों के स्थान में 'ग' हो जाता है और यदि ह्रस्व 'उ' या दीर्घ 'ऊ' हो तो दोनों के स्थान में 'ङ' हो जाता है और यदि ह्रस्व 'ख' या दीर्घ 'ख' हो तो दोनों के स्थान में 'घ' हो जाता है और यदि 'न' हो तो दोनों के स्थान में 'अल्' हो जाता है (अर्धगुण आर्धगुण)। इस सन्धि को गुणसन्धि कहते हैं। यथा—  
वच + इन्द्र = वचिन्द्र। यहाँ वच के व में जो 'अ' है उसके बाद इन्द्र की इ आती है इसलिए ऊपर के नियम के अनुसार दोनों (वच के 'अ' और इन्द्र की इ) के स्थान में 'ग' आता है। इसी प्रकार—

जम्बू यहाँ पितृ और पति के बीच में विराम स्पर्शित है परन्तु अनु-  
गुणसन्धि और उच्चर्य के बीच में शब्दसन्धि होती है। इसी प्रकार के प्रथम और  
तृतीय चरणों के बाद शिष्टों के विराम तहाँ माना, अतः यहाँ चरण सन्धि  
होती है। वागमय एक मुच्यन्त के यहाँ में वाच्य के अन्तर्गत पदा में सर्व  
सन्धि मिलती है।



सू + ईश = सुरेश ।

तथा + इति = तथेति ।

रक्षा + ईश = रक्षेश ।

हित + उपदेश = हितोपदेश ।

मवा + उदकम् = मंगोदकम् ।

पीन + ऊहः = पीनोहः ।

देव + ऋषिः = देवर्षिः ।

महा + ऋषिः = महर्षिः ।

## ३—वृद्धितन्त्रि

जब 'घ' या 'घा' के बाद 'ग' या 'ऐ' हो तब दोनों (घ + ए वा घ + ऐ) के स्थान में 'ऐ' हो जाता है और जब 'घा' या 'घी' हो तब दोनों के स्थान में 'ओ' हो जाता है (वृद्धिगर्ह्ये वृद्धिरेव) । जैसे—

मघ + एव = मघैव ।

महा + घोषधिः = महोषधिः ।

तथा + एव = तथैव ।

महा + घोषधम् = महोषधम् ।

तण्डुल + घोषनम् = तण्डुलोधनम् ।

## ४—अनुसन्धि

(१) जब ह्रस्व + या दीर्घ ई के बाद इ, ई की छोड़कर कोई दूसरा स्वर हो तब इ ई के स्थान में 'ए' हो जाता है (इकी मर्याधि) ।

(२) जब उ या ऊ के बाद उ ऊ की छोड़कर कोई दूसरा स्वर हो तब उ, ऊ के स्थान में 'ए' हो जाता है (इकी मर्याधि) ।

(३) जब ऋ या ॠ के बाद ॠ ॠ की छोड़कर कोई दूसरा स्वर हो तब 'ॠ' ॠ के स्थान में 'ए' हो जाता है (इकी मर्याधि) । जैसे—

(क) यदि + यधि = यद्यधि ।

(ख) अनु + प्रयः = अन्वयः ।

तदी + उदकम् = तदुदकम् ।

गुरु + आदेशः = गुरुदेशः ।

इति + प्राप्तः = इत्यप्राप्तः ।

वयू + आदेशः = वय्व्यदेशः ।

प्रति + एकम् = प्रत्येकम् ।

(ग) पितृ + उपदेशः = पितृपदेशः ।

प्रति + उपकारः = प्रत्युपकारः ।

मातृ + अनुमतिः = मातृमतिः ।

## ५—अभादि बहुवच

ए, ऐ, ओ, औ के बाद जब कोई स्वर आता है तब 'त' के स्थान में 'अ' 'ओ' के स्थान में 'अव' 'ऐ' के स्थान में 'आय' और 'औ' के स्थान में 'आव' हो जाता है (एओअवायाव) । जैसे—

ओ + अतम् = अतम् ।

ओ + अति = अति ।

ने + भनम् = नयनम् ।

बटो + अस् = बटवृज

ने + शक = नायक

शो + शक = शायक ।

### ६ - पूर्वस्य

यदि किसी पद (पुंल्लिङ्ग या लिङ्ग) के अन्त में 'ए' हो और उसके बाद ह्रस्व 'य' हो तो 'य' को पूर्वस्य (ए य। यो बेंसा क्य) हो जाता है और 'य' के स्थान में पूर्वस्य-युक्त चिह्न (ऽ) लगता है (एक. परान्तावनि) । जैसे—

कृषो + अस्मिन् = कृषोऽस्मिन् ।

गुरो + अस् = गुरोऽस् ।

बाहो + अक्षयः = बाहोऽक्षयः ।

बने + अस् = बनेऽस् ।

### ७ - वृत्तिभाव

यदि द्विवचनान्त शब्द के अन्त में ई, ऊ, ए हो और उसके बाद यदि द्विवचनान्त शब्द के आदि में कोई स्वर हो तो ई उ ए आ-के स्थान रहने हैं ईद्वेद् द्विवचन प्रथमाय), जैसे

मुनी इयो = मुनी इयो ।

मये + अस् = मये अस् ।

साधू + एतो = साधू एतो ।

(मयेऽस् यही होना ।)

### ह्रस्वसन्धि

(१) यदि कोई स्वर या वर्ण के तीसरे चौथे अक्षर अथवा य् र् ल् व् आदि में हों तो पूर्व पद के अन्तवाले क् ख् ट् प् के स्थान में तमसं य् ख् ट् प् हो जाते हैं (अन्तःशोऽन्ते), जैसे—

वाक् + दासम् = वाग्दासम् ।

जगन् + ईशः = जगदीश ।

दिक् + दिगम्बर = दिग्दिगम्बर ।

सर् + आचारः = सदाचार

मय् + अन्तः = मजन्तः ।

तत् + धनम् = तद्धनम्

बट् + दर्शनम् = बटुदर्शनम् ।

अयम् + वन्दुः = अगद्वन्दुः

धप् + अस् = धज्जम् ।

(२) अन्तों (वर्गों के प्रथम द्वितीय तृतीय और चतुर्थ) को अन्तः (अपने-अपने वर्ग का तृतीय अक्षर) होता है यदि बाद में अक्ष्, वर्गों के तृतीय या चतुर्थ अक्षर) हो अन्तों अक्ष् अस्ति) । यथा—

कृष् + चि = कृष्टि ।

सिष् + चि = सिष्टि ।

कुम् + चि = कुज्जः ।

(यह नियम पद के बीच में लगता है ।)

३, यदि अनुनासिक अक्षरों की छोटकर वग के किसी अक्षर के बाद न हो तो उस अक्षर के स्थान में उसी वर्ण का नीसरा अक्षर या ब ड द व, धीर ह के स्थान में कषश उसी वर्ण का सीधा अक्षर (य क ड द व, धीर ज्ञाने हैं) (अथो होज्यतस्याम्)। जैसे—

वाक् + हरि = वाग्यति ।

ननु + हिन = नहिन

अथ + ह्रस्व = अथ्भ्रस्व ।

अम् + हरणम् = अन्नहरणम्

घट् + हजानि = घटहजानि ।

(४) जब म या तवर्ग (न म द य म्) में पहले या बाद में ए या अवर्ग (य ए अ इ ऊ) ब ड ओ हो तब म के स्थान में म् धार तवर्ग के स्थान में ववर्ग होता है (तो इवना ननु)। जैसे—

शिष्य + ईति = शिष्येति

न + छवि = नछवि ।

कस् + चित् = कश्चित् ।

मन् + कम् = मन्कम्

मम् + चित् = मक्चित्

सूत + म् = सूतम्

हृत् + जयति = हृजयति

पाथ + ना = पाथना ।

५ जब य या तवर्ग के बाद में या पहले य व तवर्ग धर्म है तब य के स्थान में य् धीर यवर्ग के स्थान में दवर्ग हो जाता है (इति यदु)।

जैसे—

रामय + पठ = रामयपठ ।

य + य = यय ।

मन् + टोका = मन्टोका

मप + यम् = मपयम्

उन् + ययम् = उहययम् ।

६) यदि म् द ओन न् के बाद स आये तो म् वृत् के स्थान में न् हो जाता है और न् के स्थान में अनुनासिक (०) हो जाता है (नोति)।

जैसे—

दन् + लेख = दुल्लेख

महान् + लाभ = महान्नाभ ।

नचिच् + मन्त्रे = नचिचन्त्रे ।

(७) यदि पद के अन्त में वर्णों के प्रथम वर्ग (क ष ट न् प के बाद में न या म आये तो वर्ग के पहले अक्षर के स्थान में उसी वर्ण का नीसरा या पौचवाँ अक्षर हो जाता है और यदि प्रत्यय बाद में हो तो पौचवाँ ही अक्षर होता है (अनुनासिक अनुनासिको वा)। जैसे—



दिक् + वाग = दिक्वाग दिङ्नुवाग । जगन् वाग = जगद्वाग, जगन्नाग ।  
 वेगाः वयति = वेगाद्वयति वेगान्नयति । (अन्त्य) वाक् मयम् = वाङ्-  
 मयम् ।

८ यदि षट् के स्थान में म् हो और उसके बाद कोई स्वर हो तो म् के स्थान में अनुस्वार हो जाता है, बाद में स्वर हो तो नहीं (अनुस्वार) ।

गृहम् चयति = गृह कयति हरिम् वन्दे = हरि वन्दे

मृदुम् + जयति = मृदु जयति मधुरम् हयति = मधुर हयति मम् + गम = मगम ।

स्वर पर रहने पर म् स्वर के साथ मिल जाता है । जैसे—सम् धावा = सीमाधार ।

१२ यदि षट् के स्थान में न् हो और उसके बाद ख छ ट ठ ड ध हो तो न् के स्थान में अनुस्वार और ख छ ट ठ ड ध के स्थान में क्रमशः दक्ष दध, दध, दठ दध हो जाता है (अक्षप्रत्ययान्) । जैसे—

कस्मिन् क्षि + = कस्मिन्क्षि ।

महान् + उपकार = महाउपकार

महान् + शिर = महाशिरः

गन् + तत्र = गन्तव्यम् ।

बालम् + निर्दिष्ट = बालनिर्दिष्ट ।

तिष्ठन् + स्था = तिष्ठन्स्था ।

१०) जब षट् के स्थान में न् हो तो न् के बाद ख छ ट ठ ड ध के स्थान में म् न् के स्थान में म् न् म् । श् के स्थान में छ् हो जाता है (शषप्रतिष्ठि) । जैसे—

कल + भूत्वा = कलभूत्वा नययत्ना ।

पावनम् + शश = पावनशश पावनशश

(११) यदि द्वय स्वर के बाद इ ए अ न् हो और उनके बाद कोई स्वर हो तो एक एक इ ए अ न् के स्थान में इ-इ इ-ए अ-अ आ जाते हैं । (भा) इ-वाचि इ-मय निन्दम् । मया—

प्रयङ् + शत्या = प्रयङ्शत्या ।

बावन् + यश्च = बावन्यश्च

मुगश + ईश = मुगशांश ।

१२) यदि द्वय स्वर के बाद छ धाव न् छ् के साथ एक न् मिल जाता है और दीर्घ स्वर के बाद न् मिलना भी है यो नही भी मिलता (छे च पदान्ताहा) । मया—

वृक्ष + छाया = वृक्षच्छाया । नदमी + क्षया = नदमीच्छाया नदमीच्छाया ।

## विसर्गसन्धि

(१) यदि विसर्ग के बाद वृत्त, त्रों तब विसर्ग के स्थान में वा यदि विसर्ग के बाद त व घोर स हो तब विसर्ग के स्थान में ल और यदि विसर्ग के बाद ट ठ हो तब विसर्ग के स्थान में प हो जाता है, (विसर्गनीयस्य स) और यदि विसर्ग के बाद वा वृ ल हो तो विसर्ग को विकल्प से श ष ल हो जाता है (वा शरि)। जैसे—

शास्त्र + चलति = शास्त्रचलति ।

धनु + टकार = धनुटकार

ति + छल = निश्छल ।

नि + मार = निम्मार, नि मार

देव + लिखति = देवलिखति ।

हरि + शोते = हरिशोते, हरि-शोते

(२) विसर्ग के पूर्व जब ह्रस्व स हो और बाद में ह्रस्व य वा वं का तीसरा जोधा, पाँचवाँ अक्षर अथवा ए र लृ ष ह हो तब विसर्ग को 'उ' हो जाता है (अतो रोऽनुतादनुते, हरिः च)। उम उ को पूर्वदर्शी य के साथ गुण शरके धो हो जाता है और बाद में यदि य हो तो उस य का लोप हो जाता है और धो के बाद य का सप्तम्यक चिह्न (ऽ) लगता है। यथा—

यथा + अभिधापी = यथोऽभिधापी ।

यस + श = यशोऽश ।

देव + अपि = देवोऽपि ।

यन + धाव = यनोऽधाव

क + शबल = कोऽशबल ।

वान + बहति = वानोऽबहति ।

यन + गत = यनोऽगत ।

यन + हार = यनोऽहार

(३) यदि प्रकाशपूर्व विसर्ग के बाद य के अनतिरिक्त कोई और स्वर हो तो य के बाद विसर्ग का लोप हो जाता है और फिर यन्त्रि नहीं होती। यथा—

याव + प्रागच्छति = याव प्रागच्छति ।

यत + एव = यतएव ।

यथा + इच्छति = यथा इच्छति ।

पुष्पेभ्य + उद्यानम् = पुष्पेभ्य उद्यानम् ।

(४) यदि या के बाद विसर्ग हो और उसके बाद कोई स्वर अथवा बर्ण के प्रथम द्वितीय अक्षरों को छोड़कर कोई अन्य अक्षर वा ए र लृ ष ह, हों तो विसर्ग का लोप हो जाता है। (अतोऽपि विसर्गस्य लोपः, यथा—

यात्रा + अपि = यात्रा अपि ।

यथा + गच्छति = यथा गच्छति

नरा + इच्छन्ति = नरा इच्छन्ति ।

नरा + हसन्ति = नरा हसन्ति

(५) यदि विसर्ग के पहले य या को छोड़कर दूसरा स्वर हो और विसर्ग के बाद स्वर, या वं के तीसरे, चौथे, पाँचवें अक्षर अथवा ए र लृ ष ह, हों तो विसर्ग के स्थान में र हो जाता है (इचोऽपि विसर्गस्य र) यथा—

### ६ का ७ में परिवर्तन

यथा से मिलने स्वयं, २ यथा कवयं स पं चादौ श्रीर प्रत्यय के लु  
को ७ होता है। जैसे मुनिषु, वज्रपु भ्रातृषु इत्यु घनपान दिक्षु, वज्रपु  
अनुस्वार बिमल ७ ७ स का व्यवधान होने पर यथांत इसके बीच में  
रहने पर भी स का ७ होता है। यथा—हर्षाणि पवणि यात्रीषु, धाम्युषु  
वज्रपु। किन्तु वज्रपु लु को ७ नहीं होता।

हिन्दी में अनुवाद करो और सन्धि-विच्छेद करके सन्धिविषय बताओ-

१ विषमप्यमृत क्वचिद्वेदमृत वा विषमोभ्यन्तस्याः । २ पित्रन्त्यदादकं  
गावा मणूकेषु स्वस्ववि । ३ सर्गिनस्तुर्धनि काष्ठान नारमाना महादधि  
४ प्राणाव्ययस्य दुराणा जायते हि स्वस्वत्व ५ धर्मज्ञाने पर मित्रमुपाहार-  
वर्जित ६ यजुतामसपर वकि तन्महा तस्य रीचते ७ जम्भध्वजाभ्यु-  
मिश्रवेष्टमृता हि वदुन्मया शिवः । गुणास्त या पात नरो दम्भितं  
पुत दारोरेण मृत ८ शोर्वाणि ९ का नाम साक स्वपसापशममुद्वारोऽनशु-  
भुग मभाम् । १० विवल्गवा दानमणि वदुन्मया स्वर्गवर्मा प्रि तापु  
भारितम् । ११ पाप्मस्यस्य शप तना पवित्रा सर्वैरनुजायताम् १२ माह  
जानामि केशुर नाह जानामि कुर्वते । नृपुंस् स्वमित्रानामि तिस्य पाताभि  
मन्दताम् ।

### संस्कृत में अनुवाद करो

१ वेग भरीजा (भ्रातृषु) २म वप सगवतक विभिन्नविधायक में संस्कृत  
की लमः ७० परीक्षा में प्रथम रत (प्रथम दिन दिदिहोऽमृत) ३ बुद्धि-  
भात<sup>२</sup> पाठ को जल्दी कथकथ कर जना है और वे सब याद रखता है ।  
कोशे जल में (कदुतलेन जलेन) स्नान वना इससे शरीरकी पुष्ट होगी । ४ यदि  
वह पाप का घाना चाहता है (प्रकारदंमिकृति, न) उम काहल को दस गाय  
और एक बैल (वृषभैकादश वा, दत्त चाहित) । ५ सामन नजवाने और पापी  
से विपुल (समिन्तलेन पुनपापा) ऊपि घात में रहने से ७६ बितना

१ मान प्रत्यय के स को ७ नहीं होता । जैसे— नदीसात्, चायुसात्, भ्रातृ-  
सात्, वज्रसात् ।

२ मेघाश्री क्षिप्र त्सेनति विर च घादयति ।

७ यथा यथाह संस्कृत वाङ्मयमधीय तथा तथास्मत्संस्कृतगौरव प्रति  
प्रत्यापितोऽयम् ।



अधिक सम्पन्न वाङ्मय का मूल व्यवहन किया उतना ही अधिक मुझे अपनी संस्कृति पर विश्वास होता गया । ७. वह इतना अन्ध (तथा अंध) है कि एक क्षण भी चूषण (निश्चयम्) नहीं बैठ सकता । X ८ वह अपने ही प्रयोग का खंड है पर शत्रु के भाव न भुंक्ता । ९ अनुवाद करना विशेषज्ञों के लिए भी कठिन है । अनीपत्कराजुवादी विनयम् । माधारण छात्रों का तो कहना ही क्या है कि पुनः ? १० सूर्य गुरु से उदय होता है उदति) और पश्चिम में अस्त होता है (अस्तमति), यह कवन मिथ्या है ।

—

नि + घन = निघन

नि + बाधार = निबाधार

बहि + देश = बहिर्देश ।

मानु + उदेति = मानुर्देति ।

मानो + मयुक्ता = मानोर्मयुक्ताः ।

अ के बाद यदि र से विलग्न वर्ण हो तो विलग्न को र हो जाता है जैसे—

पुन + अयि = पुनरयि

अगत + आगच्छ = आगतगच्छ ।

प्रात + एव = प्रातरेव ।

मान + इति = मानर्इति ।

स्व + गत = स्वर्गतः ।

(६) यदि र के बाद र हो तो पहले र का संध हो जाता है और उसके पूर्व स्वर की दीर्घ हो जाती है । (रो रि रुंरं पूर्वस्य दीर्घोऽस्त्य, यथा—

पुन र + रचना = पुनररचना ।

माधुर + राजने = माधूराजने ।

किरु + शङ्ख = कीरशङ्खः ।

साधार + रश्मि = साधोरश्मि ।

७) यदि 'स' और 'एव' के बाद अ ने मित्त कोई अक्षर हो तो विलग्न का लोप हो जाता है । एतन्मदोः मुनोपोऽन्तोरन्मत्तमासे हनि । यथा—

स + पठति = स पठति ।

एव + आगच्छतु = एव आगच्छतु ।

स + उवाच = स उवाच ।

एव + वदति = एव वदति ।

(स उवाच के बीच में विलग्न का संध होने से कोई अन्य मन्त्र नहीं होती )

### वृ का लृ में परिवर्तन

अ, इ, ए और वृ इन चार वर्णों से परे वृ को लृ होता है जैसे—  
नृणाम्, नृणाम्, चतसृणाम्, भ्रातृणाम्, चतुर्णां च विस्तीर्णाम्, दीप्तां च पुष्पां च ।

अ, इ, ए और वृ में परे स्वर वर्ण, कवर्ण, पवर्ण, य, वृ, ए, ह, तथा आ और नृ का व्यवधान होने पर भी चतुर्णां ये सब बीच में पड़ जायें तो भी वृ को लृ होता है (अटकावाहनुमन्ववायपि) । जैसे—कराणाम्, करिणाम्, मुखाणां, मृगेणां, भूमेणां, दपणां, खेणां, गवणां, पद्माणां ।

पद के अन्त वाले नृ की लृ नहीं होता । जैसे—रामान्, हरीन्, गुरुन्, धृष्टान्, भ्रातृन् ।

१ इनके अनतिरिक्त अक्षरों का व्यवधान होने पर लृ नहीं होता । जैसे—  
अर्चना, किरीटेन, अर्घन, स्मरण, रसन, उद्यानाम्, अर्धेनम् ।

## द्वितीयोऽध्यायः

अञ्जरूप-संग्रह (हलन्त), पुल्लिङ्ग

१—राजन् (राजा)

२—महत् (महा)

एकव०	द्विव०	बहुव०	एकव०	द्विव०	बहुव०
राजा	राजानी	राजान	प्र० महान्	महान्ती	महान्तः
राजानम्	राजानो	राजा	द्वि० महान्तम्	महान्तो	महन्तः
राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः	तृ० महता	महद्भ्याम्	महद्भिः
राज्ञे	राजभ्यान्	राजभ्यः	च० महते	महद्भ्याम्	महद्भ्यः
राज्ञः	राजभ्यान्	राजभ्यः	ष० महतः	महद्भ्याम्	महद्भ्यः
राज्ञः	राज्ञोः	राज्ञाद्	ष० महतः	महन्तो	महन्ताद्
राज्ञि राजनि राजोः	राजसु	स० महति	महन्तोः	महन्सु	
हे राजन्	हे राजानी	हे राजान	स० हे महन्	हे महान्तो	हे महान्तः

इमीलित में मदी शब्द की भाँति महती, महस्यो, महस्य आदि रूप बनते हैं। मयूराक्षिग की प्रथमा छोड़ द्वितीया में महत्, महन्ती, महान्ति रूप होते हैं और शेष विभक्तियों के रूप पुल्लिङ्ग की भाँति होते हैं।

इसी प्रकार, धीमन् (बुद्धिमान्), धीमन् बुद्धिमत्, धीमवन्, विद्वान् मनुष्यम् मानुषम् (पहाड़), भास्वन् (सूर्य), भववन् (दन्त), सरस्वन् (मसुद्र) शासवन्, गतवन् आदि ।

३—अञ्जन् (देवता, विष्णु)

प्र०	अञ्जान्	अञ्जन्ती	अञ्जन्तः
द्वि०	अञ्जान्तम्	अञ्जन्तो	अञ्जन्तः
तृ०	अञ्जन्ता	अञ्जद्भ्याम्	अञ्जद्भिः
च०	अञ्जन्ते	अञ्जद्भ्याम्	अञ्जद्भ्यः
ष०	अञ्जन्तः	अञ्जद्भ्याम्	अञ्जद्भ्यः
स०	अञ्जन्तः	अञ्जन्तो	अञ्जन्ताद्



स०	भगवति	भगवतोः	भगवत्
सं०	हे भगवन्	हे भगवन्तो	भगवन्

४ आत्मन् (आत्मा)

५ पठन् (पठना हुआ)

आत्मा	आत्मानो	आत्मान	प्र०	पठन्	पठन्तो	पठन्
आत्मानम्	आत्मानो	आत्मन्	द्वि०	पठन्तम्	पठन्तो	पठन्
आत्मना	आत्मन्याम्	आत्मनिः	तृ०	पठता	पठद्भ्याम्	पठन्ति
आत्मने	आत्मन्याम्	आत्मन्यः	च०	पठते	पठद्भ्याम्	पठद्भ्यः
आत्मन्	आत्मन्याम्	आत्मन्यः	प०	पठत	पठद्भ्याम्	पठद्भ्यः
आत्मन्	आत्मनोः	आत्मनाम्	प०	पठतः	पठतो	पठन्तम्
आत्मनि	आत्मनोः	आत्मसु	तृ०	पठति	पठतोः	पठन्तु
हे आत्मन्	हे आत्मानो	हे आत्माने	सं०	हे पठन्	हे पठन्तो	हे पठन्तः

प्रीतिग में नदी की तरह पठन्तो, पठन्तो पठन्त आदि रूप और मधु० लिङ की प्र० द्वि० में पठन्, पठन्तो, पठन्ति और द्वेध विभक्तियों के रूप पुल्लिङ की शक्ति होते हैं। पठन् मध्य की शक्ति—पठन् देवता हुआ, गच्छन् (जाता हुआ), कसन् (कास करता हुआ), पिबन् पीता हुआ, पृच्छन् (पूछता हुआ), कादन् (काता हुआ), चोरन् (चोरी करता हुआ)।

६—इवन् (कुत्ता)

७—युवन् (जवान आदमी)

इवा	इवानो	इवान	प्र०	युवा	युवानो	युवान
इवानम्	इवानो	इवन्	द्वि०	युवानम्	युवानो	युवन्
युवा	युवाम्याम्	युवनिः	तृ०	यूना	युवाम्याम्	युवनि
युवे	युवाम्याम्	युवम्यः	च०	यूने	युवाम्याम्	युवम्यः
युवं	युवाम्याम्	युवम्यः	प०	यून्	युवाम्याम्	युवम्यः
युवन्	युवोः	युवानाम्	प०	यून्	युवोः	युवानाम्
युवि	युवोः	इवसु	तृ०	यूनि	युवोः	युवसु
हे इवन्	हे इवानो	हे इवाने	सं०	हे युवन्	हे युवानो	हे युवानः

भगवन् (इन्द्र) की विभक्तियों युवन् की तरह होती हैं।

८—पथिन् (मार्ग)

९—विद्वन् (विद्वान्)

पन्था	पन्थानो	पन्थानः	प्र०	विद्वान्	विद्वानो	विद्वान्
पन्थानम्	पन्थानो	पथः	द्वि०	विद्वानम्	विद्वानो	विद्वानः
पथा	पथिम्याम्	पथिमिः	तृ०	विद्वत्	विद्वद्भ्याम्	विद्वन्ति

पथे	पथिभ्याम्	पथिभ्यः	४०	विदुषः	विदुद्भ्याम्	विदुद्भ्यः
पथाः	पथिभ्याम्	पथिभ्यः	५०	विदुषः	विदुद्भ्याम्	विदुद्भ्यः
पथः	पथोः	पथाम्	६०	विदुषः	विदुषोः	विदुषाम्
पथि	पथोः	पथिषु	७०	विदुषि	विदुषोः	विदुषम्
हे पथः	हे पथानो	हे पथान	८०	हे विदुषः	हे विदुषोः	हे विदुषसः
इथी भति अभयम् (अभयः) कनीयम् (कनीयः), जगयम् (जगः) प्रेरम् (प्रेरितः) ।						

## १०—चन्द्रमस (चन्द्रमा)

## ११—करिन् (कर्त्री)

चन्द्रमा	चन्द्रमो	चन्द्रमसः	५०	करि	करिणी	करिणः
चन्द्रमसम्	चन्द्रमसो	चन्द्रमसः	६०	करिणम्	करिणी	करिणः
चन्द्रमसः	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्यः	७०	करिणः	करिभ्याम्	करिभिः
चन्द्रमसे	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्यः	८०	करिणे	करिभ्याम्	करिभ्यः
चन्द्रमस	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्यः	९०	करिणः	करिभ्याम्	करिभ्यः
चन्द्रमसः	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्यः	१००	करिणः	करिणी	करिणम्
चन्द्रमसि	चन्द्रमो	चन्द्रमस्य	११०	करिणि	करिणी	करिषु
हे चन्द्रमा	हे चन्द्रमो	हे चन्द्रमसः	१२०	हे करिणः	हे करिणी	हे करिणः
चन्द्रमस्य मी लङ्—उनोक्तम् (उनोक्तः) जगम् (जगः) दिवोक्तम् (दिवोक्तः) दुर्धमसः दुर्धमा दुर्धमा (दुर्धमा) ।						

करिन् की भति—गुणिकन् (गुणिकन्), मयिन् (मयिन्) चन्द्रमा (चन्द्रमा) विदुषः (विदुषः) कुणिकन् (कुणी) पथिन् (पथी) स्वाभिन् (स्वाभिः) जिनिकन् (जिनिकन्) मयिन् (मयी) ।

## १२—पुंस (पुरुष)

## १३—तादृक्, तस्य ज्ञेयः,

पुमाक्	पुमांमो	पुमांस	५०	तादृक्	तादृशी	तादृशः
पुमांसम्	पुमांसो	पुमांसः	६०	तादृशम्	तादृशी	तादृशः
पुंसा	पुम्भ्याम्	पुम्भ्यः	७०	तादृशः	तादृश्याम्	तादृशि
पुंस	पुम्भ्याम्	पुम्भ्यः	८०	तादृशः	तादृश्याम्	तादृश्याः
पुंसः	पुम्भ्याम्	पुम्भ्यः	९०	तादृशः	तादृश्याम्	तादृश्याः
पुंस	पुंसो	पुंसा	१००	तादृशः	तादृशी	तादृश्याम्
पुंसि	पुंसा	पुंसु	११०	तादृशि	तादृशी	तादृशु
हे पुंस	हे पुमांमो	हे पुमांस	१२०	हे तादृक्	हे तादृशी	हे तादृशः

तादृश की भाँति ईदृश (तिसा), कीदृश (किसा), पादृश (जिसा) स्वादृश (सुध जिसा), अवादृश (आप जिसा), वादृश (मुक्त जिसा) इत्यादि

स्त्रीलिङ्ग शब्द

१—वाक् (बाणी)

२—सरित् (नदी)

वाक्-म्	वाची	वाक्:	प्र०	सरित्	सरितो	सरित्
वाक्म्	वाची	वाक्:	द्वि०	सरितम्	सरितो	सरित्
वाक्वा	वाग्ध्याम्	वाग्भिः	तृ०	सरिता	सरिद्भ्याम्	सरिद्भिः
वाक्वे	वाग्ध्याम्	वाग्भ्यः	च०	सरिते	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्य
वाक्व	वाग्ध्याम्	वाग्भ्यः	पं०	सरित	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्य
वाक्वाः	वाचीः	वाक्वाम्	प०	सरित्	सरितो	सरिताम्
वाक्वि	वाचीः	वाक्कु	स०	सरिति	सरितोः	सरित्कु
हे वाक्	हे वाची	हे वाक्	सं०	हे सरित्	हे सरितो	हे सरित्

वाक् शब्द की भाँति—सुक् (गोक) स्वक् (स्वान), दक् (कार्त्तिक) आदि ।

सरित् शब्द की भाँति—हरित् (दिशा), वांशित् (स्त्री), तदित् (विजली)

३—विपद् (विपत्ति)

४—गिर (बारती)

विपद्	विपदी	विपदः	प्र०	गिर	गिरौ	गिर
विपदम्	विपदी	विपदः	द्वि०	गिरम्	गिरौ	गिरः
विपदा	विपद्भ्याम्	विपद्भिः	तृ०	गिरा	गिरिभ्याम्	गिरिभिः
विपदे	विपद्भ्याम्	विपद्भ्यः	च०	गिरे	गिरिभ्याम्	गिरिभ्य
विपद	विपद्भ्याम्	विपद्भ्यः	प०	गिर	गिरिभ्याम्	गिरिभ्य
विपदाः	विपदाः	विपदाः	प०	गिराः	गिरौः	गिराम्
विपदि	विपदोः	विपदम्	स०	गिरि	गिरौ	गिरि
हे विपद्	हे विपदी	हे विपद	सं०	हे गिर	हे गिरौ	हे गिर

विपद् शब्द की भाँति सपद्, अगद् (गरा) चतुः, पण्डित (सभा) आदि

गिर शब्द की भाँति—पुर (नगर) गुर (चुरा), डार आदि ।

५—दिक् (दिशा)

६—पुर (नगर)

दिक् दिग्	दिक्	दिक्	प्र०	पुर	पुरी	पुर
दिक्म्	दिक्	दिक्	द्वि०	पुरम्	पुरी	पुरः
दिशा	दिग्भ्याम्	दिग्भिः	तृ०	पुरा	पुरिभ्याम्	पुरिभिः
दिशे	दिग्भ्याम्	दिग्भ्यः	च०	पुरे	पुरिभ्याम्	पुरिभ्यः



दिश	दिश्याम्	दिश्य	प्र०	पुर	पूर्यम्	पूर्य
दिश	दिशो	दिशाम्	प्र०	पुर	पुरो	पुराम्
दिशि	दिशो	दिशु	स०	पुरि	पुरो	पूरु
हे दिशम्	हे दिशो	हे दिश	स०	हे पुर	हे पुरो	पुरा

७—यप (अल—केवल बहुवचन में)

प्र०	यप	तृ०	यदभि	प्र०	यप्यम्	स०	यप्यु
द्वि०	यप	य०	यदभ्यः	य०	यप्यम्	य०	हे यप्य

### नपुंसकलिङ्ग प्रत्यय

#### १—जगत्

जगत्	जगती	जगन्ति	प्र०	नाम	नाम्नो नामनी	नामानि
जगत्	जगती	जगन्ति	द्वि०	नाम	नाम्नी-नामनी	नामानि
जगता	जगत्ताम्	जगन्तुः	तृ०	नाम्ना	नामभ्याम्	नामभि
जगते	जगत्ताम्	जगन्तुः	य०	नाम्ने	नामभ्याम्	नामभ्य
जगत	जगत्ताम्	जगन्तुः	प्र०	नाम्न	नामभ्याम्	नामभ्य
जगत	जगती	जगताम्	य०	नाम्नः	नाम्नो	नाम्नाम्
जगति	जगती	जगत्सु	स०	नाम्नि, नामनि	नाम्नो	नामम्

हे जगत् हे जगती हे जगन्ति प्र० हे नाम हे नाम्नी हे नामनी हे नामानि

नामन् की भाँति हेमन् (मेधा) धामन् (रस्मी) + प्रेमन् (प्यार) ओषध् (रोग)

#### २—शर्मन् (कम्पाति)

#### ४—वह्नान् (परमात्मा)

शर्म	शर्मणी	शर्मन्ति	प्र०	वह्ना	वह्नाणी	वह्नाणि
शर्म	शर्मणी	शर्मन्ति	द्वि०	वह्ना	वह्नाणी	वह्नाणि
शर्मणा	शर्मभ्याम्	शर्मन्ति	तृ०	वह्नाणा	वह्नाभ्याम्	वह्नाभि
शर्मनी	शर्मभ्याम्	शर्मन्ति	य०	वह्नाणे	वह्नाभ्याम्	वह्नाभ्य
शर्मणः	शर्मभ्याम्	शर्मन्ति	प्र०	वह्नाणः	वह्नाभ्याम्	वह्नाभ्य
शर्मणः	शर्मणी	शर्मणां	य०	वह्नाणः	वह्नाणी	वह्नाणां
शर्मणि	शर्मणी	शर्मन्	स०	वह्नाणि	वह्नाणी	वह्नाम्

हे शर्मन् हे शर्म हे शर्मणी हे शर्मणि प्र० हे वह्नान् हे वह्ना हे वह्नाणी हे वह्नाणि

#### ५—मनस् (मन)

#### ६—पयस् (पानी या दूध)

मन	मनसी	मनांसि	प्र०	पय	पयसी	पयांसि
मन	मनसी	मनांसि	द्वि०	पय	पयसी	पयांसि

मनसा	मनोभ्याम्	मनोभिः	तृ०	पयसा	पयोभ्याम्	पयोभिः
मनसे	मनोभ्याम्	मनोभ्यः	च०	पयसे	पयोभ्याम्	पयोभ्यः
मनस	मनोभ्याम्	मनोभ्यः	पं०	पयसः	पयोभ्याम्	पयोभ्यः
मनस	मनसो	मनसाम्	ब०	पयसः	पयसोः	पयसाम्
मनसि	मनसोः	मनसु	लं०	पयसि	पयसोः	पयसु
हे मन	हे मनसो	हे मनांसि	स०	हे पय	हे पयसो	हे पयांसि

मनस् की प्राति—तमस् (घन्यकार) । त्वस् (दीप्ति) । वसुस् (मेघ) । तपस् (तप) । रजस् (धूलि) । वचस् (वचन) । ब्रह्मस् (ब्रह्म) शिरस् (शिर) । मातस् (कपडा) । सरस् (तामास) । नक्षस् (भाकास) । यज्ञस् (कीर्ति) । रक्षस् (रक्षस, घाहि) ,

#### ४—धनुस् (धनुस्)

प्र०	धनुः	धनुषी	धनुषि
द्वि०	धनु	धनुषी	धनुषि
तृ०	धनुषा	धनुभ्याम्	धनुभिः
च०	धनुषे	धनुभ्याम्	धनुभ्यः
पं०	धनुषः	धनुभ्याम्	धनुभ्यः
ब०	धनुषः	धनुषोः	धनुषाम्
लं०	धनुषि	धनुषोः	धनुषु
सं०	हे धनु	हे धनुषी	हे धनुषि

धनुस् की प्राति धानुष हविष, तपिष (पी) घादि ।

#### ५—तादृक्—(उक्त संतर)

प्र०	तादृक्	तादृगो	तादृ सि
द्वि०	तादृक्	तादृगो	तादृ द्वि (शेष पुल्लिङ्ग की तरह) ।

#### ६—महत् (बड़ा)

प्र०	महत्	महतो	महान्ति
द्वि०	महत्	महतो	महान्ति (शेष पुल्लिङ्ग की तरह) ।

#### १०. मनोहारिन् (सुन्दर)

प्र०	मनोहारि	मनोहारिणी	मनोहारिणि
द्वि०	मनोहारि	मनोहारिणी	मनोहारिणि (शेष पुल्लिङ्ग की तरह) ।

## १. विशेषण (निश्चित सत्यवाचक)

### प्रथम अध्याय

एक (केवल एकवचन)

द्वि (केवल द्विवचन)

पुं०	स्त्री०	नपुं०
एक	एका	एकम्
एकम्	एकाम्	एकम्
एकेन	एकया	एकेन
एकस्मै	एकस्मै	एकस्मै
एकस्मात्	एकस्मा	एकस्मात्
एकस्य	एकस्या	एकस्य
एकस्मिन्	एकस्याम्	एकस्मिन्

त्रि (तीन)

पुं०	स्त्री०	नपुं०
त्रय	त्रयः	त्रयम्
त्रिन्	त्रिन्	त्रिन्
त्रिभिः	त्रिभ्यः	त्रिभिः
त्रिभ्यः	त्रिभ्यः	त्रिभ्यः
त्रिभ्यः	त्रिभ्यः	त्रिभ्यः
त्रयस्य	त्रयस्य	त्रयस्य
त्रिषु	त्रिषु	त्रिषु

चतुर् (चार) पञ्च (पाँच) षट् (छ) सप्त (सात) अष्ट (आठ) नव (नौ) दश (दस) शब्दों का इच्छा-भा केवल बहुवचन में होता है।

पञ्च से दश तक संख्यावाचक शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों में समान होते हैं।

पञ्च	षट्-ह	सप्त	अ०	अष्ट	नव	दश
पञ्च	षट्-ह	सप्त	त्रि०	अष्ट	नव	दश
पञ्चभिः	षट्भिः	सप्तभिः	तृ०	अष्टभिः	नवभिः	दशभिः



पञ्चम्य	षष्ठम्य	सप्तम्य	च०	अष्टम्य	अष्टम्य	नवम्य	दशम्य
पञ्चम्य	षष्ठम्य	सप्तम्य	च०	अष्टम्य	अष्टम्य	नवम्य	दशम्य
पञ्चानाम्	षष्ठानाम्	सप्तानाम्	च०	अष्टानाम्	अष्टानाम्	नवानाम्	दशानाम्
पञ्चसु	षष्ठसु	सप्तसु	च०	अष्टसु	अष्टसु	नवसु	दशसु
११	एकावस	३४	चतुस्त्रिंशत्	५३	{	त्रिपञ्चाशत्	
१२	द्वावस	३५	पञ्चत्रिंशत्			चत्वारिंशत्	
१३	तयोवस	३६	षट्त्रिंशत्	५४	चतुःपञ्चाशत्		
१४	चतुर्वस	३७	सप्तत्रिंशत्	५५	पञ्चपञ्चाशत्		
१५	पञ्चवस	३८	अष्टत्रिंशत्	५६	षट्पञ्चाशत्		
१६	षोडश	३९	{	५७	सप्तपञ्चाशत्		
१७	सप्तदश			५८	{ अष्टपञ्चाशत्		
१८	अष्टादश	४०	नवत्रिंशत्		{ अष्टादश		
१९	{	४१	एकचत्वारिंशत्	५९	{	नवपञ्चाशत्	
		४२	द्विचत्वारिंशत्			एकौनपट्	
२०	विंशति		त्र्यचत्वारिंशत्	६०	शष्टि		
२१	एकविंशति	४३	{	६१	एकशष्टि		
२२	द्वाविंशति			६२	{ द्विशष्टि		
२३	तयोर्विंशति	४४	चतुस्त्रिंशत्	६३	{	त्रिषष्टि	
२४	चतुर्विंशति	४५	पञ्चत्रिंशत्			चत्वारिंशत्	
२५	पञ्चविंशति	४६	षट्त्रिंशत्	६४	चतुःषष्टि		
२६	अष्टविंशति	४७	सप्तत्रिंशत्	६५	पञ्चषष्टि		
२७	सप्तविंशति	४८	{	६६	षट्षष्टि		
२८	अष्टाविंशति			६७	सप्तषष्टि		
२९	{	४९	{	६८	{	अष्टषष्टि	
						अष्टाषष्टि	
३०	त्रिंशत्	५०	पञ्चाशत्	६९	{	नवषष्टि	
३१	एकत्रिंशत्	५१	एकपञ्चाशत्			एकौनसप्तति	
३२	द्वात्रिंशत्	५२	{	७०	सप्तति		
३३	तयस्त्रिंशत्			७१	एकसप्तति		

७२	{ विसप्तति	८२	द्वयसीति	६४	चतुर्णावति
	{ द्वासप्तति	८३	त्र्यसीति	६५	पञ्चनवति
७३	{ त्रिसप्तति	८४	चतुर्सीति	६६	षष्ठावति
	{ त्रय सप्तति	८५	पञ्चासीति	६७	सप्तनवति
७४	चतुःसप्तति	८६	षट्सीति	६८	{ अष्टनवति
७५	पञ्चमसप्तति	८७	सप्तासीति		{ अष्टानवति
७६	षट्सप्तति	८८	अष्टासीति	६९	{ नवनवति
७७	सप्तमसप्तति	८९	{ नवसीति		{ एकादशनवति
७८	{ अष्टमसप्तति		{ एकोनतस्रति	१००	शतम्
	{ अष्टासप्तति	९०	नवति	१०१	एकाधिकशतम्
७९	{ तस्रसप्तति	९१	एकनवति	१०२	द्वयधिकं शतम्
	{ एकनासीति	९२	द्विनवति	१०३	त्रयधिकं शतम्
८०	शसीति	९३	{ त्रिनवति	१४०	चत्वारिंशदधिकशतम्
८१	एकाशीति		{ चत्वारिंशति	१६९	नवत्यधिकं शतम्

— — —

४०१	एकाधिकचतु शतम्	एकोत्तरचतु शतम्
	एकाधिक चतु शतम्	एकोत्तर चतु शतम् ।
४०२	द्वयधिकपञ्चशतम्	द्वय सप्तपञ्चशतम्
	द्वयधिकं पञ्चशतम्	द्वयुत्तरं पञ्चशतम् ।
४०३	त्रयधिकषटशतम्	त्रयुत्तरषटशतम्
	त्रयधिकं षटशतम्	त्रयुत्तरं षटशतम् ।
४०४	चतुर्धिकसप्तशतम्	चतुर्दशसप्तशतम्
	चतुर्धिकं सप्तशतम्	चतुर्दशरं सप्तशतम् ।
४०५	पञ्चनवतस्रधिकमष्टशतम्	पञ्चनवतस्रदशरमष्टशतम्
	पञ्चनवतस्रधिकं सप्तशतम्	पञ्चनवतस्रदशरं सप्तशतम् ।
४०६	पञ्चाधिकाष्टशतम्	पञ्चोत्तराष्टशतम्
	पञ्चाधिकमष्टशतम्	पञ्चोत्तरमष्टशतम् ।
४०७	चतुर्विंशत्यधिकत्रयोदशशतम्	चतुर्विंशत्युत्तरं त्रयोदशशतम् ।
४०८	३५ पञ्चविंशदधिकषटशतनाधिकतवसहस्राधिकमष्टाशतम् ।	

१०० = द्विंशती, शतद्वयम्, शतद्वयी । २०० = त्रिंशती, शतत्रयम्, शतत्रयी ।

४०० = चतुःशती, शतचतुष्टयम्, शतचतुष्टयी । ५०० = पञ्चशती, शतपञ्चकम् ।

६०० = षट्शती, शतपट्टकम् । ७०० = सप्तशती अतसप्तकम् ८०० = अष्टशती, शताष्टकम् ९०० = नवशती अतनवकम् । १००० = सहस्रम् । १०००० = दशस्रम् १००००० = लक्षम्

एकोनविंशति से लेकर नवनवति तक संख्यावाचक शब्द एकवचन में स्त्रीलिङ्ग हैं। शतम् (सौ) सहस्रम् (हजार), दशस्रम् (दस हजार) लक्षम् (लाख) निम्नम् (बस लाख) कंठि (कांठ), दशकंठि (दस कांठ) धर्षदम् (धरष), दशार्धदम् (दस धरष) लवंम् (लरव), दशलवंम् (दस लरव), नीलम् (नील), दशनीलम् (दस नील) पद्मम् (पद्म), दशपद्मम् (दस पद्म), शालम् (शाल) दशशालम् (दस शाल)

### १०. अष्टाहरण

१. प्रथमां श्रेण्यां द्वाविंशत्यानां (इन कला में ६२ विद्यार्थी हैं) ।

२. द्वाविंशत्यान्निगतं वर्कमिता द्वाविंशदशीनिमेषति । (अष्टशालीन में दशमीस जोड़ने से दसवीं श्रेणी है) ।

३. दशशतान् व्यवकसितेषां पञ्चशतं धर्षद्विप्यते (एक सौ पक्ष में से पचास निकालने में सठि शेष रहते हैं) ।

४. पक्ष षट्विंशदधिकं वात (षट्विंशदुत्तर शत वा) वातरागामुपस्थितम् (यहाँ एक सौ छत्तीस कन्दर हैं) ।

५. मम चरकानि सप्तसर्पिणः पञ्चदश च स्वर्गमुष्टा भवति दधमा मम पञ्चदशार्धकर्मि चरकार स्वर्गमुष्टासप्तसर्पिणः सर्पिणः मेरे पास चार हजार पण्डित स्वर्गमुष्टाएँ हैं) ।

६. पञ्चविंशत्यधिककयोदशशतकम् (पञ्चविंशत्यधिकविंशतार्धकसहस्र वा ज्ञानामुपस्थितम् (एक हजार तीस सौ पक्षीय समुज्ज उपस्थित हैं) ।

७. विभक्तोक्तमत्र देशे पञ्चविंशत्युकोटयो जना ग्रामम् । (विभाजन के बाद इस देश की ग्रामाटो पंतोस करोड़ के लगभग थीं। एकोनवृत्तुत्तरव वषात्पुनरुत्तरक्रमे विष्ठाक्रे ग्रामो जनसंख्यां बभूव (सन् १९५६ में फिर नवी अतमरण हुआ) ।

### २. विशेषण (क्रमवाचक)

पुं० स्त्री० न०

पुं० स्त्री० न०

प्रथमः-सा-मम् , प्रथमः, प्रथिमः) पञ्चता-नी

द्वितीयः-या-यम् दूसरा-री चतुर्थः-वी-वंम् चौथा-चौथी

तृतीयः-या-यम् तीसरा-री पञ्चमः-मी-मम् पाँचवाँ-वी



यष्टः-यष्टी-यष्टम्	छठा-ठी	विश्वान्तम-मी-मम् (विश्व-)	(वीमवां-वीं)
सप्तम-मी-मम्	सातवां-वीं	एकविश्वान्तम-मी-मम्	
अष्टम-मी-मम्	आठवां-वीं	(एकविश्व-)	इकवीमवां-वीं
नवम-मी-मम्	नौवां-वीं	द्वाविश्वान्तम-मी-मम्	बाईसवां-वीं
दशम-मी-मम्	दसवां-वीं	त्रयोविश्वान्तम-मी-मम्	तेईसवां-वीं
एकादश-मी-मम्	ग्यारहवां-वीं	चतुर्विश्वान्तम-मी-मम्	चौबीसवां-वीं
द्वादश-मी-मम्	बारहवां-वीं	पञ्चविश्वान्तम-मी-मम्	पन्चोसवां-वीं
त्रयोदश-मी-मम्	तेरहवां-वीं	षड्विश्वान्तम-मी-मम्	छब्बीसवां-वीं
चतुर्दश-मी-मम्	चौदहवां-वीं	सप्तविश्वान्तम-मी-मम्	सत्तराईसवां-वीं
पञ्चदश-मी-मम्	पन्द्रहवां-वीं	अष्टाविश्वान्तम-मी-मम्	अट्ठाईसवां-वीं
षोडश-मी-मम्	सोमहवां-वीं	{	{
सप्तदश-मी-मम्	सत्रहवां-वीं		
अष्टादश-मी-मम्	अठारहवां-वीं	विश्वान्तम-मी-मम्	तीसवां-वीं
एकोनविश्वान्तम-मी-मम्	इक्कीसवां-वीं	एकविश्वान्तम-मी-मम्	एकतीसवां-वीं

वाचस्पतिः अष्टाविश्वान्तम (४०वां) पञ्चाशन्तम (५०वां) षष्टितम (६०वां) सप्ततितम (७०वां) अष्टाविश्वान्तम (८०वां), नवतितम (९०वां) दशतम (१००वां), सप्ततितम (१०००वां) ।

### हिन्दी में अनुवाद करो

१-विक्रमवत्सराशि चतुस्रारे सहस्रद्वये (गते) शताब्दीविरुद्ध भारतं स्वातन्त्र्यं लब्धवान् । २-दशसहस्राणि पञ्चशतानि द्विषष्टि चाष्टमि सतैश्चतुः पञ्चाशता गुराण ३-अस्माकं श्रेण्या दशाधिक जन स्यात् (११०) सन्ति । दशमन्दविद्यालये दशमश्रेण्या दशगती (१०००) स्यात् सन्ति ४-प्रमाण-विश्वविद्यालये पञ्चसप्तति (७५) छात्रेभ्यः पारितोषिकानि विनीर्णानि ।

### संस्कृत में अनुवाद करो

१-हजारों कुम्हारियों (सहस्राणि कुम्हारिणां) भारत की स्वतन्त्रता के लिए हँसती-हँसती जल में गयी । २-दो कोड़ी कतन कलाई कराये गये (द्वे विंशती पार्श्वणि त्रयुणेषु यत्नमेताम्) । ३-पाठवी कक्षा का बीसवां (विश्व-

निम्न दसवीं कक्षा या नीसवां (त्रिगुणम्) छात्र यहाँ आए ५—नवी कक्षा के पन्नीसव छात्र का गुरुजी बुल रहे हैं । ६—उम पक्ति का पाँचवां छात्र दोह में श्रावणश्रितियांगितस्याम् प्रथम आया ६—आवद वह यहाँ पाँचवें दिन आया ७—प्यारेनाम सगनी कक्षा में दूसरा रह । ८—मनुस्मृति के अनुसार ब्राह्मण का आठव श्रितय का भारहव और वैश्य का भारहव षष्ठ में उपनयन होना चाहिए ।

## द्वितीय अध्याय

### ३—विशेषण (वाक्यनिवाचक)

'तुमुना' तिगुना यदि वाक्यनिवाचक शब्दों के घुमुना के लिए संज्ञान में संख्या शब्दों के बाद गुण या गुणित शब्दों को जोड़ना चाहिए, किन्तु वाक्यनिवाचक शब्दों में वाक्यनि या वाक्यनि भी जोड़ दिया जाता है जैसे—

(१) सौहम्यो व्यापारे द्विगुना घन मेधे (सौहम्य को व्यापार में तुमुना घन मिला )

(२) अस्य भवन्त्य उच्यता तस्मात् त्रिगुना (इस प्रकार की लम्बाई को लम्बाई से तिगुनी है) ।

(३) अस्मिन् विशालमे अस्मादिदुमुना अधिक साधु जाता । (इस कालेज में वालीदुमुने अधिक साधु हो गये) ।

४ अस्य मागस्य दीपता त्रिगुना । (इस लाले की लम्बाई को तुनी है) ।

(५) स घन नावत् त्वत् सहस्रम् तत्तुम्, कोटिगुना वा अधिकम् प्रजगदु पर न कीन्ति वह तुम्से हजारमुना, लाखमुना या करोड़मुना घन क्या ले पर घना तहो क्या संकता) ।

(६) ब्रह्माचारिणः त्रिगुना मोक्षार्थं मेवतां धारयन्ति (ब्रह्मचारी तिहरी भुंज की लक्ष्मी धारयत है) ।

(७) इयम् यत्र त्रिगुमुना (द्विरावृत्तवा) रज्ज्वा चडा (यह बकरी बूढ़ी रस्सी से बँधी है) ।

(८, मा नाना विरावृत्तं (किरावृत्तं, त्रिगुनां त्रिगुणितं वा) दाम धार यति (वह सहस्री तिहरी माना पहने हुई है) ।

### ४—विशेषण (समुदायबोधक)

जहाँ पर 'दोनों, चारों, तीनों, पचासों' आदि समुदायवाचक शब्द हों,

उनका अनुवाद संख्यावाचक शब्द के बाद अपि' जोड़ने से किया जाता है जैसे —

(१) कि द्वावपि छात्रो मतो ? (क्या दोनों छात्र चने गये ?)

(२) यस्मिन् प्रकाशे पञ्चनिमेषपि पठका पठनाय शक्नुवन्ति (इन कमरे में पैंतीस विद्यार्थी भी पढ़ सकते हैं) ।

(३) पञ्चाशदपि सेनिका युद्धे हता (पचासी सिपाही युद्ध में मारे गये)

(४) कि त्वया योद्धा अपि बालका व्यवृता ? (क्या तूने सोसहों बाले लड़क कर दिये ?) ।

(५) अष्टपि बोरः पलायिताः (छात्रों और भाग गये) ।

### ५—विशेषण (विभागबोधक)

प्रत्येक या सर्व' आदि शब्दों का अनुवाद संस्कृत में 'सर्व' या 'सकल' आदि शब्दों द्वारा किया जाता है । जैसे—

(१) अस्या कथाया सर्वं छात्रा पठ्य सन्ति (इस कथे के सब छात्र पढ़ते हैं) ।

(२) अस्या वादिकाया सर्वान्ति छात्राणि सिद्धान्ति सन्ति (इस बात के सब भाग सही हैं) ।

(३) सर्वे ब्राह्मणा ब्राह्मणानाम् (सब ब्राह्मणों को ब्रह्मणों) ।

(४) सर्वस्य कामकेभ्य प्रतिपालक पारिवर्षिक देहि (हर लड़के को दसम दो) ।

(५) प्रतिदिनं (दिने दिने) पठितुं पारुषात्तामावच्छ (हर रोज पढ़ने के लिए स्कूल आया करो) ।

(६) प्रतिब्राह्मणा पञ्च कथ्यकारिण देहि, अथवा सर्वेभ्य ब्राह्मणेभ्य पञ्च पञ्च कथ्यकारिण देहि (प्रत्येक ब्राह्मण को पाँच कथे दो) ।

### ६—विशेषण (अनिश्चित संख्यावाचक)

एक शब्द द्वारा—एक सन्ध्यामी न्यवसत । एका नदी आसीत् ।

एकस्मिन् बने एक मिहो न्यवसत ।

किम् चिद् शब्दों द्वारा—कश्चित् सन्ध्यामी न्यवसत । कश्चित् नदी आसीत् ।

कस्मिँश्चिद् बने एक मिहो न्यवसत ।

एक तथा अपर शब्दों द्वारा—एक उत्तरीण क्षणोऽनुत्तरीण ।

एके मृता, अपरे पलायिता



एक तथा अन्य शब्दों द्वारा—एक हनति, अन्यो रोदिति  
परस्पर अन्योन्य शब्दा द्वारा—दृष्टा बालाः परस्पर (अन्योन्य) बलहायते ।  
असंख्यता परस्पर (अन्योन्यम् इत्येतत्) बालीः दहति  
शब्द आदि शब्दों द्वारा—सर्वे बाला अस्यां शंभामुत्तीर्या ।

सर्वणि पुण्याणि व्यक्तन् । सब स्वाधे समीहते ।  
बहु आदि शब्दों द्वारा—

बहव (बहुवचन) कालिका भीषण विजन्ते ।  
एतन् कायंताधनाय बहव उपाया संगत ।  
देशे बहव रोगा विद्यन्ते ।

कतिचित् या किम् + चित्, किम् + चन शब्दों द्वारा—  
कतिचित् स्त्रिया उत्ताराणां  
कानिचित् पुण्याणि विकर्मितानि ।  
काश्चन रिचय विदुषः ।

### ७—विशेषण (परिमाणवाचक)

श्रीमन्तुलामाल के शब्द—

शब्द—

रक्षिका, गुरुजा—रानी  
मायका—माता  
तोमका—तोना  
घट्टका—छटांक  
पाद—पाद

शरणागम्—संगुल  
चिनफिन—चार्निङन  
पाद—कुट  
इस्त—हुआ

मूल्यवाचक शब्द—

धन्यवाचक—

पराटक वराटिका—कोड़ी  
पाटिका—पाई  
पसा (पराक)—पैसा  
पारा (पराक)—धाना

पलम्—पल  
जरा—जरा  
प्रहर—(धाम)—वहर  
शिकना—संकष्ट  
कला—मिट  
बष्टा (होरा)—बष्टा  
अटोगा—बम्—दिन-रात  
मज्जाह—हुफा  
पस—पस

इषाणी (इषाणकी)—दुधनी  
अतुराणी (अतुराणकी)—अवनी  
अष्टाणी (अष्टाणकी)—अठनी

रूपकम् रूपकम्) — नपय

मास महीना

लिखकः (दीनार) — मोने की मोहर चपम् (चप्तर) चप्प सारण (चरम)

मेर मन मरा मेर, मोमे आदि के लिए संस्कृत में शब्द नहीं मिलते, इसलिए अनुवाद में इन्हों का प्रयोग किया जाता है जैसे—

१ चतुष्पदपरिमित होहय

६ — सर लण्डन ।

२ — वाज्रमय चीन सेरान छानय

७ — चत्वार मायका मुचरणम्

३ — सप्तराजपरिमित करम दीनार दीह । ८ — रूपकमय चम्कार चट्टु चतम् ।

४ — शतमीलपरिमितोऽयं चम्परा ।

९ — चौरिग योमनि आयादीनम् ।

५ — मुखराम चम्पार नांतका शल भूषणाव

संस्कृत में अनुवाद करो -

१ — विषयभजन की ऊँचाई इस यकान में चौथनी है । २ — यह माग उस माग से बहुत है । ३ — दीहरी रमनी से पुलिस के विचारद्वयो राजपुत्रयो) ने जोर की छोपा । ४ — दमक दमे में इस रूप कोम छात्र पहना रहा ? ५ — शीने गलित के पर्वों में मो से माठ नखर पाये । ६ — हजारां मन गेहूँ बिजवा से भाग्य की चापा ७ — राजभजन के बनान में बागलार बागलार ने करोड़ों पाये लख किये । ८ — यह की ठमका सोपा दिखवा भी नहीं है । ९ — कुछ लोग रूपभाव से घासली होत है । १० — टगानन्द विद्यालय यहाँ से पाँच मील दूर है ११ — दीनार के लिए चीन की दूताई योग्य लो । १२ — ये राज की वल बने शाऊंगा । १३ — इस यकन में इस मेर की आ मरना है । १४ — मिरीझक ने दुबस दिया कि छोटी कक्षाधा के गवार्क दज में ८० ले थादा लहके में बैठ १५ — आज कम रुपये के कितने चावन मिलने है ? १६ — सन् १६३७ में काय का १५ मर गेहूँ बिजवा था, अब तीन मेर भी नहीं मिलता ।

## तृतीय अध्याय

### ८. विशेषण गुणवाचक

“विशेष्यं व्यावर्तिर्ज्ञानं निज्ञानोऽर्थो विशेषणम् ।” आप्य प्रधान होता है और उस विशेषण कहते हैं जो आपक है वह अधिधान है और विशेषण कहलाता है कोई विशेष्य (इस) धपने सामान्य रूप में ही हमें ज्ञान होता है वह ज्ञान अन्तर्गत विशेष के रूप में अज्ञान होता है अतः विशेषण ही निश्चिन्त रूप या गुण के आपक होते हैं ‘नीलम् उत्पन्नम्’ यहाँ नील विशेषण है और उत्पन्न का प्रतीक (जो नीला न हो) से पृथक् करता है अतः विशेषण है

इस प्रकार गुणवाचक शब्द को विशेषण कहते हैं। गुण शब्द से अच्छे और बुरे दोनों ही प्रकार के मूलों का बहल होना है। हिन्दी में कहीं विशेषण का लिङ्ग बदलता है और कहीं नहीं बदलता है, जैसे—रमा बुद्धिमती है। यह सरला बालिका है। उस शालक की प्रकृति बुरा है। उसको बुद्धि प्रखर है।

पर सम्स्कृत में यह नियम है—

यस्मिन् यद्वचनं वा च विभक्तिविशेष्यम्  
तस्मिन् तद्वचनं सैव विभक्तिविशेषणस्यार्षि।

जो लिङ्ग जो वचन और जो विभक्ति विशेष्य की होती है, वही लिङ्ग वही वचन और वही विभक्ति विशेषण की भी होती है।

शब्द	अर्थ	पुं०	स्त्री०	सम०
श्वेत	(सोने)	श्वेतः	श्वेता	श्वेतम्
कृष्ण	(काला)	कृष्णः	कृष्णा	कृष्णम्
रक्त	(लाल)	रक्तः	रक्ता	रक्तम्
पीत	(पीला)	पीतः	पीता	पीतम्
हरित	(हरा)	हरितः	हरिता	हरितम्
मधुर	(मीठा)	मधुरः	मधुरा	मधुरम्
कटु	(कटुसा)	कटुः	कटुवी	कटुम्
शम्ल	(कटुटा)	शम्लः	शम्ला	शम्लम्
शीतल	(ठंडा)	शीतलः	शीतला	शीतलम्
उष्ण	(गम)	उष्णः	उष्णा	उष्णम्
सधु	(सोटा)	सधुः	सध्वी	सधुम्
विशाल	(बोडा)	विशालः	विशाला	विशालम्
शोभन	(सुन्दर)	शोभनः	शोभना	शोभनम्
स्पृष्ट	(मोटा)	स्पृष्टः	स्पृष्टा	स्पृष्टम्
कृश	(कुचल)	कृशः	कृशा	कृशम्
मनोहर	(सुन्दर)	मनोहरः	मनोहरा	मनोहरम्
बुद्धिमान	(बुद्धिमान)	बुद्धिमानः	बुद्धिमती	बुद्धिमानम्
साधु	(अच्छा)	साधुः	साध्वी	साधुम्

(प्रथमा)

पुं० कश्चिद् दुष्टं नरः । कौचिद् दुष्टो नरः । कौचिद् दुष्टा नरा



स्त्री० कचिद् दुष्टा स्त्री । केचिद् दुष्टे स्त्रियो । कचिद् दुष्टा स्त्रियः ।  
 नपु० किचिद् दुष्ट जन्म । केचिद् दुष्टे जन्म । कचिन्चिद् दुष्टानि जन्मानि ।

(अथमा)

पु० अयं शोभन नर । इमो शोभनो नरो । इमे शोभना नरा ।  
 स्त्री० इयं शोभना स्त्री । इमे शोभने स्त्रियो । इमा शोभना स्त्रियः ।  
 नपु० इदं शोभनं पुष्पम् । इमे शोभनं पुष्पे । इमानि शोभनानि पुष्पाणि ।

(द्वितीया)

पु० इम शोभनं नरम् । इमो शोभनो नरो । इमान् शोभनान् नरान् ।  
 स्त्री० इमा शोभना स्त्रियम् । इमे शोभने स्त्रियो । इमा शोभना स्त्री ।  
 नपु० इदं शोभनं पुष्पम् । इमे शोभने पुष्पे । इमानि शोभनानि पुष्पाणि ।

(तृतीया)

पु० अनेन शोभनेन नरंशो यास्या शोभनाभ्या नराभ्याम् एभि शोभने  
 नरे ।

स्त्री० अनेन शोभनेन स्त्रियंशो यास्या शोभनाभ्या स्त्रीभ्याम् एभि शोभ-  
 नाभि स्त्रीभिः ।

नपु० अनेन शोभनेन पुष्पंशो यास्या शोभनाभ्या पुष्पाभ्याम् एभि शोभने-  
 पुष्पे [इमी प्रकार शेष विभक्तिषो मयभन्ती चाहिए ]

सङ्कट से अनुवाच करो—

१ विद्याया (विद्वि) की मन्दर ग्रीष्म उसकी महत्ता को प्रकट करती है ,  
 २ क्या तुम राम दूध पीना चाहते हो ? ३ ईश्वर की भाषा क्या हो विद्विज  
 है । ४ किसी मिथत की वस्त्र हो ५ लट्ठी छोटा (तकम्) न पीछो गर्भ दूध  
 पीछो ६ गोपाल की मण्डनम् (विश्वविज) घण्टी है । ७ भुज बाधलो को  
 खिलाना है उन्मीलनम् । ८ बाल छोटा काल पीछे से आगे दीर्घ रहता है  
 ९ यज्ञ वधसतयन्त वानिका है । १० तेरा हृदय कायल नहीं है । ११ यज्ञ  
 मन्त्राव तदगम् वानि मन्दर है । १२ नयनो मण्डपको के लिए वस्त्र का  
 प्रबन्ध करो । १३ किमी पद पर गन्त यान्त्र धौर एक कवचन (वापीन) रहते  
 थे १४ नीले जलवाली यमुना के किनारे श्रीकृष्ण में निहार किया

अनुवाच प्रत्यास

६—विशेषण (उत्कर्षापकवन्वोधक)

वाक्य में विशेषण का प्रयोग तीन प्रकार से होता है—विशेषण या तो  
 सामान्य होता है, या अनुनात्मक या अनियन्त्रवोधक जब विशेषण साधारण  
 रीति से उत्कर्ष या अपकर्ष का बोधक हो तब विशेषण सामान्य कहलाता है

१ सात्वत्य विशेषण, ब्रह्म— (१) धर्म वाचक पद (उत्कर्ष) ।

(२) धर्म दृष्ट नर (अपकर्ष) ।

२ -गुणनात्मक विशेषण— जब री की गुणना में एक की अधिकता या गूनाता दिखलाई जाय तब विशेषण 'गुणनात्मक' कहलाता है और विशेषण के धार्ये 'नर' का ईयम् उत्पन्न मगया जाता है यथा—

(१) गोपात इयामा पटुनर (उत्कर्ष)

(२) नरः इयान् निरुत्तर (अपकर्ष) ।

(३) धाचासं धिनु यहीयान् (महत्तर) (उत्कर्ष) ।

३ -कतिशयबोधक (विशेषण) — जब री में अधिक पदार्थों की गुणना में एक की अधिक या गूना वतनाया जाय तब विशेषण कतिशयबोधक कहलाता है और विशेषण के धार्ये नर का उत्पन्न प्रत्यय मगया जाता है, यथा—

(१) हिमालय सर्वेषां पर्वतानां (सर्वेषु पर्वतेषु उत्तमतम उत्कर्ष) ।

(२) बहुरीकलं सर्वेषां कलाणां (सर्वेषु कलेषु निम्नतमम् अपकर्ष)

४, बहुश सर्वेषां भागानां (सर्वेषु भागेषु कतिशय अपकर्ष)

सात्वत्य	गुणनात्मक	कतिशयबोधक
गामु	गामुनर	गामुनम
धीरः	धीरतर	धीरतम
महान्	महत्तर	महत्तमः
गुणल	गुणतर	गुणतम
पटु	पटुतर, पटीयान्	पटुतम परिष्ठ
धिय	धियतर, धीयान्	धियतम प्रेष्ठ
गुह्य	गुह्यतर, गरीयान्	गुह्यतम गरिष्ठ
नयु	नयुतर नयीयान्	नयुतम नयिष्ठः
दीर्घ	दीर्घतर, दीर्घीयान्	दीर्घतम दीर्घिष्ठ
दृढ	दृढतर, दृढीयान्	दृढतम दृढिष्ठ
मृदु	मृदुतर, मृदीयान्	मृदुतम, मृदिष्ठ
कृष्ण	कृष्णतर, कृष्णीयान्	कृष्णतमः कृष्णिष्ठ
वृद्ध	वर्णीयान्, ज्यौयान्	वर्णिष्ठ ज्येष्ठ

सामान्य	सुखनात्मक	अतिदयप्रबोधक
अल्प	अन्वीषान् कर्त्तव्यान्	अल्पिष्ठः कर्त्तिष्ठः
बहु	बहुतरः कृत्यान्	बहुतमं भूयिष्ठः
प्रशस्य'	श्रेष्ठान्, अधोष्ठान्	श्रेष्ठं ज्येष्ठं
युवा'	कर्मव्यान्, पवीषान्	कर्त्तिष्ठः, धर्त्तिष्ठः
उत्त.	उत्तरं वरीषान्	उत्तमः, वरिष्ठः
स्पृष्ट	स्पृष्टतरं स्वर्गोपायान्	स्पृष्टतमः, स्वर्गिष्ठः
दूर'	दूरतरं दक्षीणान्	दूरतमं दक्षिणः
सुख	सुखतरं सांदोषान्	सुखतमः, क्षांतिष्ठः
हृत्त्व	हृत्तरीषान्	हृत्तिष्ठः
तापु	तापीषान्	तार्त्तिष्ठः
अपमान	अर्त्तरीषान्	अर्त्तिष्ठः
अश्लिष्ट	नेत्रावाम्	नेत्रिष्ठः
क्षिप्र'	क्षेपीषान्	क्षेपिष्ठः
बहुल'	बर्हीषाम्	बर्हिष्ठः
स्विर'	स्वेष्टान्	स्वेष्टः
पृथु'	प्रधीषाम्	प्रधिष्ठः
पापः (पापी)	पापीषाम्	पार्त्तिष्ठः

अतिदय के अर्थ में क्रियाओं और अव्ययों के पागे भी 'तर' और 'तम' शब्दों के साथ (तराम् तमाम्) लगाये जाते हैं : यथा—

क्रिया से—सीता हसन्तितराम् (सीता जोर से हँसती हैं)

महेश हसन्तितमाम् (महेश अत्यन्त हँसता है) ।

अव्यय से—सीता उन्मत्ततरा हर्षिणि (सीता अश्रमक हँसती हैं) ।

गोपाल उन्मत्ततमां हर्षिणि (गोपाल बहुत ऊँचे हँसता है)

केशव उन्मत्ततमाम् आक्रोशति, परं न काञ्चि भूयति ।

(केशव अत्यन्त ऊँचे चिल्ला रहा है, पर कोई नहीं सुनता) ।

संस्कृत में धनुषाद करो

१—गोविन्द सब भाव्यों में बड़ा है । २—कालिदास भारत में अन्य कवियों से श्रेष्ठ और शोकसमीपेद अगर्जनी आह्वित्य में सर्वोत्तम नाटककार और



कवि है ३—तुम दोनों में कौन बड़ा है ? ४—बिमला और सौता में कौन अधिक चतुर है ? ५—मोहन और मोपाल में कौन अधिक बुद्धिमान है ? ६—दिल्ली से अन्नमल्ल आगरा की दूरी अधिक दूर है, ७—हिमालय विन्ध्याचल से ऊँचा है ८—संसार घर में कौन पहाड़ सब पहाड़ी में ऊँचा है ९—दीर्घ धावनप्रतिघातिना से देवेन्द्र सब में तेज है । १०—वह छोटा शिशु सभी बानकों में प्रिय है । ११—मेघ भुविजन कन्द और कल्लो द्वारा अपने सरल जीवन का निर्वाह करते हैं (वृत्ति वन्धनार्थ) । १२—विशेष ने मुवा पुत्र पुत्र को राज्य सौंपा (अपराधभूत) और स्वयं जङ्गल को बना गया (प्रतप्त) । १३—उसने अपनी शारीरिक दुर्बलता का विचार न करते हुए परिश्रम किया । १४—सब तुम्हें समान गुरुजनों (गुरुगणपदधीन) सोलह पक्ष की (भोगाहायनीम्) मुन्दर कन्या से विवाह करना चाहिए । १५—यदि तुम निम्न मृदु व्याकाश कराते तो हृष्ट-पुष्ट हो जाओगे

## पञ्चम अध्याय

### १०—विशेषण (अवहृत्तिग)

पूर्ववर्ती द्वितीय अध्याय में इस विषय का प्रतिपादन किया गया है कि विशेषण विशेष्य के अधीन होता है । जो विशेषण लिङ्ग अथवा लक्ष्य विशेष्य के होते हैं वे ही विशेषण के होते हैं किन्तु कल्ल तेम भी विशेषण हैं जो विशेष्य का अनुसरण नहीं करते विशेष्य चाहे किसी भी लिङ्ग का हो किन्तु वे अपने लिङ्ग का कभी-कभी लक्ष्य का भी, परिहारा नहीं करते । ऐसे वाक्यों को अज्ञानलिङ्ग विशेषण कहते हैं । यथा—

१। याप पवित्र परमं पृथिव्याम् (पृथ्वी में जन जड़त पवित्र है) यहाँ पर 'पवित्र' शब्द याप का विशेषण है किन्तु नपुंसकलिङ्ग के एकलक्ष्य में प्रयुक्त हुआ है जब कि 'याप' (विशेष्य) स्त्रीलिङ्ग शब्द है और बहुवचनान्त है । अतः यह विशेषण विशेष्य से भिन्नलिङ्ग होने के साथ साथ भिन्नवचन भी है ।

२। दुहिता कृपणं पश्य (मनु०) (नटक्रिया अत्यन्त दया की पात्र हैं) । इस उदाहरण में विशेष्य 'दुहिता' स्त्रीलिङ्ग है और विशेषण 'कृपणम्' नपुंसकलिङ्ग है ।

३। अग्नि पवित्र स मां पुनानु (अग्नि पवित्र है वह मुझे पुनः करे,

यहाँ पर विशेष्य (यति, पूर्णिक) है और विशेषण (यतिवत्) तत्समकलिक ।

(४) वेदा प्रमाणम् (वेद मासो है) । यहाँ पर 'प्रमाण' शब्द विशेषण है और तत्समकलिक है यद्यपि विशेष्य वेदा पूर्णिक है ।

५) पाकिस्तानवासिन् भारतीय एव भारतीयवासिनां शास्त्रस्थानम् । (पाकिस्तानी भारतीय से ही भारतीयवासियों के लिए शास्त्र का स्थान रहे है)

(६) यतां हि सन्देशपदेषु बन्धुषु शब्दात्मकत्वं करोति । (सन्देशों के लिए बन्धुपदों की प्रवृत्तियाँ प्रमाण होती हैं)

(७) मयि बहूनि शरीरिण्या किञ्चित्कालमिदं भवति । (विद्या कर्तव्य है कि मनुष्य मानव का स्वभाव है और जीवन विकार है) ।

८) अभिमन्यु अश्वत्थाम दुःश्यामलमश्वत्थाम् । (अभिमन्यु वीरजनों में एक और अश्वत्थाम का भूषण था) ।

९) यद्यपि परमार्थो वदते । (यद्यपि विपत्तियों का एक से बड़ा कारण है) ।

(१०) गुणो गुणात्मानो गुणाय न च निरु न च वय (गुणियों के गुण ही गुणों के स्थान हैं, निरु और वय नहीं) ।

(११) उषशीं सुकमारं महर्षिं भस्मेन्द्रियं प्रत्यादेजो रूपविभागां श्रिय (उषशीं सुकमार का कोमल शरीर और रूपविभागां श्रियों का लज्जा के बालों की) ।

(१२) तत्र समाने भूषां प्रभावमुपलब्धेन च परिहृता न चित्तादित्युदये, जिस समान में भूष प्रभाव होते हैं और परिहृता योश नह समान अधिक समय तक नहीं ठहर सकता) ।

(१३) वरसेको गुणो गुणो न च सुप्रसन्नान्धिय ।

एकचन्द्रमसी तन्नि न च तारागह्वरम् ।

एक गुणी एक चन्द्रा है, जैसी भूष अच्छे नहीं अकेला चंद्र चंद्रों की एक कर देता है तारागह्वर नहीं ।

क्योंकि अत्रान पर स्थान प्राप्ति कुछ कभी कभी बहुवचन में भी प्रयुक्त होवे है, यथा अत्रान पर भवति अत्रान्त्रयपदमात्रम् अत्रान्त्रय स्थिति ही अवस्था के पात्र होत है) । (काव्यव्यास)

### संस्कृत में अनुवर्त करो:

१ हमारे की निम्नो मन नरों निन्दा करना पाप है २ अच्छा शासक प्रजाओं के अनुग्रह का पात्र हो जाता है । ३ कोई नीति कायरता है और कोई योग्य अगती जानवरों की चरा है । ४ वह संशुद्धी शक्तता को पति की प्रांग में बैठ को मयी थी ५ परमात्मा की महिमा अतन्त है वह बेमयी घोर मन का विषय नहीं ६ श्रीकृष्ण मेरा आग्रह है ७ पुत्र मेरा शरीर छोटी बलवा फिरता जीवन है और मवस्व है । ८ आपका तो कहता ही क्या पाप को विद्या के निधि योग मुग्धों की लात है । ९ विपत्ति मित्रता की कसौटी है, सम्पत्ति में ता बनावटी मित्र बहुत मिलते हैं । १० रमेश मेरा परम मित्र है

### बैठ सम्पादन

#### ११—क्रिया-विशेषण

पश्यत का प्रकार के होते हैं—(१) उपसर्ग—पति, पति धनु धन पति पति धादि (२) क्रियाविशेषण—अकस्मात् अघत अल, अत्र अथ, अथ अन्तरा, अन्यथा धादि (३) समुच्चयबोधक शब्द—अ तु वा, किन्तु चेत् इति धादि (४) यथोक्तिप्रत्ययबोधक शब्द—इति धा वत्, हा विद् धादि ।

### क्रिया-विशेषण

भिन्नता करने वाला या भेदक विशेषण होता है । क्रिया में भिन्नता करने वाले को क्रियाविशेषण कहते हैं । क्रियाविशेषण पात्र सपुंसकर्मिण में प्रयुक्त होते हैं । यथा—

३ कालार्थ केवला नीति शीघ्रं द्वागदयेदितम् । ४ संशुद्धी-अशुनीयस्य भेद-प्रतिग्रह ५ परमात्मनो महिमा परिच्छेदनात् अनी काङ्क्षमनसयोगोच (वाक् न मनश्चेति यादुमनसो-द्वन्द्वनाम्) । ६ श्रीकृष्ण शरणं यम । 'शरणं तपः' एकवचन में प्रयुक्त होता है । ७ पुत्रो मम धर्मसञ्चारा प्राराग शब्दस्व च । 'जोतिनायक' 'प्राग' शब्द निच ब्रह्मचरान्त है । ८ निधि निधानस्य सान आकर । ९ कभी-भी निरूप दनाश्रयो—कृत्रिमाणि । १० रमेश मम पर मित्रम् ।

(१) तदा नेहृकमहोदय सभायां देशभक्तिविषयं मन्त्रित्वं विशदं च व्याख्यातम् । उस दिन सभा में पंडित नेहृक ने देशभक्ति के विषय पर विस्तार-पूर्वक और स्पष्टता से भाषण किया, ।

(२) मुक्तमास्तान् लपोवनं ह्यतिरिचनस्य म्बगेहम् । चाप आराम में ब्रैडि लपोवन तो अतिरिचनों का अपना घर है) ।

(३) साधु कृतं पुत्र साधु रक्षितं स्वया कामुप्यात्कृतयथा शाबास, पुत्र शाबास, तूने अपने पुत्र को बड़ा नहीं अपने दिया।

(४) इतो हस्तदक्षिणां चकं नष्टं क्षिप्रं नक्षत्रपुरीषं विधानभवनमासा-  
द्यिष्यति । चाप यहाँ मैं साँप दाहिने हाथ जायें, चाप बाँही देर में मल्लनरु के पार्श्वस्थित हो उस में पहुँच जाँगे) ।

(५) सायम्, मध्यम सायमभ्यासं प्रायश्चेत्प्रभवामत्ययेऽस्मिन्ममाभ्युपगति-  
सम्भावयन्तु । मैं आपसे सायंकालक और मध्यम में प्रायश्चा करवा दूँ कि आप इस संकट में मेरी सहायता करें।

(सम्भवों को पोंछे पृष्ठ २६-३० पर भी देखिए)

### क्रिया-विशेषण के प्रकार

कुछ क्रियाविशेषण सम्भवों से वर्तनीगत हैं, जैसे—विद्या, धृक् कृषां, कुक्ष समस्य शब्दों से बनते हैं, जैसे—पद्या तथा, इरात्रीम् तथाभीम्, कुछ संख्यावाची शब्दों से बनते हैं जैसे द्विषा, त्रिषा, कृष मजाधी से तद्विन प्रत्यय लगाकर बनते हैं जैसे—ग्रन्थगतं पुत्रवत् । कुछ लघुमकलिभ से एक-बचनगत संज्ञाओं से बनते हैं । जैसे—मन्त्रम्, मन्त्रम् ।

### संस्कृत में अनुवाद करो—

१. पहले हम एक-दूसरे से समान रूप से मिलने के अनुरोध व्यक्त करें हैं और मैं आपसे अनेक कथनार्थी । २ शिशु बहुत ही डर गया है अभी तक होश में नहीं आया । ३ हे मित्र यह बात हमारे में कहीं गई है इस बात पर

\* कृतम्' से शब्द की पुष्टि होती है ।

१ भव आप व्यक्तम् स्वामी भवान्, अहं च विदितो नियोज्य  
२ बहुत ही व्यक्तम् । ३ पण्डितकृतम् ससे परमार्थेन न गृह्यता व्यक्त



समक्षित ४ दूर तक देखो निकट में ही दृष्टि मत रखो, परलोक को देखो इस लोक को ही नहीं । ५ उसने यह पाप जान-बूझकर किया था अतः पापार्थ ने उसे त्याग दिया ६ उसने मुझे अवतंस्त्री सीखा और पीछे धकेल दिया ७ मैं बड़ी बाढ़ ने बाई के घर तोड़ने की प्रतीक्षा कर रहा हूँ ८ तारुण्य अपनी इच्छा से शिलाकी धूमना या खोर भर्मा वृत्तान्त जानता था । ९ यह घटक घटक कर कोसता है उसकी बातों में स्वाभाविक दोष है । १० संपोषन में स्वयन्विशेष के कारण विस्वास में आये हुए हिरने निमग्न होकर डूब रहे हैं ।

४ दीर्घ परम या हृत्स्व, परं पञ्चम याऽवरम् । ५ जान-बूझकर—सकामम् । ६ अवतंस्त्री—हठान्, पीछे धकेल दिया—पृच्छतः प्रागुदत् । ७ बड़ी बाढ़ ने—सोत्कण्डम् भार्गव के घर—प्रतीक्षा कर रहा हूँ—एवं प्रति आतु प्रत्यावृत्ति सोत्कण्डं प्रतीक्षे । ८ अपनी इच्छा से—स्वैरम् । ९ घटक-घटक कर—स्फुटिताक्षरम् (सगद्बदम्) । १० विस्मयं हरिणादवरस्यचक्रिता देवागतप्रत्ययाः ।

# क्रिया-प्रकरण

## सप्तम अध्याय

### कार्त्तव्य काल — चर

गन् (जाना) परस्मैपद			भूत (होना) आत्मनेपद			
गच्छति	गच्छत	गच्छन्ति	प्र० पु०	वर्त्तते	वर्त्तते	वर्त्तन्ते
गच्छसि	गच्छथ	गच्छन्	म० पु०	वर्त्तमे	वर्त्तथ	वर्त्तन्महे
गच्छामि	गच्छाम	गच्छामः	उ० पु०	वर्त्ते	वर्त्तमिहे	वर्त्तमिहे

### द्विती प्रकाश—

परस्मैपद—यत् (गकाना) वर्त्तति नञ् (नसम्भार करना) मचति, रक्ष-  
गच्छ, देवना पचति नि - मन् (बैठना) निवीरति, स्था (उठना) निष्ठति,  
मृ (मरना) मृणोति, वा विह (पीना) विहति वा (रक्षा करना) वाति द्या-  
विद्य, मचता जिघ्रति रम् (दान करना) स्मरति, स्पृश (छूना) स्पृशति,  
वा (पारण करना) वचति वृ (बोचना) वधीति, स्वप (सोना) स्वपिति  
भक्ष (खाना) भक्षति भ्राजति, भी (हटना) बिभेति जक (मकना,  
लकनोति हु (से जाना) हरति ।

आत्मनेपद—वेह (वेहा करना) वेहते नञ् (बठना) वर्त्तते, मृद प्रमथ  
पीना) मोवते, सह (महना) महते, आस (बैठना) आस्ते सोह (सोना) सोते,  
पुष (लपना) पुष्यते, जन् (पैदा होना) जायते, मृ (मरना) म्रियते ।

उभयपद—पान (पीना) पीवति-पायते नी (ने जाना) गच्छति-गच्छते,

परस्मैपद का अर्थ है 'वह पद जो दूसरे के लिए हो' और आत्मनेपद का अर्थ है 'वह पद जो अपने लिए हो' इसका आशय यह है कि जिस क्रिया का फल दूसरे के लिए हो वह परस्मैपद में और जिस का फल अपने लिए हो वह आत्मनेपद में होनी है । कुछ चर्च (किसान बोता है) इसमें बोना क्रिया का फल दूसरे के लिए होना किसान के लिए नहीं ।

हैं वे गान हसति हसते भुज (पानन करना) धुनस्ति-धुनस्ते क (करना) कर्वाति-कर्वाते, नुर (चुराना) चोरयति-चोरयते, कम् (कहना) कम्वाति-कम्वाते, चिन्त चिन्ता करना, चिन्तयति-चिन्तयते ।

वर्तमान काल—प्राक्कालोद्गम्यमानकाल कामी वर्तमान काल " वर्तमान काल की निश्चितता जहाँ हुई किवा लट लटका द्वारा कही जाती है । कह रहा है' खेल रहा है' मुन रहा है 'का रहा है, 'गो रहा है' इन सबके अनुवाद में 'सट' का ही प्रयोग होता है (प्रभावत जीवति मृगयति, लायति पिबति घातकस कृष्ण साग एते स्वामो पर शत्रु शान्ति प्रसमो का प्रयोग करते हैं और साथ में यह बात का सटनकारान्त रूप । 'बहु कह रहा है' का व अनुवाद करते हैं—प्रभावमालाजिस्ति, 'खेल रहा है' का अनुवाद करते हैं—जीवन्मस्ति मुन रहा है का अनुवाद करते हैं मृगयन्मस्ति । ऐसा करना व्याकरण के संबंध में विमल है । इन वाक्यों को ध्यान में पड़ो—

१. सिधु लोत्कम्प म्वाति मातु (बच्चा माता के दर्शन के लिए लोत्कम्पित) है ।

२. निद्रया सुषमाभन बधने भवान् (घायको पथ-जन्म पर बधाई ।

३. यो बीरयति स गर्विष्यते यो दंत महते मित्रा यो युधा मेवता है वह पथपाता है, इसी कारण संग्रहण युग को निन्दा करते हैं

(४) गोपाल मेषाश्च पाशोमपि कमा व मृदाति सब भोजराज वष व कृश्वन्मसो गोपाल का रमण से क्या मुकाबला ? कहीं राजा मोल कहीं कुकुरा लेवी ।)

५. हमें बेसी स्वामान्विधायि सब निधीयते (मैं सुनूँ कितने समय से बँध रहा है, तुम क्यों छिप जाने हो) ।

### संस्कृत में अनुवाद करो

१. वाक्पथ है कि मुनिजित्त भी गया व्यवहार करते हैं २. मनुष्य अपने भाई बन्धुओं के प्रति पाप करने का कैय माहस करता है ? ३. शल को अमकला हृमर (प्रकाशमान) यदि किस प्रकार नहीं सिक्का कामी और चार के । ४. मैं दिन के दो बजे से पाठ बाद कर रहा हूँ अभी तक पाठ

२. पाप करने का 'एन' लयाचरित्, कव क्रमत ?

३. अन्यत्र कामुकान् कुम्भीलकाश्च । ४. विमलनाल प्रमृति

होने में लड़ों आया । ५ व्यायाम में मनुष्य में स्फूर्ति और बल आता है और शरीर स्वस्थ रहता है । ६ विदेश जाते हुए पुत्र के लिए को मत्ता चूमती है । ७ वह किसी का भी निश्वास नहीं करता, सदा शक्ति रहता है । ८ यदि मू मांस खाता है (अदनामि) तो वृद्ध हमसे कुछ लाभ नहीं (वेदं तवोप-करोति, ९ वह बीमार नहीं है, बीमार होने का बहाना करता है (आनुगतं व्यपदिशति) । १० आचकम लोभ मनुष्य की योग्यता का अनुमान उसके पहनावे (वेष) से करते हैं (अनुमानि) । ११ नर पड़ामी (प्रतिवेशिन्), गरीब है तू उसकी सहायता क्यों नहीं करता ? १२— जो लक्ष्मी को पीछे भागता है लक्ष्मी हमसे दूर भागती है । १३ अधिक वर्षों के कारण हमारे मेकान की छत (छवि) टगती रहती है (प्रदन्वातरति) जिससे हम बहुत तंग आ गये (आतङ्काय) । १४ वह खंभरी तंग बलों में (सकटायां प्रतर्निवका-याम्) रहता है । १५ उसकी बहुत सवरे उठने का आदत है महति प्रभूसे जायति, तबल्लर शत्रुण कर (द्व्यान् परिभूय) और के लिए निकल जाता है (स्वैरविहानं निर्माति) ।

### अष्टम अध्यास

भूतकाल—मुद्ग लङ् लिट्

गम् (मुङ्) परस्मैपद

अगमन्	अगमताम्	अगमन् प्र० पु०	अवतिष्ठ	अवतिष्ठाताम्	अवतिष्ठन्
अगम	अगमताम्	अगमन् म० पु०	अवतिष्ठति	अवतिष्ठाताम्	अवतिष्ठन्
अगमन्	अगमाव	अगमाम् उ० पु०	अवतिष्ठि	अवतिष्ठहि	अवतिष्ठन्ति

गम् (लङ्) परस्मैपद

अगच्छन्	अगच्छताम्	अगच्छन् प्र० पु०	अवतन्त	अवतन्ताम्	अवतन्त
अगच्छन्	अगच्छन्	अगच्छन् म० पु०	अवतन्थी	अवतन्था	अवतन्थ्वम्
अगच्छन्	अगच्छाव	अगच्छाम् उ० पु०	अवतन्ते	अवतन्ति	अवतन्ति

गम् (लिट्) परस्मैपद

जगाम	जगाम	जगाम् प्र० पु०	ववृते	ववृताम्	ववृतिरे
------	------	----------------	-------	---------	---------

नानापि पारम्यामि कण्ठे कृतुम् । ६- सिरम्बुपञ्चिप्रत्यम्बा । ७—न कामपि प्रत्येति अण्वण्व अण्वुते ।



जन्मदिन-जन्मस्थ	जन्मकु	जन्म म० पु०	वृत्तिथे	वृत्ताये	वृत्तिध्वे
जन्मम जन्म	जन्मव	जन्मम ३० पु०	वृत्ते	वृत्तिवहे	वृत्तिमहे
	मह	मुह	मह	मिह	
पञ्च (पकाना)	पचति	पपाक्षीत्	पपचत्	पपाच	
पञ्च (मिहना)	पतति	पपातोत्	पपतत्	पपात	
स्पञ्च (सोष्टना)	स्पञ्चति	स्पञ्चासीत्	स्पञ्चत्	स्पञ्चाज	
हञ्च (हंसना)	हसति	हहासीत्	हहसत्	हहास	
प्रहञ्च (पफडना)	प्रहसति	प्रहहासीत्	प्रहहसत्	प्रहहास	
हृञ्च (हृदय, हृदयना)	हृदयति	हृदासीत्	हृदयत्	हृदय	
नीञ्च (नी ज्ञाना)	नयति	नयसीत्	नयत्	नयाम	
स्थाञ्च (स्थापना)	तिष्ठति	स्थासीत्	स्थात्	तस्थी	
वञ्च (वहना)	वसति	ववासीत्	ववसत्	ववास	
हृञ्च (मारना)	हृति	हवसीत्	हहत्	जघान	
भृञ्च (भुजना)	भृष्यति	भव्यसीत्	भभृष्यत्	भुभाष	
शीञ्च (शीतना)	शेते	शसपिह	शसत्	शिश्ये	
सहञ्च (सहना)	सहते	समहिह	समहत्	सहे	
सेञ्च (सेवा करना)	सेवते	समेशिह	समेशत्	सिलेवे	
रञ्च (रञ्जना जगना)	रोचते	परेशिह	परेशत्	रहते	
मृञ्च (ममस्कार करना)	मन्दते	मवन्धिह	मवन्धत्	ममन्दे	
यञ्च (यत्न करना)	यते	यमन्धिह	यमन्धत्	येते	
कम्पञ्च (कौपता)	कम्पते	ककम्पिह	ककम्पत्	ककामे	
मृञ्च (मरना)	म्रियते	ममृत्	मम्रियत्	ममार	
शुञ्च (शोभित होता)	शोभते	शशोमिह	शशोमत	शुशुभे	

भूतकाल(मुह, लङ्, मिह) — वह गया, 'वह जा रहा था', 'उसने आया', 'वह छा रहा था' आदि का अनुवाद करने के लिए संस्कृत में मुह, लङ् और मिह का प्रयोग होता है।

मिह का प्रयोग पराज अर्थ में होता है अर्थात् जिस क्रिया को वक्ता ने स्वयं न देखा हो, अर्थात्—जबान कछ किल बानुदेवः (भगवान् कृष्ण ने कंच को मारा)। सम्राट् समुद्रगुप्तोऽवधमेधनेवे (इंज) सम्राट् समुद्रगुप्त ने अवधमेध यज्ञ किया।

इस नियम के अनुसार पुनः मुख्य में 'लिट्' का प्रयोग नहीं होता। यह कि 'अपरोक्ष' विधा में 'लिट्' नहीं होता। इन नियम का प्रयोग भी है यदि कहते वाले को छात्रों या उच्चारण में अपने किये का ध्यान न रहे तो 'लिट्' का प्रयोग उत्तम पुरुष में हो सकता है यथा

॥ कलिङ्गस्यवासी किम् ? तर्हि कलिङ्गान् ज्ञायाम । यथा तुम कलिङ्ग देश में रहते थे ? मैं वहाँ गया एक नहीं । इसी प्रकार 'चट्' जगद पुरस्कृतस्य मत्ता किराहम् युक्त पगनी ने उसकी साक्ष्य बहुत प्रमाण दिया, ।

सामान्य भूत में लुङ् लकार होता है। और लङ् भी हो सकता है। किन्तु 'भामिनीपुराणम्' में केवल लुङ् ही हो सकता है यथा—अथवाचिभरथ पुनःकस्य पाठं समापम् (मैंने धातु ही इस पुस्तक का पढ़ना समाप्त किया है— इस वाक्य में लुङ् के अनिश्चित किसी समय लकार का प्रयोग नहीं किया जा सकता। इसी प्रकार—हृदयो धान्य एवे धानि कीलकाम्यकार्षीम् धानि महा-न्तीरपि पुरुषाः कम् नानकम् (कुम्भ में कचपन में एते एते कोलुक शिखे जिह्वे धरे धरे लोभ नहीं कर पाय)। अगम कायममृता धमूय इमेन मोचरम विद्या है इस धामन ही एवे है । (आखेट)

निषेधाधनूक्त विधान मात्र (धा) के योग में केवल लुङ् का प्रयोग होता है। यदि 'माङ्' के साथ 'म' लता हो तो 'लुङ्' के अनिश्चित 'लङ्' के प्रयोग का भी विधान है। माङ् के योग में धात्व (यं अथवा धा) का लोभ हो जाता है यथा—अन्ध मा कार्षी (धावात्र मत करो) । यहाँ पर 'अकार्षी' के 'अ' का लोभ हो जाता है यह नियम लुङ् और लङ् में एक समान है

मैव एव जनसि करो अहा या और एव के साथ 'य' लङ् का प्रयोग हुआ है। या न विधार्थ गच्छसि सप्रथेनान् पुनान् प्रथम्याय शिलकाय एन लङ्का नो पश्याम निग किम्पे मुपाय सध्यायक का मौप दो, तानि मे कर्तौ जलेते मायं कर न जायें) ।"

सनद्यतन (साज में पहन) पुनःकाल के धर्म में लङ् का प्रयोग होता है, यथा—इह भारत वज्रलोको नाम सम्राडामीन् (भारत में अशोक नाम का सम्राट् हो चुका है) ।

विशेष १। यदि धातु के पूर्व कोई उपसर्ग लता हो तो पहले उस धातु के लङ् धादि लकार का रूप बनाकर बाद के उस प्रयोग के पूर्व उपसर्ग लगाया

॥ कलिङ्ग शब्द दशविंशक का वाचक होने में बहुवचन में प्रयुक्त हुआ है ।

जाता है जैसे ऊपर के वाक्य में 'सन्वसरन्' है वहाँ पर पहले 'स' का लड़ में प्रसारण हुआ बना कर उनके पूर्व 'अनु' उपनिर्गन्तवा विभक्तिया है और फिर यशस्वर्षि की गयी है। (अनु + ससरन् = सन्वसरन्)।

(२) साधारण भूतकाल के धर्म में कसेवान काल की क्रिया के बाद स्मृत्ति लगा दिया जाता है। पहले इसका प्रयोग किम्प कहानियों में होता था—  
कश्मिर्विकटव एक मिह प्रतियनति स्म विन्तु नतै ननै इसका प्रयोग सम्भव भी होने लगा।

### संस्कृत में अनुवाद करो—

(गुरु में १ वह जो योग्यताओं परीक्षा में प्रथम श्रेणी में श्रेष्ठतया प्राप्त किया (अभीर्नर्तयन्)। २ कल्प कृषि आश्रम में नहीं है वे शकुन्तला के दुर्योधन की लक्ष्मी के लिए (दुर्योधनवत् प्रतियुक्तं वैव शर्मयितुम्, गये है) (यगा)। ३ अर्थात्तः का स्वामी मृष निकल गया है (उदगान विद्याएँ चमत् उठी (विश्वकर्मादिपु)। ४—हे कामक २०० मन (मा मेदी, गुरुगामी माना या गर्वा है) ५—हृषिकेश कायक मत हनी (मन्त्रेण वा ह्य गम) पर गुरुई शोभा नहीं देता (नैनमुत्साहगुणकत)। ६—मोक्ष के समय की कभी मत छोड़ो, मातृकर्म)। ७—राजा की मृत्यु का समाचार पाकर गरी नशा में न किसी ने कुत्त पकड़ा (चपकि) न किसी ने स्वयं किया (अस्मादि न कुत्त जाया (अभोजि), सब जगह सब गये ही रहे (मूर्ध्वगोदि)। ८ इस विश्वव्यापी युद्ध में न जाने कितने सैनिक मरे (योद्धागे निरधार्मिण)। ९ मैं स्नान कर चुका है अब भोजन करने (अहमस्नानमिषम् इदानीं भोज्ये)।

१० उस पर उन्होंने चोरी का अभियोग लगाया है पर वह अभियोग निराधार है (ते त शिर्ष्वज चोरोत्ताम्ययुतन)।

(चिद में १—जब राम इस पृथ्वी पर राज्य करते थे (ध्यास नव प्रजा बहुत प्रमत्त थी (नन्द)। २—कल्प कृषि के आश्रम में पहुँचा (प्राप, कि उसकी वाहिनी आँख कबक उठी (परपन्द)। ३—दिगीप ने रघु को राज्य सौंपा (त्याग) और स्वयं वत की चला गया (प्रतस्थ)। ४—जब मैं पागल था तो कहते थे कि मैंने उनके सामने बहुत प्रताप किया। ५—क्या तुम काम-रूप देश में रहे थे ? नहीं मैं वहाँ गया तक नहीं। (उमर के उदाहरणों को वहाँ)।

(लङ् में) १—मेरी अनुनी में सूई चुन ली, जिससे अभी तक पीड़ा हो

एही है (मुञ्चा मयाङ्ग निरविध्यत) । ४—इस स्थल से प्रविष्ट होने से पहले (प्रवेष्टात् प्राक्) मोहन तीन वयं तक (त्रयंवयम्, त्रयंवयं स्कूल में पढ़ता रहा (अपठत्, १३) यदि तुम आसानी से परीक्षा में उत्तीर्ण हो सकते थे परीक्षा सुझलरा, तो तुमने किसके क्यों रक्षा (किमर्थे रक्षितकमवुद्भवा ? ४—उन्होंने मुझे वह स्थान छोड़ने का विवश किया (प्रत्यानयन्) । ५—कुमार को हस्त की सेवा का नामक नियुक्त किया गया । ६—उन्होंने वस्त्र का लोभ किया (यथासि तेऽनुष्मन्) पर के इष्ट प्राप्त न कर सकी (नाप्नुवन्) । ७—जब माता दृष्टि से मोक्षन हुई तब बच्चा विद्वत्-विषय कर (अमुक्तवाष्टम्) रोने लगा ८—क्या प्रधानाध्यापक जो के गृहजन से पहलें इम्पेडर महोदय सातवीं कक्षा का निरीक्षण कर चुके थे ? ९—पुराने क्षत्रिय धीरता की रक्षा के लिए (क्षत्रत्राणाय) सदा सज्ज होकर रहते थे (शब्दद्वयपुष्टा दासद्) १०—साधुओं की संगति से उनके सब पाप धोये गये (सर्वं पाप्मानोऽपुनरन्त)

### नवम अध्याय

#### वर्णिष्यद् काल—मुद्, नृद्

मद् (मुद्) परस्मैपद			नृद् (नृद्) आत्मनेपद		
गन्ता	गन्तारी	गन्तारः प्र० पु०	वर्तिता	वर्तितारो	वर्तितारः
गन्तासि	गन्तास्व	गन्तास्व म० पु०	वर्तितासे	वर्तितासाथे	वर्तिताध्ये
गन्तास्यि	गन्तास्व	गन्तास्व उ० पु०	वर्तिताहे	वर्तितास्वहे	वर्तितास्महे
गम् (गृद्)			नृत् (नृद्)		
गमिष्यति	गमिष्यत	गमिष्यन्ति प्र० पु०	वर्तिष्यते	वर्तिष्यते	वर्तिष्यन्ते
गमिष्यमि	गमिष्यथ	गमिष्यथ म० पु०	वर्तिष्यसे	वर्तिष्यथे	वर्तिष्यध्ये
गमिष्यामि	गमिष्याथ	गमिष्यामः उ० पु०	वर्तिष्ये	वर्तिष्याथहे	वर्तिष्यामहे
परस्मैपद	लुट्	लृट्	आत्मनेपद	लुट्	लृट्
पथ्	पक्ता	पथ्यति	गोहृ	सथिता	सथिष्यन्ते
पव्	पतिता	पतिष्यति	सहृ	सोहा	सहिष्यते

\*अपि प्रधानाध्यापकः ज्ञानमात्रं पूर्वं निरीक्षणमात्रं सप्तमौ क्षेत्री परीक्षितवानसीत् ? ऐसे स्थलों पर सम्पूर्ण भूत काल की क्रियाओं को प्रकट करने के लिए वातु से क कचतु का प्रयोग करना चाहिए और साथ में अक्षु या भु के लड़ का प्रयोग



त्यज	त्याका	त्यद्यनि	संव	मेवित्त	मेवियते
हम	हमिना	हमिन्त्यनि	स्व	मेवित्ता	मेवियते
यज	यजाता	यजिन्त्यनि	वन्दे	वन्तिता	वन्तिद्यते
हृष	हृषी	हृषिन्त्यनि	यत्	यतिता	यतिद्यते
नी	नीता	नीयन्त्यनि	कल्प	कर्मिता	कर्मिष्यते
वस्	वस्ता	वन्त्यनि	मृ	मन्त्र	मन्त्रिष्यते
हृस्	हृस्ता	हृन्त्यनि	सुम्	शान्तिता	शान्तिष्यते
श्व	श्वीता	श्विन्त्यनि	मृद	मांदिता	मांदिष्यते
पा	पाता	पान्तिन्त्यनि	कृष्	वर्षिता	वर्षिष्यते
तम्	तन्ता	तन्त्यनि	युष्	योद्धा	योद्धस्यते

[illegible]

सूक्ष्मकार माध्यमगत अविव्यक्त की क्रियाओं को सूचित करता है विद्यमान उन क्रियाओं को जिनका पाठ से सम्बन्ध हो गया—धनधामि विवेकधामि न ज्ञानम् । ( मैं जानता हूँ यौन वास्तव की दुईना है ) । इस वाक्य में धन की घटना का निर्देश है । यहाँ अविव्यक्त का समीपवर्ती अतमान काल है यत यहाँ सूक्ष्म का प्रयोग भी हो सकता है, यथा अण्वस्त्रमवकनान् प्रतिनिधिः सन् विधानसभाया उन्नतप्रदेशस्य सदस्य इति निर्वाचितमात्मानमिच्छसि ? ( क्या आप उन्नतप्रदेश विधानसभा के सदस्य निर्वाचित होने के लिए हमारा इलाके से जाये होंगे ? )

## संस्कृत में अनुवाद की

सुद में। १—अब कभी मुझे पञ्चमर विद्विगा में बेदाल मीखने का प्रयत्न  
कहूँगा। २—स्वतन्त्र भारत अपनी निधनता और निरक्षरता को शीघ्र मिटा  
देगा। ३—हाँ, यह कब पड़ेगा जो इस प्रकार पढ़ने में ध्यान नहीं वंता ?  
४—हम एक बंध जाद यज्ञ करने (वर्षातिरंग यज्ञमहो, इस बीच में हम

साधनीं कृता तंते (प्रवान्तः पुरोन्विष्मारात्कलन्ति) । ५—उर्वीनिपां कृतं है कि तुम्हारे प्रा- पुत्र पैदा होना हो अनुभवी के लक्ष्य को हर नेगा (मन्त्रिय मर्तेति) ।

नूट मे, १—यदि तुम आते मरको का ध्यान न रखोगे अथवा ध्यान न करोगे (नूट मे) तो वे अत्रय विमल शयन (गन्धर्वान् अविमलान्) । २—यदि तुम राहु धोर आधाय को यह वे विर आधाय (परिधायि) ३—यद्यपि पृथिवी को एक वड न्याहार मनाया जायता अधिनन्दिनयते) । ४—यदि नूट दिन मे (पृथ्वीरन्धि) हम मरए वहां राहु धोर सोरी नाम के पडनाल करगे (शान्मन्धायाम) । ५—आर या मर हम मरनाल शयन गे होक मिद्वित मही ६—यदि नूट हम मर नालाह में नोरां मरगादिपस) सो नूट जायगे (विमलुधयि) । ७—जल नूट हम मर न म काम करते उनीम वपे मवा मान मय तथा दाक दिन हो शयन एकान्विद्वानि मवा गपाइसा-मसा प-व दिन (रि म) । ८—द्वितीया नूट शायगे उवता ही मोटा सोगा (यदिपस्य, यिक काम) । ९—यम नूट सो उवा करगा धोर नूट भी गाव न नगा १०—यह उगमे उपकृत है यमवा उवती मरपना म करती) ।

### दशम प्रमाण

सम्पादना की प्रमाण (मिह, मोट)

मम् (मो) गम्पेय

म (मो) गम्पेय

गम्पेय	गम्पेय	गम्पेय	५० १०	गम्पेय	गम्पेय	गम्पेय
गम्पेय	गम्पेय	गम्पेय	५० १०	गम्पेय	गम्पेय	गम्पेय
गम्पेय	गम्पेय	गम्पेय	५० १०	गम्पेय	गम्पेय	गम्पेय

मम् (मो) गम्पेय

म (मो) गम्पेय

गम्पेय	गम्पेय	गम्पेय	५० १०	गम्पेय	गम्पेय	गम्पेय
गम्पेय	गम्पेय	गम्पेय	५० १०	गम्पेय	गम्पेय	गम्पेय
गम्पेय	गम्पेय	गम्पेय	५० १०	गम्पेय	गम्पेय	गम्पेय

मम् (मो) गम्पेय

म (मो) गम्पेय

गम्पेय	गम्पेय	गम्पेय	५० १०	गम्पेय	गम्पेय	गम्पेय
गम्पेय	गम्पेय	गम्पेय	५० १०	गम्पेय	गम्पेय	गम्पेय
गम्पेय	गम्पेय	गम्पेय	५० १०	गम्पेय	गम्पेय	गम्पेय

पुस्तकालय

आत्मनेषु

[illegible]

सम्पादना पूर्व प्रथमना (नोट लिख) — सम्पादन प्राप्त कीविषय जयस  
दक्षता यदि सभी में नोट एक विधिविह का प्रयोग जान है प्रथमना अधीन  
प्रथमना विधि प्रथमना उपदेश अनुमान शब्दों का प्रयोग यदि सभी में विधि-  
लिख तथा नोट का प्रयोग जान है ।

समभावना-समभावनेत्यु गिता साधयेत् । तत्र पदं सति पिताजी सा  
गारं । अद्वैतसाधये । तत्र प्रयोगः साधयेत् । अद्वैतं पूर्णं तत्रैव प्रयोगः च  
(गारं) ।

**प्रश्न** किमहं प्रदानमज्योसोम इव न्यायिणः (वयं ते चंद्रावत्पुण्यं प्रीत्यामहे) ?

**श्रीचित्प-** अब मरणां संका कर्ता। (इस पाठपात्री को भजना करी तथा कुछ यथा नित्य न भवेत् "यत् करो विद्यमाने चित्ता न तौ)।

शष्यं वा मा पिशान् इति कथञ्चि नम्यं पुत्रां स्त्रियेन (स्त्रियन्नाथः,  
(ओ मुक्तं पिशानं कथनं है उसके एवं धन जाय) ।

शामना—छिन्धि न पायन्ति । (अथः कश्चेत्तां येन पल्लं कालं हीनयेत्  
 शायन्त्याः शयनानि शयनं । धीमन्, स्यात् नोत्तरं स्यात् यत्नः । २ हीने मयि  
 दस्यं कुरु । मूकं गन्तव्यं परं इत्यादि ।)

अज्ञा। तीर्थदिकं न भविष्य कृपमानि दमोन् स्वैर वतादुपमयन्तु तथा धनानि (वे स्वेष्वेवा से नमस्या का धन नोभी का जन्म नमिधारा फल और कुशा धन्य से श्रम्य, स्त्री से पुत्रकं दमोन् पश्य ममूरवात् पठनम् धार-पश्य (यस्य तुम अपनी पुस्तक के पढ़ने पठ को खाना और पहना शुरू करो)

अग्नीर्वद। आत्मनः स भवति लक्ष्म्य, वीर्यमप्य भव परमात्मनः करे तुम योग्य पनि को ध्यान करो और वीर्यवन्तरी ॥ आद्याः, पृथ-तय जनिषीह व शत्रुपि हृषीह द्विषाः (हरेकर करे उनके धर पुत्र पदो हो जो शत्रुओं को लक्ष्मी को हरण करे) ।

उपवेश। मया कृपाम् श्रिय कृपाम् (मया बोला सीठा काम) महमा विवधीत न विद्याम् (विद्या विचार काप न कर) । साधनानां सव शत्रुनिवृ-तयधर प्रतीक्षन् (मानवान रहा शत्रु तुम्हारी धार में है) ।

अनुरोध — दशासीत (आस्त्यात्) तवद भवाम् (आप यहाँ बैठिए,

अनुमति — उपविशतु भवाम् कथं न प्रतापयेयम् ? (आप ही बताय कीसे इस प्रमत्त शर्क ? यदि खाना यह मच्छेयु (मच्छेयु) ? क्या विद्याओं पर जाय ?

विधि — मान्यस्यापममन्यस्य इवमाचरेत् (हमारे के घपराय के लिए दूसरे को दबड़ न दे) । उत्कृष्टिगम स स्वप्यात् (उत्तर की ओर सिर तारके न साथ । बहावारी मधु माप न बक्येत् (बहावारी के लिए मांस और शहर धरित है) ।

इच्छा — भवान् दीप्य सीरोपो जवेम् (यक्यु) । मैं चाहता हूँ कि आप को दीप्य धाराम ही साथ) ।

साधनम् — जट्टाकरिको दिनेन सप्त कोशान् नक्रेयु (यह हरकारा प्रति-दिन मान काम दोड़ सकता है) धनेन रथधनेन पूर प्रस्थित वैनतेयमप्यात्ता-व्येषम् रथ की इस जाल में मैं पहने चने हुए लकड़ की भी पकड़ सकता है,

प्रार्थनात्म — प्रसन्नधनु भवान् स्वा योग्यताम् (आपके लिए यह प्रच्छा प्रथम है कि आप अपनी योग्यता दिखाय) ।

कामचारानुज्ञा अपि माहि अपि लिख (तुम चाहो तो जा सकते हो बाहो तो ठहर सकते हो) ।

संस्कृत में अनुवाद करो

जोट निम्न) १ अकुन्तता तुम सदाचार का अनुसरण करो । २ देदी



धीरज धरो भव इत्ने का कोई काम नहीं । ३ मरव में सबसे पहले चढ़ो और  
संथमें पाँखें उगरो , ४ धरनी धाव बढ़ाओ और कर्च कम करो ५ यदि तुम  
चाहो तो यह काम समान कर सकते हो । ६ पाँव धीकर बाह्याँ का जोकन  
धरोस दो । ७ राजा ने धावेंद किया कि बाह्याँ को भोजन के लिए भोज-  
नेन लहो निमन्त्रित किया जाय ८ नोकर से कह दो कि मेरा बिल्लोना  
विष्ठा दे भुके नींद धा रही है ९ तुम्हारा मन मन में लगे और मरव में  
निष्ठित हो । १० धाव का काम कल पर धन छोड़ो । ११ जो धान के दोष  
हैं उनका धान करो शत्रुधा को धी धनकल बनाओ १२ धापी सम दम  
मकान का रोड़ा कर । १३ धा तो मक धिरावा भाटकम् धी वा मकान  
जाती का धी परिष्पेज १४ इस धन्याधारी को मदन स पकड़ो और बाहर  
निकाल दो । १५ तुम धानो धा न धानो पर धन धान नो मही है १६  
धापचय है कि धन्या धी पड़ निकल लके । १७ उसे धपदा धन धिरावा मही  
रमना धाधिरा वा कर्वाचतु काट धन उसकी सहायता करना । १८ धपध  
तुम धा धाधन तो धाधा है कि धी इलाकल होकर पड़ना । १९ धन लहो  
समान मुसाधानी सांधह धन की मुन्दर कथा से धिराव करना धाधिरा २०  
मोते व पहने मुद्ध धपना पाठ धाव का मेदा धाधिरा , २१ धिराव धी तुम  
धपते धेश की धवा करो । २२ मैं धापका धिराव हूँ धापकी धरता में धाधा  
हूँ मुभा उपदेश दीजिए २३ कृपया धान धन कर धी धिराव धारम् लेज  
धाधा धाध्या धन रही है । २४ गोपान तुम धुव धुव जीधो तुमने धेर धपवे  
की जान बचाई । २५ हमारी धसनना की लिरा धी धान कीर धा सीजिग ।

१ शकुन्तले पाषाण नावप्रतिपदाधि । २ धकधयम नावमारीहत भवे  
पयचाप्च तनाश्वारोहत । ३ धाव धपय धय च धानध ४ धवस्यातु भवान्  
धव कृत्यम् । ५ धावनिर्धोजन कृत्वा विप्रान् धनेन नपय । ६ धावनीयं  
रत्नधाम् ७ धयं मे धीयता धी मरवे न निम्निष्ठनु १० धावतनं कार्यं धव  
कर्तव्यीति वाध परिहर ११ धान्यान्मानय धाव तपनृतय । १२ कृपाविकस्य  
संविदं करवावहै । १४ धमकन्तं दत्त्वा निम्माग्याम् धान्यम् १५ धीनि धा  
न धा पर तपयं धिदधेव । १७ धेन ध्वगह नाजिकरगोधमामीदु । १८  
गुहधवेदागधेः धावसंयुक्तोऽधिपीय । १९ धुवां कल्यामुद्धेत । २० धविण्डा ।  
२१ धिग्यतेः धाधि मा त्वां धपनम् । २२ गोपान धुवधायुं धीव

### एकादश अध्याय

हेतु हेतुमद्वयम् (द्विव्याप्तिर्मात्रं) लक्ष्म

शम लङ् षंगस्मैपद

३२ (१६) आत्मतन्त्र

सर्वमिच्छन् अगमिच्छन्तम् अविच्छिन्नम् ३ पु सर्वमिच्छन् अविच्छिन्नम् सर्वमिच्छन्  
सर्वमिच्छन् अगमिच्छन्तम् अगमिच्छन् ४ पु सर्वमिच्छन् अविच्छिन्नम् सर्वमिच्छन्  
सर्वमिच्छन् अगमिच्छन्तम् अगमिच्छन् ५ पु सर्वमिच्छन् अविच्छिन्नम् सर्वमिच्छन्

## इसी प्रकार

प्राक्पूर्वपद - पक्ष) अपत्यम् (पक्ष) अपानिर्यात् (त्यज) अपत्यम्  
हय सहनिर्वात् (यद) अपत्यम् (पक्ष) अपत्यम् (पक्ष) अपत्यम्  
पक्ष) अपत्यम् (हय) सहनिर्वात् (पक्ष) अपत्यम् (पक्ष) अपत्यम् (पक्ष)  
अपत्यम् ।

[illegible]

हेतु हेतुमयज्ञानक जहाँ क्रियानिरति (क्रिया की अविच्छिन्नता) का होना कर्मयोग ही अथवा हेतु का वाच्यता का कृत्यम (न होना) अन्तर्गत ही या जहाँ यह प्रवृत्तियों का अन्तर्गत ही अथवा जहाँ ही क्रियानिरति में प्रवृत्त का प्रयोग होता है लक्ष्य नकार का भूत तथा अविच्छिन्न के अर्थ में व्यवहार होता है किन्तु वाच्य कैवल्यम अविच्छिन्न का न होना प्रयोग नहीं मानते । ६ मन्त्रिपराकान में नष्ट के अर्थ में नष्ट का ही अर्थ प्रयोग करते हैं ।

१। तृप्तिरनेदभिमित्यतः, दुर्मिक्तं नभमिवप्यन (एतत् सम्यक् पणं वर्णं हो  
जाती श्री सकालं त पश्यतः)

१२. यदि मुनिभिराचार्यः कुर्यात्तु यामगन्धं तत्र रत्नरत्नविशेषमुपहरीके  
 विद्यमानम् ? यदि नूनं तुमके शरीर की धूलि पायी जाती तो क्या तुम्हारे  
 मन में इस कामल के प्रति जगत् भी रजि होवे ? (विरु०)

(3) दिवाणचेलमस्थितो नाभविष्यन् कः नाम बन्धुममोक्षणं व्यजाम्यत ?  
(यदि शने संशयो न होतः सा वन्दसा न गुरु कौन जानना) ।

(४) यदि राजा दण्ड देना न चाहे तो क्या वे लोग कि ते प्रजा तोषापीडयित्यन् यदि राजा कुर्जों का दण्ड न देना तो क्या वे लोग की पीडित न करन ।

१५) यदि शक्तिप्राप्तिप्राप्त्या मोक्षोद्भावात् ज्ञानका साधन्यविज्ञानविकारान् मातृतीयभ्योऽप्यन्यत् ननु द्वयोर्ज्ञानो मोक्षनां मिथ सम्बन्धोऽविच्छिन्नः (यदि शक्तिप्राप्तिप्राप्ति के लिये ज्ञानक भारतीयों के अनुमतिद्वयविकारों को उन्हें दे देने में) ज्ञाना ज्ञानियों का साधनी सम्बन्ध विच्छिन्न हो जाता)

संस्कृत में अनुवाद करो

१—यदि सूर्य न होना तो संसार में कौन जीवित रह सकता ? २—यदि सूर्योपवन नष्ट न करता तो महाभारत का युद्ध न होता । ३—यदि वह अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना तो रोगी न होता । ४—यदि मैं गुहड़ी की छात्रा मानो होती तो परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया होता । ५—यदि पशुपत का बीष न बताया गया होता तो मेरी वयस को बढ़ा में जाती । ६—यदि तुम मेरे घर आये होते तो मैं तुम्हें मधुर और स्निग्ध मोक्षन विद्याना । ७—यदि रावण सीता का अपहरण न करता तो राम के हाथों उसकी मृत्यु न होती । ८—यदि तू दुष्टों की सभति में न परना तो महाबाह में न तिष्ठता । ९—यदि एकदा राह छोड़ गया होता तो न उलटना । १०—यदि श्रीकृष्ण की सहायता प्राप्त न होती तो पाण्डव कौरवों को जीत न सकते । ११—यदि पक्षी-हार घातिका, मातृपान होने लगे लोरी न हुई होती । १२—यदि मैं गरी होता तो अनाथों और विधवाओं की सहायता करता । १३—यदि तब चलती होती तो गर्मी कम हो जाती । १४—यदि गोपी का उचिन उपचार होता तो वह न मरता । १५—मत्त शूद्रियों ने प्रियामय ने कहा—'यदि ज्ञान पुष्पी की व लम्बने होने लगे घना वह मां घपने कोमल फल पर होते उसे उठा सकता ?' १६—स्वा प्रकृत ज्ञान के सन्तकार की बुर कर सकता यदि घा-बाध सूर्य ने उसे घपना मातृवी न बनाया होता ?

२ श्रुत करना या + बत । ३ शरीर वेदवाधास्थानासौ शरीरद्वयवि-  
पत्तः । ४—सुरोद्धेदीश्रामकविराम्य, समविध्यम् । ५—सुरोद्धेन्मय सदन  
सुरोद्धेय वेदं स्निग्ध ज्ञानं त्वामभोजयिष्यम् । ६—मातृ रक्षेता प्राणी-  
तोऽप्यत । ७—सुरोद्धेन्मय सदन सदनान्नाभ्रजिष्यता । ८—  
हस्तिगोम वेदवाध्यन्त शकटं परमविषयम् । ९—न चेत्कृष्ण साहाय्य व्यति-  
प्यत । १०—सामवाप्यन् कथ नामो मुमान्मदुर्दिशकः । शत्रुज्ञानममुमान्-  
ममान्निषिष्यता न चेत् (कुम्भरः) । ११—कि वाऽमविष्यद्व्यपन्नमसां विधेना  
न चेत्पञ्चकिरणां धृति नात्कनिष्यत् ? (पादः ७)

## हास्य-अन्वयम्

## प्रेरणाार्थक (सिञ्जन्त) क्रियाएँ

जब किसी क्रिया में प्रेरणा का कार्य जाना हो तब वातु में सिञ्ज प्रत्यय जोड़ देने से (करना से करना, पढ़ना से पढ़ाना, पकाना से पकवाना) प्रेरणा के भाव हैं, यथा—देवदत्त छोड़न धत्तति (देवदत्त नष्टन भक्षता है) "यज्ञ-दत्त पञ्चन वेगदत्त प्रेरयति—यज्ञदत्त देवदत्तं योद्धुं पापयति यज्ञदत्त देव-दत्त से जायल पकवाता है । सिञ्ज में प्रेरणा आवश्यक है यदि प्रेरणा का विषय न हो तो सामान्य क्रिया का प्रयोग होना है ।

हमें बाभी-बाभी सक्कल वातुओं में सक्कल वना में के सिवा भी सिञ्जन्त का प्रयोग करना पड़ता है, यथा—पाखंडी बहनिज तथाभ्रमंययति गांधर्व पाखंडी राज दिन तव हाहा खाने गरीर को छोड़ कर रही है) ; यहाँ पर सक्कल क्रिया प्रत्यय का सिञ्जन्त में सम्भवति सक्कल प्रयोग है ।

प्रेरणाार्थक वातुओं के साथ पुन वातु के कर्म में कृतीया होती है कर्म में पूर्ववातु कृतीया ही रहती है और क्रिया कर्ता के समुच्चय होती है यथा—(मूल) वृक्ष कार्य करोति । (सिञ्जन्त) देवदत्त मृत्पथ कार्य कारयति ।

प्रेरणाार्थक वातु में वृत्त वातु के अन्त में सिञ्ज (धय) जोड़ दिया जाता है वातु के अन्त में धय लगाकर प्रेरणाार्थक बना देने हैं । उनके रूप परस्मैपद में 'पठति' के समान पाठ प्रान्तस्मैपद में जायल क समान जायल है । सिञ्जन्त वातुओं के रूप पुराद्विगुणीय वातुओं के समान होते हैं । वातु शीघ्र तिङ् प्रत्यय के बोध में धय जोड़ दिया जाता है, सिञ्जन्त वातुओं प्राय उभयवादी जाती हैं यथा—नष्ट पाठयति पाठयने । नष्ट—सपाठयत सपाठयत नष्ट पाठयति पाठयति पाठयति नष्ट—पाठयतु पाठयनाम्

सिञ्जन्त क्रिया का कर्ता सिञ्ज-य क्रिया के साथ प्राय कृतीया विभक्ति में होता है यथा—

- १—रामेन दीप त्यजति, कुरु रामेन दीपं त्यजयति
- २—राम मातीन हन्ति, सोना रामेन मातीन पातयति ।
- ३—उप धनं ददाति मन्त्री नृपेण धनं दापयति
- ४—पिता कौटुक कीर्तयति राज्ञः धिया कौटुकं कापयति ।
- ५—मुमुक्षु राम तनं नृपति, राजा यमनक्ष रामं वनं नयति



तिष्ठन्ति १२ वातुओं के शिबन्त प्रयोग में शिबन्त किया के कर्ता में द्वितीया विभक्ति ही होती है। इ तथा क के साथ तृतीया वचन द्वितीया विभक्ति होती है, यथा—

(१) तमन — पाण्डवा बन् बन्धुनि कौरवा पाण्डवान बन् भगवान् ।

(२) 'दशन — (दान् कन्ट पश्यति) माता दान् बन्ट दशयति ।

(३) शक्य — नृप योज शूलानि शक्यता नृप गते शक्ययति ।

(४) पदेन — बद्धचारी बद्ध प्रविशति, यात्रायं बद्धचारीणं गत प्रवेष्टी वति ।

(५) घातोद्गम — (म वृषम् घातोद्गमि कृष्णं तं वृषम् घातोद्गमयति

(६) शरण — (माविक गङ्गासगरति) मा माविक गङ्गासगरयति

(७) शरण — (विचन भोजन पालयति, यत्क विचन भोजन पालयति

(८) शरण — (दान् नृप गतयति) दान् दान् नृप गतयति

(९) शरण — (यात्रायं शरणं जानाति) यात्रायं शरणं जानयति

(१०) गत शक्ति अर्थी शाली — (शाली शरणम् घातोद्गमि गुरु शाली शरणम् घातोद्गमयति) ।

(११) वा — (शिवम् दुष्टं पिबति) माता शिवम् दुष्टं पिबयति ।

(१२) भोजन — 'भद्र, लाद' अर्थ को छोड़कर (कृष्णं धनं भुज्जते) भोजनं भुज्जयति ।

(क) इ (नृप भारं गतयति) स्वामी भूय (भूमेन, मात गतयति) ।

(क) इ (सेवक कार्य करोति, स्वामी सेवकेन (सेवक) कार्यं करोयति ।

ती घोर बहु वातु के प्रयोग कर्ता में द्वितीया न होकर तृतीया ही होती है यथा मृत्यो भान नयति यहति वा (स्वामी भूमेन भारं गतयति गतयति वा) ।

१ जन्म भयं अन्तः के प्रयोग कर्ता में ही द्वितीया होती है यथा देवो रामं मृत्यं जल्पयति ।

२ 'भद्र' और 'लाद' के प्रयोग कर्ता में तृतीया भी होती है, यथा माता शिवम् पिबति सतिवति सतिवति वा ।

## विभिन्न वचनों में

मित्र शिशु भोषयते शिशु वचने को उगता है।

यद्यु वचन शिशु भोषयति । यद्यु वचन प वचने का उगता है।

विष्णु वागेन मनु विन्मययति । विष्णु वागेन म मनु को विन्मय करता है।

मीमा शीतेन जलान् विन्मययते । मीमा शीत से लोगों को विन्मय (करती है)।

व्याध मृगान् रज्जयति । व्याध मृगों को मारता है।

नपथ्वी मृगेन मृगान् रज्जयति । नपथ्वी मृग से मृगों को मृत्यु करता है।

यद्यु मृगान् रज्जयति । यद्यु विद्विषों को मृत्यु करता है।

स्वा—स्वापयति

परा—परापयति

भी—भापयते

खी—खपयति

मृ—मृषयति

पाम—पामयति

चर—चरयति

हो—होषयति

दा—दापयति

दुप—दुपयति

रह—रोहयति

हा—हापयति

जम्—जम्पयति

मृ—मृषयति

म्या—म्यपयति

मु—मुषयति

मीष—मीषयति

मी—मीषयति

पारम्भ—पारम्भयति

मुप—मुपयति

पी—पीलयति

हन्—हन्पयति

दुप—दुपयति

ताप—तापयति

दुपयति

## संस्कृत में अनुवाद करो—

१ गुरु कर्मों को विकसित करना है। २ गुरु कर्मविविधों को बन्द करना है। ३ पशु का दान मृग मृगों को भी मृत्यु का अनुभव कराता है। ४ विद्वान्मित्र से राम का जनक को पुत्री मीमा ने विवाह कराया। ५ मैं भर्तृ से एक घोड़ा मिलाऊँगा। ६ दाप सपन भाषण को समान्य वीजिए, खोतल करत ऊँच गप है। ७ नीका रुप से पीठिन स्वामी को शीघ्रत रुप से दान कराना है। ८ मन्त्र वाचकमित्रों को कथा मनाना है। ९ गुरु विद्वानों का वद पठाना है। १० मन्त्री राजा से प्रजा पर शासन करवाना है। ११ गान्धर्वानि न तत्रावकां को भविष्य के संकटों से सचेत किया। १२

१ गङ्गाजान्मुनीनयति कुमुदनि निमानयति २ सुखयति ३ कीर्तिको रामेण नीनां गङ्गाजान्मुनीनयति ४ चान्द्रक मेखविष्णुयति ५ अथमापय मधदि म्हा गिर तद्विज्जन्त गान्धर्वानि ।

सुनिश्चय कल्पकता होना दीव्य निर्वहण करने है । १२. सौ वर्षों की पुण्य पितृणां न शीघ्र चाद दिव्यानी है । १३. अपराधी मेरी राक मेरे मकान पर प्रतिदिन सायंकाल पहुँचाता रहेश (हरिमिष्यति) । १४. दुराहित प्राणि की साक्षी करके वर से मनु का मन करता है । १५. गायनाचार्य ने लवकियों को गाना शुरू कराया ।

## श्रीशोध शिष्यास

### सम्पन्न चातुर्ण्य

किसी काय करने की इच्छा का साथ बनसाने के लिए उस काय का धर्म बनसाने वाली चातु के बाद मनु प्रत्यय लगाया जाता है। यदि धर्म, जैसे— पशुना शीघ्र चादना । (कृपाणां का कर्ता एक ही है) इस नियम के अनुसार गोपाल राक्षस पशुनिष्पत्ति से 'पिपाठयति' नहीं होना, क्योंकि पशु माला घर के बाह्येवाला एक ही कर्ता नहीं है, भिन्न भिन्न कर्ता है ।

मनु प्रत्यय लगाने पर चातु की द्विप होकर चातु के स्वरूप में कुछ अन्तर आ जाता है। परस्पर में चातु के रूप पठति के समान शीघ्र चादने पर से जायने के समान बनते हैं। सम्पन्न चातु के बाद 'धा' लगाने से सत्ता शब्द बन जाते हैं जैसे 'धाद्वय विज्ञाता' जलध पिपासा शीघ्र 'उ प्रत्यय लगाने से विज्ञापन शब्द बन जाते हैं, जैसे - धाद्वय विज्ञातु जल पिपासु ।

मू—बुभुक्षति— भोजन को इच्छा करता है बुध् बुभुक्षते जानने की इच्छा करता है  
 धु—बुभुक्षते मनन की , लिख—लिखति— लिखने की  
 धा—विज्ञापन जानने की , पठ—पिपाठयति— पढ़ने की

१०—राष्ट्रपति राष्ट्रयुवजनमेवन्नीतिर्भीमि प्राचीनयत् १. स्तन्य दाययति । १४—अग्निं सारितु कृत्वा १५—समानाचार्यो दारिकारि-  
 मतिभारम्भयत् ।

षह्—जिघृक्षति—छट्टा करने की  
 इच्छा करता है  
 लप्—लिप्सति—माने की  
 ह्—चक्ष्—चिक्छति—झानने की  
 हन्—जिघांमति—भरने की  
 षा—विश्रम्भति—भारण करने की  
 ह्वा—विहसति—देखने की  
 क्षी—क्षिप्रं गति—खरीदने की  
 विष्वा—विधिं सति—करने की  
 ह्—जिह्वांति—हाने की  
 दह्—दिघक्षति—जलाने की  
 स्वा—लिङ्गासति—सहने की  
 मृ—मृष्यति—मरने की

धाव - इ अधिजिगामने-आप्ययन  
 की इच्छा करना है  
 पा विषायति—पीने की  
 वि - वि विजिगीषत—भीनने की  
 हृ—कुरिषति—रोने की  
 प्रक्ष्—विपक्षिषति—पूछने की  
 पच—विपक्षति—पकाने की  
 ह—विकीर्षति—करने की  
 मृश—वृधक्षति—क्षाने की  
 जीव—जिजीविषति—जीने की  
 क्षी—जिह्वायाम—माने की  
 ह्वप—मृष्यति—मरने की

### संस्कृत में अनुवाद करो—

१ तुम्हारा गोंड कड़क रहा है (स्फुर्ति) तुम कुछ प्रयत्न चाहते हो  
 , निगृक्षति २ यदि तुम वाचना चाहते हो (विचक्षति) ३ मैं तुम्हें  
 समय देता ४ यदि तुम गावाओं की कुर्याद्वि कायता है (अनुपहं लिप्सते)  
 तो उनकी इच्छा के अनुसृत काम कर (अनुसृतमनुवर्तय) । ५ उन्होंने युद्ध  
 की टालना चाहा (पयविहीचन्) तो भी जानि प्राप्त न कर सके (अप  
 नाशकमुचन्) ६ तुम्हें पतिवारा ने दोष बताते की इच्छा करते हुए भी  
 किव के विषय में एक बात छप्यो कह दी । ७ विद्यता ने मानो मोन्दर्य की  
 एक स्थान पर देखने की इच्छा रखने हुए उसका निर्माण किया । ८  
 अनुपम काम करणा हुआ ही भी वरं जीने की इच्छा करे । ९ दूसरे दिन अपने  
 अनुचर के भाव को जानने की इच्छा ते मुनि (चमिष्ठ) की १० धेनु ने

५ विवक्षता दीपमपि च्युतास्थना स्वयंकमौघे प्रति सधु भागितम्  
 ६ सा निमित्ता विवक्षता प्रयत्नादेकस्वसौन्दर्यदिदस्येव । ७—कुबन्तरेह  
 कर्मणि जिजीविषेच्छतं समा (यजुर्वेद) । ८—सम्यदुरात्मानुचरस्य भाव  
 जिज्ञासमाना मुनिहोमवेनु । गौरीसुराबह्वरमाविवेश (रघुवै) ।



हिमालय की गुफा में प्रवेश किया । ६ सभी प्राणी जीने की इच्छा करते हैं मरने की इच्छा कौन करता है ? १० जो दुर्जन का वध में करने की इच्छा करता है वह नीतुक स विष पीना चाहता है । कामानन को स्वेच्छा से चूमना चाहता है और नामरत्न को दासिजन करने का इत्थ करता है

## धातुबन्ध सम्बोधन

### महन्त धातुएँ

विद्या की बार-बार करने प्रवृत्ति धनियय दिक्षाने के लिए धातु के बाध यह प्रत्यय लगा देने है । यह प्रत्यय लगने से धातु को द्विरूप हो जाता है और धातु के रूप में कृष्ण परिवर्तने हो जाता है, यथा पुन पुन विवर्ति पेपीयते महन्त धातुओं के लट् लोट् लारट् लकारों में जायते धातनाम् की भाँति रूप होते हैं ।

यह प्रत्यय धातु में दो प्रकार से जोड़ा जाता है । एक को जोड़ने से परस्मैपद में रूप चलता है और दूसरे को जोड़ने से आत्मनेपद में परस्मैपद जाने रूप प्राय वैदिक साहित्य में आत्मनेपद के रूप लौकिक संस्कृत में मिलते हैं । महन्त धातु के दस लकारों में रूप दस प्रकार हैं—कुप्—(लट्) बोधुष्यते (लिट्) बोधुष्यते (लृट्) बोधुष्यते । (लृट्, बोधुष्यते । (लोट्, बोधुष्यते । (लट्) बोधुष्यते । (लिट्) बोधुष्यते । (लृट्) बोधुष्यते । (लोट्) बोधुष्यते ।

भी—जेतीयते—बार-बार से जाता है जि—जैतीयते—बार-बार जीतता है  
तप्—तापयते—काम्यता लगता है दम्—दन्दयते—बार-बार दसता है  
प्रा—प्रेषीयते—बार-बार भूषता है वे—वेणीयते—बार-बार वाता है  
हृप्—हृदयते—बार-बार जनाता है स्मृ—स्मरयते—बार करता है  
पश्—पश्यते—बार-बार पकता है श्री—श्रापयते—सोता है  
कृ—केशीयते—बार-बार करता है धन्—धनयते—धनता है  
हृप्—हृदयते—बार-बार रोता है कृष्—करीकृत्यते—सेली करता है ।

१०—हनाहलं मरु पिपासति कीर्तुकेन कामाननं परिचुचुम्बिषति प्रनामम् ।  
व्यानाधिप च यतत परिचुचुम्बिषति यो दुर्जनं वधयितुं कुलं मनोषाम् ।

नृः नर्तनमयते बार-बार नाचना है कुच वनेवधन—बार बार बढ़ना है  
 वृक्ष—दरी डयते बार-बार देखना है रज्जु—जल्लन्त—बार-बार मारना है  
 दा—देवीयते बार-बार देना है जष—जड्यप्यते—बार बार जपना है  
 मिष्—मोहप्यते—बार बार मोहना है मधु—जड्मयते—टेढ़ा-मड़ा बनना है

सम्पूत में अनुवाद करो—

१—वह बार बार बेटी करता है किन्तु दुर्भाग्यवश उसे लाभ नहीं होता है । २—बन जाने समय मोना बार-बार रोंटो घों । ३—साहने धपत सेनो को बार-बार सीधना है घोर घन गैदा करता है । ४—वह सुन्दरी बार-बार नाचती है घोर मोन बार-बार उभ देखने है । ५—मोमार्ति उस बार बार जलानी है । ६—मन्दिरों में भक्त बार-बार ईश्वर का सीध माता है । ७—मोनी वस पुन याभा जपता है । ८—क्याशा कल को बार-बार सँघती है ९—सिमात बार-बार बेरी करता है । १०—पृथ्वीराज ने शत्रु को बार-बार जीता घोर क्षमा करके मोह दिया ।

### पञ्चदश अध्याय

#### नाम-वानुए

किसी मूखना (लजा घाति, के वाट जब कोई प्रसन्न होट का धान् वसा लेता है तब उसे नाम-वानु कहते हैं । नाम वानुवाक किञ्चिद्विशेष शब्द होते हैं—  
 पत्नीयति पुत्र—कथं कारणमपुत्रमित्यादि पुत्र की इच्छा करता है  
 कृत्याति विषय—कृत्या (न घातयति) कृत्या को मरह साधरणा करता है  
 मोहनायते वनि (नाटिन + कथं) पान हो जाता है ।

पुत्रपुति मरु + शिष्—मरुह करोति, मरुता है

कथम्—किस चीज की इच्छा करें उस चीज के मूलक राज्य के बाद कथं प्रथम सोचा जाता है यथा—

राज्ञीयति राज्ञा + कथं—राज्ञाय सन्तुष्ट इच्छति अपने लिए राजा की इच्छा करता है ।

राज्ञीयति कनीयति मेदीयति वधुयति आदि ।

कनीयति प्रामादे राजा (राज्ञा महम को कुनो मसमना है) ।

कथम्—जैसा वह करता है वना हो वह करना है इस शब्द की प्रकट करने के लिए कथम् (य वाट दिया जाना है यथा—

कृपाशायने (कृपा = कर्म, कृपाण इव आचरति) कृपा की तरह आचरण करता है।

मदभी सप्तशयन पनायत्त यमास्थन विदुयते विदुस्वते कुमारौव  
पाचरति कुमागयते : २५२ कन्नि विन्दुयत्त कन्निशयत्त

कयवृद्धत्ययान्त णल्ह आत्मनेपद सं चलते है

### પોલિશ ચર્યાપ

कहं वाच्य, कश्चिदवाच्य इति भाववाच्य

संस्कृत में वाच्य होन है- कर्तृवाच्य स्वयंवाच्य और भाववाच्य ।  
समर्पक धातुओं के रूप दो वाच्यों में होन है- कर्तृवाच्य में और स्वयंवाच्य  
में एकमेक धातुओं के रूप भी दो वाच्यों में होन है- कर्तृवाच्य में और  
भाववाच्य में ।

१. कर्तृ बाल्य में कर्ता प्रसन्न होता है और किता कर्ता के अनुसार चलती है कर्ता में प्रथमा और कर्म में द्वितीया आती है।

२. कामभावना से काम प्रसन्न होता है और तब के अनुसार ही क्रिया का प्रयोग, यत्न और निष्ठा होते हैं। नमस्कार्य में कर्मों से मुक्ति का काम से प्रथम और क्रिया 'कर्म के अनुसार' होती है।

३. भावभावों में कला में नृणाय। धीरे-धीरे में प्रथम भाव का लक्षण ही होता है।

कमबोझ और भावकाय से सावधान रहना चाहिए। लड़कियाँ लड़कों से अधिक शिक्षित—में, धन और प्रत्यय के बीच में बँटवारा दिया जाना है। भाव धातु के एक भाग का रूप धर्मनियम से बनता है। लड़कों में यह नहीं लगता जाता। भावधातु लड़कों में धन में धर्मनियम उनके रूप में आते जाते हैं, धनगत जायें की धर्म बनते लड़के में धर्मनियम प्रत्यय परमा

।पञ्च गङ्गायने पञ्चगङ्गाय चपट्टयने सत्तमेन धर्मिष्ठायने

॥ गम् ॥ गम्यत, सम्यतस्य सगम्यते ॥ गम्यते ॥ गम्यत

कथमापत्तौ "कम्"

८८

नाम

गम्यते	गम्येते	गम्यन्ते	प्र०पु०	गच्छाम	गच्छेताम्	गम्यन्ताम्
गम्यसे	गम्यथ	गम्यन्ते	प०पु०	गच्छाम	गच्छेताम्	गम्यन्ताम्
गम्य	गम्यावहे	गम्यामहे	उ०पु०	गम्य	गम्यावहे	गम्यामहे

सूट	नट्ट
गंस्यते गंस्यते गंस्यते ५०पु० धर्मम्यन्	गंस्यतेगंस्यते गंस्यतेगंस्यते
गंस्यते गंस्यते गंस्यते ५०पु० धर्मम्यन्	गंस्यतेगंस्यते गंस्यतेगंस्यते
गंस्यते गंस्यतेगंस्यते गंस्यतेगंस्यते ५०पु० धर्मम्यन्	गंस्यतेगंस्यतेगंस्यते गंस्यतेगंस्यते

क्रिया दो प्रकार की होती है, सकर्मक और अकर्मक जिस क्रियाओं के कर्म हो। क्रिया का ध्यापार और फल एक हो वे रहे उन्हें सकर्मक कहते हैं। जिसके कर्म न हो। ध्यापार और फल एक हो वे रहे उन्हें अकर्मक कहते हैं यथा—सकर्मक—‘दानं चन्द पश्यति’ इस वाक्य में पश्यति क्रिया का ध्यापार दान में है और पश्यति क्रिया का फल ‘चन्द’ के अकर्मक—‘दिष्टुं गते’ इस वाक्य में जाना क्रिया का ध्यापार छोड़ जाना क्रिया का फल दिष्टु में ही है।

कुछ कर्मवाच्य क्रियाएँ	कुछ वाकवाच्य क्रियाएँ
गम (गमना) — गम्यते	गम (गमना) — गम्यते
पश्य (पढ़ना) — पश्यते	पश्य (पढ़ना) — पश्यते
वच (कहना) — उच्यते	वच (कहना) — उच्यते
पृ (भरना) — पूर्यते	पृ (भरना) — पूर्यते
पठ (पढ़ना) — पठ्यते	पठ (पढ़ना) — पठ्यते
धृ (गुलना) — ध्रुयते	धृ (गुलना) — ध्रुयते
कम् (कहना) — कथ्यते	कम् (कहना) — कथ्यते
पा (पीना) — पीयते	पा (पीना) — पीयते
नी (ले जाना) — नीयते	नी (ले जाना) — नीयते

संस्कृत में छन्दोशास्त्र करी

१ मैंने उसको देखा—मुझसे वह देखा गया। २ रमेश क्यों नहीं पढ़ता है? रमेश से क्यों नहीं पढ़ा जाता है? ३ तुम गुरु की आज्ञा क्यों नहीं मानते हो? ४ क्या तुमसे यह पुस्तक नहीं पढ़ी जाती? ५ बिल्ली बूढ़े का पीछा करती है। ६ सज्जन सबसे आदर पाते हैं। ७ काम किससे किया जाता है? ८ मुझसे नहीं ठहरा जाता। ९ तुम क्यों रोते हो? १० वह क्या जानता है? ११ ऐसा बुद्धिमान है। १२ लोभ से क्रोध पैदा होता है। १३ उससे पुस्तकें क्यों नहीं पढ़ी जाती? १४ क्या शिशु सो गया? १५ सज्जन अपने द्वारा बड़ों की सेवा करते हैं।



## सप्तदश अध्याय

### वाक्य-परिवर्तन

कर्तृवाक्य की किया यदि सकर्मक हो तो कर्मवाक्य में और यदि एकमंक हो तो भाववाक्य में बदल दी जाती है। कर्म प्रथमा भाववाक्य की क्रियायें कर्तृवाक्य में बदली जा सकती हैं, यथा—मं प्राप्य गच्छति (कर्तृ०), तेन प्राप्तं भव्यते (कर्म०)। स रोदति (कर्तृ०) तेन घटते (भाव०)। इसी प्रकार कर्मवाक्य या भाववाक्य उलटने से कर्तृवाक्य हो जाते हैं।

वाक्यपरिवर्तन करते समय विशेषा उसका कर्ता, कर्ता के विशेषण कर्म और कर्म के विशेषण इन सभी में परिवर्तन हो जाता है, यथा—(कर्तृ०) सुशीलं बालं स्वकीयं पाठ पठति। (कर्म०) सुशीलं बालेन स्वकीयः पाठः पठ्यते। (भाव०) सुशीलं बालकः से अपना पाठ पढ़ा जाता है।) इस वाक्य में कर्ता कर्म, उसके विशेषण और किया में परिवर्तन हुआ है।

वाक्यपरिवर्तन करते समय धुन बातों पर ध्यान दें—

१—बहुले कर्ता, कर्म और किया होंगे।

२—किर कर्ता कर्म और किया के विशेषणों को देखे।

३—किर देखे कि किया किस वाक्य की है।

४—किया देखकर वाक्य स्थिर करो। [कृत्य प्रत्ययान्त (तत्प्रय प्रतीत्य, यत्) की किया कर्तृवाक्य में कभी नहीं होती।]

जब कर्तृवाक्य और कर्मवाक्य में किया का एक ही प्रकार का रूप हो, जैसे—प्राप्तं गत (कर्तृ०), तेन प्राप्तं गत (कर्म०) तब कर्ता और कर्म को देखकर वाक्य स्थिर करो।

५—यदि कर्ता में तृतीया और कर्म में प्रथमा हो तो वाक्य कर्मवाक्य में है, एकमंक वातु के साथ यदि कर्ता में तृतीया हो तो वाक्य भाववाक्य में है, और यदि कर्ता में प्रथमा और कर्म में द्वितीया हो तो वाक्य कर्तृवाक्य में है।

६—किया जिस काक या जिस प्रकार की होगी वाक्यान्तर में भी वह उसी काल और उसी प्रकार की होगी, जैसे—स वृक्षवान् (कर्तृ०) तेन वृक्षम् कर्म०। सा गच्छति (कर्तृ०) तया भव्यते (कर्म०)।

७—कर्ता या कर्म का जो विशेषण होगा उसमें वही विभक्ति और वचन होंगे जो कर्ता और कर्म के होंगे, यथा—अयानां मुञ्चते मूर्खः (कर्तृ०), अयानं मुञ्चते मूर्खः (कर्म०)।

## वाच्यारम्भरचना

कर्मकारण बनाने में प्रथमान्त कर्ता को तृतीयान्त और द्वितीयान्त कर्म को प्रथमान्त कर देने है। कर्तृवाच्य में जो क्रिया कर्ता के अनेमान्त होती है उसे कर्म के अनुसार बना देने है यथा—अहं गिरा, परमादि कर्तुं० मया भिक्षु दक्षिणं कर्म०—मैं बच्चे को दक्षिण दे रहा हूँ।

भूतकाल में जो प्रत्यय द्वारा जो कर्तृवाच्य में कर्मवाच्य बनाया जाता है यथा—यह मित्रं प्रपश्यम् (कर्तृ०), मया मित्रं दत्तं (कर्म०)।

कृत प्रत्ययान्त क्रियापद के रूप विशेषण के समान चलते हैं। उनके जाती और कर्म में जो निष्ठा रहने और करण होती है वही उनमें भी होती है जैसे—सा कथितवती। स्वयां स्वयं पठितः। तंनं पुण्या गन्तव्यं दूषादि।

कर्तृवाच्य कर्मणु प्रत्ययान्त क्रिया को कर्मवाच्य या भाववाच्य में जो प्रत्ययान्त कर देने हैं यथा—पाण्डवो बभूवुः गनबल (कर्तृ०) पाण्डवै बभूवुः कर्म०। पाण्डव बल में गये। यह प्रथितवान् (कर्तृ०) मया प्रथित-वम् (कर्म०)। (मैं याता को)।

कर्तृवाच्य की जो प्रत्ययान्त क्रिया को कर्मवाच्य या भाववाच्य बनाने में केवल विभक्ति बदलनी पड़ती है यथा—कर्ता में प्रथमा के स्थान पर तृतीया और कर्म में द्वितीया के स्थान पर प्रथमा और क्रिया कर्म के अनुसार होती है यथा—मं काशी गतं (कर्तृ०) मं काशी गता (कर्म०)।

## विकल्पक वाच्य की वाच्यारम्भर

। गीते कर्मणि दृष्टान्ते द्विकर्मक वाच्य में कर्मवाच्य बनाने में दह्, याचु, पच, दण्ड रूप प्रत्ययों के अन्तर्गत वि भू, गाम् वि पच्य भूय धातुओं के अन्तर्गत भर्त्तात् अन्तर्गत या गीत कर्म (Indirect object), में प्रथमा विभक्ति होती है क्रिया तृती कर्म के अनुसार होती है और प्रधान कर्म (Direct object) में पश्चिमेन नहीं होता यथा—गीतं सां दग्धं दोगिष (कर्तृ०) गीतेन गी दग्धं दृष्टान्ते (कर्म०)। छात्र गुरु धर्मं पृच्छन्ति (कर्तृ०) छात्रस्तु गुरु धर्मं पृच्छन्ते (कर्म०)। मं भारगनक पन्थानं पृच्छन्ति (कर्तृ०) मं भारगनक पन्थानं पृच्छन्ते (कर्म०)। तहाँ पन 'यां' मुं तया भारगनकं गीत कर्म है।

(प्रधानं तौहकुप्यत्राम्) द्विकर्मक नहीं है कृप छोड़ वह धातुओं के प्रधान कर्म (Direct object) में प्रथमा होती है गीत कर्म (Indirect object),

उषो का त्या रहता है यथा—कर्मकर भानुं गृहं वसति । कर्तुं ०, कर्मकरेण भानुं गृहं वसन्ते । कर्म०, (भानुं वापि घर न जायगा,)

### द्विकर्मक एकलत आनु का वाक्यान्तर

बुद्धिभलाययो शब्दकर्मकाणां निवृत्तत्वा बुद्धिपर्यंक सक्षारक धोर शब्दकर्मक धातुओं के दोनों कर्मों में से परात्मा को विकल्प है जिसमें बाह्य क्रममें प्रथमा कर दी यथा—गुरुः शत्रुं धर्मं वीक्षति । कर्तुं ० गुरुणा शत्रुं धर्मं वीक्ष्यते । (यथा गुरुणा शत्रुं धर्मं वीक्ष्यते कर्मवाच्य)

धन्य द्विकर्मक शिञ्जल धातुओं के कर्मवाच्य बनाने में प्रयोज्य कर्म में प्रथमा होती है यथा—गोविन्दा भृत्यं शत्रुं मयति कर्तुं ० गोविन्देन भृत्यं शत्रुं मयति कर्म० । (गोविन्द नौकर को शत्रु भेज रहा है)

कर्तुं वाच्य में जिन धातुओं के प्रयोग कर्त में कृताया होती है कर्मवाच्य में उनके शिञ्जल धातुओं के कर्म में प्रथमा होती है । यथा—धीकृणा धार्थेन जयह्वं यागति । कर्तुं ० धीकृणा धर्मन न जयह्वं को मरवाता है धीकृणेन धार्थेन जयह्वं यागति । कर्म०, (धीकृणा शत्रुं धर्मन न जयह्वं मरवाया जाता है) ।

### हिन्दी में अनुवाद और वाक्यपरिवर्तन करो-

१—महेश्वर्याभि पुर्णधर गतिवदभी २—जगति सा भीरुतिभारतयूगो बहुव्यथास्मिन्मृगाजघानीम् । ३—एषा हि नृपाय न शक्तिषा स्वात् भुगवि स्वदन तुषारः ४—मुत्पादितवि किं वाम न स भीत विमुञ्चति ५—न्याय्यापथ प्रविचनन्ति कद न पीडा । ६—तो दृक्पनी स्वां प्रवि राज-घानी प्रस्थापयामास वारी वमिठ ७—किं तथा किञ्चने खेन्ना धा न सूते न दृगवा । ८—म पादपान्मुननगक्षिररु मिनाश्चक्षे भुञ्जति यागतस्य ९—भुगशापवारेण प्रभुमवति न प्रभ १०—म जाल क्षामीदृग्वा अनुभज ११—प्रजी मरुति नृप सा वचयति पाविषम् । १२—पुत्रस्मादन्धवद्वानि भावाहावार्थ स्तुवन् । १३—मरायस प्रीने कश्चिद रस वेत् पुरुष १४—सा भीताम्बुमागोय भृ प्रणिहितक्षराम् । यामनि च्चरतन्धेव नस्मिन् पाताम-मप्यगान । १५—नोलुकाद्विचनंरकने यदि विवा कृयम् किं दृषणम्

### सोपसर्ग आनुएं

विधा के साथ मिल-मिल तपन्यों के लगाने से वाक्य में सोपसर्ग एवं

समत्कार आ जाता है, साधारण धातुओं के इयांम की अपेक्षा सोपसर्ग धातुओं के प्रयोग से भाषा मँजी हुई और परिष्कृत लगती है साथ ही साथ छान धातुओं के अर्थ और रूपावली का कष्टम्व करने के परिष्कृत सं रूप आते हैं। उपसर्ग लगाने से धातुओं का अर्थ बदल जाता है, जैसे—'हृ' का अर्थ 'हरण करना' है, 'प्र' उपसर्ग आने से उसका अर्थ 'प्रहार करना' हो जाता है, 'प्र' उपसर्ग लगने से 'प्रोजन करना' तथा 'मृ' उपसर्ग लगने से नाश करना' हो जाता है अतः कहा गया है—

उपसर्गो वाच्योऽन्तारव्यय नीयने ।

प्रहाराहार-मंहार-विहार-परिहाराद्यम् ।

उपसर्ग लगाने से कहीं एकसंकेत धातुएँ एकसंकेत हो जाती हैं और उनके अर्थ में विलक्षणता आजाती है। यथा—एकसंकेत 'भ्रू' का अर्थ है 'ज्ञान' किन्तु 'भ्रू' उपसर्ग लगाने से वहु एकसंकेत हो जाती है। इसका अर्थ 'धनृभव करता' हो जाता है, जैसे—आतसी दूःखमनुभवति (पापी दूःख भोगता है),

'धातु के साथ एकसंकेत कथाने से तीन परिवर्तन होते हैं—

(१) क्रिया का अर्थ विलक्षण बदल जाता है जैसे—विषयः—सरायय' उपकार—अपकार, आहारः—उहार (२) क्रिया के अर्थ में विशिष्टता आ जाती है जैसे—गमनम्—अनुगमनम् (३) क्रिया के ही अर्थ का अनुवर्तन हो जाता है, वसति—अविवसति उष्यते—प्रोष्यते ।

अय् (जाति), परा + अय् (आगत)। अस्वारोहः पलायते ।

१ आदि उपसर्ग होने उनके मुख्य अर्थ—अ (अधिक), पर (उन्हा पीछे), अप (दूर), मृ (अच्छी तरह), धृ (पीछे), धव (नीचे, दूर), निश् (बिना), दाहृ (दुःख कठिन), दृ (दुःख), वि (बिना, अलग), आहृ (तक, कम) नि (नीचे) अधि (ऊपर), अर्ध (निकट), अति (बहुत), स (सुंदर) उद् (ऊपर), अस्ति (आगे) प्रति (घोर उल्टा) पति (बायीं ओर), उप (निकट) ।

२ वाच्यी आशयते कश्चित् कश्चित् समनुवर्तन ।

तमेव विशिष्टाद्यन् उपसर्गवर्तिनिधा ॥



अयं (मंगिता) प्र + अयं (प्राप्तता करना) स्वयंति प्राप्तयन्ते । (भीतायाम्,  
अभि + अयं (इच्छा करना) यदि सा तापमकन्तका अभ्यसनीया । शाकृतेले)  
अभि + अयं (प्राप्तता करना) माम् अनभ्यसनीयमभ्यस्यते । (मानवि०)  
अयं (कानता) अभि + अयं (अभ्यास करना) छात्र पाठमभ्यस्यति ।  
निर + अयं (हटाना) स घृतं निरस्यति ।

आप् (पाना) —

पि + आप (कैमल) रज आकाम व्याजन्ति ।  
सम् + आप (पूरा होना) यावत्तेषा समाप्यम् पञ्चा पर्याप्तदक्षिणा । (रघु०)

आह् (बैठना) —

अभि + आह् (बैठना) स राजर्षिहामममभ्यासते ।  
उप + आह् (पूजा करना) अकल शिवमुपासते ।  
अनु + आह् (निवा करना) सखीभ्यामभ्यासयते । (अनुमते)

इ (जाना) -

अव + इ (जानना) अवेति वा किङ्करमष्टपूर्णे । (रघुवशे)  
प्रति + इ (विचक्षण करना) स अपि न त्रयेति ।  
उत् + इ (उदय होना) उदेति तविता ताम्रस्तार एवाप्तयेति स  
उप + इ (आप करना) उपांगिम पश्यतिः पश्यति लक्ष्मी । (पञ्चतन्त्रे,  
अभि + इ (मासने जाना) स स्वर्गमनमभ्यस्यति ।  
अनु + इ (पीछे जाना) श्वक स्थापितमभ्यस्यति ।  
अप + इ (दूर होना) भूपोदये प्रचकारोऽवेति ।  
अभि + उप + इ (आप्त होना) व्यनीतकानस्त्वहमभ्युपेनस्त्वामभिमाददिति  
मे विधावः । (रघुवशे)

ईस् (देखना) —

अप + ईस् (ध्यान रचना) किमप्येष कलं पश्येत्तद्विधनत प्राप्तयते मृगा  
विष  
अप + ईस् (ध्यान न रचना) अनस कलंस्त्वमुपेक्षते ।  
पश् + ईस् (परीक्षा लेना) अग्नौ पगीक्ष्यते स्वर्गं काव्य सदसि तद्विदाम् ।  
प्रति + ईस् (प्रतीक्षा करना) अग्नौ प्रतीक्षन् यावदागच्छामि ।  
निर + ईस् (देखना) सा मागृह त्वं निरीक्षत  
अव + ईस् (आन्दर करना) ध्यान रचना) विदिवीत्पुत्रयाप्यवेद्य माम्  
अय + ईस् (देख ज्ञान करना) स कदर्थिद्वेक्षितप्रजः । (रघुवशे)

ह (करना) —

धनु + ह (नकल करना, सर्वाधिकृत्याभि कलाधिरनुवृत्तत्वात् त वैशम्याग्रतः ,  
अधि + ह (अधिकार करना) ले नाम जयिना ये शरीरस्थान् रिपुनधिकृतंते  
घष + ह (धुराई करना) प्रथवा सैनिकाः केचिदपकुपयद्विठिरम् (महा०)  
प्र + ह (कषा करना) यो रामायणा प्रकुप्यते स जनु साधिविधुपकाराति  
लोकस्य ।

वे + धा + ह (हराना) दयैर्नो धनिकासुहाकुलं ।

तिरम् + ह (अनादर करना) किमर्थं तिरस्कारंयि माम् ?

नमस् + ह (नमस्कार करना, हेतुद्वय नमस्कृतम् ।

प्रति + ह (उपाय करना) प्राप्तं तु यम बोध्यं प्रतिपत्त्याद मर्षाधिनम्

उप + ह (सेवा करना, अस्त शिवमुपकृतं

उप + ह (उपकार करना) किं ते मूढ प्रियमुपकारोऽनु वाकशास्ततः ?

ना मन्मथोत्पन्नकृतं मया परेषाम् । (किशो०)

वि + ह (विकार पीडा करना) धित विहरति कामः

मरणा प्रकृति शरीरिणा विकलितजीवितमुच्यते कुपं । (१५०)

परि + (धृ + ह (मजाना) रघो हृष्यतिस्कृतम् (महाभारते)

घनम् + ह (शोभा बढ़ाना) राघवन्द कर्मायुध पुनरनकुशिर्यति ?

घातिष्य + ह (प्रकट करना) कर्णपराधिन केन भीमत एविकृत भुवि

निर + धा + ह (हटाना) न निरगत्यसि क्षयम् ।

निबन्धनमार्गः —

- १ धर्मीकृतं मुक्तित्वं परिपालयन्ति
- २ वीरवरा देव्यं स्वयम्भुवमुपदेशोऽर्पितः ।
- ३ मन्त्रलोकं प्रवृत्ता मय जीविन मृदागमनतः
- ४ शिरोकोमि न क्षामस्थानम् ।
- ५ कदा रामभद्र! कर्मायुध मनासां कर्त्तव्यम्
- ६ विरहकषाऽऽकुलीकरोति य हृदयम् ।

गम् (जाना) —

गम् (जाना) काव्यशास्त्रविनादेन कान्तां गच्छन्ति घोषनाम् । (रत्नोपदेश)

जनु + गम् (प्रेक्षा करना) जन्म मामनुगच्छ ।

अश् + गम् (जानना) तावमच्छास्य ते मांभम्

सति + गम् (शान्त करना) सतिवच्छति महिमान् इन्द्राणि निषापरि-  
हृहीत । (मानविकाग्निमित्रे)

सम्प्राप्तिगन्तुं निषामान्विष्टा वाष्प्योकिपावसादिह पयसीम् । (उत्तर०)

सति + उम् + गम् (स्वीकार करना) अरिश्च प्रस्तावमभ्युपगच्छति ?

सति + धा + गम् (धानर) अस्वद्वहानर्हकोऽम्बालताऽभ्युपगमन्

धा + गम् (धाना, स्नानार्हं स नदीमानच्छेत् ।

प्रति + गम् (खीटना) कदा स प्रतिनिर्मप्यति ?

प्रति + धा + गम् (खीटना) मातुक्क कृटीर प्रस्थापच्छति ।

मि + गम् (बाह्यर जाना) स महान्मिषत् ।

सम् + गम् (यिसन) (क) सगत्य कम स्वरागन्ति पक्षिणः ,

(ख, प्रयागे घमूना मङ्गां समच्छति ।

उ + गम् (इसरे जाना 'इहना' पक्षी आकाशमदगच्छन् ।

प्रति + उद् + गम् (समकान) के लिये जाना) सङ्घातो निवर्तमानं धीराम्

वरत्त प्रपुनरेगाम

प्रह्नु (मिना)

मि + प्रह (दंड देना) शीघ्रमेव दुःप्रसिद्ध निमज्जताम्

घम् + प्रह (कृपा करना) गुरो वासन्प्रकाश ।

वि + प्रह्नु , लड़ाई करना, विगृह्य वरुं नमुचिदिषा क्वी स इत्यमम्बा-

भ्यमहर्दिष दिव । (शिशुगामवध ,

प्रति + प्रह (स्वीकार करना) नक्षति प्रतिजघ्नाह् प्रीतिमान्सपरिव्रत

आदेश देनाकालत्र मिष्य आमिदुराजत् । (रघुवते)

चर् (चयन) —

चति + चर् (विकट प्रचरण करना) पुत्र विनृत्यचर्त् नरधरत्तयचर्त्

पत्नीन्

धा चर् (चयन करना) प्राप्ते नु चरेदो वर्ये पुत्र मिषवदचर्त्तम्

घन् चर् (घोसा करना) मन्थमागमन्चरे ।

टा चर् करना) स प्रयोपदेश नीच्छन्ते ।

परि + चर् (मिषा करना) ।

सम् चर् (धाना जाना) सूकामो चनर समौमानेन सञ्चरन्ते ।

प्र + चर् प्रचार होना यावत्स्वाभ्यन्ति मित्त्र अरिद्वय महीन ते

तावदाययसकथा लोकम् प्रचरिष्यति ।

उप + चर (सेवा करना) पावतीं महोरात्र त्रिभुपचचार ।

चि (चुनना) —

उप + चि (चुनना) अद्यापि पश्यत कस्य महिमा तोषचीयते

अप + चि (घटना) राजहंस तस्य तस्य धृष्टता कोपते न च न चापचीयते

अप + चि (चुनना) सा उद्याने नगराभ्यां बहुनि कृमान्यवाचिनीम् ।

नित् + चि (निरास करना) वयं निश्चिन्नुषः न वयं विश्वमिष्यामी वाक्यम्

स्वातन्त्र्य लक्ष्मणे

अभि + उद् + चि (इकट्ठा होना) अस्मिन्विश्वतास्तर्का प्रभावका धवन्ति

पा + चि (विमाना) भृत्य शम्वा ब्रह्मदेनाचिनीति ।

उप + चि (बढ़ाना) योगाधिनो योगयोगोपचिन्वन्ति न प्रज्ञाम्

चित् + चि (विशेष करना) निश्चेतु शक्यो न सुखमिति वा दुःखमिति

वा । (उत्तर०)

तत् + चि (इकट्ठा करना) रक्षायोगादयमपि तप इत्यहं लक्ष्मिनीति शङ्कुम् ।

ध + चि (पुष्ट होना) स पुष्टिप्रदमस्य भूइत्यं तन्मयत्वचीयस्य तस्य शास्त्राणि ।

ज्ञा (जानना) —

पानु + ज्ञा (प्राप्ता देना) तत् पानुजानीहि सा मन्माय । (उत्तररामचरिते)

प्रति + ज्ञा (प्रतिज्ञा करना) ह्यथापागेपलेन कन्वादान प्रतिज्ञानीते

अक + ज्ञा (अनादर करना) अकज्ञानासि यो यस्मादतस्ते न भविष्यति ।

यत्प्रमृतिमनारम्भे प्रजेति त्वा क्षमाय मा । (रघु०)

अप + ज्ञा (इमकार करना) ज्ञतमपजानीते ।

अम् + ज्ञा (घाला करना) घाले सज्जानीते ।

तृ (तैरना) —

अव + तृ (उतरना) अवतरेति आकाशात् वायुशक्तम् ।

तन् + तृ (पार करना) स अनापास तङ्गामुदरत् ।

वि + तृ (देना) वितरति गुरु प्राज्ञे विद्याम् । (उत्तररामचरिते)

सम् + तृ (तैरना) स हि घटिकाप्राय नखां सन्तरेत् ।

दिशु (देना) —

भा + दिशु (प्राप्ता देना) गुरु शिष्यान् आदिप्रति ।

उप + दिशु (उपदेश देना) उपदिशतु भवाम् धर्मशास्त्रम् ।

सम् + दिशु (सन्देश देना) किं सन्दिशति स्वामी ?



तिर + दिग् चनाना। यदाभिसर्गिते स्वान निर्दिशेत्

दा (वेना) —

दा + दा (पदस्य करना) नृपति शकुन्तोऽन्वेक्षित व्यसहारामनसाददे युधा-  
नादन्ते श्रियमण्डनाऽपि भवतां स्नेहेन या पन्नवम् (पावु०)

दा + दा (कहना मुह्य करना) अर्धमिश्रपनिर्ध्वनाददे वदता वः ।

(१५०)

॥ वा (बाधक करना) —

वाधि + वा (कहना) यद्योऽपि शोचिष्योऽहमेतं वगाशोऽपि धीयते । हिलो-  
पदेशे।

वाधि + वा (बन्द करना) हार पित्रिः शनिप्राप्तमागतान्ते वा प्रावि-  
शति

वा + वा (पान देना) गोपानः स्वाध्यायं नाकथते

सम् + वा (मर्शिक करना) क्लीयतां यदुखा सन्दधन्त विद्वानो हि  
धुक्मुत्सीहेत् ।

सम् + वा (मिलाया) कुचमे सन्दधाति ।

वि + वा (कार्य करना) सत्या विदधीन न क्रियाम् । क्रियते

वि + परि + वा (बदलना) विपरिप्रेक्षि वातासि, मलिनानि नानि जातानि ।

वा + वा (गिरवी रखना) धनविपश्चानि तन्मया सायने स्वं गृहमाधात  
अध्वजविभ्यति ।

परि + वा (पहुनना) इत्सवे नरः नवं वस्त्रं परिदधाति ।

नि + वा (विशकास करना) निदधे विजयाशंसं वापे सीतां च लक्ष्मणी ।

नि + वा (नीचे रखना, समाप्त करना आदि) सनिर्वाणितुं राज क्षितौ  
पादं निवधति ।

नि + वा (अमानत रखना) काशीं यच्छामि, अन्वक्षिष्टं धनं विदधस्ते ग्राम-  
वणिजि मित्राभ्यामि

नी (ने पाना) ।

अनु + नी (मानना) अनुनयं मित्रं कुपितम् ।

\*विपूवो वा करोत्यर्थे अत्रिपूवंस्तु यावन्ते ।

मेवते चापि सम्पूवो विपूवं स्थापने यत ॥

धृमि + नी (धर्मितय करना) कोपालः सीतायाः भूमिकामधिमनयन् ।

धा + नी (नाना, धान्य जल पूजार्थ) ।

उप + नी (नाना) उपनयनि मुनिकुमारकेभ्य फलानि (कादम्बर्याम्)

उप + नी (उपनयन करना) मातुदकमुपनयते ।

उप + नी (काम में नाना) कसकगानुपनयते ।

उप नी (समर्थन करना) स न्यस्तग्रन्थो ह्यस्य स्वदेहमुपाययत्पिण्डमित्रा-  
मिवस्य । (रघु०)

पनि + नी (स्थाह करना) नलो दमयन्ती परिश्रितनाह ।

प + नी (अन्य की रचना करना) बाल्योक्तिं रामायणं प्रश्रितनाय

वि + धप + नी (दूर करना) सन्ध्यासामांजनानां ध्यापनधनु स वरुणासती  
कृतिसीमाः साधविका०)

धप + नी (तटानां) धापयेष्यामि ते स्वप्न ।

उा + नी (ऊँचा उठाना) यथारत्नेनानेन धर्मिण कृतमुत्तम्यमि

निर + नी (निरास करना) कसहस्य मुन निरुपसित ।

वि नी (कर बुझाना) कर विनयते ।

वि + नी (बली भोगि जाय जाय) सनं विनयते ।

पत् (गिरता) —

धा + पत् (धा पड़ना) यशो कश्चापनिनम्

उप + पत् (उड़ना) यशानि पतिष्य उत्पतन्ति

प + पत् (पड़ना) उपोप्यायवत्समो प्रश्रितपति सिध्य ।

नि + पत् (गिरना) सत प्रवृत्तानि निपतन्त्यभीक्षणम् । (पञ्चसम्य)

गम् + नि + पत् (इकट्ठा होना) नानादेशम्भा नयज्ञा दत्त जन्मिधतिष्यन्ति ।

गम् नि + पत् (हट पड़ना) धर्मिष्वप्यु सप्रुमेने नन्यपतन शीतपा न  
तद् व्यदतगम् ।

वि + नि + पत् (गलत होना) विवेकध्वजानां भवति विनिपात सतमुक्ता

पद् (जाना) —

प्र + पद् (प्राप्त होना) अत्यय वेना समीप जाना) ये यथा मां प्रपद्यन्ते  
नाम्यर्कैश्च जयाम्यहम् । (गीतासाम्)

उा + पद् (उत्पन्न होना) कुम्भाय नवनीतम् उत्पद्यते ।

वि + पद् (कष्ट में पड़ना) स विगच्छत (विपत्तो भवति) ।

अ + यद् घोष्य होना नैतत् त्वय्युपपद्यते । (भीतायाम्)

धु (होना) —

धनु + धू (धनुभ्रम करना) धनतः मुखम् धनुभवति ।

धार्चि + धू (प्रकट होना) धार्चिभ्यं शशिनि तयो चिकीयते ।

धर्चि + धू (तिरस्कार करना) कस्तूरामधर्चिविभक्तुमिच्छति बलात् ?

धरा + धू (हराना) धमवान् ध्वनान् पराभवति

ध्रातु + धू (प्रकट होना) ध्रातुभवति धमवान् विपदि ।

धरि + धू (तिरस्कार करना) रावणः विभीषणं धरिधूय ।

ध्र + धू (समर्थ होना) ध्रभवति युक्तिविम्वोदघाहं धर्णिः । (उत्तरराष्ट्रवर्गिणे)

कुमुदान्धपि गार्धसमनाः प्रभवन्त्याधुर्गोहन्तु यदि ।

न नविष्यति हस्ता तावत् किमिवाप्याप्रहृष्यतो विधे । (रघुवरी)

धृ + धू (उत्पन्न होना) ह्रिष्यती मङ्गा नङ्गवति

धम् + धू (जम्ब लेना) पञ्चदशभिः तुगे पुत्रे । (गीतायाम्)

सध् + धू (मिथना) सध्धूपात्पाथमभ्येति महानद्या नगावगा । (शिशुः)

धनु + धू (बाधन करना धनुभ्रम करना) धनुभ्रमसि एतत् ।

धि + धाधि (विचार करके धनो धानि जानना धनुभ्रम करना कापना

करना) नाह मे लको दाम धिभाविषामि ।

धरि + धाधि (धनो धानि विचार करना) गुरोर्भातिन मुहुर्मुहुः धरि-

धावय ।

विभ्रमप्रयोगे धू के प्रयोगः

१ भ्रमभीभूतस्य इहय्य पुनरावर्तन कुल ?

२ इवाभवति शरं र व्यापारयेन ।

३ — भ्रमच्य भ्रमगमनेन पवित्रीभूत मे गृहम् ।

४ मयसा धनवान् प्रत्यलीकवान् ।

विशु (प्रवेश करना) —

नि + विश (प्रवेश करना) निविशति यदि शूरशिक्षा पदे । (नैषध)

अभि निक्षिप् (धुमना) अय माहन्त्येव्यावमिनिविशते सेवकजनम्

मुवाः)

उप विशु बैठना) आसने उपविशतु यवात् ।

प्र विशु (प्रवेश करना) सन्ध्याभी स्नानान्तर प्राविशतु ।

मन् (सोचना) —

धव + मन् (धनादर करना) नावमन्थेति निधनम् ।

मनु + मन् (धात्रा या सहाह देना) गजन्ध्यान्वमुग्मिहृन्वेषःशुषेते ।  
(रघुवंशे)

तम् + मन् (आदर करना) कश्चिदस्मिन्निबानाव्य कान्ते समन्वयेतिविधिम् ।  
(भट्टिकाव्ये)

मन्ञ् (सहाह करना)

प्रभि + मन्ञ् (संस्कार करना) जलम् प्रभिमन्ञ् दधौ ।

धा + मन्ञ् (विदा होना) तात, सतामग्निर्धौ वनज्योत्स्ना तावदामन्वये ।

धा + मन्ञ् (बुलाना) धामन्वप्यध्वं राप्दपु बाह्यरागम् (महाभारते)

नि + मन्ञ् (न्योता देना) बाह्यरागम् निमन्वप्यध्वे ।

रञ्ज् (बुरा होना) —

धनु + रञ्ज् (कमुरात होना) देवे धन्वमुपे रश्मयुरक्ता प्रकृतम् । (मुद्रा०)

रन् (लौका करना) —

वि + रन् (हटना) विरम् विरम पात्रात् ।

उप + रन् (मरना) स शोकेन उपरत ।

उप + रन् (लगाना) यन्त्रोपरमते विलम् (अवधृणीताग्राम्) ।

वध् (कटना) —

धप + वध् (विन्ध् करना) दुर्बलं सञ्चलनपचयति । लोकापवाते वल-  
वान् मतो मे (रघुवंशे)

उप + वध् (प्रकाश करना) दातारमुपवदन्ते ।

धि + वध् (भगवा करना) कृत्तिका क्रोधं विवदन्ते ।

धनु + वध् (धनुबाध करना) स विद्वान् वेदमनुवदति ।

प्रति + वध् (उत्तर देना) तान् प्रत्यवादीदध राक्षसोऽपि ।

लप् (बोलना) —

धप + लप् (छिपाना) दुष्टं सत्यमपलपति ।

धा + लप् (बालपीत करना) लघुः साधूना सह धातपद ।

प्र + लप् (अकषाद करना) वन्यता सदा प्रलपन्ति ।

वि + लप् (रोना) विललाप स बाष्पयद्यपि सहेवमप्यपहाय धीरताम् ।  
(रघु०)



सम् + लप् (कालचित करना) संतापिताना मधुरं वचोमि ।

बह् (जे जाना) —

वद् + बह् (ध्याह करना) इति गिरसि स वामं पादभाषाय राजाभुद-  
बहदनवधा लाभबलादयेत् ॥ (मुच्यते)

घृति + बह् (विनाना) किंवा मयापि न विनाम्यतिवर्तिहस्तानि ॥ (मालतीमा०)

घा + बह् (नाना, दंडा करना) बहुदपि गज्यं मुख नावहति

घा + बह् (धारण करना) मा रोदीर्घमावह । (भाष्येयपुराणे)

महानमावहन्ताम् । (चौखण्डिकाशिकायाम्)

नि + बह् (कपि चमाना पुरा करना आदि) स कायमेतत् निबहति ।

प + बह् (वहना) पश्येत् मार्गं स मङ्गलं प्राप्नुयति ।

वृत् (होना) —

मनु + वृत् (अनुसरण करना) तावत् ताभूमनुवर्तन्ते ।

मा + वृत् (कारण जाना) घनिघा ननिमी नाम वेदुगावृते वनात् ॥ (रघु०)

मा + वृत्-लिय (मात्सा फेरना) असबलममावर्तन्त तापसकुमारमवसायम् ।

परि + वृत् (घूमना) अकम् परिचरन्ते दुःखानि च सुखानि च । (मेघ०)

नि + वृत् (किञ्च होना, करना) प्रसमीत्य निवर्तते सर्वमासस्य प्रधरात्  
(मनुस्मृती)

नि + वृत् (पीटना) न च निम्नादिषु सन्निभ निवर्तते ये ततो हृदयम्  
(शाकुन्तल)

यद् यत्वा न निवर्तन्ते तद्धाव परमं मम । (अनङ्गुलितायाम्)

प्रति + प्री + वृत् (पीटना) अचिरं स प्रत्यावर्तिष्यते ।

प्र + वृत् (मकृत होना, लयना) प्रवर्ततां प्रवृत्तिहितस्य पार्थिव । (शाकु०)

अपि स्वयमन्त्या तपमि प्रवर्तते ? (कुमारसंभवे)

प्र + वृत् (गुरु होना) तत प्रवृत्ते बुद्धम् ।

वल् (रहना) —

अधि + वल् (रहना) राम अषोष्यामध्यवसेत् ।

उप + वल् (उपवास करना) स एकावस्वामुपवसति ।

उप + वल् (समीप रहना) आश्रयं वामम् उपवसति

नि + वल् (रहना) स कुत्र निवसति ?

म + वल् (परवेश में रहना) विषाव कृति मायाया प्रवसेत्कायवान्तर

(मनु०)

सद् (जाना) —

सद् + सद् (हिंसित हारना) प्रतिपद्यन्ता लुटा भवगोचरि  
 उद् + सद् (नाश होना) उन्मोदयन्ति लोका न कुर्या कथं वेदहम् ।  
 उद् + सद् (सिद्धि) (नष्ट करना) अयमसम्यग्भक्तिर्वैराग्यं लिखतमुन्माद  
 पितृवति व

सद् + सद् (पाना) पान्थ कृपमेकमानसाद ।

प्र + सद् (प्रमत्त होना) प्रमोद किञ्चिदर्थं शक्ति विवेकं गुरोरात्म-  
 शरणात्

वि + सद् (दृष्टि होना) पुण मा विवेचय ।

नि + सद् (वेद्यता) पन्थ नदुपलब्धे न पुन भविष्यति ।

उप + सद् (शरीर में जाना) उपसिद्धिं नृणां शरीरं पश्चात्तं विरं शरी-  
 व्याकृतासिद्धिर्मायान् ।

प्रति + सद् + सद् (प्रतिपद्यते जाना) प्रपद्यतेति शरीरा शरीरं च पश्य-  
 नवति

सृ (जाना) —

सृ + सृ (सृष्टा) दृष्टे दृष्टमप्यम् ।

मि + सृ (निकलना क्षता, दहन नि पति) ।

सृ + सृ (सृष्टि करण करना) सृष्टि पश्यन्ति

ध + सृ (कलना) प्रसमार प्रसम्य ।

समि + सृ (प्रक्षेप के पक्ष जाना) ता समिप्यति

स्था (ठहरना) —

स्थि + स्था (स्थिर रहना) साधवः साधुनामवितिष्ठति ।

स्था + स्था (किसी सिद्धांत को स्थापना) पश्य तत्त्वम् स्थितं

धनु + स्था (करना) मनसापि पापं नाकुनिच्छेत् ।

सव + स्था (ठहरना) नावितिष्ठतां मथानत्र ।

इ + स्था (उठना) उत्तिष्ठतिष्ठ लोकिन्द तत्र निद्रा जगत्पते

प्र + स्था (स्थापना होना) प्रीतिः प्रनन्दे मुनिराश्रमाय ।

प्रति + सव + स्था (विरोध करना) अथ प्रवर्तयिष्यामहे वयम् ।

उप + स्था (जाना समीप जाना उपस्थित होना) पन्था काशीमुपनिष्ठते ।

उप + स्या (गुणों करना) स्तुति स्तुतिमिरर्यामिरुपमस्य नन्वन्ता  
(गुणवशे)

उप + स्या (मित्रता) गङ्गा समुद्रायुपनिष्ठते ।

ह (पुनः से जाना) —

धनु + ह (मदरा गुणों को धारणा करना) धनुकमश्वा गतमनुदृग्ल

धप + ह (दुःखना) शीत धनमपहरति ।

धप + ह (दूर करना) धार्जित्य समु धार्जित्यमनितया निद्रया उत्तरायाम् ।

धा + ह (ताना) धितस्य विद्याधर्मसत्यस्य धे धोटीदधतस्यो दधे च हरेति ।

उत + ह (उद्धार करना) मा नविदुद्वह मुखा दधितमपुन्या (दिकुमावर्धाय)

उत + धा + ह (उपहरण करना) स्वा काशिता मदनकृमिमुदाहरति विक्रम)

अभ्यस + ह (पाना) धनगुण पिय धाना आशेषमपहरति

परि + ह (खोजना) शरीरमनिकषं पारितन्त्रिकुल्लमपश्ये धूलानि मभूत ।

उप + ह (भेंट देना) दधेभ्य वनिमुपपत्ते ।

ह + ह (मरण) कृत्य कस निरति धारः ।

वि + ह (जीना करना) निद्रा काया विजानि हरिणिह नरकमसते

गीत० स कटासिदधितमत्र नह देव्या विजहार मभट ।

(गुणवशे)

गम् + ह (हडाना) स हि नहते उपोभयः कटुमपहरणवेधमः

ह + ह (गोकरा) शीत धर्मो महे महेति धीवन् मिह से धाना धर्मि ।

ग्राधम धर्जित्यवनेधनया अभ्यावर्धाय मन्व धातः (कुमारमभवे)

कम् (कलना) —

अभि + कम् (गुहरना) उपः सधः धीवनमनिकषम । काशमधर्मः

.. (उल्लुप्त करना) कसमनिकान्तमसम्यग्यनदम् (महान्तमनिक)

मप + कम् (दूर हरेना) नदनादपरात् (मुद्रावर्धाय)

धा + कम् (धारणता करना) धीवन्धनिकया नमरतस्तीज्जनपदाज्जो ।

(गुणवशे)

धा + कम् (नक्षत्र का उदित होता) धाक्यते मय (महाभारत)

मिह + कम् (बाहर जाना, निकलना) इति निष्कान्तः सव

उप + कम् (धारण करना) वचन् मिह धाक्यतेवमसम् कुमारमभवे)

परि + कम् (परिक्रमा करना) स परिव्रजति ।

वि + कृम् (कदम्ब रखना, आने वरना) विष्णुस्नेहा विचक्रुवै ।

सम् + कृम् (सकृदपि करना) जानो ह्ययं संक्रमितुं द्वितीयं सर्वोपकारक्षम-  
माधयं है । (रघुवशे)

इ + विधनना इवनि च क्षियन्मातृपुत्र्येने वन्दनान् । (मानवीमाधवे)

उप + इ (आक्रमण करना) प्राज्यानिधयसादयत् । (महाभारते)

धि + इ भावना, जलसङ्कान् इवमि विद्वत् । (कुमारसम्भवे)

क्षिप् (फेंकना) किं कुमरस्य मरम्भया न वपुषि श्मा न क्षिपत्येव यन् । (मुद्रा०)

अव + क्षिप (निन्दा करना) बदमेत्यावक्षिप्य । (कादम्बर्याम्)

धा + क्षिप् (अपमान करना) धरे रे गन्धानममारभूत् किमेवमक्षिपसि ।  
(वेणी०)

उ + शिण (ऊपर फेंकना) वमिमाकाम उक्षिरेत् । (घनम्भूते)

सम् + क्षिप् (गन्धित करना) संक्षिप्येन क्षान् इव क्व दीपंशमा जियामा ।

वप्य (वर्षना) वहनमा) न हि ब्रूयामाणि गार्है प्रथमादीनि वप्यते ।

उ + वप्य (वर्षना) पादेषु धारयाममुदवप्य स्यात्पादधरि । (रत्नावल्याम्)

निर + वप् (छाया रह करना) हृष्टं कर्त्तुं, शोभयामाणि करना)

निर्धनपुष्टं च जगत् सर्वम् । (रघुवशे)

गम् + वप् (वेष्ट होना) सम्बन्धमाभापयत्पुष्पमाह । (रघुवशे)

कप् (क्रीडना) —

धनु + कप् (धीजा धारणा) धनुकम्बम् अववति वमिष्ठस्यादेशम् ।

(वृत्तरामचरिते)

वि + कम् (विरोध करना) विपरीतावधोर्म्यात् विवद्वमतिकुन्ततम्

### संस्कृत में अनुवाद करो

- १—इस वतन में एक प्रसन्न भावित सभी संकता है । २—आपके शुभ-  
आगमन में हमारा बड़ा पक्षि हो गया (पक्षि + भू + क्वि) ३—लंका से  
लौटते हुए राम की अमरवती के लिए (प्रति + उद् + गम्) अग्न आगे बढ़ा  
४—दुष्यन्त ने देखा कि शकुन्तला अपनी बत्तियों के साथ विहार कर रही  
है (वि + हृ) । ५—क्या तुम्हारे घर आज एक घनिष्ठ (आधुनिक) भावा  
है (अभि + धा + कम्) ? ६—अन्जन अपकार करने वाले के साथ भी उपकार  
करते हैं (उप + कृ) । ७—क्या आपको यह प्रस्ताव स्वीकृत है (अभि +



उप + गम् १ श्री हां हथाना इसमें कोई विरोध नहीं ॥ ८ — उत्सव के समय परास्यवर्ग गाने का बरतन तथा धनकारों ल सजती हैं ॥ ९ — सभी मित्रों छाने पतिवा की सेवा करने है (उप + चर) ॥ १० — श्रीमान् जी को मैं कोन धर्मिन जान् (यव + गम्) ॥ ११ — मूय निकल रहा है घीर खेंवरा पूर हो रहा है ॥ १२ — प्रयाग में बह्ना चमत्ता से बिलनी है (यव + गम् — परहमें) ॥ १३ — यह सुन्दर पुष्पक किनने निखी है (प्र + तां ? १४ — उगने दांत। हाथ जोड़ कर सया + नी; गुरु को प्रणाम किया प्र + गम् , १५ भोजन के समय धा जाते हैं (उप + स्था काम के समय वहाँ जाते हैं ?

### तृतीयोऽध्यायः

सुपुत्र (कस्तुरीमखमल और भावनामखमल)

1000

शत्रु में जिस प्रत्यय को जोड़कर संज्ञा विशेषण प्रत्यय प्रत्यय बनता है उसको कर्तृ प्रत्यय कहते हैं और उसके द्वारा जो शब्द मिल जाता है उसको कृदन्त (जिनके अन्त में कर्तृ हो) कहते हैं, जैसे—क शत्रु से कृत् प्रत्यय लगाकर 'कर्तृ' शब्द बना। इसमें कृत् इत्यस्य है अतः कर्तृ शब्द कृदन्त है। इन कर्तृ वाचक कृदन्तों के अर्थ का इनके साथ समास भी हो जाता है। यथा—  
(समसम्) आरुह्यता आरुह्य क्व निवसन्ति ? (आरुह्य के नाम से आते कहाँ रहते हैं ?)

समस्त, धारणजालार कय निषर्तानि ? (गाम्भीर्य के आत्मसे जाने कत रहते हैं ?)

१. 'मनुष्य' शब्द के अर्थ में कर्तुं शक्य के बातुर्थों में बहुत (अर्थात्) और और कम (अथवा) प्रत्यय होते हैं। उदाहरण—

(सृज कृ—कर्ता (सृजे बाना) युष्—योद्धा वृ—प्रविष्टा मी—मेना,  
विदु—वेला सेव—सेविता, नयु—नेना आदि ।

शुद्ध एक वस्तु पाचक (पाचिका शरीर) पाठक नाशक शायक  
पालक, दायक मयक, जनक रोचक आदि । शुद्ध (शक) शीत 'वृष' (वृ,  
प्रत्ययान्त शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों में विभेद्य के अनुसार होते हैं

(कर्मफलम्) कर्मकारक पद के उत्पत्तिवादी धातु से कर्तृभाष्य में भण्य  
होना है और धातु को वृद्धि होती है यथा: कृष्णं कर्णेति इति कुम्भकार  
सुवशाग तन्तुवाप, वाग्मिवाहः भाष्यकार आदि ।

(शातस्वाध्यायम्) कर्मवान् में उपसर्गसहित वाक्यान्त वातु में क प्रत्यय होता है, यथा कर्म श्रद्धादि इति क्तप्रद, धर्मिदानादि इति धिभञ्ज

इयुपचक्राधीकर क) इयुपच आ, श्री और कृ धातुओं से न प्रत्यय होता है खुब कृश व, प्रिय, किर ।

भुवन्त पद के परवर्ती भिन्न भिन्न धातुओं के पश्चात् भिन्न भिन्न चर्चों में 'अ' प्रत्यय जुड़ता है, यथा—नोकहर, नूबाह, धनद सर्वज्ञ भन्त प्रकृतिम्ब पञ्चजम् पारम्, वनङ्ग शंकापह प्रभाकर हितकर, अग्रपर राजिवर, मिषघ्न आदि ।

(तन्दिप्रतिपत्तादिभ्यां ल्यप्तिन्यप्) कर्तृवाच्य में शिति, दन् प्रत्यय भी होता है यथा निश्चिन्तनीति निवामी उषिकरती प्रवामी विद्वाहो अघिकारी, अग्निवायी स्वायी द्वेयो मन्कारी आदि भुवन्तपद के भुल्लग्वर्ती धातुओं से भिन्न भिन्न चर्चों में दन् प्रत्यय होता है । ल्यप्तादि चर्च में जैसे—उत्पन्न भोजन, नील पथ त—उत्पन्नाधी नील माने के स्वभाव वाचा, मनोहारी, अग्रपायी, अनुपामी शाकाहारी मिथ्यावादी भिषवाती आदि ।

आत्ममाने कश्च, धाने वाय को मयभले के सर्व में शिति और लक्ष (न) प्रत्यय होते हैं यथा—यक्षितवाली (परिदत्तमात्मन मन्यते यक्षितमन्य) ।

(न्विधा किल्) भाववाच्य में धातुओं से किल् प्रत्यय होता है और 'लित्' का 'लि' जोड़ रहता है । किल् प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं यथा—मति, युक्ति लीति इष्टि शान्ति, गति प्रीति कृति, स्तुति कुति, स्थिति रति, मति भुक्ति, मुक्ति आदि ।

(भावे धक्कन्वि च कारके लङ्गावाप्) भाववाच्य और कर्तृभिन्न कारक वाक्य में लङा में धक् प्रत्यय होता है यथा लङ्—हास (हँसी देवस्य हास), पक्—पाक (पकाता) त्यज—त्याग, मय—नाम पठ—पाठ लिख लेख भू—भाष (क्त) कान विकार, उपकार धनकार : हूँ—हार आहार प्रहार विहार मंशार उपहार : चर चार विचार सचार भाचार (चद वाद विवाद मवाद पवाद अनुवाद अपवाद आदि धक् प्रत्ययान्त शब्द पुल्लिङ्ग होते हैं ।

भाववाच्य में धातुओं से य' प्रत्यय भी होता है जैसे—अथ तोष हष अथ, मद आदि ।

(तत्पदके साथे क लृट् च) भाववाचक शब्द बोलने के लिए धातु के बाद क ल और लृट् धन, प्रत्यय क्या दंत है और यह शब्द संपुंसकर्मि

होने है यथा—हस्तितम् (हस्तित) गमनम् हरणम् करणम्, भरणम्, शोष-  
णम् चार्ति ।

(साधकगमाधिकरणेषु न्युट्) भाव करण चोर अधिकरण मं यौ त्वुट्  
(घत) होता है जैसे—करणम् (जिससे किया जाय) गानम् (जिस पर सोया  
जाय) उपकरणम् (जिससे काम करते हैं), धारणम् (जिसमें डुबते हैं) ।

(ईपद्-सुप्) हृन्वाहृन्वायेष घत्) उप-१. दूर २. परवर्ती वातुघोसे कर्म  
धीर भावकाव्य मे लत् (घ) प्रत्यय होता है, यथा—मुकर हुकर ईपस्कर  
गुवह, दुसंघ दुःशासन चार्ति ।

अस्मन्मन्त्रकर्मणि लिप्च) हृन्वाहृन्वायेष घत् भावकाव्य एव कर्मकाव्य  
मे ही प्रयुक्त होते हैं किन्तु कुछ शब्द जैसे—वत् + हृन्वा = वाह्य (रहने  
वाला) कर्तृकाव्य मे भी प्रयुक्त होते हैं । इसी प्रकार—भू + घत् = भव्य  
(होने वाला) तै—मत् = मेव (सोमे काव्य) जन् + घत् = जन्म पैदा करने  
वाला) ये शब्द विकल्प मे कर्मकाव्य मे प्रयुक्त होते हैं ।

(मनाश्रयचिह्न उ, लग्नन् चामस चोर भिन्न चानु से उ' होता है  
यथा—लिप्त् पिपात् प्रागम्, चिन् चार्ति ।

उपमानाश्रयक तद् सद् भवः पुष्पद् धर्मद् किम् तत्तद् धीर इतके  
समान शब्दों के बाद इस चानु मे किम् चोर कर्त्तृ प्रत्यय होते हैं । इसके लिप्च-  
लिखित रूप इस प्रकार हैं—माहक, लाज (उन जैसा) स्वाहण तुम्हारे जैसा),  
माहक यादव भवाहक भवाह्य । सुप्माहक सुप्माह्य । धर्माहक धर्मा-  
ह्य । कीहक कीह्य । ईहक ईह्य । एताहक एताह्य ।

### संस्कृत में अनुवाद करने

१. सोलता तथा बदला समय पर होना चाहिए । २—अने आदमी  
अपकार का बदला उपकार से युक्त है । ३—एह बहुत आनन्द देने वाला  
वृत्त है । ४—कूठ सोलने वाले मित्र मित्रघातो होते हैं । ५—काम करनेवाला  
मानव है पर काम का फल देने वाला बसवान् है । ६—यह उपदेश शोक को  
नाश करने वाला है । ७—कूठ सोलने जाने का कोई विद्वान् नहीं करता ।  
८—इस राज के कुम्हार बहुत चतुर हैं । ९—नाश होने वाले शरीर का क्या  
भ्रामा ? १०—क्या उस घर में सबी सान्न बान है कमाने वाला कोई नहीं ?



११—यह पकाने का नर बहुत निपुण है । १२— क्या इस नगर में कोई वठा गलेदार नहीं ? १३— रोद का पड़ना पाप का नाश करने वाला है । १४— इस नगर के प्राय सभी बलिये मुरखे हैं । १५— कस बिमला ने एक मनोहर राग अपनाया । १६— मुन्हावे जैसे घाद्यों को धिक्कार ।

## द्वितीय अध्याय

### वर्तमानकालिक कदन्त

।सट शतृशान्वायप्रथमापमानाधिकरणे पदवा इच्छा (पदनी हुई) लिखता हुआ लिखती हुई आदि अर्थ को प्रकट करने के लिए धातुओं के बाद वर्तमान-कालिका कृष्ण शतृ शीर्ष शान्वा प्रथम पदान्तर लिखने शब्दों का प्रयोग किया जाता है । परम्परे में शतृ (घ३) शीर्ष शान्वादेश में शान्वा धान, मान, प्रगाप आते आते हैं । शतृ-शान्वा प्रत्ययान्त शब्द वर्ग के विशेषण होते हैं । जैसे—

- १—पश्यामि नर आदम् न पश्ये (मनुष्य लाता हुआ कभी न पड़े)
- २—म हसन् व्यववन् ।
- ३—वदन्ती वासा प्राह ।
- ४—शान्वा शिष्य मा वसोपय ।
- ५—अपि पश्यन् न हरेत् ।
- ६—अजमाना अपि आराधयन्ति ।
- ७—विनयनी गीता दृष्ट्वा मन्मथं विषया सज्जता

### परम्परे में धातुओं के शतृप्रत्ययान्त शब्दः

धातु	अर्थ	नयमकालिक	पृथिवी	स्त्रीलिङ्ग
पू	(होना)	भवन्	भवन्	भवन्ती
दा	देना	ददन्	ददन्	ददन्ती

‘शतृ’ ‘स’ प्रत्ययान्त शब्दों के स्त्रीलिङ्ग में का अमाने के लिए भ्वादि विवर्ति, चुर्गादि शीर्ष वुर्गादि के लट प्रथम पुरुष के बहुवचन में ‘शान्ति’ प्रत्ययान्त पद के बाद हैं’ दाट देने हैं यथा—‘गच्छन्ति गच्छन्ति, गच्छन्ति’ आदि तथा गच्छन्ति + ई = गच्छन्ती । इसी प्रकार—कृजन्ति + ई = कृजन्ती, पुज्यन्ति + ई = पुज्यन्ती जिगमिषन्ति + ई = जिगमिषन्ती हसन्ति + ई = हसन्ती वदन्ति ई = वदन्ती ।

अदार्शगणीय भदनी नदनी प्रादि) स्वार्थगणीय मन्त्रनी चित्रनी,

धातु	अर्थ	नपुंसकलिङ्ग	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
कृ	(करना)	कृवन्त	कृवन्	कृवन्ती
क्री	(खरीदना)	क्रीयन्त	क्रीयन्	क्रीयन्ती
चिन्	(चिन्तना)	चिन्तयन्त	चिन्तयन्	चिन्तयन्ती
सृ	(होना)	सृन्त	सृन्	सृन्ती
आप्	(प्राप्ता करना)	आप्नुवन्त	आप्नुवन्	आप्नुवन्ती
इप्	(इच्छा करना)	इच्छन्त	इच्छन्	इच्छन्ती
मनु + इप्	(ईदना)	मन्विष्यन्त	मन्विष्यन्	मन्विष्यन्ती
कथ्	(कहना)	कथयन्त	कथयन्	कथयन्ती
कृञ्	(कूजना)	कृञन्त	कृञन्	कृञन्ती
कृष्	(नाशक होना)	कृष्यन्त	कृष्यन्	कृष्यन्ती
क्रीड्	(खेलना)	क्रीडन्त	क्रीडन्	क्रीडन्ती
गर्ज्	(गर्जना)	गर्जन्त	गर्जन्	गर्जन्ती
गुञ्ज्	(गुंजना)	गुञ्जन्त	गुञ्जन्	गुञ्जन्ती
गै	(गालना)	गायन्त	गायन्	गायन्ती
ग्रा	(गुंथना)	ग्रिद्यन्त	ग्रिद्यन्	ग्रिद्यन्ती
वत्	(बलना)	वधन्त	वधन्	वधन्ती
जाश्	(जडना)	जाघन्त	जाघन्	जाघन्ती
हृ	(हँसना)	हसन्त	हसन्	हसन्ती
दण्	(डमरना)	दधन्त	दधन्	दधन्ती
दण्(पथ्)	(वेधना)	पथयन्त	पथयन्	पथयन्ती
मिन्द्	(मिन्द करना)	मिन्दन्त	मिन्दन्	मिन्दन्ती
मृष	(माबना)	मृष्यन्त	मृष्यन्	मृष्यन्ती
पठ	(पठना)	पठन्त	पठन्	पठन्ती

धादि) कृधादिगणोय (क्रीयन्ती क्रीयन्ती धादि) तनादिगणोय कृवन्ती तन्वन्ती धादि घोर तुहाभ्यादिगणोय (ददन्ती वृद्धन्ती जहन्ती धादि धातुधर्मे 'ई' जोड़कर 'न्' हटाने से स्त्रीलिङ्ग में रूप बनने हैं।

धदादिगणोय धाकागन्त (धान्ती धान्ती धादि) घोर तुदादिगणोय तुदन्ती तुदन्ती धादि) ये विकल्प ये नू का नाप होना है। ये स्त्रीलिङ्ग शब्द नदी की भाँति चलने हैं। (देखिए स्त्रीयन्त्रधकप्रकाश),

धातु	अर्थ	नपुंसक निष्ठा	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
पा	(पीना)	पिबत	पिबन्	पिबन्ती
पूज्	(पूजा करना)	पूजयत	पूजयन्	पूजयन्ती
पृच्छ	(पृच्छना)	पृच्छत	पृच्छन्	पृच्छन्ती
मञ्ज	(मञ्जना)	मञ्जयत	मञ्जयन्	मञ्जयन्ती
रच्	(रचना)	रचयत	रचयन्	रचयन्ती
धार-हृ	(धारणा)	धारयेत्	धारयेद्	धारयेन्ती
मिच्छ	(मिच्छना)	मिच्छयत	मिच्छयन्	मिच्छयन्ती
शक्	(शक्ना)	शक्नुवन्	शक्नुवन्	शक्नुवन्ती
सृज्	(सृष्टा करना)	सृजयत	सृजयन्	सृजयन्ती
तिष्ठ	(ठहरना)	तिष्ठत	तिष्ठन्	तिष्ठन्ती
स्पृश	(स्पर्शना)	स्पृशयत	स्पृशयन्	स्पृशयन्ती
स्वप्	(सोना)	स्वपयत	स्वपयन्	स्वपयन्ती
प्राह्	(पुनः)	प्राह्वयत	प्राह्वयन्	प्राह्वयन्ती

### आत्मनेपद में धातुओं के आनच्, प्रत्ययात्त शब्द

ईक्ष	(देखना)	ईक्षमानम्	ईक्षमानः	ईक्षमाना
कम्प	(काँपना)	कम्पमानम्	कम्पमानः	कम्पमाना
जीत	(पेश करना)	जीतमानम्	जीतमानः	जीतमाना
वद	(बोला करना)	वदमानम्	वदमानः	वदमाना
वन्द	(नमन करना)	वन्दमानम्	वन्दमानः	वन्दमाना
वर्त	(होना)	वर्तमानम्	वर्तमानः	वर्तमाना
वृध्	(बढ़ना)	वृधमानम्	वृधमानः	वृधमाना
व्यथ	(दुःखित होना)	व्यथमानम्	व्यथमानः	व्यथमाना
व्यन्	(मानना)	व्यन्मानम्	व्यन्मानः	व्यन्माना
यत्	(यत्न करना)	यत्मानम्	यत्मानः	यत्माना
लभ	(पाना)	लभमानम्	लभमानः	लभमाना
सेव	(सेवा करना)	सेवमानम्	सेवमानः	सेवमाना

## उपपदों में धातुओं से प्रभु और आत्म

धातु	नपुंसक निष्कृ	पुंल्लिङ्ग	स्त्रील्लिङ्ग	आत्म प्रत्ययान्त
हृ (करना)	कृचन	कृचन्	कृचती	(कर्त्तरा)
छिद् (काटना)	छिन्दन्	छिन्दन्	छिन्दती	(छिन्दान्)
ज्ञा (जानना)	जान	जानम्	जानती	(जानान्)
नी (ने जाना)	नयन्	नयन्	नयती	(नयमान्)
वृ (बढ़ना)	वृचन्	वृचन्	वृचती	(वृचान्)
निह (निकालना)	निहन्	निहन्	निहती	(निहान्)
घा (घबाना)	दघन्	दघन्	दघती	(दघान्)

## संस्कृत में अनुवाद करो

१. मोक्षन दोहता हुआ फिर पड़ा । २—दूर बातना हुआ भी कुछ काम प्रतीत है । ३. लड़ने हुए पिताहीन न गुरु से बीरता में प्रार्थन दिखे । ४—दशम प्रयाग भारता हुआ भी परेभूत से प्रवृत्त हुआ । ५—मित्र के घर में कोपना हुआ नववा मा की गाद से शिरक गया । ६—घर गहने-कपड़े आभूषणों का भंडार भी थागा । ७—दशम शताब्दी में कर्माणी दूरे रमते की गया । ८—गुरु की मोक्षन मन कर और भोग गया । ९—पराधर भगवत् के किताब शत्रु के पास गये । १०—बड़े शीतना हुआ पक्ष पक्ष रहा है । ११—गम पीने हुए भिक्षु की मोक्षन से नाली बारी । १२—गम भगवत् हुआ बड़ा पहेंवा । १३. वह हुआ हुआ काम करता है । १४—वे वाचक पदों हुए नहीं जा गये हैं ? १५—महर्ष की जानना श्रम भी वह प्रसन्न जानना है । १६—घोर शीत की दग्धता हुआ चोरी करना है । १७—पानी धम की दग्धता हुआ पाप नाले है । १८. गवश न गम की ईश्वर जानना हुआ भी गुरु जीव नहीं ही । १९. गाम्भीर्य जानना हुआ प्रवृत्त से नया गुरुता है ? २०—गम की जानने हुए निगम ने एक भाव न भाव जाना ।

## तृतीय अध्याय

## भूतकालिक कृत

भूतकाल के प्रधानतः दो क अवध—क. न। और कवन् नवन है क (त, प्रत्यय कर्मकाक्ष और भवकाक्ष में होता है और कवन् नवन। प्रत्यय



कान्तुं साञ्च्य मे, यथा—

१) क) भयं जन पीनम् । (मैंने जन पिपा) ।

[तवत् सः जलं पीतवान् (उमनं वनं पिबत्) ।

तत्त्व प्रत्यक्ष सकलक धानुषों में कम से होता है। इसमें कर्ता नृत्तीया विभक्ति में रखा जाना है और कम प्रथम। विभक्ति ४ : तत्त्वप्रधान धानुषों में निष्ठा धनन कम के अनुसार होते हैं, यथा यथा धानुषक पठितम् यथा धानुषक पठितम् यथा धानुषक पठितम्। यद्यप्य धानुषों से एक धानुष कर्ता और धानुष धानुषों में होता है। जब तत्त्व प्रत्यक्ष कर्ता में होता है तब नृत्तीया धानुषों के अनुसार प्रथम में होता है यथा - गोपनीय मत और जब तत्त्व प्रत्यक्ष धानुष में होता है तब कर्ता में नृत्तीया विभक्ति धानुषों में प्रत्यक्ष धानुष पठित नृत्तीया धानुषों में प्रथम के एकधनन में होता है यथा - गोपनीय मत, हृदयलून धानुष।

कवसु तव ॥ प्रथम सकलक योग यवमद सागद्यो न कर्ता मे ही होना है । इसमें कर्ता और प्रथमे सन्सार लक्ष्मन्त गच्छ 'प्रथमा' मे साग ही यथा सागो जल पीनकाल (दाह ने गैनी विद्या) । रामलक्ष्मणो राक्षसान् हलधन्वी (राम योग लक्ष्मण न गक्षा पाते) अयेतो हृदिगवाद् अयेतो हितर) आदि ।

इच्छाधिक प्रजापति कुक्षरलोक धनुषों से जनमानस प्रथम से भोक्तृ प्रथम होता है उसमें कर्ता मष्टी विभक्ति से शीघ्र कथ प्रथम में होता है यद्यपि — प्रजापति शम्भु इष्ट मन प्रजित (प्रजा के शीघ्र शम्भु की आहूत है मानव है, पृथ्वी है)

इहं यावत् क्षाधि द्विकर्मक धातुधातु से एक प्रत्यय गीता नाम में भी है  
इस और वह से मुख्य कर्म के और निश्चय धातुधातु से एक प्रत्यय प्रयोग  
कर्त्ता के अनुसार होता है यथा—

शिष्यों गुरु शब्दार्थ मृष्ट (शिष्यों ने गुरु से शब्द का अर्थ पूछा) । देवेन  
ज्ञान प्राप्त नीति देख करके को शत्रु ने मथा) । अप्यारपकेन सत्य राक्षस  
क्षोभित गुरु ने छात्र को शत्रु मथनाया) । एकमेक वा सकमेक शत्रुओं से  
कर्म की विवक्षा न रहने पर 'न' प्रत्यय भाव में होता है, यथा शिशुना  
शयितम् (शब्दा सोपा), तेन रुधिरम् (उपमे कहा) । तान्त्र शब्द को जब  
विलेपण रूप में प्रयुक्त करते हैं शत्रु उसके निरुद्ध, विभक्ति और वचन विवेक  
के अनुसार होते हैं ।

धातु	सं	संभूत	धातु	सं	संभूत
अद्	अगद्य	अगद्यवान्	अन्	आतः	आतवान्
अच	अचित	अचितवान्	उप	इष्ट	इष्टवान्
अचि + ई	अचीत	अचीतवान्	कच	कचित	कचितवान्
छिद्	छिन्न	छिन्नवान्	वा	हित	हितवान्
कृ	कृत	कृतवान्	वि + वा	विहित	विहितवान्
कृ	कीरति	कीरतिवान्	मि + धा	मिहित	मिहितवान्
लृ	लील	लीलवान्	वा - लृ	आहृत	आहृतवान्
लृप्त	लृप्त	लृप्तवान्	मिहृ	लीढ	लीढवान्
लृप्	लृप्ता	लृप्तावान्	शम्	शान्त	शान्तवान्
ली	लील	लीलवान्	निम्द्	निमित्त	निमित्तवान्
लम्	लाम	लामवान्	मी	मील	मीलवान्
गम्	गत	गतवान्	दन्	दत्त	दत्तवान्
गृ	गीत	गीतवान्	वी	वीत	वीतवान्
गं	गीत	गीतवान्	अग	अगृह	अगृहवान्
ग्रह	ग्रहीत	ग्रहीतवान्	वेष्ट	वेष्टित	वेष्टितवान्
घा	घात	घातवान्	धृ	धृत	धृतवान्
चित्	चित	चितवान्	सह	सोढ	सोढवान्
पृञ्	पृजित	पृजितवान्	स्पृध्	स्पृष्ट	स्पृष्टवान्
पृञ्चि	पृष्ट	पृष्टवान्	मृज	मृष्ट	मृष्टवान्
वप्	वद	वदवान्	स्मि	स्मित	स्मितवान्
वृष	वृढ	वृढवान्	स्मृ	स्मृत	स्मृतवान्
वद	उन्नि	उन्निवान्	मन	मन	मनवान्
वन्	उक्त	उक्तवान्	रम्	रन्व	रन्ववान्
विद्	विदित	विदितवान्	वस	उपहित	उपहितवान्
मिद्	मिन्न	मिन्नवान्	सम्	मन्व	मन्ववान्
जि	जित	जितवान्	ओ	आचित	आचितवान्
जृ	जीर्ण	जीर्णवान्	जन	हृत	हृतवान्

नृ	लील	लीलवान्	ह्रा	हीन	हीनवान्
त्यज्	रम्य	रम्यवान्	हृ	हृत	हृतवान्
ज्ञै	ज्ञात	ज्ञातवान्	कृ	कृत	कृतवान्
दृष्ट	दृष्ट	दृष्टवान्	कम्	कान्त	कान्तवान्
दा	दत्त	दत्तवान्	नश्	मत	मतवान्

### संस्कृत में अनुवाद करो

१ चरन ने अवदण का वध किया । २ न्यायाधिप (जज) ने अपराधियों को बंद दिया । ३ राम ने रावण को बाल से धारा । ४ हाथी महान बल में छोड़ा गया । ५ बिल्ली ने बूढ़े को पकड़ा । ६ कम रात में जल्दी सो गया । ७ सुप्रीय और बाली का युद्ध हुआ । ८ पीने जगन में सिद्ध देखा । ९ घाव सोझन बाटिका से नहीं पाया । १० व्याघ्र को देखकर बाघक बहुत डरा । ११ बालक क्षितर पर सो गया । १२ शान्तीक ने बहुत धधुर धूमों में सम्मोहण निम्नी । १३ मकने हृदय में भुंख की प्रसन्न की । १४ प्रजगति में संसार उपपन्न हुआ । १५ रामचन्द्र ने लख्खु का राज्य विजोवरा को दिया । १६ शम्भु उस वासक ने कण ही मुन्दर गाया । १७ जोर की हवा में पेड़ों को कंधा दिया । १८ मृग बानी पोन के लिए लालच पर गया । १९ रात पढ़ने ही और महान में बूमा और बहुत सा धन बुरा में गया । २० बाणदेव ने गुरु की सेवा की और सेवा का फल पाया ।

### अभिध्यात्मिक कृवन्

"निमी क्रिया की करने वाला" का अनुवाद संस्कृत में अभिध्यात्मिकवाचक शब्दों में जानच प्रत्ययान्त शब्दों में किया जाता है । अभिध्यात्मिकवाचक शब्दों जानच प्रत्ययों के रूप क्रम से 'त्यन्' और 'त्यमान' होते हैं । यथा —

१ विमानयशस्वरमारोहयन् सादमी और तेनर्महोर्ध्वि ।

विमानय की ओरी पर बहुत शक्ति महिमी और तेनर्महो है ।

२ धार्मिकव्रतने प्राधेयन् मेवन् धनीव प्रमन्न हृष्यते

(धार्मिक तनव्याह्र पाने बामा नोकन बहुत खुश होकरता है)

३—विदेश भविष्यन् गोषाच पितरो प्रमथयन् ।

विदेश जाने वाले गोषाच ने माता-पिता को प्रमथन किया

४. सादकन्दकेन कोडिष्यन्त स्त्रिया कोडाक्षेपं गच्छन्ति ।

फुटवान् मेलने वाले क्षत्र कुन के मैदान में जा रहे हैं ।

५. पुत्र तत्र योत्स्यमाना सैनिका सम्प्रतिन प्रापृच्छन्ति

लड़ाई के मैदान में लड़ने वाली सिपाही अपने संबंधियों में बिदा लेती हैं ।

परमैषः मे स्यत्	आश्वमेध में (स्यमान)	उभयपद में स्यत्, स्यमान)
भू अविष्यत्	अन् अविष्यमाणा	हू अविष्यत् - अविष्यमाणा
गम् अविष्यत्	गत् - अविष्यमाणा	हू - अविष्यत् - अविष्यमाणा
स्या स्यात्	स्यत् अविष्यमाणा	हू - अविष्यत् - अविष्यमाणा
दधि दधियत्	ध - स्या - अविष्यमाणा	मो - अविष्यत् - अविष्यमाणा
सृ - अविष्यत्	सृ - अविष्यत्	आ - अविष्यत् - अविष्यमाणा
हन् - अविष्यत्	हन् - अविष्यत्	हृ - अविष्यत् - अविष्यमाणा

कर्मवाच्य में अविष्यत् ध्ये के वातधो में स्यमान प्रत्यय लगता है और स्यमान प्रत्ययान्त पद कर्म के विशेषण हो जाते हैं यथा रामसा दधियमाणा सिःवायिष्य सौतया अविष्यमाणा चक्रवर्ती । अस्याभि मोक्ष्यमाणाति कलानि ।

स्यत् और 'स्यमान' प्रत्ययों में बने हुए अनेक विशेषण होते हैं इसलिए विशेषण के अनुसार उनके निम्न विभिन्न ध्ये बचने होते हैं यथा—अविष्यमाणा अक्षयम्, अविष्यमाणा अक्षयम्, अविष्यमाणा अक्षयम् आदि ।

### अनुबन्ध अस्यात्

#### पूर्वकालिक कृन्त (अथा और ल्यप्)

(अमानकतृकयोः पूर्वकालः, 'पदका' लिखकर 'आकर' पीकर आदि पूर्वकालिक कृन्तों का अनुवाद संस्कृत के अथा त्वा प्रायमान् आदि से किया जाता है यदि वात के पूर्व कोई उपसर्ग नया हो तो 'अथा' के स्थान में 'यप' (य) हो जाता है । यदि यह वं लृट् स्वर के बाद आता है तो इसके पूर्व व लृट् नगणकर इसका रूप स्य हो जाता है, यथा—मं + वि ध = अविष्य ।

१ वैशम्पायनो मुहूर्तमिव व्यात्वा सादकमक्षवीम् । कादम्भ्याम्

वैशम्पायन ने क्षण भर सोचकर सादक के साथ चला

२ - अतः ते कर्म प्रकल्पयामि प्रजापते मोक्षयैः शुभाय

(मैं तुम्हें ऐसा कर्म बताऊंगा जिसे जानकर तुम इस से मुक्त हो जाओगे ।)



२. यदि शब्दा न निवर्तन्ते नन्ताम परम परम शीलायाम् ।

महा जाकर मोटते नहीं हैं वहां मेरा उत्तम स्थान है

३. प्रातः शीतल्य नाय पाचतु स्वयंवेद तिष्ठ

सूचन से माप तक तुम यही रहो।

४. उपपाद्य हृदि नीगन्ते दरिद्राणा मनोरथा

निग्रन्तों को हृच्छ्राण चित्त में उठकर लीन हो जाती हैं

५. स यद्यन्तरीत्य विद्वान् अभवः । (वेदों को पढ़कर सत विद्वान् हो गया)

उपमगं धत्वा च्चि प्रत्यय युक्त पाप् स पुनर्कारिक कृत प्रत्यय स्वा के स्थान पर ल्यप् (य) होता है (अथ समास से नहीं) । ल्यप् प्रत्यय होने पर स्था य से बदल जाता है—आ, ई, ऊ + ल्यप् = य + इ, उ आ + ल्यप् = ल्य । कृ + ल्यप् = ईयं ।

(आकारान्त) उद्—स्वा ल्यप् य = उद्याय आ—इ + ल्यप् (य) = आराय ।

(ईकारान्त) आ—नी + ल्यप् (य) = आनीय वि—की + ल्यप् (य) = विकीय ।

(ऊकारान्त) अनु—भू + ल्यप् (य) = अनुभूय प्र—सू + ल्यप् (य) = प्रभूय ।

(चिप्रत्ययान्त) मलिनी + भू + ल्यप् (य) = मलिनीभूय

मिश्री + भू + ल्यप् (य) = मिश्रीभूय ।

(टकारान्त) वि + जि + ल्यप् (य) = विजित्य अधि + इ + ल्यप् (य) = अधीत्य ।

(ठकारान्त) प्र—स्तु + ल्यप् (य) = प्रस्तुत्य, प्रतिशु + ल्यप् (य) = प्रतिश्रुत्य ।

(ककारान्त) अधि + कृ + ल्यप् (य) = अपिहृत्य अनु—सृ + ल्यप् (य) = अनुसृज्य ।

(खकारान्त) अथ + लृ = ल्यप् (य) = अवलीय वि + कृ + ल्यप् (य) = विकीय ।

कच्, वद, वय् कह्, ल्यप् धातुओं के व के स्थान में 'उ' हो जाता है एति के स्थान में आय्, ह्य = ह्, ग्रह् = ग्रह्, प्रच्छ् = पृच्छ् । जैसे

प्र = वच् + ल्यप् (य) = प्रोच्य धनु = वच् + ल्यप् (य) = धनुश्च अधि  
 वच् + ल्यप् (य) = अध्वुच्य संच् = अह् + ल्यप् (य) = संहृत्, सच् = वी +  
 ल्यप् (य) = संवाच्य ।

गिाजन्त धातुओं के इकार का गणवारहान्तया नाप हो जाता है और रच्  
 , रचि प्रभृति धातुओं के टकार के स्वरान्त में छय हो जाता है संच् + चिन्ति  
 = चिन्चिन्त्य प्र + दक्षि = प्रदक्ष्य संच् + स्थापि = स्थाप्य, चि + रचि =  
 चिरच्य प्रावि ।

धातु	कच्चा	ल्यप्	धातु	कच्चा	ल्यप्
धाप्	धापत्वा	{ प्राप्य समाप्य	हृ	हृत्वा	धनुर्हरय विह्रीय
इ	इत्वा	इषीत्य	क्षिप्	क्षिपत्वा	निक्षिप्य
ईप्	ईषित्वा	{ निरीक्ष्य परीक्ष्य	सच्	संसर्षित्वा	विषागम्य विषीय
इष्	इष्ट्वा	स 'व्य	हृ	हृत्वा	दिनाय
घा	हिरत्वा	विषाय	हृ	हृत्वा	आहूय
मच्	मत्वा	{ प्रगुल्य प्रलम्ब्य	चिन्	चिन्तयित्वा	सन्दिश्य विचिन्त्य
नी	नीत्वा	आनीय	ज्ञा	ज्ञात्वा	{ विज्ञाय प्रतिज्ञाय
मच्	मत्वा	{ आगत्य आगम्य	मन्	मन्तीत्वा	मन्तीय
मन्	मन्तिता	संप्रप्य	त्यज	त्यजत्वा	परित्यज्य
मह्	महीत्वा	{ मंहीत्य मनुमहीत्य	रह्	रह्वा	मन्दय्य
घा	घात्वा	समाघात	धम्	धामित्वा	{ विधम्य
चिञ्	चित्वा	मंचित्य	मन्	मन्त्वा	समम्य
पह्	पतित्वा	निपत्य	मन्	मन्त्वा	समम्य
लम्	लम्बत्वा	अपत्य	मन्	मन्त्वा	समम्य
लिञ्	लिङ्गित्वा	चित्तिष्य	रह्	रह्वा	मन्दय्य
जस्	जयित्वा	अज्युष्य	मिञ्	मिञ्त्वा	मिचिष्य

शम्	शमित्वा	निशम्य	शृन्	शृङ्वा	त्रिशृज्य
श्वत्	श्वसित्वा	वित्वम्य	स्वा	स्वित्वा	अस्वाम्य
शी	शयित्वा	विशम्य	स्पृश	स्पृङ्वा	अस्पृश्य
शप	नप्त्वा	चिन्म्य	स्मृ	स्मृङ्वा	विस्मृत्य
पा	पीत्वा	निपीय	हन्	हत्वा	निहत्य
प्रप्ल	पृष्ट्वा	सपृत्वथ	हस	हसित्वा	विहस्य
मुप	मुदेत्वा	प्रमुदथ	हृ	हृत्वा	संहृत्य
नद्	उदित्वा	अमुद्य	किञ्	किङ्वा	प्रविद्य
भक्ष	भक्षित्वा	प्रभज्य	धि	धित्वा	आधित्य

### संस्कृत में अनुवाद करो

- १—स्वाय हरकन में बाण लेकर हिरण को मारता है । २—हैं बालक नू शिव को हस्तका रथी दरता है ? ३—माता-पिता को प्रणाम कर पुत्र विशेष आभा गया । ४—काशीपर आकर हमने बहुत सुन्दर दृश्य देखे । ५—मैं प्राणों परहकर सभी प्राणों के साथ चर्चता । ६—स्वाय बाजलों को धिक्कर कर कष्टों की मारता । ७—प्रविद्या काकें कहो कि मैं मत्स्य कोर्तता । ८—महागज दशम्य राम के लिए विनाश करके मर गया । ९—ईश्वरचन्द निशानगर गड कर स्तुतियों के इन्धनेकन हो गया । १०—कीर्ण में घपने आश्रयन को समाप्त कर भुक्त को दक्षिणा देने का आग्रह किया । ११—गर्भण की मारकर राम ने विभीषण को लंका राज्य दिया । १२—और धन में धुम कर राम लेकर भाग गया । १३—राम राजसों को जीवनकर भीता के साथ प्रथोदया लोटे । १४—धर धन उकटता काकें उसे दूसरों के लिए छोड़कर लंयाभी हुआ । १५—छात्रो पुस्तक जीवनकर पढ़ो ।

### पञ्चम अध्याय

#### तुम् प्रत्ययान्त शब्द

(तुमुत्पुष्पुणी क्रियायां क्रियार्थमायु) को 'के लिए' आदि निमित्त प्रर्थ को प्रकट करने के लिए धातु से धरे तुमुन्' (तुम्) प्रत्यय लगाने हैं यथा—

१—स्वेदसन्निवन्नात्ताऽपि पुनः स्नातुम् (स्नानाय) प्रकालगत ।

(पक्षिने से नहाई हुई भी पुनः स्नान के लिए तनरी । (कादम्बर्याम्)

२—इच्छार्थक क्रिया के निमित्त ये—

पिनाकपाणि पलिमान्मुमिच्छामि ? (तु शिव को चरता चाहती है ?

३ — तमय शब्द के योग से —

समय ललु स्नातमोचनं चरितुम् (यह स्नान थोर भाँजन का समय है) ।

४ — तू जो कम् चानुम् का साथ —

न शक्नोति शिरोधरा धारयितुम् (यह धरन नहीं उठा सकता) । काद०)

५ — सम्प्रत्यक्षानक यमम् के योग से —

प्राप्तायास्तथा तुल्यितुमलम् (महत्तु तुल्यने मुकाबले के लिए समर्थ है) ।

६ — काम योग भनस के प्रथम क का साथ हो जाता है (तकामभनसोरपि)

इष्टुमना मननी मय समानता (मेरी माना मुझ देखने को मही आई) ।

पुनरपि वक्तुकाम इव धार्यो नश्यते (शाब्द धार्य और कुछ कहना चाहते हैं) ।

धण (पूजा करना) धणितुम्

धम (कमाना) धमितुम् ।

धमि + इ (धरना) धमयितुम् ।

ईम् (देखना) ईक्षितुम् ।

कष (कहना) कषयितुम् ।

कृ (करना) कर्तुम्

गी (खरादना) जंतुम् ।

गं (माना) गन्तुम् ।

त्यह (खोदना) त्यक्तुम् ।

वै (रक्षा करना) वातुम् ।

वंश (हलना) वन्दुम् ।

दृश् (देखना) दृष्टुम् ।

धाव् (ढोहना) धावितुम् ।

प्र + शम् (मुक्तता) प्रशान्तुम्

ता (च जाना) तत्तुम्

नृत् (नाचना) नृतितुम् ।

पक् (पकाना) पक्कितुम् ।

प्रच्छ् (प्रच्छेदना) प्रच्छदुम् ।

पूज् (पूजा करना) पूजयितुम् ।

स्तु (स्तुति करना, स्तोत्रम्

स्था (ठहरना) स्थातुम् ।

स्ना (नहाना) स्नातुम् ।

स्पृश् (छना) स्पृष्टुम् ।

ह् (चुराना) हन्तुम्

मृ (माना) मत्तुम् ।

मज् (घात करना) मज्जितुम्

रम् (रमना) रन्तुम्

रह् (पकड़ना) राहितुम् ।

चिज् (चुनना) चेतुम्

चिन्त (गीतना) चिन्तयितुम्

चिद (काटना) छेत्तुम् ।

जि (जीनना) जेतुम् ।

जा (जानना) जातुम् ।

पा (पीना) पातुम् ।

तृ (नेटना) तनीतुम्, तर्गितुम्

वद् (गेना) वेदितुम् ।

वा + रुह (चढ़ना) वारोहम्

व्य (व्यपर करना) व्ययितुम्



यच् (वाहना) वप्नुम् ।  
भक्ष् (खाना) भक्षिन् ।  
भिद् (तोड़ना) भिन् ।  
भ्रूज् (भूतना) भ्रातुम् ।  
मुच् (छोड़ना) मुक्नुम् ।  
शी (सीना) शिक्नुम् ।  
शुष् (पसना) शोचिन् ।  
श्रु (सूतना) श्रुन् ।  
सह् (सहना) सहिन् ।  
सृच् (सँदा करना) सृष्टुम् ।

सब् (पाना) सन्नुम् ।  
सिह् (खाटना) सिद्धुम् ।  
कह् (बै चाना) कौटुम् ।  
कप् (बोना) कप्नुम् ।  
शम् (शांत करना) शमितुम् ।  
स्वप् (सोना) स्वप्नुम् ।  
सेव् (सेवा करना) सेविन् ।  
स्मृ (वाद करना) स्मर्तुम् ।  
हन् (मारना) हन्तुम् ।  
हम् (हँसना) हसितुम् ।

संस्कृत में अनुवाद करो —

१. राजाचारी यज्ञ करने के लिए यज्ञशाला में जाता है। २. व्याघ्र प्राणियों का शिकार करने के लिए वन-वन में घूम रहा है। ३—मैं श्री मेहक का आपराध मुनते के लिए पुरुषोत्तम पाक में जा रहा हूँ। ४—मेरे पिता कुम्भस्नान के लिए प्रयाग गये। ५. माली कम बिले के लिए जाता है। ६—क्या तुम पुरुष पशुना चाहते हो? ७—क्या स्वान का यह समय है? ८—वह अपने शत्रुओं को मारना चाहता है। ९—मेरे कुछ भाज काशी जाता चाहते हैं। १०—मरण राम में विमन के लिए शिबकूट गये। ११—बीर प्रज्जित शत्रुओं से लड़ने को उद्यत हुआ। १२—कल मुहारा मोकर स्कूल में काम करने नहीं पाया। १३—राम गच्छरु को दण्ड देने के लिए मरुता गये। १४. तुम गाने के लिए कहाँ जाओगे? १५. इस भार को उठाने के लिए मजदूर कब आयेंगे? १६. आज मैं पुष्पक खरोदने के लिए बाजार जाऊँगा। १७—कात्रन ने हमें अपने घर पर भोजन के लिए निमन्त्रण दिया। १८. उपदेश देने में सभी नमर्थ है, किन्तु पदरु करने के लिए कोई नहीं। १९—प्रध्यापक छात्रों को उपदेश देना चाहते हैं। २०—दुर्कामा का सप समय जगन को भस्म करने के लिए गर्वापि का।

षष्ठ अध्याय

कृत्य प्रत्यय (लभ्यत् लब्ध् कर्त्तव्यत्, यत्)

● गन्धर्वशानीयत्) 'चाहि' एवं को शकट करने के लिए संस्कृत

● चाहित काना कर्त्त कर्त्तव्यत् और कर्मवच्य दोनों के विशिष्टिह से श्री श्रुति होना है. यथा—भृत्य श्रमिन् सेवः—कतु वच्य मं । कर्मवच्य में—युत्यन स्वामी सेव्यः ।

ये 'तव्य' 'घनीय' और 'य' प्रत्यय प्रयोग में आते हैं। ये क्रमशः पञ्चम कहलाते हैं। ये धातुओं में कर्मकाच्य और भावकाच्य में होते हैं। कर्तृवाच्य में नहीं आते—

(मात्र में त्वया अवश्यमेव गन्तव्यम् (तुम्हें अवश्य जाना चाहिए।

(कर्म में) आश्रमसुयोगं न हन्तव्यं न हन्तव्यं यह आश्रम का मृत है, इसे नहीं मारना चाहिए) : (आहुन्तते)।

धातुम् उचिनम्—उचिनम् उचनीयम् देवम्

धान् याग्यम् धान्यम्—प्रवर्णायम्—अव्ययम्,

स्थानुगृजिनम्—स्थानव्यम्—स्थानीयम् स्वेयम्

धातु	तव्य	घनीय	धातु	तव्य	घनीय
आप्	आप्तव्य	आपनीय	वम्	गतव्य	गमनीय
इ	एतव्य	एतनीय	इह	इहीतव्य	इहशीय
अभिः	अभ्येतव्य	अभ्यपनीय	जि	जेतव्य	जयनीय
ईक्ष्	ईक्षितव्य	ईक्षणीय	जि	जेतव्य	जयनीय
कृ	कृतव्य	कृतनीय	जी	जीहितव्य	जीहितनीय
क्री	क्रीतव्य	क्रीतनीय	स्थ	स्थितव्य	स्थानीय
क्षम्	क्षान्तव्य	क्षान्तनीय	दा	दातव्य	दानीय
दृ	दृष्टव्य	दृष्टनीय	पा	पातव्य	पानीय
पठ	पठितव्य	पठनीय	बह	बोद्धव्य	बहनीय
जी	जीतव्य	जीतनीय	लो	लोटव्य	लोटनीय
पत्	पतितव्य	पतनीय	मृ	मृष्टव्य	मृष्टनीय
चर	चरितव्य	चरनीय	भृ	भृष्टव्य	भृष्टनीय
भिक्ष्	भिक्षितव्य	भिक्षणीय	स्था	स्थानव्य	स्थानीय
भज	भजितव्य	भजनीय	स्मृ	स्मृतव्य	स्मृतनीय
धाव	धावितव्य	धावनीय	हन्	हन्तव्य	हन्तनीय
			धृ	धामव्य	धामनीय

संस्कृत में अनुवाक कर्तृ—

१—परदाला में देर में पड़ी पहुँचना चाहिए। २—काजों का आचरण अच्छा होता चाहिए। ३—परिष्कृत करने निर्धार करना चाहिए। ४—मौखिक मंगल।

अनुचित है ४—यैनिकों को देश के लिए प्राण देने चाहिए ५—स्वयं के लिए दूसरों की हानि नहीं करनी चाहिए ६—छात्रों को प्रातः उठकर ईश्वर में प्रार्थना करनी चाहिए ७—स्वच्छ भोजन करना और स्वच्छ जल पीना चाहिए ८—प्रत्येक नागरिक को अपना ईतिहास और भूगोल जानना चाहिए ९—हमें अपना कर्तव्य पालन करना चाहिए १०—शारीरिक पुष्टि को ही उपदेश देना चाहिए ११—दुष्टों के साथ न झगड़ना और न जाना ही चाहिए १२—ताता को अपने अपने कृत्या से सदा निवृत्त करना चाहिए १३—सदा वही काम करना चाहिए जो अपने योग्य हो १४—शारीरिक पुष्टि से भी उपदेश ग्रहण करना चाहिए १५—मरी जाना पर प्राणों का डंका भी शब्द नहीं करना चाहिए १६—निन्दन और अभिप्राय समुच्चों को देश का नहीं हमारा चाहिए १७—मृत्यु में हमें जरा भी नहीं घटना चाहिए १८—मुझे सब जन्मी पण्डित समझना चाहिए १९—दुष्टों को मर्णा नहीं करनी चाहिए २०—विद्यार्थियों को अपने गुरुजनों की सेवा करनी चाहिए ।

### सप्तमं संख्यास

सद्विद्वान् भवतु

महा विरोधवादी सर्वनाम धारि मन्त्री मे विम प्रस्थानों की जोड़कर अन्य  
 साथे भी मिलान साधा है उन्हें मन्त्रित कहने है । मन्त्रित मन्त्र का अर्थ है—  
 'विश्व प्रपत्तिभ्य विना ते प्रपत्तिभ्यो विना विम प्रपत्तिभ्यो के काम में वा  
 सकें जैसे किन अप्रपत्तिभ्य = दैत्य (दिवि ! भ्य), हमसे क्या (मन्त्रित प्रपत्तिभ्य)  
 आदित्य विम के मन्त्रिक का साथ कराया गया है । मन्त्रित प्रपत्तिभ्य की समया  
 अधिक है यहाँ अधिक प्रपत्तिभ्य प्रपत्तिभ्य ही देने है ।

(१) मध्यमस्थम्, यथार्थ (यत्र वा पुत्री) धर्म के शब्द के बाद मरण  
 या प्रथम लगना है और मरण के मरणप्रथम स्वयं ही कृति होनी है (अर्थात्  
 या पुत्री को मरण के बाद को और को मरण, किन्तु मन्त्रिम उ को मरण होता  
 है) यथा रघु का पुत्र राघव वसुदेव का पुत्र बालदेव पाण्डु का पुत्र परमेश्वर  
 कृष्ण का पुत्र कौरव, पृथा (कुन्ती) का पुत्र पार्थ, पुत्र का पुत्र पौत्र धर्म का  
 पुत्र धर्म विष्णु का पुत्र वैष्णव । ये सब अकारण शब्द देवदत्त धर्मों के  
 पौत्रों आदि स्त्रीनिष्ठ तर्क के समान ।

२ (अन इत्र यकामल मल्लो से अण्डा यक्ष में गल्ल के यल में

इत् (इ) प्रत्यय लगता है। शब्द के प्रथम स्वर को वृद्धि हो जाती है और निष्पन्न शब्द हरि की भांति चलता है, यथा—टोला का पुत्र टोलि, शत्रु-  
स्थाना, दक्ष का पुत्र दक्षि, दशरथ का पुत्र दशरथि (राम), धुमित्रा का  
पुत्र धूमित्रि: (मदनमल्ल)।

(३, दिव्यदित्वादित्यपत्सुत्) अथवा अर्थ में दिवि द्यौश्च शब्दों से  
व्यंज्य य प्रत्यय लगता है और शब्द के प्रथम स्वर को वृद्धि हो जाती है  
यथा—दिवे अथवा पुमान् ईश्वर दित्वि का अदित्व, दत्त का वात्स्य  
पञ्जगति का प्राञ्जापत्य, तम का मात्म्य।

(४, स्त्रीभ्यो वृत्) अथवा अर्थ में स्त्रीलिङ्ग शब्दों से वृत् (अथ) प्रत्यय  
लगता है और शब्द के प्रथम स्वर को वृद्धि हो जाती है यथा—अन अथवा  
पुमान् आशेष, कुन्ती का पुत्र कौन्तेय, होपदी का पुत्र होपदेय, मादो का  
मादय, राधा का रोपय, विनता का वैनतेय, गङ्गा का गङ्गायै।

(५, लभे भान् लभे भव) उत्पन्न होना या होना अर्थ में भान् द्यौश्च  
प्रत्यय होते हैं और प्रथम स्वर को वृद्धि हो जाती है। पुत्र शब्दों के भान्  
से यह प्रत्यय जुड़ता है यथा—यद्वरा से उत्पन्न माधुरा कान्त्यपुत्र से पुत्रात्  
कान्त्यपुत्रे, लघुन से उत्पन्न धोचन (माधुरा के निवासों, सिन्धु (समुद्र या  
सिन्धु धरा) से उत्पन्न सैन्धव (नमक या सोरा)।

कुत्र शब्दों से एक प्रत्यय होता है और शब्द के प्रथम स्वर को वृद्धि हो  
जाती है यथा—मासे भव मासिन, वैद्यसिक् वाण्यसिक्। वर्षे भव  
वार्षिक, काल कालिक, तात्कालिक (भारत काशीन एव संयकालीन शब्द  
भी प्रचलित हो गये हैं, पर वे अशुद्ध हैं)।

(६, चिर प्राज्ञ प्रवे०, आदि कृत् शब्दों के अन्त में तत्त प्रत्यय लगाना  
जाता है यथा—मायतनम् चिरन्तनम् प्राज्ञतनम्, ज्ञेतनम् दोषातनम्,  
धर्मेतनम् पूरातनम्, इदानीन्तनम्।

(७, नदधीते नद्वेद) पढ़नेवाला या जाननेवाला (पढ़ानेवाला, अर्थ में  
य या इत् प्रत्यय लगता है, और शब्द के प्रथम स्वर को वृद्धि हो जाती है  
यथा—अथाकस्मै पढ़ने वाला चैषाकरण वेद पढ़ने वाला—वैदिक, पुनराप  
पढ़ने वाला—पौराणिक, नकं पढ़ने वाला—सार्किक, व्याप पढ़ने वाला—  
नैर्वायिक।

७) (तेज प्रोक्षितम्) धूमक रचना के अर्थ में रश्मिता के नाम के बाद य वा ईय प्रत्यय लगते हैं और अन्त के प्रथम स्वर को वृद्धि भी होती है यथा कृषिर्गन्धित शब्द शाल्मीकरित—शाल्मीकीयम् (शाल्यायाम्), धनु रश्मित—मानव पारितोषिकितम् पारितोषिकम् ।

(८) (तन्मयम्) इसका यह तन्मय मूलक शब्द के अन्त में य वा इय प्रत्यय लगते हैं और प्रथम स्वर को वृद्धि हो जाती है यथा शरद मन्मन्धी शरद दिन मन्मन्धी ऐतिह्य अहम् मन्मन्धी आर्त्तिय देवमन्मन्धी देव भुज मन्मन्धी शीतिह्य शीतिकी तन्कमन्मन्धी शीतिक ।

(९) सदस्यास्तस्यामिनिवृत्ति धनुष, शान्ता या धृक् अर्थ में सभी शब्दों के अन्त में धनुष मतः प्रत्यय लगता है यदि शब्द की उपधा या अन्त म य वा या इ होता है तो यर को वः होना है यादृशवायादृश पलायाय वादिभ्यः यथा—वाक् अयं जलानि वासांश्च गुणान् धृक्-गुणवान् यत्न मे गुण-धनवान् कपवान् ज्ञानवान् विद्यावान् लभ्यमान धीमान् वृद्धिमान् यथाम्यान भाग्यवान् गण्यमान् शौर्यवान् ये - धनवन्ती ज्ञानवन्ती गुणवन्ती वादि ।

(१०) अत इतिह्यो) शकारान्त शब्दों में शान्ता या धृक् अर्थ में शब्द के अन्त में इति (इन्) और इत् (इक) प्रत्यय लगते हैं यथा गुणान् धृक्-गुणान् ज्ञानान् धृक्-ज्ञानान् यत्नान् धृक्-यत्नान् लभ्यमानान् धृक्-लभ्यमानान् वृद्धिमान् धृक्-वृद्धिमान् यथाम्यान धृक्-यथाम्यान शौर्यवान् धृक्-शौर्यवान् ये - धनवन्ती ज्ञानवन्ती गुणवन्ती वादि ।

(११) (तन्मय सजात गण्यकारिभ्य इत्यच्) 'धूमक अर्थ में शान्ता आदि तारमा धृक् मन्मन्धी धृक् धृक् उत्कारे प्रचार विचार कुतमान कण्ठक मुसल, मूलक कुम्भ किलबन्ध पल्लव शकट वन मृदा निद्रा चम्बुता गिरासा धवा अत्र धुनक, होह धृक् इय उत्कण्ठा अत्र अर्थात् धमन प्रण गौरव शान्त तन्मय नितक च-त्रक अन्धकार गव मुक्ता इय उत्कण्ठे गवा, कुवल्लव धुध, भीमल, ज्वर गर राश, गङ्गा, कज्जल तृप् कोरक कल्लोत फल कचन भृङ्गार धृक् धृक् धृक् धृक् कदम कन्दल मूला शङ्करा प्रति-विम्ब विमलतन्मय इत्येक प्रत्यय होता, यथा शकटों में इत्यच् इत् प्रत्यय होता है यथा-तारका - इत्यच्-गौरकिन् नभः (तारे निकल आये हैं जिसमें तारा आकाश) विपर्ययत्, अर्द्धित पुनिता कर्मयिता लता) इतिवत् अंकुरित

(१२) (तन्मय भावमन्मन्धी) 'भाव' अर्थात् 'यत्न' अर्थ में शब्द के अन्त



इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिये प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना पड़ेगा—

१३। (गुणवचनवाङ्मनादिभ्यः कर्मणि च) गुणवाची तत्र वाङ्मनादि  
(वाङ्मना चोः घृते ऋदि गन्दा के वाद कय वा श्राव्य एवं मे प्यप्र य)  
प्रत्यय जुहवा है शब्द के प्रथम स्वर का वृद्ध हो जाता है तथा घ का भीप  
हो जाता है यथा—वाङ्मनाभ्य माच कय वा वाङ्मनाभ्य चोयम् घोत्थम् सुवरा  
लोत्थम् सुव-लोत्थम् सुव लोत्थम् चो-चोत्थम् कति कटव्यम् कलख  
घोत्थम् विदुष-वेत्थम् विराट्-वत्थम् निपुण-नेत्थम् दास्य-दायाशम्  
वादि ।

६११ शब्दों के अन्त में स्थित 'य' या 'अ' अक्षरों के स्थान में स्थानांतरण है यथा—  
 अक्षर ग का स्थान अक्षर से आगे करवाना से वाक्य 'अक्षर ग' का स्थान 'अक्षर' से आगे करवाना—यानी 'अक्षर' से आगे 'ग' का स्थान।  
 अक्षर ग का स्थान अक्षर से आगे करवाना से वाक्य 'अक्षर ग' का स्थान 'अक्षर' से आगे करवाना—यानी 'अक्षर' से आगे 'ग' का स्थान।

[illegible]

इस प्रकार, 'तुल्य' शब्द का अर्थ है 'समान'। 'तुल्य' शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में किया जाता है।  
 १. तुल्य शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में किया जाता है।  
 २. तुल्य शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में किया जाता है।  
 ३. तुल्य शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में किया जाता है।  
 ४. तुल्य शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में किया जाता है।  
 ५. तुल्य शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में किया जाता है।  
 ६. तुल्य शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में किया जाता है।  
 ७. तुल्य शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में किया जाता है।  
 ८. तुल्य शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में किया जाता है।  
 ९. तुल्य शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में किया जाता है।  
 १०. तुल्य शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में किया जाता है।

१६ (पञ्चम्यामन्त्रिण) पञ्चम्या विद्यमान के अर्थ में सजा तबलाम, विशेषतः नया परि और अर्थ के बाद लम्बित, (न) पञ्चम्या लम्बित है यथा - गृहान्—गृहान्, कम्पादु—कुम्पादु, इन्, सर्वत धर्मिन एन्ति, सधन्तन मन्त (पुञ्ज में) त्वत् (तुम्हारे) सम्पत्त (इस में) ।

१०) (मन्थम्यास्त्वत्) मन्थमी के स्थान पर 'न्' प्रत्यय होता है यथा—  
गन्मिन्तः यन्, कर्मिन् कृन्, यन्, धन्यन् सचन् तन्, वदन् । परन्तु इदम्  
में 'न्' के स्थान में ह् लगता है यथा इह ।

११) (सर्वेकान्यकियनद कान् टा) सर्वे धादि शब्दों में रूपय धर्म में वा  
प्रथम होता है यथा—सदा सवदा एकदा (एक बार कदा तथा, यदा,  
धन्यदा इदम् का इदानीम् (अब) होता है । किम् वत धादि शब्दों से हि  
प्रथम भी होता है यथा कदा (कहि) तदा (कहि)

१२) (प्रधान्यनन धान्) सननम् शब्दों में प्रकार धर्म में धान् (धा)  
प्रत्यय होता है जैसे यन् प्रकारेण यथा त्रेन प्रधानता तथा सचन् उपमध्या  
सवधा नहीं तो धन्य प्रकार से) इदम् एतन् तथा किम् से 'चा' प्रत्यय  
के स्थान पर यम् यन् लगता है (इदमयम् किमयम्, इथम् यथम्) ।

१३) धाया पीठे धादि शब्दों का एक प्रमाण के लिए पुनः धादि शब्दों के  
बाद प्रथमा पञ्चमी तथा मन्थमी के धा में धातानि धत्ताः प्रत्यय लगता  
है (विधिवत् ७ यथा—पुनः पुनः पुनः वा द्विक् पुनः पुनः पुनः धाया  
पञ्चमाः धाया पञ्चमाः उपरि उपरि उपरि) ।

१४) धाया पञ्चमा तथा मन्थमी के धा में धातन् लगता है यथा—उत्त-  
रेता दक्षिणेन दक्षिणेन पूर्वतः पश्चिमेन तथा धाति तत्ताकर पञ्चमाः, उत्त-  
रेता दक्षिणेन दक्षिणेन शब्द बनते हैं ।

१५) (मन्थमाया विधाया धा) मन्थमायायक शब्दों में प्रकार धर्म में धा  
प्रथम होता है यथा—एकधा, विधा त्रिधा चतुर्धा पञ्चधा बहुधा (पनेक  
बार प्राय मानका बहुधा)

१६) धा वाक तीन बार धादि की भाँति 'क' का धात प्रकट करने के  
लिए मन्थमायायक शब्दों के बाद कृत्वमुच् (कृत्वम्, प्रत्यय लगता है मन्थमाया  
क्रियाभ्यामुक्तिगान् कृत्वमुच्) यथा पञ्चकृत्व मुदृक्ते (पाँच बार खाता है  
पटकृत्व मन्थकृत्व बहुकृत्व बहुधा (बहुत बार) ।

१७) (एकम् मकृच्च) एक बार के धर्म में एक शब्द में भी मुक् प्रत्यय  
लगता है जैसे एक के स्थान में एकम् धातन् हो जाता है जैसे एक +  
मुक् = एकम् ।

१८) (प्रमाणो द्यमन् टान्त्र धातन्) प्रमाण (माप लेना) धर्म में  
शब्द में माप प्रत्यय होता है यथा द्यमन् (माप लेना, कर्मिन्)

(कमर तक) जानूमानम् (घुटने तक) मुष्टिसाक्षम् (मुट्टी भर) ।

(२५) (द्विजजनविमर्शोपपदे तत्त्वतीयमती) जब दो की तुलना की जाती है और उनमें से एक की विशेषता तथा न्यूनता चलाई जाती है तब विशेषण के बाद तत्त्वं (तत्त्व) या ईयम् (ईदम्) शब्द लगता है वथा—एव मांमागु पटुतर परोयान् वा (एव तद्यतर नयोयाम् (महत्त) महत्तर महोयान् ।

(२६ कर्तिशायने तमवितुनी) दो में अधिक में ग एक को विधायता बनाने के लिए तमय तमः वा इत्यम् इव प्रत्यय लगता है वथा—कवीना कविषु या कानिदाम शत्रु स्यान्नामा शत्रवे वा गोषाम वट्टवम पतिशो वा इतका विवृत वर्णन तुलनात्मक विशेषणों (द्वितीय पद्याय के समुप शब्दांत में वेणों) ।

### संस्कृत में समुदाय करो—

१—हमें समाज की दृष्टियों को दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए ।  
२—एक में व्यवस्था का धारण के लिए कठोर प्रवृत्ति की । ३—जब दशावध के पुत्र राम के शत्रु मर्क को सुमित्र के पुत्र मन्थरा व्याकुल हुए कि वे मुझ पर ही परम शरीर बाधें । ४—विभिन्न और पंडित के पुत्रों में बांध मद्रास तथा ५—प्राशस्तिक के धाकड़ों जानने वाले को परितोषाव कहते हैं । ६—बाण काल में था रहे हैं और नदी तक जा रहे हैं । ७—महं मंत्र बुद्धि वृद्धि श्री के पुत्र के पुत्र व । ८—धृति तब वाली में आकर स्वान करी गहर वाली में न जायो । ९—ज्ञानवान् धीरे धनवान् लोभों में रहते धनवान् हैं । १०—पूजने जमाने में लोभ मद्राकारी धीरे धनवान् हैं । ११—मधुर में उपपन्न हुए लोभों को मायुक्त कहते हैं । १२—पुत्रों की कथाओं पर शाश्वत लोभ विवृत तहों करते । १३—वेद मन्त्रवी धारणों का धारण करने चाहिए । १४—लगा की दाता में निरुद्ध नदी जाना चाहिए । १५—महं लोभ धनवान् धीरे ज्ञानवान् भी है ।

## समास प्रकरण

### शुद्ध अभ्यास

कारक प्रकरण में विभक्तियों का प्रयोग बताया गया है, पर कभी कभी विभक्तियों को हटा कर शब्द मिलाने दिये जाने हैं। विभक्तिरहित शब्दों का एक साथ जोड़ना ही 'समास' है।

समास का अर्थ है सभोग सखी-इसे दो दो से अधिक शब्दों को इस प्रकार मिला देने का कि उनके आकार में कुछ कमी हो जाये पर भी अर्थ पूरा पुरा निकल जाय, वधा नराणा पति = नरपति।

यहाँ 'नरपति' का नही अर्थ है जो नराणा पति का है किन्तु दोनों शब्दों को मिला देने से 'नराणाम्' के विभक्ति-सूचक प्रत्यय (नाम्) का लोप हो गया और नरपति शब्द नराणा पति से छूटा हो गया।

जब समास वाले शब्द को तोड़कर पढ़ने पर कष्ट दिया जाता है तब उसे विच्छेद कहते हैं। विच्छेद का अर्थ है खट-खट करना, वधा—सभागा पति का विच्छेद है—'सभागा पति'।

समास के लिए संस्कृत संश्लेषणों से नियम बना दिये हैं। ऐसा नहीं कि जिस शब्द को चाहा उस दूसरे शब्द के साथ मिला दिया।

समास के छः भेद—

- |                              |                            |
|------------------------------|----------------------------|
| १—अध्वयीभाव                  | ४ द्विगु तत्पुरुष का अर्थ। |
| २—तत्पुरुष                   | ५—बहुव्रीहि                |
| ३—कर्मधारय तत्पुरुष का अर्थ। | ६—उत्पु.                   |

### अध्वयीभाव समास

अध्वयीभाव समास में पहला शब्द अव्यय (तत्पुरुष या निपान) रहता है और दूसरा शब्द संज्ञा दोनों मिलकर अध्वय हो जाते हैं। अध्वयीभाव समास वाले शब्दों के रूप नहीं बनने और नपुंसकलिङ्ग के लिये समास में पुल्लिङ्ग का अर्थ प्रधान रहता है, वधा:

अध्वयीभाव के छः भेदों के नाम—

दुम्हो द्विगुपि चाहं मद्भवेत् नित्यमध्वयीभावः।

तत्पुरुष कर्मधारय येनाहं म्यां बहुव्रीहिः।

यथाकामम् कामम् धननिकम् इति यथाकामम् जितलो दच्छा हो  
 उत्तरा। यथिनमननिकम् यथाशक्ति (यन्त्र के अनुसार, कृष्णाय सगीय  
 = उपकारम् (कृष्ण के पास) गी तनीपे = उपगु (साध के पास) यथा  
 मसीपे = उपवत्, निर्विघ्नम् (विघ्न का अभाव) अनुरक्षम् (रक्ष के पोष  
 सन्निहि द्वि के लग्न) यामभूदम् समुद्र तक आंचरुम् घर में, परोक्षम्  
 सीत से गी यमभूद उति दृष्टिमानम् सर्व से बहिर उपभारदम् (राष्ट्र  
 कर्त के पास उपनिगम् (यन्त्रों के पास, अपेक्षम् सफलम् प्राधान्यवृद्धम्  
 अनुकूलम् प्रतिकूलम् आदि ।

### तत्पुत्र्य समास

विन रो या दो से अधिक शब्दों के बीच द्वितीय श्रुतीया चतुर्थी पञ्चमी  
 षष्ठी योग लगनी विधित्वी प्रयोग रहती है इसमें तत्पुत्र्य समास होता है ।  
 उभय उभय पद का एक अर्थ होता है यथा — राज पुत्र्य = राजपुत्र्य  
 एवमे एवमे एवमे एवमे

द्वितीया - रामम् - धर्मिय = रामधर्मित दम् धित = धर्मधित  
 विहमम् धर्मम् = विहमधर्मित । यय धर्म = ययधर्मित । धिक् धर्म = धिक्धर्मित  
 = धिक्धर्मित । धर्मम् धर्म = धर्मधर्मित । यय धर्म = ययधर्मित धर्म

श्रुतीया — सुतेन पुत्र = सुतपुत्र । भद्रसेन हत = भद्रसेनहत अभिनत  
 दक्ष = सन्निहस । द्वितीया वाक्य = द्वितीयान् भद्रसेन सुत = भद्रसेन  
 विद्वत्ता हत = विद्वत्ताहत वाक्का मद्रम = मानुसमद्रम धर्मका कर्तृ =  
 धर्मकर्तृ ।

चतुर्थी — यनय नोय = यनयनोय । भूयय धर्म = भूययधर्म यय हितम्  
 पार्श्वय धर्मय उदम् = यनयधर्म यय धर्मय उदम् = यनयधर्मय धर्मय ।

षष्ठी — योनाय ययम् = योनाययम् । यनय धर्मित = यनयधर्मित ।  
 योगा धर्मन = योगधर्मन । योनाय धर्म = योनायधर्म धर्म

षष्ठी — राज पुत्र्य = राजपुत्र्य । यनयय ययम् = यनयययम् यनयय  
 यय = यनययय । यनयय यय = यनययय । यनयय यनयय = यनययययय  
 धर्म

सप्तमी — युद्ध निपण = युद्धनिपण । यय यय = यनयय यनयय  
 यय = यनययय । यय यय = यनययय । यय यय = यनययययय

### संज्ञासन्त

हव तत्पुत्र्य समास के अन्त में राजन् यदन् या सन्ति सन्त आदि नव



उत्तम समाधान इव नमका है और इतका रूप राज यह तथा नम हो जाता है यथा महान् राजा = महाराज । उत्तमम् यह = उत्तमाह । हृष्टात्म्य समा = कृत्यात्म्य ।

यह सब एकदलीमुक्तके शब्द सत्यात एवं पुण्य के साथ राशि का समास होने पर समाधानत इस प्रयोग नमका है । संख्या और शब्दय के साथ भी ऐसा ही है जैसे - सत्यव राशिवत् महाराज सर्वराज सदापातराज पुण्याज ।

### कर्मधारय समास

( नन्तुः सधानार्थकरण कर्मधारय ) विशेषण और विशेष्य का जो समास होता है उसे कर्मधारय कहते हैं इसमें विशेषण पूर्व में रहता है यथा - कृषित पक्ष = कृषक पक्ष सादमा कृषित पक्ष = कृषक ( भुग विद्याधि । दीपम् नयनम् = दीपनयनम् नाभम् उत्पलम् = नाभालयम् । सुन्दर पक्ष = सुन्दरपक्ष । मृगत वायक = भूमिवायक । सुन्दरी मारी = सुन्दरमारी महान् देव = महादेव । मरुत कलम् = महाकलम् द पक्षेव समुद्र = द पक्षेव समुद्र नममय पक्षम् = नममयपक्षम् । दक्ष इव श्याम = दक्ष-इव । मन्मथोदयि कालम् = मन्मथोदयकालम् । पृथ्व्या इव = पृथ्व-इव नरशायन शयनान्तर्ग ममिह । कण्डमरुत मृगम् = कण्डमृगम् नमनकरगम् शशि ।

### द्विगु समास

समाधान द्विगु यदि कर्मधारय समास के पूर्व का संख्यावाचक शब्द हो तो उसे द्विगु कहते हैं यथा-

समाहार में - पञ्चवत् शब्द समाहार = पञ्चवत् पञ्चवत् शब्दों का समाहार = पञ्चवत्पक्षम् । त्रयोमां वाक्य । समाहार = त्रयोमां । त्रयोमां भुवनानां समाहार = त्रिभुवनम् । अतस्तम् वेदान्त । समाहार = अतस्तम् । महिनाय मे - पञ्चवत् शब्द दोन = पञ्चवत् । पञ्चवत् तपस्वम् सम्भूत = पञ्चवत्पक्षम् । उत्तरपक्ष मे - पञ्चवत् शब्द प्रसारणसम्भूत = पञ्चवत्पक्षप्रसारण द्वाभ्यां मासाभ्यां जातः = द्विमासजातः ।

समाहार अर्थ में समास में एकवचन ही रहता है । समास होने पर सर्व सकृन्त्र शब्द वने जाते हैं यथा त्रिभुवनम् चतुर्गम् किन्तु भाषाशास्त्र या पद या न द्विगु स्वीकृति से भी होते हैं पञ्चलक्ष्मी पञ्चवत्पक्ष पञ्चवत्पक्षम्

( अथपदाथप्रप न वदन्तीति ) जिस समास में अन्य पद के अर्थ की अपेक्षा

हो सर्वात् जी-जी पद समस्त हो चं घटने शब्द का बोध कराने के साथ-साथ अन्य किसी व्यक्ति या वस्तु का बोध कराते हुए विशेषण की तरह काम करने हो तो उसे वतुवोहि समाम कहते हैं—

अहं च स्वस्व राजन् लोकनाथानुभावाय ।

वतुवोहिहं राजन् पट्टीतत्पुरुषां भवान् ॥

(राजन् सम दोनों लोकनाथ है । मैं वतुवोहि समाम है और छाप पट्टी तत्पुरुष हैं सर्वात् लोकनाथ—लोक प्रभु नाथ। पालका यस्य स) मेरा सभी पोषण करने है और छाप समार भर के स्वामी है । लोकनाथ नाथ यह लोकनाथ' इस शब्द का विशेष दो प्रकार से हुआ है

वतुवोहि के चार भेद हैं—(१) समानाधिकरण (२) तुल्ययोग, (३) व्यधिकरण और (४) व्यतिहार

१—समानाधिकरण—जहाँ दोनों या सभी पदों को समान विभक्ति हो, यथा—निर्गतं यमं यस्मात् स = निर्गतयम (यस्य) । इति शब्दो मत्त स = इतिशब्दो वत्त यत्तं स = इतिशब्द (विभु) । आरुह्य कवि ग म = आरुह्यकवि (कृष्ण) । पवित्रं पर्वं यस्मात् स = पवित्रपर्व (पृथु) । महान् प्राशयो यस्य स = प्राशय (मनुज), । मित्रतां प्रापो यस्मिन् स = मित्रतां पम (सर) ।

२—तुल्ययोग—इसमें यह शब्द का तुल्यवाच्य पद में समाम होता है यथा—बाल्यं मत्त = बाल्यवत् या महारालय । अनुजेन मत्त = मानुज या महानुज । वितपेन मत्त = विधिनयम् । इसी प्रकार मानुजोधम् साहज्ये प्राप्ति ।

३—व्यधिकरण जिसमें भिन्न विभक्तिवाले शब्दों का समाम हो यथा—चक्रं पागरी यस्य स = चक्रपागरी । वस्तुं दास्यो यस्य स = वस्तुदास्यो । कुम्भान् जन्य यस्य स = कुम्भजन्या इसी प्रकार चन्द्रोच्चर चन्द्रकान्ति प्रादि ।

४—व्यतिहार—यत्र समाम तुल्यवाच्य और अन्तर्धन्य शब्दों के साथ होता है सोन पद का शीघ्रक है यथा—केशेषु केशेषु मूलीस्वा इदं पुटं प्रवृत्तम् = केशाकेशि । दण्डं दण्डं प्रहस्येदं पुटं प्रवृत्तम् = दण्डादब्धि मृष्टिभिः मृष्टिभिः प्रहस्येदं पुटं प्रवृत्तम् = मुष्टामृष्टि ।

विशेष—समस्त पद का प्रथम शब्द यदि पुल्लिङ्ग स चना हुआ स्त्रीलिङ्ग हो तो समाम होन पर पुल्लिङ्ग रूप ही जाना है यथा—रूपवती प्रापो यस्य

स अपवद्भावे (स्वयन्वीमावे नही) । कहीं-कहीं समस्त शब्द के साथ कम् (क), प्रत्यय लगता है यथा— ईश्वर कृतां यस्य स ईश्वरकर्तृक

### इन्द्र समास

(इन्द्रस्यपदार्थप्रधानो इन्द्र) । जब दा या दां से अधिक संज्ञाएँ इस तरह जुड़ी रहती हैं कि उनके बीच में क सिपा रह जब उनमें इन्द्र समास होता है । इन्द्र समास में दोनो पदों के अर्थ प्रधान रहते हैं । इन्द्रसमास तीन प्रकार का है— (१) इन्द्रेतर ०, समाहार (३) एकशेष

१—इसरेतर—इसमें उल्लेख की सख्या के अनुसार घन्त में बजस होता है योः प्रत्येक शब्द के बाद विधत्त में क लगता है यथा—दिव्यं च धामिनी च दिव्याग्निर्गो कर्गश्च धूम च फल च = वातमुत्पलानि । माता च पिता च = मातापितरौ । सुपुत्रश्च चतुर्मासश्च = सुपुत्रचतुस्रो ।

२—समाहार—इसमें घन्त पदों के समाहार (एकत्र उपस्थिति) का बोध होता है । समस्त पद से नगमकनिष्ठ एकवचन होता है यथा—गङ्गा च गोदा च गङ्गा समाहार = पाणिनादम् । मेरी च चतुर्दश घन्तों समाहार = धेरीपत्रम् । इतिनश्च चतुर्दश पद समाहार = हास्यम् । मधुरा च पाटलिपुत्रश्च घन्तयोः समाहार = मधुरापाटलिपुत्रम् । पूका च निजा च (गुर्) श्रीर श्रीश्च घन्तयोः समाहार = पूकान्निधम् । शिथि च पत च घन्तयोः समाहार = शिथिलम् । गीश्च महिषो च गोमहिषम् चतुर्दश दिवो च = चतुर्दशम् । सर्पश्च नकुलश्च = सर्पनकुलम् । अहिश्च नकुलश्च सर्पनकुलम् । अहश्च रात्रिश्च = अहोरात्रम् । किन्तु संज्ञाश्च भी है ।

वृक्ष मृग तृण घाम्य, व्यञ्जन गन्ध घाति घम के वाचक शब्दों का घिकल्प में समाहार इन्द्र होता है । यथा—प्लवन्वशीघ्रम् कसन्त्यशोषां रुक्मधनम्, संपथना । कुंकाणम् कुम्काणां । वीहियम् वीहियत् । लघिपनम् लघिपत् । गोमहिषम् गोमहिषा । गुकडकम् गुरुकका । अश्ववदम् अश्ववदवो आदि ।

३—एकशेष—एक विभक्ति वाले घन्त समस्त स्यानाकार पदों में नही एक ही पद शेष रह जाय और अर्थ के अनुसार उसमें द्विवचन या बहुवचन हो इसी एकशेष समास होता है । यथा—म च म च = नी । वृक्षश्च वृक्षश्च वृक्षश्च = वृक्षा । वाद्यगणश्च वाद्यगोत्री च = वाद्यगोत्री इमी च हस्तश्च = हस्तौ पुत्रश्च दुहिता च = पुत्री, माता च पिता च = पितरौ श्वशुरश्च श्वशुरश्च = श्वशुरौ आदि ।

जब उद्देश्य के लिये प्रथम मध्यम धीरे उत्तम पुरुष में से दो या तीन एकत्र हो जाते हैं तब क्रिया का रूप इस प्रकार होता है—

१. प्रथम पुरुष धीरे प्रथम पुरुष के वक्तु वाचक पदों के साथ क्रिया प्रथम पुरुष की ही होती धीरे बचन बनाता है। सामूहिक मध्यम के अनुसार यथा—  
रमेश गोपाल धीरे मुरझा पड़ते हैं रमेश गोपाल मुरझाये पड़ते हैं देव सुशीला के पढ़ते ।

२. प्रथम पुरुष धीरे मध्यम पुरुष के वक्तु वाचक पदों के साथ क्रिया मध्यम पुरुष की ही होती धीरे बचन बनाता है। सामूहिक मध्यम के अनुसार यथा—  
वह धीरे तु निश्चय है, मैं जन्म के निश्चय । सच सुख के निश्चय ।

३. धीरे पुरुष के साथ जब उत्तम पुरुष का वक्तु वाचक पद होता है तब क्रिया उत्तम पुरुष की ही रहती धीरे बचन बनाता है। सामूहिक मध्यम के अनुसार यथा—  
तु धीरे से पढ़ते हैं । रमेश के पढ़ाये मैं पढ़ाये न पढ़ाये धीरे पढ़ाये के पढ़ाये ।

### अर्थ समाम

नमः समाम—यही अर्थ कावे नम की तरह पुराने शब्दों के साथ समाम होता है जब उन नम समाम कहते हैं—  
नमः समाम लवण पत्र के साथ होता है छात्रदल गये रहते पर नम की ध धीरे स्वर धरे होने पर 'नम' हो जाता है यथा न प्रिय = धीरे प्रिय न मृत्यु = मृत्यु । न उपकार = अनुपकार आदि

उपपद संयुक्त—जब तत्पुरुष का प्रथम पद कोई वक्ता या धर्म्य है जिसके न रहने से इस समाम के द्वितीय शब्द का वह रूप नहीं रह सकता तब वह उपपद कहलाता है यथा—  
काम वर्यानीन कुम्भकार शम्भकार स्वर्णकार सामान धनद उत्तमकार । समाम न होने पर उच्चे कहा जा सकता है ।

प्रथमपदलोपी समाम—यह अपभ्रंश या बहुव्रीहि में होता है । धर्म-प्राप्त्य में यथा—  
मिदं विज्ञितम् प्राप्तम् = विज्ञानम् । संवत्सरको ब्राह्मण = संवत्सराद्यम् । बहवर्षि में—  
नन्द इव यानमं यस्या सा = नन्दनना कण्ठ स्थित कालो यस्या न = नन्दनान् ।

संपूर्णसंकारि तत्पुरुष—यह भी तत्पुरुष समाम है जिनमें विशेषी का

उत्सृज्यते हे उन्नं मय्यव्ययकारि तत्पुरुष प्रह्न है यथा-व्यसक मयू = मयू  
व्यसक धूर्त मयू । इही व्यसक शब्द पठन घाना नार्हिए घा घीन मयूर  
मयूनाल इसी प्रकार अर्था राजा = राजान्तरम् अर्था ग्राम राजान्तरम्,  
उदक न अर्थाक लेति = उदकान्तरम् ।

सन्तुष्ट सन्तुष्ट—जिस मगध में जीवों की चिन्ता का बोध न हुआ था।  
मनेसाकुशमं शोभमानपदम् परमैषधम् देवानां प्रियं यत्नं। यन्मयाहं मृत्यु  
या इहम् कुर्यादगतं प्रविष्टिः काचः सुखं यन्मयाहं मृत्यु  
सहस्रम् (कमल केचन पक्षी सिद्ध) सति ।

संयुक्त में सम्मिलित रहो. -

[illegible]



### स्त्रीप्रत्यय प्रकरण

वर्णित शब्दों को स्वीकृत करने के लिए जिन प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है उन्हें स्वीकृत्य कहते हैं। मुख्य स्वीकृत्य टाण्, आ, और औप हैं।

२- एक भवमान लक्ष्य के लिए 'सा' प्रत्यय होने में कर्ता के पूर्व अकार के स्थान में टकार होता है यथा गायक-वायिका आधक-साधिका गायक साधिका दोषक-साधिका आदि ।

४ (१) प्रातिपदिक (२) पुष्ययोगः ) अतिवाहक प्रकाशान्त मन्त्रों से स्वीकृत में  
 द्वीप '५' प्रत्यय होता है। यथा सिंह सिंही, मृगी, स्थायी मन्त्रकी मानुषी  
 इत्यादि गयी, महिषी, शूकरी गदगरी चूगली चिह्नली हरी, धारणी आदि ।

विशेष—स्वस्व आदि शब्दों से स्वीनित्त बोधक डीप् प्रत्यय नहीं होता है।  
यथा—स्वस्व माता दुहिता, ननान्दा तिस्र, जनस

नकारान्त शब्द यथा—मानिन् मानिनी दण्डित् दण्डिनी भृश-भृशनी, मानिनी, कामिनी मुनिनी, मनीहारिणी, मयन्निनी, माधकारिणी

विशेषः स्त्रीलिङ्ग में संख्यावाचक नान्त शब्दों से तथा मन् भागान्त शब्दों से डीप प्रत्यय नहीं होता यथा पञ्च, सप्त, अष्ट तथा दश तथा सोमा सुहमा अन्तिहिमा आदि ।

६—यस्य प्रथमे बध्म्यकारम् इति वाक्यम्) प्रथम बध्म्यका का बोध करानेवाये शब्दों में डीप (ई) प्रत्यय लगना है यथा कुमाः कुमारी कियोरी बगुटी । किन्तु बृहदा स्थविरा

यहां अन्तिम बध्म्यका का बोध होने में डीप प्रत्यय नहीं हुआ

७—उगितश्च त्रिमये उकार घोर चकार का बोध हो जाता है मत्प, मत्पु, मत्पु, मत्पु इत्येव प्रत्ययों में बने हुए शब्दों में स्त्रीविश में ईकार होता है जैसे भवः-भवती श्रीमन्-श्रीमती जानन्-जानती पृच्छन्-पृच्छती आदि ।

८—आदि दिवादि श्रोत्र भृशविश्राम ही धातुओं में तथा शिवागत में शतृ प्रत्यय करने पर जो शब्द बनने हैं उन शब्दों में स्त्रीवाचक (ई) प्रत्यय करने पर न के पूर्व न लग जाता है यथा—(मच्छन्) मच्छन्ती (वटन्) वटन्ती वीर्यन् वीर्यन्ती (वश्यन् वश्यन्ती) (क्षिन्त्यन्) क्षिन्त्यन्ती (भक्ष-यन् भक्षयन्ती) (वज्रयन्) वज्रयन्ती (काश्यन्) काश्यन्ती आदि ।

९—तुदादिवागीय धातुओं में घोर छटादितलोप धाकावाल् धातुओं में शतृ प्रत्यय करने पर जो शब्द बनने हैं उनमें स्त्रीलिङ्ग में ई प्रत्यय करने पर विचलन म न के पूर्व न लगता है यथा तुदादि—(उच्छन्) उच्छन्ती उच्छन्ती । पृच्छन् पृच्छन्ती पृच्छन्ती । (शृण्वन्) शृण्वन्ती, शृण्वती । धदादि० (धातु धातु धातु) धातु धातु धातु । (आः) आन्ती आन्ती । इनके रूप नदी शब्द की भाँति चलते हैं,

१०—टकारिः श्रोत्र चकारन् प्रत्यावा म बने हुए शब्द में स्त्रीलिङ्ग में ई होता है (टिन्) यथा जान जानी च्युट चमन चमकी प्रचकरी निशा-चरी भयङ्करी (२) वयामया (वयट्) पित्र-प्रापिक प्रापिकी लौकिक-लोकिनी चिकित्ता मानवी मैथिनी, धाकती पोषी पर्य ।

११—(स्वप्नान्नापमन्त्रेता०) चट्चोहि मया म अवयववाचक पका-रान्त शब्दों में स्त्रीलिङ्ग में विकल्प में ई होता है यथा चन्द्रमुखी चन्द्र

मुखा । मुकेरी मुकेगा । कुशाज्ञी, कुशाज्ञा । विम्बोप्यो विम्बोप्टा ।

१२—(आतिरह्यो०) आतिवाचक उकारान्त शब्दों से स्त्रीलिङ्ग में डीप् 'ई' लगता है यथा—आह्वलस्य स्त्री आह्वली शूद्रो गोपी आदि । पालक शब्द अन्त में होने से 'ई' नहीं होता, यथा—अपारिहृत पशुपालिका आदि ।

१३—(इन्द्रवज्रसम्बन्ध०) जाया शब्द में इन्द्र वज्रण भव नाम वज्र मृद, आकाश और बहान में डीप् लगाने से पूर्व धातुक (आन् जोड़ दिया जाता है यथा—इन्द्रस्य जाया इन्द्राश्री वज्रगानी भवानो शवशिरी रुद्राश्री मृगानी वाकाशानी और इन्द्राश्री (बहान् नाम के 'न्' का लोप हो जाता है )

१४—(बहुविध्यश्च) बहुविध मल के बहु, पद्धति अर्थवाले अति, कपि मष्टि मुनि आदि शब्दों में स्त्रीलिङ्ग में विकल्प से डीप् 'ई' प्रत्यय होता है जैसे—बहु-बहो बहु राज्ञि राजी । योगि योगी राज्ञि राजी भूमि भूमी आदि । किन्तु अथवास्त से नहीं होता, जैसे—मति मति निगति आदि ।

१५—(घोरो गुणवचनान्) गुणवाचक उकारान्त शब्द में स्त्रीलिङ्ग में विकल्प से डीप् 'ई' प्रत्यय लगता है, यथा मृदो मृदु, पट्वी पटु, मरुधी, साधु । भूर्धो भूत आदि ।

### स्त्रीवचनानि ज्ञेय

पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
शवय	शवयी	मातुन	मातुलानी
हय	हयी		मातुनी
मत्स्य	मत्सी	यव (चिरात जो)	यवानी
धनुष्य	धनुषी	यवन (निषि)	यवनानी
शूद्र (जाति)	शूद्रा	यवन (स्त्री)	यवनी
.. (पत्नी)	शूद्रे	अत्रिय (जाति)	अत्रिया
			अत्रियाशी
राजन्	राज्ञी	.. (पत्नी)	राज्ञी
उपाध्याय (पत्नी)	उपाध्यायानी	उपाध्याय (अध्यायिका)	उपाध्यायी
	उपाध्यायी		उपाध्याया

धुवन	{ धुवनी	आचार्य (पाठिका)	पान्धार्य
'	{ धुवनी	आचार्य (पत्नी)	आचार्यी
	{ धुनी	हियम् (विस्तार अर्थ)	हिमानी
धन	धुनी	अरन्धम्	अरन्धानी
		सखि	सखी
मधवत्	{ मधनी	कुरु	कुरु
	{ मधवती	अधुर	अधू
धाम् पूर्व)	धारी	पर्य	{ धारिणी
अन्यम् पश्चिम)	अतीची		{ धारी
अन्यम् (दक्षिण)	अधीची	(स्वादिनी, बंद्या)	धारी
सन्धिवत्	सन्धुवी	विद्वन्	विद्वपी
सूर्य	सूर्या (दक्षिण)	आनृध	आनृपी
सूर्य	सूरी (पूर्व)	पति	पत्नी

### संस्कृत में अनुवाद करें

१ छोटी उम्र वाली बालिका जेल रही है । २ इतनी पत्नी कमर बानी रही घेरे देखने से पहले मही पायी । ३ पति के बिछोड़ में शिवाय करती हुई बसवती ने एक अन्नगर देखा । ४ वह कुम्हार की स्त्री बरे बेच रही है । ५ शर्मा पढ़ी किन्हीं स्त्री की । ६ धामा की स्त्री ने मुझ व्यास दूसार किया । ७ धर्म गुरु की स्त्री अन्धे लक्ष्मणों बानी है । ८ आचार्य की स्त्री आचार्यों को पढ़ा रही है । ९ पार्वती ने कोर तप करके विद्व की प्रसन्न किया । १० उपाध्याय की स्त्री माता के मरने हाँता है । ११ अधिराम का विवाह पत्नी के समान मुझ बानी भोगा से हुआ । १२ उस लक्ष्मण बाली ने अपने कौशल से दवाकी को प्रसन्न कर दिया ।

# संस्कृत व्यावहारिक शब्द

रत्नम प्रम्यास

वार्तिवाचक शब्द

वर्षी — वर्षिक म्यापति तत्काल  
किमान — कृषीकाम, कृषक  
नोकर — भूष्य श्रेष्ठ किरा  
पहोमी — प्रतिवेशी (१०)  
किमानही — पाशीशी (१०)  
मुहार — स्वतंत्रकार  
लोहार — मोहरकार  
मासी — मासाकार  
काशीगर — शिन्धी काक  
धोबी — राजक  
धुलाहा — तन्नुबाय  
मधारी — मेधजानिक धातिमुष्टिक  
फावडा — धानिबन्ध  
मजदूर — भारवाह कर्मकर  
मजदूरी — भूति (बाय०)  
दजी — शीषिक  
मर्ही — मर्पित, शीरिक  
रंगरेज — रजक  
शिकारी — व्याध  
मल्लाह — कण्ठमार नाविक कंचत  
चप्पू — अस्त्रिक  
चित्र बनाने वाला — चित्रकार  
तेली — तेलकार, तैलिक

बुधारी — घृतकार  
मेहनत — श्रमक मजदूर  
काह — सम्पाजनी  
बाक — बाक  
वर्हमी — वेमानयनयन्त्रम्  
कहार — जलवाह  
कमार्थ — मार्तिक, मासविकेता  
कमान — शीषिक मुगाशीशी  
मगब — मुरा मदिरा, मद्यम्  
मराबदार — मुण्डावानम्  
बेत — बघ कंदार क्षेत्रम्  
रह — लिपता  
टोकरा — कण्ठोस  
पेटी — पेटी पेटिका, मञ्जूपा  
प्याला — पथक पानपात्रम्  
बासुची — बंसी, बैणु  
हम्पान — प्रतीहार  
जोना — काभन  
पट्ट — तुन्दिल  
भुनन वाला — भूषक  
भाड — भूजनयन्त्रम्  
मल्टी करने वाला — निपक सुधा-  
जीवी



रुग—वस्त्रक

सुडिहार—काचक धुआँविकता (प.०)

मितादिपा—वैशिक वीणावादकः

सटिका—भाकाविक्रान्त

शशावाला—शम्भुसम्बन्धक

शंभा बनाने वाला—ककुनकून

चमार—चमकार

कुम्हार—कुम्भकार कुन्दा

कागल—कुत्तिलव

कान की धँस निकालने वाला—कलुं

मननिम्माक

मृदङ्ग—मृदङ्ग, मृग

शोण—श्रावक

श्राव—श्रावक

बाजा—वादनम् वाद्यम्

बांस—धानकः, पट्टः

चकली (चशद)—चरट्ट

नगारा—इन्दुभि

दिहोरा पीटने का बाजा—डिण्डिम

कंधी—कलगी खेदनी

प्याऊ—प्या गानीयशानिका

साग—ककष

बाद (छुगे छुगिका) क्षमिपुत्री कलरिका

मूर्द—मूर्ध्नि सेधनी

मूर्द का बतम—मूर्ध्निमं मृगकमं

गगती—दायम्

गगता—मृगम्

खाव—मृगम्

### संस्कृत में प्रयुक्त शब्दोः

यह खिदाड़ी मनुका पढ़ने में भी प्रयुक्त रहा है । २ कलगीर में कितनी सधरी पेरी बनाई । ३ इसका गठनी गठितिक्रिय है कभी कमर नहीं करता । ४ गगता दृष्टान्त रहने पर भी गगता गगता है, बात 'पद्यती' कहलाता है । ५ कुम्हार बाजे में मिट्टी के बरतन पकाता है । ६ मोहार बाद कंधी, मूर्द आता है । ७ चमार समर में बना मोका है । (सीधनि) ८ कुम्हार इस से साफ़ धुवा रहता है । ९ जूने में चाना रत के साथ चना चुन रहा है । १० राज ने आज इसमें सकात में मकली की । ११ सटिक मुचह धीरे शाम संरकाक्षी बँचता है । १२ कल मरकार ने दिहोरा पिटवाया कि पीछे पाठ वजे के आद न पुम । १३ गांध का कलारपों के हाथ नहीं खेचना चाहिए । १४ इस पदशाखा में उता गगती धिक्कर है । १५ विषाह धारि उतावों में गीतों में कहान बहंगियों से गानी लाते हैं ।

## एकादश सम्प्रसार

## वस्त्रों के नाम

कई कपडा] कार्पास वृत्तम्  
 कपडा—वस्त्रम्, वस्त्रम्  
 पगड़ी—शिरस्त्रम् उपग्रीवम्  
 टोपी—शिरस्कम्, शिरस्त्राखम्  
 कुरता—कञ्चुक निघांत  
 दुपट्टा—उत्तरीयम्  
 धोती—धोतीवस्त्रम्  
 धोती—धोतीवस्त्रम्  
 गलबन्ध—गलबन्धनायुक्तम्  
 कपान्त—कञ्चुक्त्रम्  
 कंबल—कंबल  
 लोई—रामक  
 रजार्थ—तुलिका, मोजार  
 शाही—शाटिका  
 रेशमी वस्त्र—कोमेयम्, क्षीयम्, तुल्यम्

पगडा—वस्त्रिका, शिरस्करीणी  
 कनात—कण्ठपट, धपटी  
 पाएजामा—पादयात्र  
 म्हाउत्र—कचुतिका  
 मोजा—पादपाशम्  
 तकिया—उपधातम्  
 बादर (हिस्साने की) शय्यान्धदानम्  
 प्रच्छद

खेटर—ऊर्णवस्त्रम्  
 बिस्तीमा—शय्या  
 कपारबन्द—रतना परिकर, कटिसूत्रम्  
 पटी—धनगुच्छनम्  
 सूता—उपानम् (वस्त्रम्)  
 जाकट—धनगुच्छनम्  
 धनगुच्छा—पापमाजिनी

## पञ्चर की वस्तुओं के नाम

सितूर—सितूरम्  
 बिन्दी—बिन्दु (पुं०)  
 साबुन—केतिल  
 काजल—धनम्, कज्जलम्  
 इत्र—गन्धनम्  
 मंगूठी—मंगुलीयकम्

झोहने की बादर—उत्तरीयाधल  
 आचना—वपणा मुकुर आदश  
 गुश—लोममयी भाजनी  
 कंधी—कचुतिका प्रसाधनी  
 दिन कुरेटने की सूई—दल्लहोधनी सूची  
 मज्जल टोका—सलाटिका

## वस्त्रों के नाम

गहना—अनकुर धामगम्भम्  
 कण्ठा—कन्निका कण्ठाभरणम्  
 धमूठी—धमूलीयकम्, ऊर्मिका  
 माला—ललान्तिका, लम्बनम्, श्रक्

करवनी—मेखना वास्त्र  
 रमूनी—वैवेयकम्  
 टिकुमो—सलाटलहार  
 कंवना—कचुल, कचुलम्

बूढ़ी—काचनन्दी नाम्  
बाहुबन्ध—केयूरम्, बाहुबन्धम्  
कानफूल—कान्फूलः कलिका  
पट्टेनी—घावापकः, कटक  
मुवाक—नासाभरणम्

नव—नासाभरणम्  
पावेब—(नीक) नूपुर  
शमी—कुण्डलम्  
वेणी—स्त्रीमस्तकाभरणम्

संस्कृत में अनुवाद करो—

१ पक्षी मिली स्थिति रहने परस्य नहीं करती । २ बाहुकण्ड इष, तेल, साधुन के बिना पुरा साधारण नहीं होता । ३ साधुन से कपड़े साफ करने । ४ बाहुन की स्थिति नव दुसाक से बड़ी पूर्ण करती है । ५ बूढ़ी पशुनने का रिवाज बाहर घोर बान सभी जनक है । ६ विवाह से कंकण पहनाया जाता है । ७ कपड़ी से बाल साफ रखने चाहिये । ८ छोड़ने विराशन की चाहते बिल-कुल साफ होनी चाहिये । ९ मिन्दुर मुहाम को एक मित्राणी है । १० अमाल से हाथ मूँह साफ रखने चाहिये । ११ कुरता, कोट पतनून पुगले जमाने को कपड़े नहीं है । १२ अमल्य कानियां से सहनी का बहुत प्रकार है

### पशुओं के नाम

हाथी—गज करी दन्ती  
गेर—सिंह निही  
शाय—अघाघ आघात्री  
भाबू—कछा भन्तुक  
गैजा—गजक  
गुआर—शकर  
भेड़िया—बक  
गीदड़—अगाल केद  
सुरगण—शराक  
मंदर—वायर कपि, आलाभूम  
नेवला—नकुप  
गाय—घो  
बैल—वृषभ

पोदा—घरघ घंटक  
झें—उर  
नया—गदंभ  
घेमे पतिव मतिपी  
कुत्ता—कुक्कुर इवा  
कुत्ती—धुनी  
बिल्ली—घात्ररी  
अकरा-री—अवः, अजा  
हिरण—मृग  
हिरण का चच्चा—हिरणक  
भेड़—एवका  
चूहा चूहे—मूषिक मूषिका  
बोह—गोघा

## वर्णियों के भाव

कोमल कोकिलः

मोट—मयूर

हंस हंस

तोता शुक्र

मैना—सारिका

पपीहा—वातक

चकवा चकवाक

वीर—निनिरि

बटेरा भाव

बकोर—बकोर

ममोया—लज्जन

रबुतर—कपत

वत्तक—वत्तक, वर्णिका

टिटोहर टिट्टिम टिट्टी

चीन चिल्ल चिल्ला

गोवा—काक

गुर्गा—कुक्कुट कुक्कुटी

शिहिया—बटक बटका

गोष—गृध्र

बबया—बक

उरुव—उरुक

बाब—बाप

## पशु-वर्णियों की बोलियाँ

तिह गहगहने है—गिरा गहगहने गहगहने

हाथी कियारने है—गगा गहगहने

गोरे हिनहिनने है—गगवा गहगहने

गाँ हीगने है—गर्दभा गहगहने

गोरे रंगगती है—गाव रंगगहने

गंम गंमगी है—गहगहने गहगहने

गीरड गोलने है—कोटार कोशनि

बिल्लियाँ घगगहने करती है—बिल्ला

भीबनि

मेढक टगते है—दुदंग गहगहने

गाँव पीकारने है—गगो काकगहने

शिहिया गू गू करती है—पक्षिण

भीभने

कोब काव काव करते है—काका

कायनि

कुन पीकने है—दबाल कुककनि

शिहिया गुरनि है—गृध्रा रंगनि

## संस्कृत में धनुषाद करो—

१ शेर गरजता था और धन पूँज उठता था । २ गीदड़ों की चोखे सुनकर अन्य गीदड़ भी चीखने लगे । ३ गीदड़ अपने बच्चों को मिलने के लिए रगता है । ४ शेर और हाथी का स्वाभाविक वैर है । ५ लोग गाँव और मैना का बाब से पालते हैं । ६ कोवा एक ऐसा पक्षी है जिसके लिए किसी के दिल में स्थान नहीं । ७ बंदर और भालू का नाच बच्चों को बहुत अच्छा

समता है ॥ ८ चुहे घीर बिल्ली का महल घीर है । ९ जानबरो में भूगाल घोर पक्षियों में कोषा बहुत है । १० कहते हैं कि बकौर बन्द की किरगो का मान नगता है । ११ जिन्हे बाँझों की सवारी करनी नहीं पानी से बंधे की सवारी करते हैं । १२ बाज एक सिकारी पक्षी है । १३ रेगिस्तान में ऊँट का बड़ा महत्त्व है । १४ गेंडे की माग्ना बहुत कठिन है । १५ सैटक टगति रहते हैं, किन्तु माग्ने पानी पीनी ही है ।

### त्रयोवक्ष अभ्यास

#### पुनः क्रियावाचक लब्ध (तत्पञ्चकानि)

उठना—उत्थानम्	हँसना—हसनम्
बैठना—उपवेशनम्	रोना—रोदनम् वा कण्ठिनम्
सोना—शयनम्	पीना—पानम्
पागना—आगमनम्	बाना—बाधनम्
बोसना—भाषणम्	नोचना—नोचनम्
घोसा देना—प्रकाशणम्	मापना—मानम्
गरजना—गजनम्	इकटठा करना—संग्रहणम्
छुना—स्पर्शनम्	बिखरना—बिखरणम्
जानना—ज्ञानम्	बाँधना—बन्धनम्
शेना—शानम्	छोटना—घोषनम् विगजनम्
तेना—धावनम्	सोलना—उद्घाटनम्
सूयना—परिधमनम्	रचना—रचनम्
सूचना—अन्वेषणम्	चुनना—चयनम्
मिश्रणना—मिश्रणम्	फेंकना—प्रक्षेपणम्
अबना—अवगमम्	ऊपर फेंकना—उत्क्षेपणम्
बहना—प्रवाहणम्	नीचे फेंकना—अपक्षेपणम्
उतरना—अवरोहणम्	पूम जाना—विम्वरणम्
हुबकी लगाना—निमज्जनम्	श्रीकना—दिधानम्
पानी से बाहर धाना—उन्मज्जनम्	फेलना—प्रसारणम्
भोना—प्रक्षयनम्	भुतना—भजनम्
निचोहना—निरीक्षणम्	तोहना—रोदनम्



पीमना—पेयनम्  
 धिगता—ध्वंशम्  
 सोपना—नेपथ्यम्  
 द्योपना—आवागमम्  
 ठगना—व्ययम्  
 पोंछना—पोंछनम्  
 सूँघना—गन्धनम्  
 चाटना—लेहनम्  
 माचना—मलनम्  
 गीना—गानम्  
 बजाना—बादनम्

बोदना—संयोजनम्  
 खरोदना—कषाणम्  
 वेचना—विजयणम्  
 घेरना—वेष्टनम्  
 जेठना—जेषणम्  
 भाजना—निकलनम्  
 निकालना—निकालनम्  
 मगिना—ममायनम्  
 धीना—ध्वनम्  
 बुनना—बधनम्  
 सेजना—जुरणम् मयनम्

संस्कृत में अनुवाद करो-

१. जब लचन करता सब गाने के ही लयात है । २. कुछ खादि पीजे  
 दोग कर रक्ती चाहिते । ३. भोजन बना रखना चाहिए । ४. जब सपह  
 करना चाहित पर उसको ठीक तरह से लच भी करना चाहिए । ५. सिपा-  
 हियों को वेक कर लोगों में मारना शुरू किया । ६. धन्दे गृहस्थ अपने  
 घरों को मोष-पोत कर रखते हैं । ७. पहार का बटना-उतरना धन्दे व्यापार  
 है । ८. छात्रों को गाने में समय नष्ट नहीं करना चाहिए । ९. बन्धु निबोहने  
 से बड़े जल्दी सूँघ जाता है । १०. दवाई धिसकर बीमार को पिला दी । ११  
 किसी चीज को निगलना नहीं चाहिए उसे खाना चाहिए । १२. हँसना  
 रोना मनुष्य जीवन के साधारण बन हैं । १३. भोजन करने के हाथ लेप  
 भोजन करना नहीं चाहिए । १४. ठगने के भी अनेक ढंग हैं धीरे ठगों के  
 अंगुल में चतुर से चतुर नोष को फँस जाते हैं । १५. बन्दन बिसने से हाथों में  
 मुगल्य आ जाती है ।

चतुर्दश अक्षराल

कुछ अन्य उपयोगी शब्द

देश में प्राया हुआ—आयात  
 देश से गया हुआ—निर्यात  
 छदल बदन—विजय  
 पैतक—उपतेजम्

मुद् ई—बादी  
 महासेह—प्रतिवादी  
 घूस—उत्कीच  
 लोह—सबुद्धि क्षिका

घाँधी—घातय  
 कड़ाई—कटाह  
 कपडा—पाथी—करीबम्  
 कसरत—व्यायाम  
 गली—प्रतोलिका  
 कानून—राजविषय, विधि  
 कैद—कारावास  
 किरकी—गकाश  
 माला—घातकम्  
 रमया—गोपकम् रूपकम् रजतमुद्रा  
 रमणी—स्वशुभुदा दीनार  
 रेबार—खुराम्  
 बकील—व्यवहारजीव  
 बनीयतनाम—करमपत्रम् मृत्युपत्रम्  
 ध्याज—कुसीद बुद्धिभीषिका  
 तातुकार—उत्तमर्षी  
 कबधार—अधमर्षी  
 परोहर—अपराध उपनिधि  
 डाकिया—लेखवाहक  
 ठेकत—धातुवाहनम्  
 तकरा—फलकम्  
 दमल—घातकार  
 भेंद—अतिग्रह, उपहार  
 डाढ़ी—कूचकम्  
 मोरा—अशुभुद  
 ठूकान—आपराध  
 लकडा—मातृशिशुम्  
 पोछेबाज—अनाथ, कितव अठः  
 जामिन—प्रतिभु

जुगनु—सज्जोत  
 जुमाना—दृष्ट  
 करना—निकर  
 पेसा—पण  
 बरुनी—रूपकादकम्  
 बरुनी—बनुराणाक  
 बुधनी—धीनकद्वयम्  
 बाजीगर—धार्ष्ट्युपेक्षक  
 मुकदमा—अभिप्रेत  
 जम—न्यायाधीश  
 पसोतर—स्वेद  
 पहेदार—धार्मिक  
 हाड—प्रतिद्विहता  
 प्रतिज्ञा—प्रतिभूति प्रतिभय  
 हँसीमजाक—परिहास  
 मोर—कोमाह्वय  
 हद्—सीमा  
 हैजा—विपुत्रिका  
 बैरा—निवेश, वासस्थानम्  
 हाथी का कुल—कुलम्  
 बिबाड़—बीत्कार  
 कोड़ा—कटा  
 नगाय—अनीन मम् प्रपद वस्त्र  
 रकाब—दादघानी  
 काठी—पयांणम्  
 घुटमवार—वस्त्रादीन् प्रपवार  
 पैदल—यति, पदार्ति पदय पदचारी  
 छावनी—शिविरम्

## संस्कृत में धनुवाद करो -

१. बुधसवार ने घोड़े का इतना डीङ्गाया कि वह परीजा-पसीना हो गया । २. खजाने से रुपये चुराने वालों की दस-दस थपे की सजा हुई । ३. शीर न मचायो दूसरे कमरे में लटके पड़े रहे । ४. बामिन के बिना धन अपराधी न छूट सका । ५. कजंडार धपन भाङ्गकार से सदैव डरता रहता है । ६. डाकिया धाज मेरे एक चिट्ठी मागा । ७. उस घूम जाने वाले धफमार को एक गुजार रुपये जुमाना और छ. मान की सजा हुई । ८. व्याधधीरा ने उस मधा-कथित धातक को सम्पद के नाम पर खंड दिया । ९. बड़ गुदर की गति कबाने से मर गया और बसोयतनाया न भिल सका । १०. इस मुकदमे के लिए एक सम्प्रेष कपील की जरूरत है ।

## पञ्चदश शब्दास

## सरीरसम्बन्धी शब्द

बाध—बाध शक्ति (पृ०) चरण एव	सरीर—सरीरम् काय, देह, धर्म
शिर—शिरः, शीपम्	मन—चित्तम् हृदयम् मन
घावा—ललाटम्	कुटि—कुटि मर्नीया धी प्रण।
धी—धृ (पृ०)	पट उदग्म्
धील नगम् नयनम् बधु (न०)	धीत धनम्
पलक—नेत्रलोच	पीठ पृष्ठम्
काम—कर्तृ	नमः—करि धीमान्
नाकि—नामिका	कफः—कुपुम्
मूत्र मुसम् आनम्	ताड—तुन्दम्
नार—नाला (पृ०)	कलंका—वृक्षम्-मरु हृद
दांत दन्त वदन	आस—आस स्पर्क
होठ—शोष्ठ	मृन—रक्तम् रजिम्
मसूडे—सन्तमांसम्	चरबी—मेद द्रव्य, वसा
जीभ जिह्वा रसना	हृदयी के शीकर की बर्ची—मज्जा
शदत—शीघ्र चल	हाथ—क हस्त पाणि
कन्धा—स्कन्ध	बाह—बाहु भुज

गला—कण्ठ गल

हुवडी—शिशुकम् हुनु

छालो—उर वक्ष.

सुथी—शुचुकम्

स्तन कुच स्तन

मांस—मांसम् पिणितम्, कम्पम्

लंगवो—कगुनि (स्त्री०)

अपूठा—अङ्गुष्ठ.

बारा लंगलिगा—जर्जनी मध्यमा,

अनागिका, कनिष्ठा (स्त्री०)

मुट्टी—मुष्टिका (स्त्री०)

भूतङ्ग—निगम्य

आथ—जङ्गा (स्त्री०) ऊरु

गुवा—अपायश्च मयङ्कारम्

लिङ्ग-लिङ्गम्, शिवन मेद

द्वेली—करतल लम्

ताली—करतलध्वनि (पुं०,

नाडो स्नायु

नाडून—नख-नखम् करतल

हडटो—धन्वि कीवत्तम्

धोनि—धोनि (स्त्री०) अण-

अण्डकोष—अण्डाण (पुं०)

मूत्र—मूत्रम् प्रस्राव

मल—विष्टः मलश्च पुरीषम्

गोबर—गोमय

स्त्री का बीये—रज पुष्पम् आतवम्

पुस्व का बांय—शूक्रम्

घुटना—शानु

घेर को गिट्टी—गुल्फक.

संस्कृत में अनुवाद करो

१. वक्षो और बूटो को साथ टांकनी है। २. उस सुन्दर स्त्री की कमर बहुत पतली है। ३. नेहक जी के ध्यास्थान के अन्त में सब लोगों ने गाली बजाई। ४. उस स्त्रिये को मोद मिलनी है। ५. हम बीभ से स्वाद लेते हैं। ६. अश्वि ललामो खाली स्त्री की कमर पतली होती है। ७. आज मेरे मनुष्य में बंध हा रहा है। ८. धागो अथवा धागो को मोत है। ९. कान का मल निकालना चाहिए। १०. उसने शरीर का खून घूस गया। ११. बच्चे के पैर होने से पहल माँ के स्तन में दूध भा जाता है। १२. उसको जीधे कले के लम्भ की तरह और शरीर हाथा को सूँट की तरह है। १३. उसके शरीर में खून का विकार है। १४. गोबर से लिपी हुई जमीन पवित्र होती है। १५. अण्डों धातों को उपमा अन्तः के बीजा से दी जाती है।

बोडस अभ्यास

पाठशाला सम्बन्धो शब्द

स्कृष्य—मारगान्ता

कालेज—विद्यालय

पुस्तक—पुस्तकम्

। सुनिर्वाहो—विद्वन्विज्ञानम्

पदान्तेवाना-अध्यापक शिक्षक

पदमेवाना- छात्र विद्यार्थी शिक्षा  
अध्यापक

जमाना धरणी कला

पन्ना कागज-पत्रम्

सका गन्त-पठम्

पढ़ना-पठनम्

पढ़ाना-पाठनम्

लिखना-लेखनम्

याद करना-स्मरणम्

संस्कृत भाषा-संस्कृत

संस्कृत-प्राप्त

उत्तर-उत्तरम्

संस्कृत-प्राप्त

इतिहास-परीक्षा

लेख-लेख

लिखाई-लीप्यः साक्षात् (पु.)

लेख का विधान-लेख-लेखम्

मेनेजर-प्रबन्धकर्ता

स्याही-मरी

दवात-धनीपात्रम्

कनक-मेखनी

हाथिर-हाथिर

हाथिर-अनुपमिन

हाथिर-प्राप्त बुद्धिमात्र

नामायक-संस्कृत, मुक्त-संस्कृत

संस्कृत-संस्कृत

अनुशासन-विनय

प्रोक्त-प्राप्त

अर्थ-संस्कृत

नवीन-परिष्कार

संस्कृत-अनुपम

नवीन-अर्थ

पुस्तक-पुस्तक

विषय-विषय-मुद्रा

साहस-साहस-साहस

अन्य-विषय-कलह

मुद्रा-मुद्रा

उपदेश-विषय

साधक-साधक

### संस्कृत में अनुवाद करो-

१. भावकल विज्ञान का युग है। पढ़ाई का भी वैज्ञानिक ढंग चलता है। २. छात्रों में अनुशासनहीनता के कारण अध्यापक उनसे प्रेम नहीं करते। ३. पुरानी और भावकल की पढ़ाई में बड़ा अन्तर है। ४. पढ़ना तो सामान्य है पर नम्रता जाना कठिन है। ५. पढ़ने की परीक्षा में तुमने कितने नम्रता पाये? ६. जिसने, पढ़ने के अलावा अतिरिक्त लेखन भी चाहिए। ७. अपने सहपाठियों के साथ सदैव मित्रता का व्यवहार करो। ८. अध्यापक का कहना मानो और पाठ ध्यानपूर्वक पढ़ो। ९. कभी मत झगड़ो और सली मत दो। १०. प्रतिदिन साफ कपड़े पहन कर स्कूल आओ। ११. जो प्रश्न पूछा जाय उसी का



उत्तर दी १२ बिना कारण स्तूप से अनुपस्थित नहीं रहना चाहिए । १३ परिश्रमी विद्यार्थी का सभी अच्छा मानने है और धानमी से सभी पूरा करते है १४ शान्त के अवकाश दिनों में भी कुछ न कुछ संशय रहता चाहिए १५ गुग्गुलु की प्रशाली में अनुपस्थित होने का मित्र स्थान नहीं है ।

### सप्तदश अभ्यास

#### शोधन सम्बन्धी शब्द

कक्षा धान—धामान्म	सेवक—पूरिका
पक्का धान—पक्कान्म	कर्मना कषायम्
रोटी—रोटिका	मेज—तिक्तम्
फुलका—पौलिका	बान—बान्यम्
भाल—भालन, घोषनम्, बलम्	कबीरी—मायागर्भा
दाल—दूप	रायता—राधवम्
सखी—सखजनम्	महर—मादकी
साग—शक्ति, शाकम्	मसूर—मसूर
कीर—पायसम्	उबड़—माष
पक्वान्न—पक्कान्म	हनुषा—लप्सिका संयुक्त
मिठाई—मिष्टान्म	नपकी—पक्षा (स्त्री०)
जहूँ—भोवक	मक्कर—लकड़ा
पूरी—शक्कुली पूनिका	मिस्त्री—मिला
पूड़ा—प्रपूष	लावा (कोल)—लाजा (पुं० बहु०)
पूषा—पूष पीठिका	मसू—मस्तु पु०)
पापक—पपंटी	कदी—तेमलम् (म०)
पगोठा—पौलिका	दूध—दुधम् पय (न०)
मालपूषा—मल्लपूष	मलाई—कृषिका (स्त्री०)
खिचड़ी—कृशद	मावा (कोवा)—किलाटिका
चना—चणक	मक्कन—नखनीतम् दधिलम्
जो—यव	बी—वृत्तम्
भांग—मातुनानी, मज्जा	

दही—दधि

झाड़—लकड़, गालकियम्

मट्टा—मथियम्

गोल—वतनम्

टेला—करम्

नमक—नमकम्

राग—उपरागम्

उफ्फा—शीतलम्

| अट्टा—पम्पम्

कट्टा—लिकम्

चिकना—चिकनाम्

बैव—पुदगम्

मटर—वतन कला

काटी—काटम्

कोनी—कगु (५०)

सरतो—सुपंय—तन्धुम्

### बन्धन से समुदाय करो—

१ बीमार की पतली बिलखी जानी चाहिए २ दूध पी के लेवन से शरीर पुष्ट होय समकाम् होना है ३ परमाय के लोम प्राय रोटी खाते हैं ४ बीमर दगाव के लोम प्राय खाते खाते हैं ५ शरीर में रोटी अधिक लाभदायक है ६ शरीर के लोम प्राय बीमर पम्पन अधिक लाभ देते हैं ७ आटे की रसों में पानी का भोजन अस्वास्थ्य है ८ बिलखी का खाना भी जानों में हिनकर है ९ गरीब लोग मग्न आकर दिन बिताते हैं १० कुछ लोग रात में गरीब खाते हैं ११ बीमर के घर में बीमर बिता हुआ दही खाता जाता है १२ बीमर की रूग्ण की रस हो १३ बिलखी में लस निकलता है १४ दूध पीने से अस्वस्थ रहने है १५ बिलखी में मट्टा पीने से स्वास्थ्य हीक रहता है १६ कटो के राग आत खाने से बहुत स्वाद आता है

### समुदाय सम्बन्ध

#### साथ बराबर

चावल—नमक

मगई—अस्वस्थ

गट्टा का आटा—मिथुनचुण

बाबना—पिकरुम्

माठी—धोतक

ककड़ी—ककटिक

दमायकी—लला

अस्वस्थ—आट्टकम्

कला—अस्वस्थ

वग—अस्वस्थ, काल

वग—अस्वस्थ

किस—ककटु

पालक—पालक

पदार्थ—मांसधनम् मन्धनम्

मुरब्बा—मुरब्बा

चटनी—चटनी

पोटोना—पोटोना

रोई—रोई

हमली—हमली

करीदा—करीदा

कोथ—कोथ

कुलका—कुलका

जलवी } कुलालिका कुलालिनी  
हमली }

बादशाही—बादशाही

कैरी—कैरी

बाबू—बाबू (पु०)

करीदा—करीदा

कदू—कदू

जोड़ी—जोड़ी

कट, खोरा—कट (खो०)

जोरा—जोरा

परम मवाजा—परम

मककापारा—मककापारा

परवर—परवर

प्याज—प्याज

सहगुन—सहगुन (सह०)

गाजर—गाजर

बंदन—बंदन

पूरी—पूरी

रदूग—रदूग

कचनार—कचनार

करीदा—करीदा

तराई—तराई

मिचड़ी—मिचड़ी

गोभी—गोभी

### संस्कृत में अनुवाद करो —

१. बाबू की तरकारी स्वादिष्ट होती है किन्तु गुणकारी नहीं। २. लोकी की तरकारी बीमारों का ही जानी है। ३. जलवी में भी बाबू की घनक मिठाई है। ४. कुलका और पालक का सब मसिरो में अधिक मसन्द किया जाता है। ५. परवर की तरकारी बीमारी में भी हानिकारक नहीं है। ६. गोभी और पालू की तरकारी स्वादिष्ट होती है। ७. मकर और बाबू की तरकारी बड़ी बलवायक होती है। ८. हिन्दू आश्रमों में प्याज को निषिद्ध कहा गया है। ९. उमकी की जलवी पोटोने के साथ बहुत स्वादिष्ट होती है। १०. करीले की तरकारी बहुत गुणकारी है। ११. जलवी मुनी बहुत गुणकारी है। १२. फलियाँ इस में मिलाकर खाई जाती हैं। १३. मिचड़ियाँ कागजी नींबू का रस पटन में बहुत स्वादिष्ट हो जाती हैं। १४. तराई वहाँ के बहुत में अधिक मसन्द

होती है १५ बाबूसाही जलन्बी, लट्ठ खादि मिठाइयाँ स्वाध्म्य के निम्न खाद्यदायक नहीं ।

### एकोनविंशति अध्यास

फलों के नाम

धाम—धामम्	कैल (कल्या)—कपिलम्
धनार—धनारम्	बिजोरा नींबू—बीजपूर
धंगूर—धुलीका दासाफलम्	बिलो—बीरिकाफलम्
धरबूजा—धराबुजम्	तम्बूली—ताम्बूलम् कनिष्ठम्
धरहर—धरहरम्	केर—बदरीफलम् ककाम्
धोरा—धोराफलम्	नारियल—नारिकेलफलम्
धामक—धामकम्	नारली—नारलीफलम्
धमरोट—धमरोटफलम्	मैथ—मैथफलम्
काला—कालाम्फलम्	बेल—बिल्वफलम्
कालक—कालक (पु.)	बादाव—बादाव बातादफलम्
काली—कालीफलम्	पीतू—पीतुफलम्
कटहर—कटहर	मुगरी—मुगीफलम्
कमरक—कमरक	बामन—बामनफलम्
कमर फल—कमरफलम्	नामपाणी—नामपाणीफलम्
करीव—करीवफलम्	मरीका—मरीकाफलम्
कदम—कदम नीमफलम्	पिस्ता—पिस्ताफलम्
नींबू—नींबूफलम्	शुषानी—शुषानी
सागजी नींबू—सागजीनींबू	

संस्कृत में अनुवाद करो—

१ धाम सब फलों का राजा है । लखनऊ का दधभूरी धाम सर्वोत्तम है ।  
 २ प्रयाग के समस्त धनार भर में प्रसिद्ध है । ३ लखनऊ के अरबूजों का स्वाद अमुगम है । ४ कुहार के पास धमके स्वाद वाले मरीके होते हैं । ५ कटहर को तस्कारी अच्छी होती है । ६ यमियाँ में तम्बूली खाने से ठण्ठ रहती है । ७ धंगूर खाने से रक्त बढ़ता है । ८ नारली का रस बहुत स्वादिष्ट

छोटा मधुर होता है । १० आम्रुन का मृन्मूला पाचक होता है । ११ शमिकों से कसेर भी ठंडा होता है । १२ कैंठ के फल की चटनी स्वादिष्ट होती है । १३ विजोरे नीबू का सचार अच्छा होता है । १४ शमिकों को प्रायः अनारकल का रस दिया जाता है । १५ बेर फल सब फलों में निरुद्विग्न फल है । १६ छट्टी बीजों में कागजी नीबू का अधिक सेवन करना चाहिए । १७ अमृत घर पर गान सुनारी में अतिथि का सम्मान करना चाहिए ।

### विशति सम्भाव

#### सम्बन्धसूचक शब्द

माता—माता जननी  
दादा—पितामह  
दादी—पितामही  
परदादा—प्रपितामह  
परदादी—प्रपितामही  
माता बानी—मातामह मातापही  
परनानी—प्रमातामह  
परनानी—प्रमातामही  
बृद्धपरमाता—बृद्धप्रमातामह  
बाबा बाबी—पितृव्य, पितृव्यव्ययी  
कसेरा भाई—पितृव्यपुत्र  
भोजाई भाभी—आतृनाथी  
भोजा—आतृपुत्र भोजीय  
भोजीजी—आतृमुता  
माया मायी—मानुन मानुनी  
माई—अमाता  
सगा माई—सहोदर  
छोटा माई अनुब, कनिष्ठसहोदर  
बहू बहू स्नुषा  
पति स्त्री—पति पत्नी

ससुरा—असुरा  
ताम—अधु  
सामा—अमाय  
देवर—देवर  
देवराजी—माता  
ममद ममाया  
गजोह—पुत्रधु  
रिन्देकर—जाति कण्ठु  
पुत्र पुत्री—पुत्र पुत्री  
पोत पोनी—पोत पोनी  
पुगेतरा-तरी प्रपोत्र प्रपोत्री  
राम-र जमाई जमाता  
बहिन—अभिनी  
बहनोई अभिनीपति आशुन  
आनबा—अभिनेय  
सौरभ—स्त्री सोपिनु, सारी  
बार बार, अपमति  
फुफो पितृव्यता  
कूका—पितृव्यसुपति  
फुटेरा माई—पितृव्यस्त्रीय



मौसी—मनुष्यमा

मौसा—मानुष्यसुपनि

मौसगाह—मानुष्यस्त्री

नोकर—भृत्य, पण्य, अनुचर

नोकरानी—परिवारिका

भिव—मित्रम्, वयम्, सुहृद्

शत्रु—घटि, रिपु, बैरी

गर्मिन—गर्मिणी, प्रतर्जनी

दुनो—दूती, सूत्रधारिका

मन्थो—घानि, वयम्या

वेड्या—वारम्भी, गरुका, वेड्या

गोहाविम—जीवास्पदतो पतिवर्त्ता

पतिवता—साध्वी पतिवता

### मंजुत में समुदाह करो—

१. तब से उत घर में लखी स्वाही पताह आयी है तब से उगमे मुख-  
समुद्रि का राज्य है । २. शम्भु को समुद्र के जल में घुसि दिये तक नहीं  
रहना चाहिये । ३. नोकर की सेवा के मारिक बहुत प्रसन्न हुआ । ४. भारत  
में विधवाओं की बड़ी दुर्दशा है । ५. दूती प्रपन्नो लखी का सदैव उगमे पति  
का गर्हपात्री है । ६. कष्ट भाई की लखी मरता क मुक्त है । ७. लखन बर्तन  
का विषयाम नहीं करता चाहिये । ८. लख का माता कष्टकर पुकारना चाहिये ।  
९. लखका का लु लख पता है कि वह ईश्वर की शरणचना करें । १०. लख  
में लखका बंसा मरता भाई नहीं मिल सकता । ११. लखका से म मा की  
लखकी से लखका निमित्त मरी । १२. वेड्या की लखति पतिवता लखी का भी  
पतिवता कर लनी है । १३. घर से पताह की लखी इज्जत लानी चाहिये । १४.  
लखका योग्य भाई लगे भाई से भी अच्छा है । १५. लखी भनोखी का लखका  
लखी लख होता ।

## संज्ञा शब्द

### (क) व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ

कुछ व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ ऐसी हैं जो हिन्दी और संस्कृत में लगभग समानी हैं उन्हें तत्सम कहते हैं, यथा -

१) काश्मीरदेशो भूयान (काश्मीर संसार में भूयान है) ।

२ प्रयागस्य घाटतानि प्रसिद्धानि (इलाहाबाद के घाटक प्रसिद्ध हैं) ।

३) बुधवारस्य मृत्पात्राणि धान्यं चिकित्तानि (बुधवार के मिट्टी के बरतन भारत में प्रसिद्ध हैं) ।

४) काव्या कोशमशरका जगद्विख्याता (काव्य की रक्षा की माशिका संसार में प्रसिद्ध हैं) ।

५) यूरोपाद् वायुवातेन कृत्तवर्षासि भारतमागच्छति (यूरोप में वर्षावात पक्ष वायुवात द्वारा भारत आते हैं) ।

६) हिमालयाद् गता उद्ध्वानि (हिमालय से गता निकलती हैं) ।

७) शान्तिनिकेतनं कोलपुरस्य समीपम् (शान्तिनिकेतन कोलपुर के समीप है) ।

(८) महेन्द्रगिरौ पुरातनानि स्तम्भानि भूवर्धाद् लब्धानि (महेन्द्रगिरि से स्तम्भों के नीचे से पुरानी स्तम्भों निकली हैं) ।

कुछ व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ (तद्भव) हिन्दी से ऐसी हैं जिनका संस्कृत में कोई सा परिवर्तन करके अनुवाद किया जाता है—

१) पुरा मौर्यवंशोद्भवाना राज्ञां राजधानी शहलीपुत्रमासीत् (प्राचीन काल में पटन नगर मौर्य राजाओं की राजधानी थी) ।

२) लघुलेखिनी उद्ध्वेगीका (बमाली बावल बहुत पसन्द करते हैं) ।

३) लघुमयस्य जयपुरेण चित्रकर्म प्रसिद्धम् (जयपुर की लघुमय चित्रकारी मशहूर है) ।

४) आगरानगरं पञ्चनातटे ताजमहलं जगद्विख्यातम् आगरा म समुद्रा तट पर ताजमहल संसार में मशहूर है) ।

\* सिन्धुगन्धर्विक जलस्य (सिन्धु नदी) में बहुत धार्मिक जगह है

६ गणत्रिनमित् पञ्चनदस्य शायनं श्रीमान् यशोवर्मन्मित्रपञ्चाय का  
शायकः ॥

३) गुरुदेसों श्रीवदगेशस्थ गौबन मन्दिर वनत गुरुबाल से श्रीवदोत धत्री का भाव्य मन्दिर है।

८. पुनः तत्क्षणायां सुविख्याता विश्वविद्यालय छात्रोऽपि प्राचीन काले मे  
तत्क्षणायां मे अनिवार्यतया पुनर्जायते स्म ।

(२) गण्ड विपणना दशवती सन्दर्भात् चित्तत्वा मित्युक्त पञ्चनदे  
विद्यन्ते समस्तज स्वात् शक्ती, चनात् घनम द्यौः मित् नदी पञ्चाद मे ॥

हिन्दी भाषा में तुल्य नहीं रहती है जो दूसरी भाषायाँ में पाये हैं कुछ ऐसे हैं जो संस्कृत में सम्बन्ध नहीं रखते उनका संस्कृत-प्राबुध उदा. का हर्षो मज्जायात्रिण किन्तु कुछ ऐसे भी रहते हैं जो हिन्दी भाषा की रचनाओं से सम्बन्ध न रखते हुए भी संस्कृत-विषय में प्रचलित हो गये हैं उनको बदलने में कोई क्षति नहीं है यथा—

१ कलकत्ता नमि आर्यविद्यालय नवम् (कलकत्ता भारत में प्रसिद्ध  
नवम् १)।

१. मोक्षमल प्रदान वसिष्ठ वसिष्ठः (मोक्षमल प्रदान में वसिष्ठ वसिष्ठः) ।

३ एम० एम० : रजिस्ट्रार का नगर अधिकाधिकारि (एम० एम०)  
रजिस्ट्रार का नगर में अधिकाधिकारि है ।

(४) जगत्मानव्यं व्यापारविषयं क्षणं तुल्यं त्विदं (जायमानं नै व्यापारं मे  
मही समति क्षी है) ।

(५) संवत् २०३५ ई. में भारत में जनसंख्या ५० करोड़ होगी।

६ मानचैष्टराद् भास्वमासांनि ग्य वस्यम् । मानचैष्टरं सै कण्डा भारत  
की माना वा । )

13. अंग्रेज शासकों को मन्त्रियों के समक्ष प्रत्यक्ष रूप से (अंग्रेजों और रक्षाक्ष धर्मनिरपेक्षता की भावना में) उपस्थित नहीं।

(ख) आतिथ्यान्वक सजावट

कृषि जातिवाचक सज्ञा शुद्ध गन्ध है, जिसके पशोपवाचो शब्द भी उतक

स्थान पर व्यवहृत हो सकत है, यथा—मनुष्य राजा प्रजा पशु पक्षी पुत्र  
स्त्री उत्तरारण्य—ए एव राजा (नृप., भूप.) परं प्रजाया मुक्तम् (राजा  
वही है जिसकी प्रजा मुक्त है) ।

किन्तु विद्वत्ता, पालवीय संवद आदि शब्द संस्कृत-धनुवाद व शक्तिवाचक  
संज्ञाया की भाँति प्रयुक्त होते हैं यथा—

विद्यालोपात्र धनश्यामदात (धनश्यामदात विद्वत्ता) ।

कृष्ण देशी या बिदेशी शब्द वाचकत्वं संस्कृत में कल्पित रूप में प्रचलित  
ही नष्ट है उनका धनुवाद प्रचलित नामों में होता यथा

- |  |   |
|--|---|
| १ रा.पति — प्रेमीपति                       | १६ मृत्युमन्त्री — चीफ मिनिस्टर                             |
| २ उपरा.पति — वाइस प्रेसीडेंट ।             | २० विद्यालय — कालेज ।                                       |
| ३ प्रधानमन्त्री — प्राइम मिनिस्टर ।        | २१ विश्वविद्यालय — यूनिवर्सिटी                              |
| ४ विधानपरिषद् — लेजिस्लेटिव<br>कालिगल      | २२ शाखाय — ब्रांच   |
| ५ विधानसभा — लॉज ऑफ़ेसरी ।                 | २३ धर्मशास्त्र — स्पीकर ।                                   |
| ६ विधानपरिषद् सभा — लॉज ऑफ़ेसरी            | २४ धर्मशास्त्र — म्यूनिट्री                                 |
| ७ कानूनपरिषद् सभा — एम्पीर्यूटिव<br>कालिगल | २५ शिक्षाविभाग — डिप्टी गवर्नर<br>ऑफ़ एजुकेशन               |
| ८ मन्त्रालय — मिनिस्टर ।                   | २६ शिक्षापरिषद् सभा — डिप्टी गवर्नर<br>ऑफ़ एजुकेशन ।        |
| ९ लोकसभा — पार्लियामेंट ।                  | २७ शाखाय — कमिशन  |
| १० राजपारिषद् — कालिगल ऑफ़<br>स्टेट्स      | २८ नाविक-शाखाय — एडमिरल सर्विस<br>कमिशन ।                   |
| ११ प्रदेश — प्राविन्स ।                    | २९ शिक्षा निरीक्षक — इन्स्पेक्टर<br>ऑफ़ स्कूल्स             |
| १२ वायवधानम् — वेजिडाबल ।                  | ३० शिक्षाविभाग — ट्राइब्युटरी<br>ऑफ़ एजुकेशन                |
| १३ शक्ति — मजिस्ट्री ।                     | ३१ स्वास्थ्य सेवा-निदेशक — ट्राइब्युटरी<br>ऑफ़ पब्लिक हेल्थ |
| १४ जनपथम् — स्ट्रीट ।                      | ३२ शिक्षिका — वाइसमिनिस्टर                                  |
| १५ वायवधानम् — इवार्ड स्ट्रीट ।            | ३३ जलान्तरितपथम् — सवरीमोन्ट<br>(पनरुडो) ।                  |
| १६ राजपथम् — मजिस्ट्री                     |   |
| १७ कृतपति — वायवधान                        |   |
| १८ उपरा.पति — वाइस कान्स्टेबल ।            |   |

परन्तु मोटरकार के लिए 'मोटरघानक्ष' और कोट के लिए 'वटमायक' वस्तु' ही निसर्ग प्रणि है ।

### (१) भाववाचक सञ्ज्ञाएँ

भाववाचक सञ्ज्ञाएँ वे हैं जिनसे जगति प्रादि सञ्ज्ञाओं के भाव का बोध हो गया—मनुष्यत्व ज्ञान, मान सृष्टि, भासाव चतुरता ।

विद्वन्त्वं च नृपम्ब च मैव तुल्य कदाचन (विद्वन्श्च और राज्ञश्च कदापि बराबर नहीं) । तस्य ज्ञानबोधश्च धामोऽन् (उसका ज्ञान ही इनका या ब्रह्महोमोन्वोषनस्य कारणरूपे ब्रह्म प्रक्षालाक्ष क्षामम् । मानकोषापरेशन मूलमैव के प्रोक्षाम में बहुत से रेजोन्सूलन व) ।

कुम्भ सन्ध भाववाचक सञ्ज्ञाओं के उदाहरण—

१ तत्र धनस्थानिनि बाण्यकक्षा पतन्ति (निजान्देह 'धनस्थान' धनि धारके धामुओं की रव तिर रही है) ।

२ स्थाने-स्थाने सुशक्तकुम्भो भाङ्कुरनिर्भरालाम् (स्थान-स्थान पर भरनों की भाङ्कुर धनि में दिशाओं मूल रही वी) ।

३ बलालानककिष्किलीभ्योभमायितम्यन्दनै (रथ पर टांग का मोले की किष्किलियाँ भन-भन कर रही वी) ।

४ धनुःशृङ्गाणे दूरतोऽपि धूमन (धनुष का टंकार दूर से भी सुभाई देता है) ।

५ मृग्राणा शिञ्जिन अधाम् (गद्यों की धनि बहुत ही मनोरंज वी) ।

६ क्व धूमने कटपदानां कञ्चान (भीमों की धनि कहीं सुभाई देती है) ?

७ गजाना वृत्तितेन मिहाना नादेन च धनमेवाकम्पत (हाथियों की चिबाड घोर मिहों की गजाना से कंपन ही कोष उठा) ।

८ चरगमिहर्जि मृगता विवते (चरगमिह में चड़ी डिंठाई है) ।

९ समुद्रस्य गाम्भीर्यं ज्ञातुमशुनमम् (समुद्र की गहराई कठिनता से जानी जाती है) ।

१० साथ वदे मंच वीनो) ।



## लिङ्ग

हिन्दी में लिंग दो होते हैं—पुंल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग, सभी शब्द—वचन और अव्यय—इन्हीं लिंगों में विभक्त हैं। सम्स्कृत में एक अन्य लिंग भी होता है—नपुंसक लिंग। सभी लङ्गात् इन्हीं तीन लिंगों में विभक्त हैं। सम्स्कृत में लिंग प्रकृति के अनुसार नहीं—कोई की मर्यादा से पर्याप्त के निगानुशासन का और साहित्य का अध्ययन करने से निवृत्त हो सकता है। सम्स्कृत में एक ही वस्तु या व्यक्ति के लक्षण शब्द विन्न-विन्न लिंगों के हैं। यथा—नट गटे-नटम् तीनों का धर्म नट है। इसी प्रकार 'संघर्ष दृढम्-घाति' तीनों का धर्म दृढ है। 'दारा भार्या कर्मणम्' तीनों का धर्म स्त्री है। कुल्लु लगे लो शब्द है विनका सर्वभेद से निवृत्त होता है यथा विन शब्द 'सत्ता' का बोधन होते से नपुंसकलिंग और 'नृप' का बोधन होने से पुंलिङ्ग है। सम्स्कृत के प्रत्येक शब्द का लिंग निर्दिष्ट है।

सम्स्कृत में लिंग तीन हैं—पुंल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिंग। लिंग-निर्णय के कुछ नियम इस प्रकार हैं

### पुंल्लिङ्ग

१ धन्, धप ध प्रत्ययान्त शब्द पुंल्लिङ्ग होते हैं, यथा—धाक, स्थाग धाव, नर विस्तार, बोध मन्त्रध विजय विजय विजय धप, धुन धपे पद लिंग आदि शब्द नपुंसकलिंग होते हैं।

२ नकारान्त शब्द पुंल्लिङ्ग होते हैं, यथा राक्षन्-गजा धात्मन्, धात्मा, धिन्तु धन् प्रत्ययान्त कर्मन् और कर्मन् आदि शब्द नपुंसकलिंग हैं।

३ साधारण और विशेष मूर (देवता) और समूर (राक्षस), और इनके धनुष बाणक शब्द पुंल्लिङ्ग होते हैं, यथा—देव विष्णु, शिव दानव दैत्य।

४ 'कि' प्रत्ययान्त शब्द पुंल्लिङ्ग होते हैं, यथा—विधि निधि, वारिधि सन्धि—किन्तु कि प्रत्ययान्त इषुधि शब्द स्त्रीलिङ्ग और पुंल्लिङ्ग वानर हैं।

५ नङ् प्रत्ययान्त शब्द पुंल्लिङ्ग होते हैं यथा-प्रयत्न, प्रयत्न स्वयत्न किन्तु पाञ्चा शब्द स्त्रीलिङ्ग होता है।

८ दण्डन् प्रत्ययान्त शब्द वर्णित होत है यथा—महिमा शक्ति तपिमा

७ वार किरण्ड हाथ। और चनि सपट वयोस। धाण्ड हांठ, दो (बाण्ड दन्त, दोन) कण्ड केज नख (नाखून) और स्तन ये शब्द तथा इनके पर्यायवाचक शब्द वर्णित होत है। परन्तु दोषिति (किराण्ड शब्द स्त्री लिङ्ग है और मरीचि शब्द स्त्रीलिङ्ग और वर्णित होत है।

८ वार—दारा पलत—पलता ताम्र माका धनु धमध (प्राण) शब्द वर्णित और बहुवचन में हत है।

९ स्वर्ग माध यज धदि (यवत) मध धदि (समुद्र, दू (दूध), कान मगध धमि तनवार) शर (वाण, और शत्रु ये शब्द तथा इनके पर्यायवाचक शब्द वर्णित होत है किन्तु निनिद्रपम् स्वर्ग, धधम् (मेघ) ये शब्द नगमकलिङ्ग है और और दिव (स्वर्ग) स्त्रीलिङ्ग है। इण् वारा शवध वर्णित और स्त्रीलिङ्ग होत है। स्वर (स्वर्ग) सधध है।

१० काम शवध वंशाक्ष उपरुध धदि, धतु वसन्त पीतम धदि। रम् कटु निवन धदि कान युक्क इरण धदि। धनि गल्ल धायु शर (बाण) धदि माध।—य शब्द तथा इनके पर्यायवाचक शब्द वर्णित होत है किन्तु धतुवाचक शब्द और कान गल्ल स्त्रीलिङ्ग है।

११ समान युक्क धतु और धर भगान्त शब्द वर्णित होत है यथा—गुर्धक्ष गराक्ष धधधक्ष धकाह इधह धधध धदि किन्तु गुर्धधक्ष धधध धधधधक्ष है।

१२ समानधिरयन्त शब्दधायान्त शब्द वर्णित होत है यथा—मधधाय शब्दधाय किन्तु सक्यावाचक शब्द के बाद शब्द शब्द रहने व नपुंसकलिङ्ग होत है यथा द्विराधन् गच्छगच्छम्

१३ धतु निवध धतु गध और माधर शब्द वर्णित है।

### स्त्रीलिङ्ग

१ किन्तु नि प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होत है यथा—धनि, गति, मधधति किन्तु धनि शब्द वर्णित है।

२ निधि वाचक शब्द स्त्रीलिङ्ग होत है, यथा—प्रनिधत् द्विधीया तृनीया, चतुर्थी, गृहिणी।

३ एकाक्षर ईशान्त और ककारान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होत है यथा—ओ होम् म्।

४ अकारान्त दाह्य स्त्रीनिग होने है यथा—नहो मध्वी, मीमां इन्नी ।

५ नय प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीनिग होने है यथा—नघृता गृन्तरता, ज्ञाह्यगता ।

६ कृकारान्त मातृ (माता) इति (कन्या) स्वस् (स्त्री) याभू कति के भाटवा की स्थिति, यो नतः (नभः शब्द स्त्रीनिग होने है

७ कृष् छोड़ धातु प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीनिग होने है यथा—कुरु विद्या पोसा ।

८ विद्यत विजयी मित्रा (राज बल्ली) (नगर) बीणा दिप दिपा भू पृथ्वी नदी ह्रीं लज्जा स्त्रीनिग होने है ।

९ समाहार द्विभु समानमुक्त प्रकारान्त शब्द द्विक के धातु रूप होने है। स्त्रीनिग होने है यथा—प्रितापी पञ्चवती द्विपुरी तिलु पावम् युग घो भुवन शब्द पर शब्द से नपुंसकनिग होता है तथा-पञ्चपावम् अनुयंगम् विभुवनम् ।

१० विनाशि से शक्ति पदोन्ते संख्यावाचक शब्द स्त्रीनिग होने है यथा—विनाशि विनाश ।

### नपुंसकनिग

१ भाव से अतुल्य धन प्रत्यय लगान से ३१ शब्द बनते हैं वे नपुंसकनिग होने है यथा—समनम् शपनम् भावनम् ।

२ भाव से स्व से प्रत्यय लगान से बने १० शब्द नपुंसकनिग होने है यथा—प्रतिगम् गीतम् ह्रीतिम् ।

३ भाव से कृष् लक्ष्य धनीय का पद प्रत्ययान्त शब्द नपुंसकनिग होने है तथा—भविष्यम् भवयोगम् भव्यम् इयम् ।

४ शक्ति के ल छोड़ एक प्रत्ययान्त १० नपुंसकनिग होने हैं यथा—शुक्लत्वम् शीतत्वम् सुशुक्लम् शान्त्यम् राजत्वम् राज्यम् भवत्वम् मापुयम् ।

५ धन से एक एक शब्द ३३ तथा १० प्रत्ययान्त शब्द नपुंसकनिग होने है यथा—पितृम् प नपम् पद, वागवयम् एक दीपहित्वम् एक भेजम् मातृ विनाशकम् (कुत्र) विनाशकत्वम् ।

६ इसका भाव है कि "नय" से यथा (य) प्रत्ययान्त होने है ३६ है वे नपुंसकनिग होने है यथा—गीतम् नयम् ।

७ वाग यादि संख्यावाचक शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं, यथा—शतम्, सहस्रम्, किन्तु कोटि शब्द स्त्रीलिङ्ग है। उन ध्रुवत प्रयुक्त शब्द पुल्लिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग होते हैं, यथा—अयं वान इदं कृतम् आदि।

८ ध्रुवत और तवय प्रत्ययान्त शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं यथा—द्वयम् त्रयम् (ध्रुवत), द्वितयम् त्रितयम् (तवय), ये शब्द स्त्रीलिङ्ग भी (द्वयो वयो द्वितयो त्रितयो) होते हैं।

९ 'व' जिनके अन्त में हो लगे शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं, यथा—स्रवम्, पवम् चरित्रम् आदि। किन्तु अश्विष छाव पुष मन्त्र वृत्र, मेघ धीर उष्ट्र शब्द पुल्लिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग दोनों होते हैं। वावा श्वावा म्वावा धीर वंश्या ये शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं। मिय शब्द मूढ के अर्थ में पुल्लिङ्ग और तन्ना के अर्थ में नपुंसकलिङ्ग है।

१० त्रिकावितेयता और सम्यक्परिचरत नपुंसकलिङ्ग होते हैं, यथा—भाषु वसति (वसति काङ्क्षा है), प्राप्ति कथनोपम् गन्दर प्रधान।

११ समग्रहग्रन्थ और सम्यक्परिचरतमार्गोत्पन्न शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं, यथा—प्राणिपादम्, तरलवस्त्रम् अतिरिक्तम् यथाशक्ति।

१२ संख्यावाचक और अभाव शब्द का पञ्चमी सम्यक्परिचरत 'तव' शब्द नपुंसकलिङ्ग होता है यथा—विषयम् कृतुल्यवम् विषयम्।

१३ यदि संख्यावाचक शब्द के बाद रात्र शब्द हो तो नपुंसकलिङ्ग होता है, यथा—विगतम् पञ्चरात्रम्।

१४ दो स्वर वाले अक्षर इस उस धीर अन् भागात्त्व शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं यथा—अक्ष मातात्त्व—अक्षम नेत्रस इष भागात्त्वसपिष इतिष तत् भागात्त्व वृष धन् भागात्त्व—नायन् अयन्। किन्तु पश्चिम शब्द स्त्रीलिङ्ग और वैश्वम् शब्द पुल्लिङ्ग है।

दो से अधिक स्वर होने के कारण अगिमा महिमा वस्तुष आदि शब्द पुल्लिङ्ग हैं किन्तु अस्मत्तम् शब्द स्त्रीलिङ्ग है। बह्वन् शब्द पुल्लिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग दोनों हैं।

१५, जो शब्द स्त्रीलिङ्ग या पुल्लिङ्ग नहीं है वे नपुंसकलिङ्ग होते हैं यथा—कृदम् (ममूह), लम् (भाकास), धरण्याम् (वन), पणम् (पत्ता) वराधम् (खिल) हिमम् (बर्फ), उदकम् (जल) औनम् (औनस) उपणम् (तमी) मांसम् (मांस) रुधिरम् (रक्त), मुत्रम् (मूत्र) अग्नि (अग्नि), द्रविरागम् (अन वानम्) वल (हल) हलम् (हल) हेमम् (मेघा) शुन्वम् (तांबा) नोहम् (ताम्बा) नुषम्





उत्तरराशिचिह्नम्	(inverted comma)
निदर्शकचिह्नम्	—
सातकचिह्नम्	§
फलकक-दाठान्न-चिह्नम्	( ) (parenthesis)
गन्धिलचिह्नम्	
पर्याय चिह्नम्	
गुणनिर्देशकचिह्नम्	*

लेखीपयोगी चिह्नों पर ध्यान रहे और हिन्दी भाषा में अनुवाद करो।

१. यदि प्रयास स्वयं नमिन्त्यम् ? (कमलसम्प्रदाय)

२. नारायणोऽहं ईश्वरमकरोत् । अहमस्मिन्निर्वाणस्य पदार्थस्य निश्चितं राज्यं  
यः धर्मादिभिः । निश्चितकारः । धर्मादि किं करोमि ? नन्मुद्यतां देवि । आकाश-  
गुणस्य साधोमतां पंच धर्मेषु यो ' पारम्पर्याम् ।

३. यथा पदार्थः सदात्मतायुः । अथ नारायणविरोधमपराधमिति तत्त्वज्ञान-  
स्मात्तत्त्वज्ञान-निर्वाणस्य तत्त्वज्ञानमनुभवम् । (कलसम्प्रदायम्)

४. हा कथं मीमांसया ईश्वरं जनतांवाहं ईश्वरं कथयिष्यामि ? यद्य वा  
निर्वाणस्य तत्त्वज्ञानोऽहं तत्त्वज्ञानस्य । (उत्तरसम्प्रदायम्)

५. धार्मिक धर्ममयः, धार्मिकमन्त्रादिमन्त्रेण वा विक्षिपता किमियम-  
नापेक्षायामपराधमनुभवम् ? (कलसम्प्रदायम्)

### संस्कृत में अनुवाद करो

१. जेठ महीने की पूर्णमासी तिथि को पवित्रतः स्थितीं वरं वृक्ष की पूजा  
होय उपवास करनी है । इस तिथि को वासीनकाय मे सत्यवान् की भार्या  
सावित्री ने राम द्वारा नियत व्रत पूरा करने पर सत्यवान् को छुड़ाया था  
कभी मे इस व्रत का धारण हुआ है । स्थितीं यह मे मनो है कि इस व्रत के  
करने से व्रतक परितः कायु दीर्घ होती है । यत्र वह दिन स्थितीं यह व्रत  
करनी है । (काशी प्रथम पत्रीका १६:१)

२. मित्रः अथ सारं आरम्भ मे वरं उत्तमान् नृणां यथा अन्तः पथ  
पुर मे हुआ था । मे पिता के पांच भाई थे । वे मृत्यु का प्राप्त हुए । आप  
हो के वंश मे प्रथम हुए एक ब्राह्मण मे वरं निवृत्त हुआ । उनकी मेरा आज  
मातः वरं हो गया है । मे प्रयास अथ वरं कर्तुं । मन्त्रादिमन्त्रेण मे कर्तुं अर्हः ।  
इन अवस्था मे आप ही मनः शरण है । (काशी प्रथम पत्रीका १६:२१)

## पत्रनेवनप्रणाली

१ पित्रे स्मृतुत्तान्तस्य प्रेषात्—

महाजनगरम्

१२. ६. १९७२

श्रीमत्सु सान्नायु पितृपादेषु प्रणतस्य सन्ततरास्य

भगवन् ' सङ्गोदिवसान् म भवान् पत्रमन्तिष्यन् इति मे मतदिवान्ताकुल  
वर्तते इत्यादि परोक्षा नार्तिदूर वतन् इत्यर्थे मे व निगता परिधाम करामि  
केवल गांशतद्विषये कर्तव्यं पुत्रिभिः । अन्ये मासपि माध्यामनेत्यमि  
भट्टिति गृहकृतं पत्रम् । मातरं पत्रि मे प्रणामः । सन्तःपानाश्च कर्तुं प्रमाद-  
नयः ।

भगवत्कः प्रियसुतः

पत्रस्यैव पञ्चमस्यभाष्यम्

२ अनुपस्थितिविषयस्य साक्षिरूपस्य—

परमप्राप्तनीयेषु गृहपतेषु प्रधानभाषकेषु मे नमस्कृत्यजनस्य सन्तु

भगवन् ' सेवायां सक्तिवधिरुमाश्रयन्—पञ्चमं उपेक्ष्यभूतं ब्रह्मवीर्यस्य  
वैजायस्यो मृत्काष्ठस्य विनाशं भविता । इत्यादि च दत्तप्रमाणं समिधयति ।  
भवापि तच्च गमनमावश्यकम् । अन्तःप्राप्तौ दिशमानवकाशोऽपि । आश्रयमेव  
अवश्यमेव यस्य निवेदनं स्वीकृतं भविष्यतीति—

प्राथम्ये

१५. ६. १९७२ ।

पत्रेन सन्तमकज्ञानम्

३ मित्राय अभिवादनमिच्छकं पत्रम्—

वेत्तप्रयागत

प्रियवर ' तमस्तेऽस्तु '

२० मार्च १९७२

सह ब्रह्मदीपस्य कृपया सङ्गन्तीर्तिमि । तत्रापि कुशलं वाञ्छामि इत्यादि  
कैमामिकी परोक्षाऽभवत् पत्राणि सारं मुद्रयन्तिष्यम् । यजुना दीपकालाव  
काशेषु भवान् कत्र गन्तुमिच्छति ' इति पत्रं सन्तं कर्मोत्तरायाव । तत्र सन्तु  
गिरिम्प्री जलप्रवाहाः निम्नगच्छन्तिस्वर्गान् । एतन् ब्रह्मदीपस्यैव-दृष्टान्तात्

अष्टोत्कलानाम् बाहुन्यं वतते । तत्सोटीच्यां दिशि पर्वतराज हिमालय  
तिष्ठति हिमोष्णीयालङ्कृतानि यस्य शिखरानि । श्वेतीश्वर उत्तरप्रदेशात्कुमार-  
भूत भान्तबर्षस्य मेखलेय पूर्वोपरजलनिध्यांबनायस्यस्तं विस्तीर्ण तत्रौषधम्,  
प्रस्तरा उत्तम काष्ठम् एकमादीनि बहुपत्रोवांति यस्तुष्टुपत्रेभ्यस्तं किं बहुना ।  
तत्रावयो महान्नायो भविष्यति । स्वास्य-वृद्धिं च तत्रावित्वा तस्यावहे  
परोक्षादिष्वे प्रमत्तविक्रमं च त्वरितमुत्तर दधम् ।

अश्विन्नहृदय

रामप्रसादः राजकक्षास्य ।

### ४. शिवशङ्ख-पत्रम्—

श्रीमत्सहोदय

एतदवगत्य भवन्तः नूनं हर्षमनुभविष्यन्ति यत्परमात्मन सहस्रानुकम्पया  
मम उपेक्षपुत्रस्य श्री० लिट्० इत्युपाधिबिभूषितस्य श्रीललीपाकुमारस्य परि-  
त्याज्यमङ्कार शारंगमोवासस्यस्य श्रीभक्तः अष्टिकस्य श्रीश्रीशङ्खपत्रस्य  
उपेक्षपुत्रा श्री० ए० इत्युपाधिबिभूषिता नलिनीदेव्या सह दिनकिं १२-४-  
१९०२ रात्री अष्टकादनमग्रे शारंगस्य भविष्यति । तत्परिचारमस्मिन् संयम-  
कार्ये तयागत्य शुभलागीर्वाहनामेन वरचभूषणमनुसङ्गम् लभभक्तः ।

नरही नन्दमत्तपुरम्

२-४-१९०२

भवता स्नेहपात्रम्

अश्वनीन्द्रकुमारः ।

### ५. गुप्तकप्रवेशस्य आवेगः—

श्रीगीलात वनारसीवास महोदयाः,

अवाहरमगम् देहली ७

महोदया

अवरप्रकाशिता 'अनुवादचन्द्रिका' मयावनीकितः । अस्या उपयोगिता बहु  
नितरां प्रमत्तोऽस्मि । रूपमा गुप्तकद्वयमधीनितमित्तवान् श्री० पी० पी० द्वारा  
शीघ्रं प्रेषणीयम् ।

भावकः—

नरही नन्दमत्तपुरम्

उत्तरप्रदेश

२-४-१९०२

हरिदामनागरः

चतुर्थोऽध्यायः.

१ क) सन्ध्यादर्श संस्कृत गद्य पद्य

१ एकस्मिन्महाकाण्डे जायया मह निबभान पवित्रये ययमि कलमानस्य  
 क्षयमपि मित्प्रमयेको विधिबनाभुनुरभयम् (कादम्बोपम २६)

५ देव काश्चित्पापशूलकृत्या मुक्तमादाय देव विज्ञापयति सवालभुवनतल-  
मवेष्टनवागमुदधिरिवेष्टन देव विज्ञापयत्पापमादयन्मुक्तो मिश्रित भुवनतल-  
दशनमिति कृत्वा देवपादमूनमगताहमिच्छामि तेषदशनमस्यभन्भविष्यमिति ।  
(कारुण्यपरिचि ८)

[illegible]

४ अयि पादस्थानवनव ! एतं विधातेन । किं व्रतमा ? अत्कण्डो, तच्छू-  
यताम् । अक्षिरंजिषु कान्तेन मुषोचनगोमिनगोलुपाणिभ्याम् कथान् भीम उतंस-  
मिष्यति । वरगोचरा ? ।

५. पुरा मे पनोत्थप्रियतमा नकुमुमान्तरं विनापदुमधिगयामा हवी-  
भ्यामन्वभ्यने मागं बन्धित्वा कुत्र वा महान्छवन्नरति । क इदानीं सह-  
कारभन्नेशातिपुनत्तनी पन्थविना महने । (भाकृतेने ३)

६. ता क्रमशः जन्मभूमिं ज्ञानं विद्यां च कलकलमपस्वयानि विभक्तं वयं-प्रमाणं  
प्रत्ययाकारणं स्वयमेव पश्यन्तु न-इत्युच्यते । (काव्य-वर्णनम्)

७ नो कृशन्तरी भगवन्ना श्राम्योकिन्तु साधोक्तं वस्तुतः पङ्क्तिः पोषितौ

१ त्रीणाकोटरे = पुरातने संस्करणे मे । जाम्बा = स्त्री । २ लवङ्गि = समृद्ध ।  
विहङ्गम = पक्षी ३ शिलोषरा = शीवा । उत्तानित = लुप्त हुआ ४ शोणित  
= क्षुब्ध शोणपाणि = रक्तहस्ता कर्च = श्वास उत्संसय = प्रलङ्घन करना ।  
५ अनु + धाम् = नेवां केरना । सहजार = सीमा । धर्ममुक्तावता = माधवीलता  
पलेन = पथ ६ कन्ध = स्त्री । प्रकण्या = संख्या ३ कल्प = विधि

परिस्मितौ च कृतचुटी च बदीवमंथितया विशा नावधानेन परिपाठितौ ।  
समनन्तरञ्च शर्मदिकादशे रथे छात्राय कन्यापत्नीय मुक्ताया यया विश्रामय्या  
यितौ । (उत्तर० २)

५ प्रवृत्तशयने निवृत्त्या इवौ परिव्रजतस्मिन्मतेन चरन्तुं परिव्राजिकाया  
कस्याभिविनोदमात्रा निवृत्ति । (मानविकामित्तं ४)

६ तेषु तेषु रम्यतमेषु रम्यतमेषु तेषां मते तानि मानववृत्तिप्रधानान्वपुन-  
रुक्तानि न केनचिद्विद्या कादम्बरी मत्तमवतया मत्तमया मत्तमया  
इवेता नृपुण्यकांक्षया मत्तमया कादम्बरी मत्तमया मत्तमया मत्तमया मत्तमया  
मुक्तायावतया मत्तमया कादम्बरी मत्तमया मत्तमया मत्तमया मत्तमया मत्तमया  
(उत्तर० ३६६)

१० मूलं तेषु तेषु दीप माधोः निशा मुक्ताया मत्तमया मत्तमया ।  
(गच्छतम्ये — १५)

११ प्रमोद भवति वसुधारे वसुधारे मत्तमया । तत्किमस्ति नष्ट  
गाथाया वसुधारे १ उत्तर० मत्तमया ३)

१२ तानि वसुधारे वसुधारे मत्तमया वसुधारे मत्तमया वसुधारे मत्तमया  
वसुधारे मत्तमया वसुधारे मत्तमया वसुधारे मत्तमया वसुधारे मत्तमया

१३ न ज्ञातमि कस्यापि कादम्बरी मत्तमया मत्तमया मत्तमया मत्तमया  
मत्तमया मत्तमया मत्तमया मत्तमया मत्तमया मत्तमया मत्तमया मत्तमया

१४ धिक् मा वसुधारे मत्तमया मत्तमया मत्तमया मत्तमया मत्तमया  
(कादम्बरी)

१५ हा वसुधारे मत्तमया वसुधारे मत्तमया मत्तमया मत्तमया मत्तमया  
मत्तमया मत्तमया मत्तमया मत्तमया मत्तमया मत्तमया मत्तमया मत्तमया

१६ वसुधारे मत्तमया मत्तमया मत्तमया मत्तमया मत्तमया मत्तमया  
मत्तमया मत्तमया मत्तमया मत्तमया मत्तमया मत्तमया मत्तमया मत्तमया  
मत्तमया मत्तमया मत्तमया मत्तमया मत्तमया मत्तमया मत्तमया मत्तमया  
मत्तमया मत्तमया मत्तमया मत्तमया मत्तमया मत्तमया मत्तमया मत्तमया

१७ तेषु वसुधारे मत्तमया मत्तमया मत्तमया मत्तमया मत्तमया

५ प्रवृत्त = हृत्वादार परिव्राजिका = मन्त्रादिनी । ११ समविद्वान् =  
धनमिश्र १२ अपहस्तिन = दूर करके । १६ गावहीविन् = अबुत  
समपित = कूट । मन्त्रव्यवस्था = बहो मृत्ति ही जेप हो यथात नृपु का ।  
१७ पादप = वृक्ष ।



परीक्षा १०० पल्लवसंख्यायाः गतसंज्ञैतद् दृश्यमानमपि नास्ति (पल्लव ९)

१८ तस्य नक्षत्रपटस्य प्रत्येकं क्षणमिदं त्रैलोक्यस्यैव स्वर्णिता गम्यतः  
नृपप्रतिपत्त्याकांक्षितविदितकर्मक्षेत्रात्पदं स्वर्णिता राशतद्वयमुत्तमलक्षणकृमुद-  
दण्डमेषां गम्य नरा गच्छन्तः । (कादम्बर्याम् १५३)

१६ मयमतया कथया सन्नित्यामिगम् । सुतमप्यसमं धातुम् धतिः  
कान्तिशयपि संतोषमात्रान्यनुभवममां वेदनापयनयति मुक्त्यजनस्य दुःखानि ।  
नानाहमि कथं कथयति किं नानिमानुभवाननुभूय पुन पुन मरागमिगान्  
न्यततामुपतन्म । नन्दस्वयां ।

२० उपकारिणि विश्वेन नृदमती यः समाचरति पापम् ।

१. वनममस्यगन्धे यगद्वि वमः ५ कच पतति १५

२१ म० वरगण कन्या भार्या किल पिता कुलम्  
गान्धर्वान् मानसिष्ठान् मित्रान् मित्रान् वना ।

२२ सुतो धाव्य वरोदाहो न विनाय वदाव्य ।  
कसो नत्र विरागसो वल्लभ वा मत्ताकथ्य

२० मन्त्री, आदेशादि विधायक विमल एवम् ।  
अन्तर्गतमात्रे अन्तः न प्रविष्टम् ।

२६ सप्तमिष्व गोवत् ४७ श्रीशिवे दुःखमन्त्रम्  
॥ १ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

०५. सायं ४.०० बजे तक प्रवेश करने पर प्रवेश शुल्क ।  
तथा सायं ४.०० बजे तक प्रवेश करने पर प्रवेश शुल्क ।

२६. प्रप्रियमाणं च पश्यामि तं वदन्ति मयापि  
तं पशुं मनुजं प्रोक्तां क्षणं मनुजीयवाञ्छुः

७ न भानु कास कथानाम्भुजानां शास्त्रिणः ।  
इति या कथाम्भुजानां मयः परीक्षितवान् ।

१० तदपगत = वृत्तममुद अश्विकवृत्त = शिव का जैन विद्याना = योगी  
 पिरावत = रत्न का शायी ११ कंदन = दृग् अनु = पारा यवन = व्यास ।  
 इन्धन = नकदी । २० समस्यमन्त्र कृत् वानने शब्दा २ परीवाद =  
 निन्दा । शिवालयो = इन्द्र कर्त्त वाटिका । २३ हविष = धी । कृष्णवत्सन् =  
 शक्ति ।



- ६ मम उच्यस्य कब त्वयः विनियोगः कृतः ? (तुमने मेरे घन को किस प्रकार खर्च किया ?)
- १० अपि कुणलं (शिव) बभूव ? (आप अच्छे तो हैं ?)
- ११ तीर्त्तवश्चैवमुपरि च रश्मिः चर्चनेमिकर्मणः— (चक्र की नेमि के समान मुख और मुख बहुत घूमते रहते हैं ।)
- १२ ममभायो हि दुष्करः— (एकता का भासना करना बहुत कठिन है ।)
- १३ कालः कश्चित् प्रतीक्ष्यताम्— (कुछ समय प्रतीक्षा करो)
- १४ तिमि तान पश्यति— (सूती-नीं घात को बढ़ा देता है ।)
- १५ शिखी केवाग्निमिरयति मे बभूवः— (घट्टन घपनी छायाज ग में बभूव की छिपा रहा है ।)
- १६ न परिहृयामि, नाप समयः परिहृयस्य— (मैं हँसी-मजाक नहीं करता हूँ यह हँसी मजाक का समय नहीं है ।)
- १७ मृग मृगे सङ्गममवजगति— (मृग मृग का साथ देता है, खन्ने खन्ने या बुरे-बुरे का साथ होता है ।)
- १८ लोहापवीतो बलवान्मयो मे— (मेरे विचार में लोकनिष्ठा प्रसन्ननी है ।)
- १९ मकलबलवानामविगण्य बलान्निमेषागिण्यम्— (ममयानम्, उभ स्थान का संग्रह हो नहीं हो सकता ।)
- २० कि मिमन्त आमुकगताम्— (मम के घने तीन प्रजाता ।)
- २१ स्वभावा दृष्टिकर्म— (स्वभाव नहीं बदल सकता ।)
- २२ अतिभूयि गतो रश्मिरग्नोऽयम्— (हमकी चिन्ता की कोई सीमा नहीं रही ।)
- २३ अग्निमात्कुत— (आग में फक दो ।)
- २४ अग्नि रक्ष्यते गृहमग्निशेषः— (क्या तुम शुभ्र ज्ञान की रक्षा की ?)
- २५ मज्जजन्मोपजायतमुपवर्तन्ति— (मम उसकी हँसी करते हैं ।)
- २६ वा पुषोष लाटस्ममयान् विद्यमान्— (उन उमा के संतः अग में सीटम भर क्या ।)
- २७ इति लांकावायः न विस्मयामासादयति— (इस लोकोहित में चाँद बिनाद नहीं ।)
- २८ कालस्य कुटिला वति— (मम की वति कुटिल है ।)

- २९ गुणान् भूषयति कथम्—(इस चीर गुण का साथ हीन में सुलभ है ।)
- ३० भूषा म नावशयं वचः—(मेरी कहानी अन्त तक मनी ।)
- ३१ अजीर्णं भोजनं विषम्—(अपच म भोजन करना विष के तुल्य है ।)
- ३२ कुतूहलस्य तस्य चेतसि पदं कृतम्—(उमकं चित्त में बड़ा आसक्त है ।)
- ३३ अतिदानाद् अतिर्विद्वः—(अति बुरो है ।)
- ३४ धाममतिविस्मयं—(अधिक कहने की आवश्यकता नहीं ।)
- ३५ विषद् विषदयन्नुच्चरति—(एक विषमि के पीछे दूसरी विषमि आती है ।)
- ३६ उत्कर्षा साधकाश्च—(नियम के अपवाद भी होते हैं ।)
- ३७ स्वहस्तेनान्तराकषणम्—(अपने हाथ से दूसरा उठाना अपने ही हाथ धपना लोभ करने ।)
- ३८ महति प्राप्ते—, प्राप्त बड़ा सुख में ।)
- ३९ परिचये वयसि—(इसकी हुई अवस्था में बुढ़ापे में ।)
- ४० किं ब्रूता—(अधिक कहने से कब समाप्त लगाना में ।)
- ४१ प्रसिद्धममङ्गलम्—(अपमान दूर हो भगवान् लोभ न करे ।)
- ४२ अगम्यं गृहं धूपम्—(विद्वे के घर बसना ।)
- ४३ धात्रा मुक्ताश्च अकिञ्चनलोभाः—(बड़ों की धात्रा मिर धामे ।)
- ४४ अनुनिष्ठारमना नियोगम्—(अपमान काय करो ।)
- ४५ अतिपरिचयादवज्ञा—(अधिक परिचय से अपमान होता है ।)
- ४६ को वृत्तात्मनश्चयवत्या—, चीमनाली का क्या समाचार है ?
- ४७ मन्वेन कथ्यमना न दृश्यते—(किसे महदम का मन सुनो न हुंसा ?)
- ४८ चिन्ता ज्वरी मनुष्याद्याम्—(चिन्ता बहुत बुरी है ।)
- ४९ मत्सुवासादृष्टिः—(मकटल मेरी घोर उसकी दृष्टि की)
- ५० मयनाशो मनुष्यो ह्यस्य स्थितिः परिहृतः—(चित्तकुल न होने से छोड़ा होता अवस्था है ।)
- ५१ महतां पदमनुविप्रयम्—(बड़ों का अनुकरण करो ।)
- ५२ न वनति मनु वाक्यं मन्वनामा कटाक्षिन्—(मनुष्य अपने वचन का ध्यान करते हैं ।)
- ५३ नाथ मृनिदीप्य ब्रह्मिष्यति—(मृनि इसमें बुरा न माने ।)
- ५४ चोराणां मनुतं वनम्—(चोर का वन सूठ है ।)

- ५५ योवनपदवीमाहृतः (वह जवान हो गया )
- ५६ तृष्णका लम्पस्यते (तृष्णा कमो कम महो होती )
- ५७ किमस्मान् सम्भृतदोषैरपेक्षितम् (हमारे ऊपर इतने दोष क्यों लगाते हो )
- ५८ स महति जीवितसमये वनते (वह मृत्यु के सकट में है ।)
- ५९ इति कलापरम्परया श्रुतमस्माभिः— (हमने ऐसा कानों-काद सुना है ।)
- ६० विद्या प्रत्यकारणं देव न सिध्यति— (ईश्वर उनकी सहायता करता है या अपनी सहायता स्वयं करते हैं )
- ६१ भित्तिर्किं हि शंक (घपनी-घपनी परन्द घपना-घपना स्वाव ।)
- ६२ इति राज्ञा लिखितं सामपादमापाव— (उस प्रकार राजाओं को खली प्रति राजा दिखा कर ।)
- ६३ शक्यतां पति दीपनाशनं भवति— (दायी बनता है ।)
- ६४ स्वपुत्रनिषिद्धपञ्च भव— (अपने घर की पत्नी यही ठहरो—)
- ६५ धर्मपाठेषु व्यापार— (हमारे के काय में इत्यन्तव करना ,
- ६६ शर्मदम्नान् निशीयन्तम् (दागों से शीत पोतता हुआ, बहुत मोक्ष करता हुआ ।)
- ६७ अतिविषयमपतितम्— (मनगई दिया, ज्ञात हुआ )
- ६८ ग्राहमि मे प्रलय विहन्तुम्— (रूपमा मेरी शक्ति का धम्मीवार म कीजिए ।)
- ६९ पत्नीकृतप्रभृतिषु (मानिक का समक चुकाना ।)
- ७० वधनीयमिव जीवाश्चरम्— (मर चुकई मवा के निष्ठ रह गई ,
- ७१ धाकृतिर्बालुमागम्यमानुषनाम्— (उनका धाकार ही उनकी धामी-किटना बना रहा है ।)
- ७२ गमय ईशदुर्निधेयं कीर्तिम्— (बह गम का मंद गमय वा ,
- ७३ परिहासविद्वन्मनः सवे ' (हे मित्र ' ईश्वरी के कहा गया था )
- ७४ विषयमूनिरतो जीवितमत्यवाहयत् (विषयमून में तीन होकर उसने जीवन कितना ।)
- ७५ उमात्पदा मा प्रथाम— (उमका नाम उमा प्रसिद्ध हुआ ,
- ७६ धर्मशय सम्पन्नहीनवानमि— (वु मेरा नाव धन्तो तरह समझ गया है ।)



- ७७ मृत्प्रांमुंशे वतंते—मृत्प्रांमुंशं वत—(परमेवासा है )  
 ७८ न हि सर्वविदं सर्वं—(संसार में कोई भी सर्वज्ञ नहीं है )  
 ७९ तस्मिन् वस्तुसमं बलम्—(कस्तुसमं कोई बल नहीं )  
 ८० नि स्पृहस्वानुशू जगत्—(प्रांशो को मन्त्रां तिनके के समान है )  
 ८१ पुत्रं शत्रुमपि हन्ति—(पुत्रं पुत्रं शत्रुं क त्रयान् है ,  
 ८२ मातुर्गौ विरमुदीर्यमाधाम—(मनुष्य को भाषा में कहा  
 ८३ मेहा दाहना दैवद्विपक—(मेहा दैवमिह )  
 ८४ भुवर्गायमानमेताश्चनम्—(यह स्वान् पुष्पी पर मर्गा है )  
 ८५ भुवर्गमर्थेन मज्जोपात्तं—(लोभी को इत्य मे बल मे करना चाहिए )  
 ८६ यत्नादिनि गव्यस्वायुषविद्याम् परा प्रतिष्ठायां—(ममद्य गव्यविद्यायो स  
 नू पारंगत हो गया है ।)  
 ८७ गात्राणामनीलादग्निं मनुज—(गिरा धपये चक्रों पर भी र गमिक न  
 रहा ।)  
 ८८ न य पश इत्यनया परिच्छेत्तं नत्वम्—(उपजी कीति की पीया नहीं )  
 ८९ मे न मया स्वयं श्रुत्वा—(यह उगनी इत्या के धरुपन नहीं था )  
 ९० क्वां योशे जामुना गा मे श्रवयति—(मुझे गोपमे या पुत्रन में बली  
 सब समर्थ है ।)  
 ९१ एते हि दीनां गुणमन्विषाते निमज्जन्ति—(यतेक गुणों में एक दोष  
 क्षिप्त जाता है ।)  
 ९२ धमे, मस्मगमुद्योधिगोमि—(धमे धामने तो धमे धोपुत्री धाददितार्थ ।)  
 ९३ न स्वां तृणाय तुल वा मन्ये—(मै तुम्हें निनके के सधान भी नहीं  
 समझता ।)  
 ९४ नृचिभेषं तम—(मुझे न धुदत योष धामकार धधोन वन धंधरा ।)  
 ९५ धानन्दपरिचरिणा चक्षुषा—(धानन्दपुला मेवा मे )  
 ९६ मरुतनी धूचनं धान्दयति—(मरुतनी धिर दित्ता रही है )  
 ९७ न च्छेदन्त्यहकारोतिपात—(यदि ओर कोई कार्य न रहा ।)  
 ९८ क्षमी त्रिनोदकोपाया मदीपना एव इ न्दम्य—(ये धनोविनाद के साधन  
 वात्मन में दुष्ट को उठा रहे है ।)  
 ९९ श्रीजम्बितया सा न परितोष्यते अन्धा—(यह श्रीजम्बिता में दन्दासो  
 स कम नहीं ।)

१०० गणने जीवितादिषु प्रवादः— (यह तुम्हारी निम्न जीवनपथन रहेगी )

१०१ तुल्यप्रतिद्वन्द्व वचन युद्धम्— (युद्ध बराबर शक्तिशाली में हुआ )

१०२ कतिपयविवसमस्याविनी जीवनर्थाः— (जीवन की शोभा बोंड दिन रहती है ।)

१०३ अनुदिशत परिहीयसंज्ञम्— (दिन प्रतिदिन तु दबने हो रही है )

१०४ मनुष्या स्मृतनशासा— (मनुष्य होने पर मनुष्य का व्यवहार हो )

१०५ मृतमृगदिश्यते परित्यक्तम्— (मृग को उपदेश देना गरज है ।)

१०६ परित्रयस्त्वैना मा कदापि भवन्ति न हस्ते पतिष्यन्ति— हमको एकाग्रता नहीं किसी भयभीत के हाथ में न पड़ जाय ।)

१०७ ग सुहृद स्वमने य ध्यात्— (आपत्काल में साथ देनेवाला ही मित्र होता है ।)

१०८ स्वसुखेवापवा सरस्वती— (सहितता संदेश)

१०९ कर्मफलानि पूजाहोमपराडा अनुकूलानि— (किसी पुरुष अथवा किसी लक्ष्मी ने सबकुशल की है ।)

११० विज्ञाता समुद्रा इव भुवनम्— (मानवी सत्त्वभूति में पड़ी गते सने)

१११ नमः कदापि मया निश्रिय कुतश्च— (मैंने कभी भयभीत हुआ नहीं है )

११२ पारामार्थमहती तु विबुधम्— (मनुष्यभार वर्षों हट्टे ।)

११३ नया मृदयवन्मधोर्ध्वनिस्त कामदेवव्याघ्रेण मन्त्रीपुरतोऽपस्तु न— (हमने अपने प्रतापप्रिय का विश्र कोना किन्तु मन्त्रियों के आगे कामदेव के हाथ में दिया ।)

११४ प्रादुर्भावे ह्यने चोद पदेन— (चोर गंगे के चिह्न में पकड़ जाता है ।)

११५ गृहहवि— (भविष्यमान के समस्त बुद्धे काम करना ।)

११६ परिच्छेदानीत— (त्रिमूर्ति परिच्छेद न वे उनके त्रिमूर्ति वरान्त करना समझना हो ।)

११७ यन्त पुरविग्रहपञ्चमूर्तको गतपि— (गति गतिशील के विग्रह में उत्कण्ठित है ।)

११८ विलम्बापि विकीर्णमप्यत्र— (बालों को चिल्ले का हमने चिल्ले का चिल्ले )

११९ न कामचारो मयि शिष्टनाथ— (मुझ निरुद्ध पर नतान्त न न दोष न लगाओ ।)

- १२० अन्तर्मनसा गृहीतवान्—(अपना मन समझो ।)
- १२१ तदर्थं नो वार्तामर्षिणि—(इस सब प्रकार अच्छे है—) मर मरमा
- १२२ त्वत्तु मयं समाचारिण पत्रमिच्छामहे ।  
 धान्यनां विषयमाचारिण पत्रमस्मात् न वदयति ।  
 दूर जन दूसरे के छोटे छोटे बातों को जो देखता है, किन्तु अपने बड़े-  
 बड़े दोषों को नहीं देखता ।)
- १२३ त्वं मम जीविनमवस्यसीधुम्—(तुम मेरे जीवन का एकमात्र संबंधी हो ।)
- १२४ वाक्यमन्वया मनुष्यनाम राजा—(मेरी बात में उस राजा से कहना ।)
- १२५ धनमुक्त्यभ्युत्थानं—(अपने धनमुक्त पति पावे वाली)
- १२६ धनमुक्त्य विद्या रसनापुनर्नको—(विद्या उसकी जिह्वा पर थी ।)
- १२७ ज्ञानमा क क कायाधीनि—(मासूम करो कि कौन-कौन धार्मी है ।)
- १२८ अधिपति मन्विकता श्रेष्ठम्—(बड़े से सब भूतों में श्रेष्ठ है ।)
- १२९ जनेनिहा विमोक्षितलोचन मायकाजीत—(विद्या ने मोरे और मेरी  
 धारों को दूर कर दी ।)
- १३० न म मृग्युर्न पुनश्चमान—(अपमान से पीत नहीं ।)
- १३१ प्रत्युपसर्ग विषयवस्तु—(विषय-विषय को धारण करो ।)
- १३२ लक्ष्मि मुक्तमिदमप्यवसात् नु दुष्कम्—(करने से कहना सत्य है ।)
- १३३ तदर्थं मम हृदयं गत्य जानम्—(अपने बचन ने मेरे हृदय पर बाण  
 का कार्य किया ।)
- १३४ तदर्थं विदधे त्वं मम दमयन्त्या सविधे—(मेरी समझती के घाने  
 मुझारी प्रशांता करके ।)
- १३५ सकलविपुलप्राणा धनं बद्धा सुनैस्ते—(जिस पर सुनाने लक्षकों ने  
 जानुओं का जीवन की दाता रक्षी की ।)
- १३६ मितं न क्षणं न शब्दो हि वाग्मिना—(चोटे शब्दों में तत्त्व की बात  
 करना ही वाक्कला है ।)
- १३७ मण्डलापरि स्फोट—(आज के ऊपर फुलसी होना एक दुःख के ऊपर  
 दूसरी दुःख होना ।)
- १३८ अवदातनानेन चरितेन कुलमुत्प्रेक्ष्य—(इस उद्वेलित चरित से तुम  
 अपने कुल को ऊँचा बनाओगे ।)

- १३८ इदं प्रायेण तव कर्णपत्रमायातम्— (आयद आपने यह मुँह लिया हो ।)
- १४० हृदि एतः शान्तीमुपधातुमर्हति— (इन शब्दों को धनो-मोति पाद रखिए ।)
- १४१, तनाहो परिगमिता समा कश्चिन्— (उमने किसी प्रकार आठ वर्ष बिताये ।)
- १४२ उपकारं प्रत्युपकारेण विशेषयितव्यम्— (उपकार का बदला उपकार के धुकाता चाहिए ।)
- १४३ हृदयगतं परिहासं— (मनाहर हस्य ।)
- १४४ मित्राणां तत्त्वविक्रयघाता विषम्— (मित्रों को धोखे के लिए बिपत्ति कसौटी है ।)
- १४५ शोधनमूर्तेषु सम्मिश्रम्— (धध-धन में बबानी भर गयी ।)
- १४६ शपथमन्वयसहस्रेषाम् मित्रो— (सतास पाद-मित्रों के सम्मेलन की गाँठ है ।)
- १४७ दामी देवीशब्दं समितः— (दामी रानी के घर को प्राप्त हुई ।)
- १४८ अस्माकं शान्ताः शान्ताः शान्ताः न शान्तव्यम्— (इस स्थान में तब कबम की कत हिली ।)
- १४९ स्नेहस्यैकाग्रिणीभूता— (एक साथ स्नेह की शानु बन गई ।)
- १५० धर्मशास्त्रा बोध्या न शक्तिर्यो भविष्यति— (मही तो यह पुनर्गति संकल न होपी ।)
- १५१ कन शम्भेन गोधारशीकरोमि दुःखम्— (सम्य रियके पाय में धपते दुःख की कम कर्के ।)
- १५२ न शम्भेन शक्तिर्यो भविष्यति— (रत्न किसी को कुँहता मही बर गो बुँधा बाला है ।)

### तोहोफ्तवों (PROVERBS)

२ सज्जोकृतं सुकृतिनं परिपालयन्ति । प्रत्येक जग्य पर बचन न जाय ।

The virtuous make good their promise.

२ अवां घटां शोधयन्ति नूतनम् । धधवाः सधुगंकुम्भो न करोति शब्दम्  
शोया चता बाजे घना ।) An empty vessel makes much noise.

- ३ इती नष्टस्तो नष्टः (खोखी का कुत्ता घर का न घाट था ।) A man falls between two stools.
- ४ कस्युक्तमेव निन्दति कुक्कुत्सर्को नारी । (नाथ न जाने क्षीप्त हुआ ।) A bad workman quarrels with his tools.
- ५ आयुक्तमिति कल्याण कार्यमिष्टि हि संमति । (होनेहार विरचान के हीत जीतने पान) Coming events cast their shadows before.
- ६ नि सारम्य पद धर्म्य प्रत्येसारम्यरे महान् । (ऊंची हूमान फीका पक-  
वान् , Great cry little won)
- ७ नवा हुमाना नव एव एवमा । (नए लक धपनी डेढ़ डेढ़ की मज्जिद  
बसाना है ) New Lords new laws.
- ८ गतस्य सांख्य नस्ति पथवा निबोधयेति विष्णु सैवज्ञानम् । (यथा काले  
दत्त पर प्रत्येककाले बहुनस्ति विष्णु ? (यस पक्षपात होत क्या कस  
विधिवा पुत यह लेत ) I know not coming over spirit talk.
- ९ विदुष्वनर्था बहुमीचनन्ति, राधका विषद विनयदन्तुष्यन्ति । (गरीबी में  
घाटा बीता या ताह न विरा मन्त्र पर घटका ) Misadventure  
never comes alone.
- १० न कृपमनन दुष्कम प्रीतिम बह्विना एते । (यथा हिममति विधोषप्रय  
शीर्षे मय मधमिष्ट । (का मयो नय कुर्या मन्त्राने नय लक हिममनन  
मे मन्त्रोपनी धापे धोपाय पर नये ।) While the horse lives, the horse serves.
- ११ परिचितिमावकता सन्ततममनादभादने भवति । (मान घट नित के  
पर लपे ।) Familiarity breeds contempt.
- १२ याचको याचक इहा इवानन्द मुदुंरायने । (कुत्ता कुत्ते का जेनी है ।)  
Two of the traders seldom agree.
- १३ महाजनों के मन म पन्था । (बड़ों की राह जनी ।) Do as the great men do.
- १४ द्वा पादे । (मयने राजा म कि नाइनाउपानहम् । (यथा मन्त्रमर्पि  
पानीधे मयनयेव पादकम् । (यादव मिर के साथ जानी है ।)
- १५ निरुक्तपादये द्वेष्टे मन्त्रोपनि द्वापने, यथा यव विदुज्जना नस्ति  
पनाप्यस्तवाप्यधीरपि । (सन्धी में काना राजा ।) Figure among  
cyphers.



१६ मदान् महत्येव करोति विकल्पम्, अथवा—अनुकूलते वनजानि न तु गन्धायुक्तानि केसरी (होर नादन के मन्त्रे पर ही गन्ता है) The great display their power only before the great

१७ धर्मी शून्य वेति न वेति निबन्धः, अथवा—शून्यो गुहा वेति न वेति निर्गुणः (होरे की परब जोहरी ही जाने) The mighty knows what though > and not the weak

१८ अणि घन्वन्तरिवेण किं करोति मलयुधिं अथवा—मरणं प्रहृति शरीरिणाम् (मृत्यु और ग्राहक का तथा प्रतीक्षा), Death keeps no counsel or Death give none

१९ इन्द्रोऽपि नमूना मतिं स्वयं प्रकटयितुमर्हः (अपने मंह मियां मिट्टु होना) अपने मुंह अपनी खड़ाई सोभा नहीं देना, Self-praise is no recommendation

२० कण्टकनैव कण्टकम्, अथवा पितामहाया पितामहायपैशोत्तर देयम् (काँटे से काँटा निकालना आता है या मेरा को पैसा) I take at

२१ यो यदुपनि कीदृ हि नमते सोऽपि सत्कर्मम् (जैसा करोगे वैसा भरोगे) As you sow so shall you reap

२२ बह्मसम्भे लघुहिया (लोहा पहन निकली बुहिया) Much ado about nothing

२३ हितमहितं वीक्ष्य निकाममाचरेत् (जितनी चाहे देखी उतने पैर फैलाओ) Cut your coat according to your cloth

२४ नम्य तवेव हि मधुर वस्त्र मनीषक संमानम् अथवा—सर्वे स्वार्थं समीकृत्य अथवा—सर्वे कामधामनीय पश्यति (काई अपना सस्ती की लट्टी नहीं कहता), Every porter praises his own pot

२५ न हि सुख दुःखं विना सम्पत्ते (यवा बिना मेवा नहीं) No pains no gains

२६ शुभघोषोऽपि किं याति शक्यः कलहसनाम्, अथवा—

या वस्य प्रकृतिः स्वभाववनिता केनापि न त्यज्यते अथवा—

शुभोऽपि किन्तु पयसा घृतेन न निम्बवृक्षो मनुस्त्वमेति अथवा—

आकण्ठबलमसोऽपि स्वा निहृत्यं विमुखा, अथवा—

न हि कस्तूरिकाभोदः शपथेन निवाचनं (आदत सिर के साथ

आती है ) It is hard to break an old hog of an old custom

२३ कष्ट सन्तु पराश्रय (परीचय नपरेह नृप नाहीं) Dependence is indeed painful.

२४ कुलवश कुल नश्यत् इव वयः वरुण का उपश्रै पून नमान  
A bad descendant lasts as the time

२५ कां धर्मं कृपया निना इया धर्म का पुन, । No p. v. a. h. a. mercy

२६ इवचिन्दनयानेन अमरा गुपतं घन (बंद बंद में घन भरे),  
Many a ... make ...

२७ पयःपानं भुजङ्गाया केवल विषवधनम् (नो नु सीधे दूध में नीम  
म पीटा होय) Snake is venomous merely by drinking milk

२८ वीरगोप्या वयःपरा यशसा वसी वसीयस्य नु नीतिपरां जिसकी  
बाड़ी उगकी भय) Might is right or Fortune favours the brave

२९ पलाना शोभन वयम् (शोभा के पल शोभन उका) City is the  
only strength of a child.

३० पतनी वसता दया तदा न/कस्थ-पामा विवलि (दूध का जला छाछ  
कूँ कूँ का पीता है) A burnt child dreads the fire

३१ निरुगदन्निविष्ट इका न मिहयते हिम् ? (यामी गमी में कुला भी  
वा होता है) Every cock lights his own lantern

३२ दुबलस्य बल राजा (निबल के बल राजा) The king is the  
strength of the weak

३३ दूरस्था पवता मया (दूर के होने मुझसे) Distance en-  
chantment to the view

३४ पथधन्य भावय निन्दय (दीनन का तथा कुल है) Weal is  
the root of all calamities

३५ कथां न ध्यादस्मिन्नकना प्राकृतम्पुननयु पथवा-ससंगवति  
निधनान्यनि नारयन्नि धर्मना कन्यां मटराश्रय यथवा हरे पादाङ्गनि  
इलाप्या त इलाप्य सङ्गोहमम् वडा के नडा न डाटे भी नर जाने हैं It's  
wise to take refuge under the great

४० मन्दोष्णविक्रमोद्योगः सदा विषयभारमवेन शयना शनं कथा शनं कथा शनं पवनलङ्घनम् (सहज पके से थोड़ा हाँस ) Slow and steady wins the race.

४१ न मुनि पुनराकल्पो न वामो वचने मिरि (न तो मनु तेल होगा न राधा नाचगी ) If the sky falls we shall catch larks ) if desires were horses' heels would ride them.

४२ गतस्य शोचन नास्ति शोकी तरहि विचारि रे ) Let bygones be bygones

४३ संसगवा दोगमुखा मध्वनि (एक मछली सार ताँकाव को मत्ता करती है ) A black sheep infects the whole flock

४४ घनाकुला रामपथ हि निश्चितं पथं चिन्तु बर्धमपथेन गमयते शयमा—बतमानेन कानन बतगति मनीषिण (जैसा देना वैसा भोग , Do as Rome is the Romans do.

४५ यथा बृक्षमिच्छा फलेभ्यः (जैसा मूल वैसी बघेट ) Think as you are according to his mark.

४६ ये गजानि मुह्यद्बहुलपरा खड्गानि नैताद्याः (जो गजान है वे बरमने नहीं , Barking dogs seldom bite

४७ एका हिया द्वयदेकरी प्रगिह्या (एक पत्थर दो काम ) To kill two birds with one stone

४८ कथयोरजस्य कटूनादि विलान्वयस्या शयवा—पवित्रतोऽपि वर मन्त्रे मुखो हिनकारक A courageous foe is better than a cowardly friend

४९ अज्ञविद्या अशक्तौ (नीचे इकीय सना जान ) Little knowledge is a dangerous thing

५० शीघ्रवाद् ध्रुव चरन् प्रवक्ता—समस्त कपोतोऽवो मयूरास्तु (नीतकण न तेरह उचारे A bird in hand is better than two in the bush

५१ तथा बाणो मुखे मुखे (पीछी उगनियां बराबर नहीं ) There are men and men.

५२ गत कालो न चागति (यथा वक्त फिर श्राव आता नहीं ) Time once past cannot be recalled

१ - प्रतिदण होता चला (गधर का सिर नीचा , Proud goes before & fall)

२ - एकस्य हि शिवादोदय इवते न तु प्राणिन एक हाथ से तानी नहीं बणती, यथवा एकला बना जाह नही कोठला ।) It takes two to make a row or one shadow does not make a summer

३ - स्वयं करोति दुःख न तडि कर्माणि पावुषु ।

दशाननोद्भूत मोतां कथनं न महोदधे ॥

(लड़ जाह पहन दोऊ बीच हीं करि जाय Wicked person commences a battle and himself may suffers for it

४ - पराधर्मे परितोष सर्वथा भुकर नैवाम्

धर्मं स्वोपमनूढान् कर्मवित् महामन ॥

(उपदेष्टा से उदाहरण उलम) Example is better than precept

५ - भक्षितं हि मधुमे न मालां व्याधि (मंहि के कारण मूत्र मूषावा से दुख भोग प्राण प्राण , Even by using bitter pills one is not free from disease.

६ - न मुहूर्द व्यासते य स्यात् (बन्धुपदे पर आतिथ को बंने की मीत , A friend in need is a friend indeed

७ - विषकुलं पयोधुषम् (मंहि से राय बगल में छुटी A wolf in lamb's clothing

८ - कस्यावस्थं सुखमुपलभ दुःखमेकान्तिकी वा (हर रात हीं कदा ? Christas comes but once a year

९ - हस्तविरक्तस्य जीवनमही दारिद्र्यं त्यज्यते यथवा—दारिद्र्यपदीषो मुक्षारविनाशी (गरीब हीं जोक सब की भारी ।) A light purse is a heavy curse

१० - वक्रवर्त्तित्वत्ते दुःखानि च सुखानि च (बार दिन की बांदनी फिर झंझरी गत Every spring there is an autumn

११ - या धृवाणि परित्यज्य ह्यधृवाणि निषेवत ।

धृवाणि तस्य नश्यन्ति ह्यधृवा नश्यन्ति च ।

दुविधा में दोनों गये बाका मिथी न राय ।) A man fails between two stools.

६७ प्राणिनां हि निहृष्टाणि जन्मभूमिः परा प्रिया, यद्यथा—जननी जन्म-  
भूमिश्च स्वर्गादपि शरीयसी (जो मूल अपने घर में वह न किसी के घर में )  
East or west home is the best

६८ हा प्रान सम्प्राप्त गतानि दिनानि तानि (वे दिन गये जब खलीज  
की फासता उठाना करने थे ) Gone are those days

६९ विश्वस्तेषु च ब्रह्मना परिमल्यचोप न शीघ्रं हि न । यद्यथा  
धनुष्माकह्य मृतं हि हत्वा कि नाम पोष्यम् ।

(विश्वविनाश महापाप है ), It is a great sin to harm a person  
who comes for shelter

६६ यमन्याय तु नश्यन्त मोक्षयोगि विमुञ्चन्ति (बुरे का साथी कौन है ?)  
None would take as friend of a wicked person

६७ न ह्ये शक्ति कनो पुमे (एकता महान् शक्ति है ) Union is  
strength

६८ शुभस्य शीघ्रम् (सुरत शक्य महाकल्याण ) He gives thrice  
who gives in a trice,

६९ व्यतर्क्यन् बीरतेयोऽपि पदमेक न नश्यति (घातस दुरी दला है ,  
Idleness is a great disease

७० पाशको जोहसमेन मुद्वर्त्तरतिहम्यते (नेहू के संग बुल पिये ) One  
is to suffer when associated with another

७१ नीचा बदति न कुलो वर्धति न साधुः करोत्येव । यद्यथा—बुद्धते हि  
कलेन साधवो न तु कथेन निजोपयोमिताम् (सुखन करते हैं, कहते नहीं )  
Good men prove their usefulness by deeds not by words.

७२ वधनश्रद्धो नृहकपोतश्चिह्नसाया मुखे पतति (बाकाम से गिरा झड्ड  
में घटता ) Out of the flying pan into the fire

७३ सर्वनाथो बहुव्यन्ते एवै स्वर्जति पण्डितः (आपने जोर की लोपोटी ही  
सही—Something is better than nothing.

७४ पक्षो हि नमसि निस्तः सेष्युः पतति मृषंति (घातमान पर धुका  
अपने सिर पड़ा ) Slander hurts the slanderer

७५ न बिडालो मवेद्यन्न तत्र जीवन्ति मूषका (घिया घर नहीं बीबी को  
हर नहीं ) Where the cat is away the mice will play





८३ शास्त्रं व्यवहारं च स्थितान्तरं नृणां भवेत् ।

ग्राहक और व्यवहार में संबंध न करने से ला सुखी रहता है ।

६० शुद्धिं हि नरनाशो न मर्त्योऽनन्तरमा

नृपं क उदयं तं ज्ञानं परं न कुपयिष्यामि न कश्चिद्वा तं ज्वलति ॥

८१ अनुभवां न सूनः पाठपन्नः वपुः

प्रमथानि परितः सुखं नानिनाम

वृक्ष प्राणन भिन्न पर भूषण को प्रचण्ड रूप मरना है निम्न प्राणन साक्षिण।

का ताप भगना छु या म का करता है ।)

६७ अन्तर्यामि कृतं यदा लिखितं तदा लिखितं अथ

जब रीति है अन्याय करना है तब उसे बोल शक मदाना है ।

६१ तर्हि दुःखदुःखान्तं वागकलाम् स्वकीये

परमेश्वरिणः श्रुतं गानं कृतं विद्वत् २

ਸਾਗਰੀ ਰਾਜਨਾ ਤਾਂ ਸਾਗਰੀ ਤਾਂ ਬਖਸ਼ੀ ਨਵਰੀ ਹੈ ਕਿੰਨ੍ਹ ਰਸ ਸਾਗਰਨ ਪਿਤਰੇ ॥

गो दुग्धस्य को रसनाद्यन्तरं मूत्रं कश्चिदुत्पन्नं पित्तं च ॥

६५ अथ कर्तव्येन कर्तव्यं तदा विद्वान् विद्वत्पुत्रः ।

। रापनी दक्षिण का दन्धस न दक्षिणतानी को मिलकु पाता है ।

६३ श्री. वा.अ.वि.प.४.महा.१.प.१० श्री.म.वा.

तं वेत्स्यहस्यकिमर्थं धृति नानुगम्यते ॥

(भयं भगवान् तदिदं उवाच धनं नास्तीति न ज्ञाते नो ब्रह्म सत्यं च न धर्म-  
कारं को विदो मया ?)

६॥ कौं जनिनि तसो जनादमधनोदुनि कदा को जे ॥

दोन जंगलां ॥ भयकानु कस कथा करत ॥ )

६५ को का दूजंनबागुगु धतिन सेमंग वान पुमाम ?

विज्ञान के क्षेत्र में महका कीन कथनाकर रह सकता है।

६५ प्रावारणोऽप्याहूनां सम्पन्नं यत्नत्सपिमुषे विषी ।

१. भाग्य साधन देना है तो परधन भी खर्चाई खड़ाकर चिकनाई धारण कर लेते हैं।)

६७ चर्द्धग यत्र चकृत्तागस्तत्र मौनं हि संभनम्

। जहाँ बाला लोभ बकना हो वहाँ वृष गहना ही धन्य है ।

६५ कलौ वेदान्तिकां भ्रान्तिं प्राप्नुयन् ब्रह्मका इव ।

(कनियुग में इस प्रकार बेदान्ती दिखाई देते हैं जैसे फाल्गुन मास में बालक ।)

२२ कल्पवृक्षांश्चमन्वानां प्रायो वासि यन्मायताम् ।

(मायवृक्षां के लिए कल्पवृक्ष भी टाक का पंढ बन जाता है ,

१०० क प्राप्नो वाञ्छन्ति स्नेह संख्याम् तिकृताम् च

(कोन वृद्धिमान् स्नेहपाथों पोर जान् से प्रेम वा तेल की माशा करेगा ?)

१०१ काले दत्तं चर ह्यन्यथकाले बहुलापि किम् ?

(समय पर घोड़ा भी विषा जाय तो बहुत है बाद में घोड़ा भी बेकार ,

१०२ कुरुक्षेत्रापि जगन्ने कश्चित्कश्चित्समहाशया

(कभी कभी निकुञ्ज स्थान में भी सज्जो बीजे पैदा हो जाती हैं ।)

१०३ न स्पृगानि पत्न्यामस्य गजवत्संसारं न कुञ्जर वरापि ।

(गजरास नह जाने पर भी हाथों कभी सिस्समी नकीया का पानी नहीं छूता

१०४ देवे वर्ज्यतां मते भुजापि प्रायता वज्रायते ।

(भाग्य के बिपरीत होने पर विजय भी प्राय बख बन जाता है )

१०५ न सुवर्गो ध्वनिस्त्यक्त वाक् कश्चिद् प्रजगते ।

(मोने में कैसी आवाज नहीं होती जैसी वासे में )

१०६ सुभिक्षिर्नैर्वाकराल न मुच्यते न पीयते काष्ठपरस विषासुधिः )

(भुखे लोग आकराल नहीं खाते पोर प्यासे आध्वरस की नहीं पीते ।,

१०७ यथा चित्तं तथा वाक्वा यथा वाचस्पतिरिव

चित्ते वाचि क्रियाया च साधुनामकल्पता ॥

सज्जन पुरुषों के मन वाणी पोर काम के कोई अन्तर नहीं होता ।)

# शुद्धाशुद्धिविवेक

लिंग, वचन, कारक की धृष्टियाँ

शुद्ध

— शुद्ध

१ गोपालो मम स्नेहवान्	गोपालो मम स्नेहपात्रम्
२ भवान् मम मित्राग्रि	भवान् मम मित्रमस्ति ।
३ अटायु प्राण तत्प्राण	अटायु प्राणान् तत्प्राण ।
४ देवो भान् सह गृह गतः	देवो भान् सह गृह गत
५ किं ते नव दारा भवति	किं सा नव दारा भवति ?
६ गोपाल स भोजन देहि	गोपाल तन्मं भोजन देहि ।
७ कोऽस्ति राजसखा	कोऽस्ति राजसख
८ वान् चन्द्रमा पश्यति	वान् चन्द्रमसं पश्यति
९ मम गृहदम्भ गृहमिदम्	मम गृहद गृहमिदम्
१० भवान् केन पथन वारयति ?	भवान् केन पथा वात्यति ?
११ नर इह जन्मे भक्ति कुर्यात्	नर इह जन्मनि भक्ति कुर्यात् ।
१२ महाराज प्राज्ञास्ति	महाराजस्य प्राज्ञा अस्ति ।
१३ परमात्मस्य इवो महिमा पश्य	परमात्मन इम महिमानं पश्य ।
१४ मम लक्ष्मी गर्वित	मम लक्ष्मी गर्वित ।

१ 'पात्रम्' शब्द चन्द्रहन्तिङ्ग है । २ 'मित्रम्' मित्र के ध्व में नपुंसक-  
लिङ्ग है । 'वान्' शब्द के साथ प्रथम पुरुष की क्रिया लगती है । ३ प्राण दार-  
सखात लाजे और अनु शब्दों का प्रयोग बहुवचन में होता है । ४ सह के  
साथ तृतीया विभक्ति होगी है । ५ दारा शब्द बहुवचनान्त है । ६ वा धातु  
के कर्म में चतुर्थी होगी है । ७ सखि शब्द समास में सकारान्त होता है ।  
८ चन्द्रमस शब्द हनन्त है । ९ मुहृद अर्द्ध धो हनन्त है । १० पथिन् शब्द  
की तृतीया के एकवचन में पथा होता है । ११ जन्मन् शब्द हनन्त है । १२  
यजन् शब्द महन् के साथ समस्त होने से सकारान्त हो जाता है । १३  
परमात्मन् का वक्ती में परमात्मन और महिमान् का द्वितीया में महिमान्  
क्य होता है (महिमान्, सम्मिन् आदि शब्द पुल्लिङ्ग हैं स्त्रीलिङ्ग नहीं) ।  
१४ लक्ष्मी शब्द की प्रथमा के एकवचन में विसम होता है । १५ भवान्

१५ भवानस्य किं नाम	जगत, किं नाम ?
१६ यम मने सन्देह	यम मनसि सन्देह
१७ नदीपथः नगरं गच्छ	नदीपथेन नगरं गच्छ ।
१८ भूपत्युः चाज्ञा अस्ति	भूपतेः चाज्ञा अस्ति ।
१९ नवमे कक्षायां शतानि छात्राः	नवम्यां कक्षायां शत छात्राः

### सन्धि की अनुष्ठितियाँ

२० देवांश्चाथ	देव उवाच
२१ कश्चीमो यास	कश्चो इमी शान
२२ धर्मज्ञा गच्छन्ति	धर्मो धर्मो गच्छन्ति ।
२३ धर्म्याधिकम्	धर्म्याधिकम् ।
२४ नरान्माकारय	नरान् आकारय
२५ हे देवागच्छ	हे देव आगच्छ ।
२६ मित्रं राज्ञः शक्यम्	मित्रघटमवदम् ।
२७ सोऽश्वकः सा गच्छति	सः आश्वकः आगच्छति
२८ मत्ति प्रियम्बदा	मत्ति प्रियम्बदे ।
२९ मः कश्चीने अतिवमः	मः कश्चीनेषु न्यवसन्

शब्द देलान है । १५ मनसं शब्द हवस्य और मन्सकनिहू है । १६ पथिम् शब्द समाम में अकारान्त हो जाता है । १७ पथि सन्देह समाम होने पर हरि के समान चलना है । १८ विद्वान् के बाद के सभी सम्बोधक शब्द एक-वचनान्त होने हैं । २० विमग के जोष होने पर सन्धि नहीं होती । २१ इकारान्त के द्विवचन में सन्धि नहीं होती । २२ अदस शब्द के प्रकार्ययुक्त-ई में सन्धि नहीं होती । २३ 'धर्मि धर्मिक में ति के ई को य् हो गया । २४ दीर्घ स्वर से न् पर रहने पर न् को द्वित्व नहीं होता । २५ सम्बोधन के धवग की पञ्चमी स्वर के साथ सन्धि नहीं होती । २६ स्वर पर रहने पदान्त में म् का अनुच्चार नहीं होना । २७ अकारान्त किसी स्वर के पर होने पर न के विमर्ग का जोष हो जाता है । २८ एक पद में आनुपम्य में और समाम में अवयव सन्धि होती है । २९ कश्चीने' शब्द देशविशेष का नाम होने में बहुवचन में प्रयुक्त होता है । वम घात का लङ् का रूप



३० आतुरादेशात् ।	आतुरादेशान् (आवादेशान्) ।
३१ गर्वो पञ्चस्य सत ।	गर्वो पञ्चस्य सत ।
३२ खानो सुप्तेन सत ।	खान सुप्तेन सेने ।
३३ मनो कस्यना ।	मन कस्यना ।

### सर्वनाम तथा विशेष्यविशेष्यतः की वस्तुनिर्देश

३४ इय पुस्तकं पश्य	इय पुस्तक पश्य ।
३५ सर्वो मरा पञ्चस्यति	सर्वो मरा पञ्चस्यति ।
३६ स इय स्त्रीमपश्यत्	स इया स्त्रीमपश्यत् ।
३७ किञ्चित् अन्य वद	किञ्चिद् अन्य वद ।
३८ लबाणु प्रियो हरि	सर्वेषा प्रियो हरि
३९ नय मुन्दरा वारिका	तिष्ठः मुन्दरो वारिका ।
४० प्रातः प्रभृति वर्षा वचति	प्रातः प्रभृति वचति वेव
४१ मुन्दरी वचतागता वति	मुन्दरावचतागता वति ।
४२ मे आता आगतः	मे आता आगत
४३ इय फलम् अस्मि	इय फलमस्मि ।
४४ न महति विपदि वतते	न महत्या विपदि वतते ।

बनाकर नि उपसर्ग लोपात् नि + चयन् । ३०—२५ के वाक्य का विधायक लोको ३१ ३० क. क. प. क. व. स. म परे रहन पर विसर्ग को छो नही होना । ३४ ३५ नपुंसकलिंग पुल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिंग में सर्वनाम शब्दों के लिंग वचन विशेष्य के समान ही होते हैं । ३७ नपुंसकलिंग में अन्यत् होना है । ३८ सर्वनाम शब्दों के रूप प्रकारान्त शब्द में भिन्न है । ३९ वारिका शब्द स्त्रीलिंग है, अतः उसके विशेष्यतः की स्त्रीलिंग ही होगी । ४० 'वर्षा महति प्रयोग व्याकरण-सम्मत होने हुए भी व्यवहार के प्रतिकूल है । संस्कृत व्यवहार में वर्षा' निम्न बहुवचनान्त शब्द है और उसका अर्थ 'वर्षागत' है । ४ गता शब्द पुल्लिङ्ग है अतः उसका विशेष्यतः मुन्दर शब्द भी पुल्लिङ्ग होगा । ४२ पुष्पम् और धम्मद् शब्द की वाक्य के आदि में ने मे आदेश नहीं होत । ४३ 'फलम् नपुंसकलिंग की प्रयोगविभक्ति में एकवचनान्त रूप है इसलिए उसका विशेष्यतः भी नपुंसकलिंग की प्रथमा के एकवचन में होगा । ४४ विपत्ति शब्द स्त्रीलिंग है इसलिए महत् शब्द क भी स्त्रीलिंग म सप्तमी विभक्ति ही होगी

## बर्तते तथा कर्मों की अनुश्रुतियाँ—

४५ घनवान् बुद्धिबलन्ति निन्दति	घनवान् बुद्धिमन्तं निन्दति ।
४६ अहं फलं ब्रूहीतुमिच्छामि	अहं फलं ब्रूहीतुमिच्छामि ।
४७ भाग्यं हस्ती पलायते ।	भाग्यं हस्ती पलायते ।
४८ पितृणां सतपथः	पितॄणां सतपथः ।
४९ शशी चाकाशे शोभते	शशी चाकाशे शोभते ।
५० धनुःशु शरान् योजय ।	धनुःशु शरान् योजय ।
५१ स मिथ्या वदति	स मिथ्या वदति ।
५२ सुरेशो नो विन्दे मच्छतः	सुरेशो नो विन्दे मच्छतः ।
५३ तु धनं न वमिष्यामि	अहं तु न वमिष्यामि ।
५४ स प्रतिदिनं प्रातः याति	स प्रतिदिनं प्रातः याति ।

## क्रिया में काल आदि की अनुश्रुतियाँ

५५ स्वप्ना भूयते	स्वप्ना भूयते ।
५६ अहम् यत्र स्वर्गम्	अहम् यत्र स्वर्गम् ।
५७ स वन्द्य इत्यमि	स वन्द्य इत्यमि ।
५८ तेन नगरे वस्यते	तेन नगरे वस्यते ।
५९ राजा प्रजां पालयते	राजा प्रजां पालयते ।
६० तेन मृतं विध्यते	तेन मृतं विध्यते ।

४५ यदि उपधा में धवण हो तो व् को न हो जाता है । ४६ अहं शीघ्र है । ४७ हस्तिन् इन् प्रत्ययान्त शब्द है । ४८ पदाष्ट में न् को रा नहीं होता । ४९ शशी चाकाशे' और शोभते' में तात्पर्य (श) है । ५० विमर्श शीघ्र में होने पर स् को न हो जाता है । ५१ अहम् के साथ कोई विभक्ति नहीं होती । ५२ स दूसरे शब्द के बाद आता है । ५३ धनुः, तु, च वा आदि आकारान्त में नहीं आते । ५४ अकारान्त शब्दों में तृतीया पंचमी और सप्तमी के लिये अच् होता है । ५५ भाववाच्य में क्रिया सदा प्रथम पुंस्य के एकवचन में होती है । ५६ ५७ वर्तमान काल में स्था को लिट् और ह्य् का प्रत्यय हो जाता है । ५८ वस् को भाववाच्य में लृच् हो जाता है । ५९ कर्मवाच्य में क्रिया कर्म के अनुसार होती है । ६० कर्मवाच्य में कर्म प्रथमा में

६१ देव भृत्य भारं नाययति	देव भृत्येन भारं नाययति ।
६२ प्रीतं मतिं प्रतस्थो	प्रीतं मतिं प्रतस्थे
६३ स माम् चवदत् स्म	स माम् चवदत् वदति स्म ।
६४ तेन बालो ब्रातुमिच्छते	तेन बालो ब्रातुमिच्छते ।

कृदन्त शब्दों की कर्तृविधा—

६५ स्वाम् भगूह्य न वास्यामि	स्वाम्यगृहीत्वा न वास्यामि
६६ भिक्षां वदन् बालः हसति	भिक्षां वदन् बालः हसति
६७ गृह्णन् धनं त्वां पठिष्यामि	गृह्णन् धनं त्वां पठिष्यामि ।
६८ स पुष्पं दत्त	तेन पुष्पं दत्तम्
६९ सा बालकं दृष्ट्वा	सा बालकं दृष्ट्वा
७० स पाठं पठित्वा मुह्यति	स पाठं पठित्वा मुह्यति ।
७१ अहं बालं वक्तुमभ्युद्यमम्	अहं बालं वक्तुमभ्युद्यमम्
७२ त्वया वक्तव्यं श्रोतव्यम्	त्वया वक्तव्यं श्रोतव्यम्
७३ अहं देवं विज्ञामि	मया देवं विज्ञामि
७४ स आनन्दं अहं मयिष्यामि	मयि मयागते अहं मयिष्यामि ।

रहता है ६१ की भातु के प्रयोग कर्ता में तृतीया होती है । ६२ प्र उपसर्ग लगाने से क्या भातु आत्मनेपद में होती है । ६३ भूतकाल की विधा के साथ स्म नहीं लगता । ६४ यदि तुम्हें राज्य का धीरे विधा का एक ही कर्म हो तो कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है । ६५ नत्र मयास में ल्यप् नहीं होता । ६६ जुहोय्यादियह की भातु के साथ लुप् नहीं होता । ६७ उपसर्ग पूर्व होने से कत्वा की ल्यप् होता है । ६८ कर्मवाच्य में कर्ता में तृतीया और कर्म में प्रथमा होती । ६९ कर्तृवाच्य के कर्ता में प्रथमा और उमी के अनुसार क्रियावाचक के सिङ्ग, बचन होते हैं । ७० कत्वा, अतु शतब्ध प्रोत्तुम् के कर्म में द्वितीया होती है । ७१ समान कर्ता में लुप्नु होता है किन्तु दो क्रियाएँ एक समय होने से अतु या मानब्ध होते हैं । ७२ कर्मवाच्य के कृदन्त शब्दों में कर्तानुसार सिङ्ग बचन होता है । ७३ कर्मवाच्य के कर्ता में तृतीया और कर्म में प्रथमा होती है । ७४ समान कर्ता न होने से कत्वा नहीं होता ऐसे स्थानों पर भाव में सप्तमी होती है ।

६१ देव भृत्य भारं नाययति	देव भृत्येन भारं नाययति ।
६२ प्रीतं मतिं प्रतस्थो	प्रीतं मतिं प्रतस्थे
६३ स माम् चवदत् स्म	स माम् चवदत् वदति स्म ।
६४ तेन बालो ब्रातुमिच्छते	तेन बालो ब्रातुमिच्छते ।

कृदन्त शब्दों की कर्तृविधा—

६५ स्वाम् भगूह्य न वास्यामि	स्वाम्यगृहीत्वा न वास्यामि
६६ भिक्षां वदन् बालः हसति	भिक्षां वदन् बालः हसति
६७ गृह्णन् धनं त्वां पठिष्यामि	गृह्णन् धनं त्वां पठिष्यामि ।
६८ स पुष्पं दत्त	तेन पुष्पं दत्तम्
६९ सा बालकं दृष्ट्वा	सा बालकं दृष्ट्वा
७० स पाठं पठित्वा मुह्यति	स पाठं पठित्वा मुह्यति ।
७१ अहं बालं वक्तुमभ्युद्यमम्	अहं बालं वक्तुमभ्युद्यमम्
७२ त्वया वक्तव्यं श्रोतव्यम्	त्वया वक्तव्यं श्रोतव्यम्
७३ अहं देवं विज्ञामि	मया देवं विज्ञामि
७४ स आनन्दं अहं मयिष्यामि	मयि मयागते अहं मयिष्यामि ।

रहता है ६१ की भातु के प्रयोग कर्ता में तृतीया होती है । ६२ प्र उपसर्ग लगाने से क्या भातु आत्मनेपद में होती है । ६३ भूतकाल की विधा के साथ स्म नहीं लगता । ६४ यदि तुम्हें राज्य का धीरे विधा का एक ही कर्म हो तो कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है । ६५ नत्र मयास में ल्यप् नहीं होता । ६६ जुहोय्यादियह की भातु के साथ लुप् नहीं होता । ६७ उपसर्ग पूर्व होने से कत्वा की ल्यप् होता है । ६८ कर्मवाच्य में कर्ता में तृतीया और कर्म में प्रथमा होती । ६९ कर्तृवाच्य के कर्ता में प्रथमा और उमी के अनुसार क्रियावाचक के सिङ्ग, बचन होते हैं । ७० कत्वा, अतु शतब्ध प्रोत्तुम् के कर्म में द्वितीया होती है । ७१ समान कर्ता में लुप्नु होता है किन्तु दो क्रियाएँ एक समय होने से अतु या मानब्ध होते हैं । ७२ कर्मवाच्य के कृदन्त शब्दों में कर्तानुसार सिङ्ग बचन होता है । ७३ कर्मवाच्य के कर्ता में तृतीया और कर्म में प्रथमा होती है । ७४ समान कर्ता न होने से कत्वा नहीं होता ऐसे स्थानों पर भाव में सप्तमी होती है ।

७५ वेर मुन खेवन् तिष्ठति	वेर मुन खेवमान तिष्ठति ।
७६ स पृथक् पठनं करोति	स पुस्तकस्य पठनं करोति ।
७७ धनपात्रक आदति	धनस्य पात्रक आदति ।

स्त्रीप्रत्ययान्त तथा जनानाम् स्त्रीयों की कसुद्धियाँ

७८ हप्पति पुत्रम् प्रयायति	हप्पती पुत्रमप्रायताम् ।
७९ क्षात्रद्वयं पठत	क्षेत्रद्वयं पठति ।
८० क्षात्रक हंसो पश्यति	क्षात्रक हंसो पश्यति
८१ सा सधो गच्छति	सा सधो गच्छति
८२ कन्दवदनी क्षात्रां पश्य	कन्दवदनां क्षात्रा पश्य ।
८३ कृत्यनी क्षात्रां पश्यति	कृत्यनी क्षात्रां पश्यति
८४ मया कदनी प्रिया रथा	मया कदनी प्रिया रथा
८५ मयोरथा सधो वन	मयोरथा सधो वन ।
८६ महोरथा सधो वन	महोरथा (य) वनते ।

—

लिखितवाक्यों का आरम्भिकप्रत्ययक लोचन कीजिए ।

१ पुनश्च मय विना यच्छति ।	५ क्षौराणां भीतोऽस्मि ।
२ स नर पशुस्य सधोऽस्मि ।	६ हरि घामने सधोऽस्मि ।
३ मयो प्रयायन्तं सधोऽस्मि ।	७ ज्ञानस्य विना जीवन विफलम्
४ रामस्य कृते पशुस्यो नास्ति ।	८ परनी पशु मय वन यति ।

७५ आध्यात्मिक से ज्ञानस्य और परस्परपठ से शत्रु प्रत्यय होता है । ७६ पठन शब्द के दोष से सधो द्वानी है । ७७ लृक् प्रत्यय प्रत्ययान्त के साथ सधो सत्प्रत्यय नही होता । ७८ हप्पती प्रिया प्रिया की इनके रूप द्विवचन में ही चलती है और इनके साथ प्रिया भी द्विवचन की सधो है । ७९ द्वयं युगल युग द्वय से चारों दो शब्दों के शब्द है और इनके साथ प्रिया एकवचन की लगती है । ८० हंस का स्त्रीलिंग 'हंसो' और सधो का सधो होता है । ८१ दो में अधिक स्वर वाले शब्दों में ई नहीं लगती । ८२ नृप शब्द में नृप् होता है । ८३ कद से नृप् नहीं होता । ८४ सधो मय मय शब्द का महा हो जाता है । ८५ समाहार द्वय में वन वाले शब्द में 'ध' लगा कर वृत्तिग या नपुंसकलिंग एकवचन होता है ।



- ६ गता चतुर फलानि शान्तम् २९ मां रोचते मतिः ।  
 १० नीना रामाय प्रिया शायी ३० सर्वेभ्यश्चक्रव्यो गोचिन्द श्रेष्ठ ।  
 ११ सहाचरिण्य धनस्य निम् ३१ तत्राहं शतम् जननवपश्यम्  
 १२ स मित्रान द्रव्यं याचते ३२ श्यामं स शीतो बालकः ।  
 १३ शर्मो दुःखकारण्य अधिवसति । ३३ शुभं मिथ्यं शुद्ध्यति  
 १४ हृदि कृष्णस्य कृष्णनि ३४ सुखवानेव जन श्रेष्ठिपात्रो भवति ।  
 १५ मयं गृहे शतानि पुस्तकानि सन्ति ३५ गोविन्दो मेकस्य प्रसादा प्राप्तम् ।  
 १६ सत्र पुस्तक पठनं करामि । ३६ रामस्य शर्मं गमयति  
 १७ विशालस्य शतः छात्राः सन्ति ३७ सुखस्य उदिते मति स मन्त्रागच्छत् ।  
 १८ शर्मो मेकस्य अधिलो कृष्णः । ३८ स सदा सत्यं भावति  
 १९ धिक् नम्यं पापिनः । ३९ मयं दयापात्रं स भिलु  
 २० दीनस्य प्रति दया कर्मव्या । ४० मन्त्रिषो मे केदाह ।  
 २१ शान्तं सत्र शानि कीमुदी । ४१ केदा प्रमाणाति  
 २२ शर्मिन्दा गोपालस्य विद्वत्तः ४२ मयं बचनं स म विधमिति  
 २३ हृदि कृष्णस्य नृपतिः । ४३ गमः शत्रुं विजयति ।  
 २४ शूरशक्तिना विशाधिनमिपत्ते । ४४ सत्यव्या शर्म्य न प्रिय ?  
 २५ शर्मो मेकस्य अधिलो कृष्णः । ४५ विशाधिनं सदा भू तत्रागच्छत् ।

[विशेष—उपर्यक्त ४७ शत्रुद्वयं शर्म्य यो यो इष्टमिति परोक्ष के विगत वयो के संस्कृत-पत्रो में शोधनाय आ नके है । इनमें जो विमर्शित शब्दों विगत की शत्रुद्वय है उन्हें सुद्ध करने के लिए कावक तथा विगत प्रकाश देखिए ।]

## (ख) अनुवादार्थ गद्य-पद्यसंग्रह

१—तां कथं महाराजदशरथस्य धर्मदाराः धियवन्ती मे कीमत्या । न एतदप्यर्थेति संशयमिति । विद् प्रहसनम् । शयमृष्यभृङ्गाधमादरुच्यतीपुराकृतान् महाराजदशरथस्य दारानधिष्ठाय भगवान् वसिष्ठः प्राप्तः । तत्किमेव प्रवर्णयामि । (अनंतरावर्णिते ४)

२—चन्द्रापीडस्य सप्तपामुक्तोद्भूततया महसंवृत्ततया च तत्रैव श्रमस्त्वयं द्वितीयमिव हृदयं वेशय्याय न परमिष्यामीन् । (कादम्बर्याम् ७६) ।

३—स्वयमेवोपपन्ने एवैकियाः कुलपातयो मि स्नेहा पदायो येषां क्षुधायां प्रजा पश्यादित्यथानाय न ज्ञानाय पराक्रमः प्राणिनामुपमाताम उपकाराय धन-गरिष्ठाय कामाय न धर्मयि किं बहुना, तन्मेव येषां दोषाय न गुणाय (कादम्बर्याम्)

४—राजा विष्कारितेन स्निग्धेन चक्षुषा पिबन्निभानपस्मिन् यनोरधमहृत्-प्राप्तादनां सत्पृथगीकालस्तत्तमयाजने मुमुदे कृतकृत्यं चरमान मेने (कादम्बर्याम्) ।

५—तत्रैवा निष्प्रतीकारेयसापदुपस्थिता । किमिदानीं कर्तव्यं का दिशं गन्तव्यमित्येते शब्दे च विषयहृदयस्त मे लक्ष्या प्रादुशसन् । (कादम्बर्याम्)

६—राजबाह्वी रसालतच्छु कोकिलादीनां पक्षिणायास्तपज्ज्वाय श्रावं विक्रिमितानि सगमि दशै दशममन्दनीतया ललनासमीपमवाग (पशु-कुमारः) ।

७—अतिप्रवृत्तविषामावगन्तानि व्युत्पन्नपथि मे नालमहृत्कानि । अजय-प्रभुरम्याहमन , सीवति मे हृदयम् । अन्धकारतामुपयाति चक्षुः । अपि नाम खली विभिरतिच्छतोऽपि मे मरुतामर्षोपपादये । (कादम्बर्याम् ६)

१—दार स्त्री २—पामु-पुत्रि । विषमस्त्वान विद्वानपात्र ३—अश्रितस्त्वान-शोका । ४—विष्कारित-खोना हृषा । ईक्षु-देखना ५—निष्प्रतीकार-ज्ञान के बिना । विषय-विषय । ६—ललना-स्त्री ७—अव-सान-ममाप्त

८—सर्वं पुण्डरीकं सुविदितमेतन्मयम् । केवलमिदमेव पूज्यमस्ति यदेत-  
दात्मन् भवता किमिदं गुरुविरुद्धमिति मृतं धर्मशास्त्रेषु वर्णितमुत मोक्षप्राप्तियुक्ति-  
रियमज्ञातमिदं न्यायं निश्चयप्रकारः ? (कादम्बर्याम् १५५)

९—एवं कदलीदलान्तानवरतं बीजवत् समुद्रभ्रमे मर्त्यमिदं । नास्ति  
लोकसाध्यं मर्त्याभुवः । क्वाय हरिण इव वनवासनिर्गमः स्वभावमुपशो जनः,  
एव च किञ्चिद्विलासतरसराशिरान्वधराजपुत्री महापतेता । (कादम्बर्याम् १५७)

१०—अ मद्भवानन्तरमेव न वेधि किञ्चित्तद्वृत्तेष्वनन्तरस्य वेगादुत  
तद्योमिपादस्यात्मनो दुष्कृतस्य योग्यादाहोस्त्वमद्वयत एव सामर्थ्यादाविध-  
न्यमूलस्तर्हि क्षितावपतन् । (कादम्बर्याम्)

११—तथैवप्रायेऽपि कुट्टिमकप्रयेहातहस्यदास्यो राज्यतन्त्रेऽग्निम् महाभो-  
द्वाग्यफारकारिणी च योवने कुपारः । तथा व्रणतेवा यथा योपहृत्स्वसे ननेमोपा-  
सम्यसे मुहुःपुर्गाक्षिप्यसे विधर्पसे विकृत्यसे रागेण नापहृत्स्वसे मुञ्जतः । (कादम्बर्याम् १५८)

८ किमज्ञा माधु न शस्ति पोऽधिप

क्षिताय ८ः समुत्प्लुते न किञ्चु ।

मक्षानुमेषु हि कुर्वते रति

मृषेष्वासायेषु च सर्वमभ्यसः ॥ १२ ॥ (किताभाः)

मयमिक्तमुर्ध्वमृगाधिपः करिर्मर्त्यतपते स्वयं हर्तः ।

लघयन् धनु नेजसा जघन्य महाविश्रुतिः श्रुतिवन्धतः ॥ १३ ॥

किमप्यस्य फलं पयोधरान्धवनतः प्रायेयते मृगाधिपः ।

प्रकृतिः सन्तु सा महीयसः सद्मे नाम्यसमुत्प्लति यथा ॥ १४ ॥

सीदत् = बुद्धिमान् होता । विधि = भाग्यः । ८—आहोस्विद् = प्रथवा । ९—  
कदली = केला । वनवरत = निरन्तर । विलास = कोतुक । १०—मदम =  
कोमल । विपाक = फल । दुष्कृत = पाप । क्षिति = पृथ्वी । ११—आकण =  
दुःखप्रद । उपनिध = ताना धारणा । १२—अमास्थ = मन्दी । १३—मृगाधिप  
= सिंह । करिन् = हाथी । मर्त्यतपते = पुत्राय करता है । श्रुति = ऐश्वर्यम् ।  
१४—पयोधर = मेघ, प्रकृति = स्वभाव, महीयसः = महापुरुष ।

कुशुपस्य युक्तं कुरु प्रियसमोदिति सपत्नीजनैः  
 मनु विप्रकृतापि गन्धरातया मा स्म प्रतीप यमः ।  
 नृमिच्छत जल दक्षिणा परित्रेन मान्धवैरनुत्सुकितो  
 यान्धवंसं महिरीपद युवनयो वामा कृतम्याघयः । १५ । (शाकु०,  
 पातु न प्रथमं व्यसत्यनि जलं युष्मास्वपीतेषु सा  
 नादनं प्रियमपदनापि सकना स्नेहनं वा पत्नयम् ।  
 धाद्ये वः कुमुदप्रवर्तितसमये यस्या जलधुतस्य  
 मेयं द्यति शकुलला पतिवृत् सर्वैरनुज्ञायताम् । १६ । (शाकु०)

(कुमारसम्भवे)

सद्योपमाह्वयसमुच्चयेन यथाप्रदेशं विनिवेदितम्  
 सा निमिता विवसन्ना प्रयत्नादेकस्य सोन्दर्यदि क्षयवः । १७ ।  
 विविधगुणा परिमृष्टा परिमृष्टा परिमृष्टा नाम विनीय च क्षणम् ।  
 उमा न पश्यन्कुर्वेव चक्षुषा प्रथकमे वक्तुमनुगिह्यतमम् । १८ ।  
 यमि क्रिपार्थं युमत्र सन्निभुम जलाम्बुपि स्नानविधिलभाणि न  
 यमि स्वशक्त्या तपति उद्यममे जगोरभाष्ट क्षणु धर्ममाधनम् । १९ ।  
 किमिच्छामायावत्तानि शोचते नूनं स्वया बाधनशोभि वन्धनम्  
 वद प्रदोष गुरुवन्दनारका विभावरी पद्यस्त्रास कल्पते । २० ।  
 यपुत्रिरुवाक्षमनप्रजन्मना दिगम्बरकेन विवेदितं वपुः ।  
 यरेषु यद् बालमृषाक्षि मृग्यते सदस्मि किं स्थलमपि त्रिनोचने । २१ ।  
 त्वं गते सम्प्रति लोचनीयता यमायमप्रपन्नया कर्णान्न ।  
 कला च सा कान्तिमती कलावतवद्वयस्य सोमाय च नेत्रकोमुदी २२ ।  
 उवाच जैनं परमार्थतो हरं न वृन्त्य नूनं एतं गन्धमायमायम् ।  
 अलोकमामात्यावचित्पङ्क्तुं द्विपन्नि मन्दाञ्चरित मशस्मिनाम् । २३ ।

१५ प्रतीप=त्रिपरीत । अनुत्सुक=निरभिमान । १७ दिव्या=दत्तमे श्री  
 इच्छा । १८ कृजु=मीषा । २० शाभरस=जघर । वल्कल=वृक्ष की  
 छाल । विभावरी=गन्धि, प्रदोष=निष्ठा का प्रारम्भिक काल । २१  
 वपु=घन । व्यस्त=चलन चलन, त्रिनोचन=शिख । २२ कर्णान्न=

निवाप्येतामालि किमप्ययं वदु पुनर्विकल्पा स्फुरितोत्तरावर  
न केवलं यो महतोऽपभाषते भूलोडि तस्मादपि य स पापभाक् ॥२४॥  
इता मभिष्यगम्यपवति कादिनी कवान शाना एतन्मिन्नवत्कला ।  
स्वस्वमाश्वाय न तां कृतस्मित समासतम्ब वृषराजकेतन ॥२५॥  
तं वीक्ष्य वेपथुमती सहसाङ्गवर्षानिलेपाणाय पदमुद्धतमुद्धतली  
मार्याश्चमभ्यातकराकुतिनेव सिन्धु शैलाधिपराजतनया न मयो न वस्यो ॥२६॥  
अक्षप्रभृत्यवनतार्क्षि 'तधारिण नास औनस्तेयोर्ध्वार्क्षि न इति अग्रमौली  
अज्ञाय सा नियमं कथमपुस्तम्य स्नेह फलेन विपुतनयता दिघन ॥२७॥

(रघुवधे)

धाम महीधाम तत्र कमेण प्रदत्तमप्यस्वमितो कृषा स्नातु ।  
न पश्येन्मूकनयनकिरंशु शिलोन्मये मृच्छन्ति माभ्यस्य ॥२८॥  
एकात्मन जगत प्रभुर्गन्धर्व वध कालवित वपुष्य ।  
धनपय्य हेतोर्वह हानुमिच्छन् विचारमूढ प्रविभ्रांसि ये त्वम् ॥२९॥  
रघुमेव निवृत्तधीश्च तनमन्त नवधर प्रजा  
य हि तस्य न केवलां शिष्यं प्रविषेव मरुतान् गुणानपि ॥३०॥  
बपुषा कनकोज्ज्वलेन सा निपतन्ती पतिवध्यातयम्  
ननु तेषानिवेकविन्दुता मद् वीपाचिरुपेति मेदिनीम् ॥३१॥  
जिह्वलाय स बाण्यमदुतं सहजामप्यपराय धीरताम्  
प्रमित्तममशेषिमादव सज्जते केव कथा मरीरिषु ॥३२॥  
अगिष्य यदि ज्योतिराग्रा हृदये कि निहिता न सन्ति धाम् ।  
विषमधामृत वचिद्रुवेदमृतं वा विषमीकरोन्मया ॥३३॥  
कुमुमान्यापि मात्रमङ्गमात्रमवन्त्यायुस्पर्षोदितुं ययि  
न मविष्यति हन्त साधनं किमिवायन्तहमिष्यतां विधे ॥३४॥

शिव कौमुदी = प्रकाश । २४ धामो = तपो, वदु = वदुष्यते २५ वृष-  
राजकेतन = शिव २७ - पञ्चाय = शोध । २८ रक्तं = वेग । ३१ -  
मेदिनी = पृथ्वी । ३२ - धमसु = तोहा । ३३ - सक = माला ।



यद्यत्रा मम शिष्यविष्णुवाददर्शनं कल्पित एव वेद्यता ।

पदननं नरुण पातितः क्षापिता तद्विदुषाश्चिता मता ॥३४॥

सृष्टिर्मां मन्विष्य नमो मित्रः प्रियशिष्या नन्तिते कलाविद्यौ ।

कठिणाविमुखेन मृत्युना हरता त्वा वत किन्तु मे हृतम् ॥३५॥

(नैमिषे)

पदेषांश्चा जननी मरानुरा मरुत्सूनिहरता तपस्विनी ।

यतिस्तयोरेष मरुत्समदंष्ट्रान्नां विष त्वा कफला ह्यगच्छि न ॥३६॥

मवेत्येषे सन्ति कटा रणोद्धृता न तेषु द्विसारम एष पुनरे ।

यित्रीदृश मे तपते कुर्वकस्य कृपायाम् इ कृपामे पतविष्टि ॥३७॥

इत्यमम विमपन्तमधुप्रपरीनयाम् प्रामादनिपात

कपमदजि वृत्तीति यदेष मरुत्स मरुत्समदंष्ट्रान्नां विष त्वा कफला ह्यगच्छि न ॥३८॥

(ग) नीतिसम्बन्धी शेषक श्लोकः

कनकधूपसमग्रहणाञ्चितो यदि मलिनम्भुक्ति प्रणिधीयते ।

न न विरोति न चापि स शांभवन भवति योजयितुं कचनीयता ॥४०॥

मलिनम्भुक्तिरयोरेषमधुप्रपरीनयाम् प्रामादनिपात

मलिनम्भुक्तिरयोरेषमधुप्रपरीनयाम् प्रामादनिपात ॥४१॥

कुमुदवनमपि भीमदम्भोद्धृता

त्यजति मुदमुनूक प्रीतिमात्रकलाक ॥

येवमपि मरुत्समदंष्ट्रान्नां विष त्वा कफला ह्यगच्छि न

इत्यमम विमपन्तमधुप्रपरीनयाम् प्रामादनिपात ॥४२॥

मानेव रक्षति पितेव हिते निपुणकले

कान्तेव चाभिरमस्यपनीव सेवम् ।

कीर्तिं च दिक्षु क्षिप्रतां वितनीति नमो

किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या ॥

३५ अशनि = बज्र । ३७ = बरता = हँसी । ३८ = वतविन्म-मली । ३९ = मरुत्समदंष्ट्रान्नां (नम) ।

० — ये श्लोक मिला-प्रद होने से स्पष्ट है । वे पिछले वहाँ प्र० भी० हार्दिक एवं एडमिशन की परीक्षाओं के प्रश्न-पत्रों में प्रायः आते हैं और प्राये योंही हैं । अतः इतका विशेष महत्त्व है ।

न चीरहायं न च राजहायं न आतृहायं न च भारकारि ।  
अथै कृतं वधंत एव नित्यं विद्याधनं सचधनप्रधानम् ॥५॥ (११५५)

(सकललोकाय नमो नमो व्याहरति—)

मुत्पान्त्वेत्यनुगृहीतेति मुत्पान्तेति दृष्टं मुष्टं च मुष्टिर सहस्रवर्तिनीति ।  
जानामि केवसमहं जनवादसीत्या सीते स्वभाषि भवती न तु भावदायात् ॥  
॥ ६॥

(सीता राजमन्त्रिणम्—)

किं वा तथास्यन्निबोधनमोषं कुर्वन्मृषेयां हनन्नीषितेऽस्मिन् ।  
स्याद्द्वितीयं यदि मे न तेन स्वर्गीयममननं नमस्तत् ॥७॥  
साहं तव मुदमिदं दृष्ट्वा कथं प्रभूतेऽस्मिन् पतिव्ये  
भूया यथा मे जमनाल्लेखेपि त्वमेव प्रती न च विप्रयोगः ॥ ८॥

मुष्टं मुष्टं पुनरपि पुनरप्यमृतं चापमृतं  
स्निग्धं स्निग्धं पुनरपि पुन स्नादं सर्वेषुकायम् ।  
दण्डं दण्डं पुनरपि पुन काञ्चन काञ्चन  
प्राणान्तेऽपि प्रहृष्टमिदं निर्वर्त्तयते कोलमानाम् ॥९॥

यावत्स्वस्वमिदं नदीरवमं यावत्स्वमं दूरतो  
सावन्तेतिवशास्तिरप्रतिहता यावत्स्वमो वायुधः ।  
यावत्स्वममिदं तावदेव विद्युत् कायं प्रयत्नो महान्  
हृदीपते भवने तु कृपणमनं प्रत्युद्यमं कीदृशः ॥१०॥

सारङ्गा मन्त्री गृहं गिरिगुहा क्षान्तिः प्रियं मेऽस्मिन्  
वृत्तिवन्त्यललाकलनेनिकमनं श्रेष्ठं तत्कालो स्वयं ।  
तद्वधानामृतपूतममृतमसां येषामिदं मिदं ति-  
स्तेषामिन्धुकायजसंमयमिनां भोक्षेऽपि नो न मृष्टम् ॥११॥

मित्रं प्रीतिरसायनं मयमनोरानन्दनं चेतसः  
पात्रं यत् मुष्टदुःखयो मरु भवेन्मित्रं हि तदुत्तमम्  
मे कान्ये सुहृदः समद्विसमयं इत्यादिनापाकृता-  
स्ते सर्वत्र मिलन्ति तन्निवचपपात्रा नृ तेषां विपत् ॥१२॥ (११५६)  
लक्ष्मि क्षमय चञ्चलीमिदं यदकमन्त्रीभवन्ति एकस्वस्वपुत्रमनेन ।  
नो चेत्कथं कथमप्यविशालमनं नारायणः स्वयं पितृभोगतन्त्रे ॥१३॥  
(११५७)

महाराज श्रीयन् ' जगति यशसा ते घञ्जिते

यस्य गाराक्षार परमपुण्यकोऽयं मृगवते ।

कपदी कौलासं फरिबरस्यधोम कुलिशाम्बु

कलाभायं राहु कमलभवनो हंसमधुना ॥१४॥ (१६५२,

विही व्याकरणास्य कतुंहरत्न प्रणष्टान्धशान्धार्णिते

घोषाताकृतमृगमयाव सहसा हस्तो धुनि धैमिमिधु ।

खन्दोमाननिधि वचना मकरो वेमातटे पिङ्गमम्

घातानाकृतधेतसामर्तितयां कोऽम्भितसयां मुली ॥१५॥

द्वारादुच्छित्तपारिस्तुराद्वनयन श्रोत्सारिनामर्तितो

नाष्टमिङ्गनमायद धिक्कलाप्रतन्दपु दत्तावर ।

घनतर्भुनविधो बहिसंभुमपञ्जतीव मायापदु

को भामायाधपुवंमदकदिचिर्वे सिधितो कुण्ठे ॥१६॥ (१६५३)

वदन्ता निजजगमददतिवित्त मरोक महता यम

तत्त्वाम्नेति मस्यमलेऽपि नितरा केरो ततो मग्निकम् ।

तत्तीरो यव विरचत्तु कपला कृति कृषा मा कृषा

कृषे पयस पयोनिजायपि पटो वृहति मुत्थ जलम् ॥१७॥ (१६५४)

माकु पादयोः पतति लादति पृष्ठबांय

कणौ कलं किमपि रीति धर्मविचिचम् ।

ध्रुव तिरुप्य सद्गता प्रविशत्यगदृक्

मर्ष अतस्थ चरित मष्टक करोति ॥१८॥ (१६५५)

कल्यादेनात् अपयति तम मन्तस्यति प्रजानां

सुपाह्वतो पथि विलिपिनामञ्जलि केन वदः ।

साम्यस्यन्तो जलतममुचः केन वा वृष्टिह्वतोः

जात्येवले परहितविधो साधको बद्धकस्याः ॥१९॥

वयमिह परितुष्टा वल्कनंस्थ च मग्न्या

तम दह पन्तिषो निविशोषो विधेय ।

स तु मयति दग्धो यस्य तृप्ता विजाला

यनमि च परितुष्टं कोऽम्भवान् को दग्धः ॥२०॥

उचितमनुचितं वा कुपता कार्यजात

परितुष्टिर्वयमार्थ यत्नत पण्डितेन ।

अतिरभमकृतानां कर्मसामाविषते-

भवति हृदयदाहो शल्यनुस्यो विपाकः ॥ (१६५४)

प्राप्तवाम्य पवंतकुलं तपनोपगतम्-

मुह्यमानविधुराणि च काननानि ।

मग्नानवीनदशतानि च पूरयित्वा

रिक्तोऽसि यज्जनद लेख तनोममयी ॥२२॥ (१६५५)

त हि गगतविहारी कलमयसंस्कारी दशजलकमयारी उद्योतिका मय्यचारी ।

द्विधुराणि विधियोगाद् प्रस्यते राहुरासी निर्मितमपि सनादे प्रोत्थितं क तमये ॥२३॥

तरणं न मे विषयनामाकृतास्ति चित्ता माम्यक्रमेण हि वनानि ब्रह्मन्ति शान्ति ।

एतन् मां ब्रह्मन् मनुष्यमाध्यमस्य यस्मोहृदादि जना शिखिलीभवन्ति । २४ ।

पुन्यो गिरं पुन्यसिंहमुनिं लक्ष्मीदेवं देवमपि कापुष्या वदन्ति

ईवं विहस्य कुप्योऽप्यवस्थावत्या यत्ने कृतं यदि न सिध्यति कोऽप्य दोषः ॥२५॥

लामीविहस्यव्यधिकारानि तदेव माम मा दुष्टिप्रतिहता भवन मदेव ।

धर्मीधर्मता विरहितः पुरुष न एव ह्यस्य जलोन भवनीनि विविचयेत् ॥२६॥

गुला गुलाजेषु गुला भवन्ति ते निर्माण प्राप्य भवन्ति दोषः ।

वास्वाशतोषाः प्रभवन्ति नद्य संयुज्जमायाच भवन्यदेवा ॥२७॥ (१६५६)

को बीरस्य मनस्विन स्वविषय को वा विदेमभवा

यं देश भयते तमेव कुले काहृषतापाविताम् ।

यद्द्विष्यन्तांगुलप्रहरणं मिहो वनं माहते

तस्मिन्नेव हनद्विपेन्द्राधिपैस्तुपुत्रा स्निग्धात्मनः ॥२८॥

कल्याणानां स्वमपि महर्षां भावनं विष्वधूर्ने

धर्मो लक्ष्मीमय मयि भूषां धेहि देव प्रसीद ।

यत्तत्पार्थ प्रतिवृद्धि वतन्ताथ नञ्जस्व तन्मे

मदं यद् वितरं प्रगवन्पुण्यसे मङ्गलानि ॥२९॥

चित्रं चित्रं कत कत महर्षिचमत्तद्विचित्रं

जालो देवाद्विचित्ररचनासविघाता विघाता ।

दग्निम्बानां परिणतफलप्रोत्तिरास्यादनीषा

यच्छैतस्याः कवचनकलाकोविद काकनोरः ॥ ३०॥

अमर्ति न नद्या सुगीतलबलेः स्नानं न मुक्तावली

त चीलकद्वित्रिनेपन मुक्तयति वत्सकुम्भप्रमितम् ।

प्रोत्था तज्जनभाषितं प्रभवति प्रायो यथा चेतसः

मद्युक्त्या च पुरस्कृतं मुक्तितन्मात्रादृष्टिमान्वोपमम् ॥३१॥

तरल हिन्दो ये ज्योत्स्ना कोटिः

नान्यथेति हिता कारित्वा कित्वा कलवती भवेत् ।

न व्यापारशतेनापि मुक्तयत् पाठ्यते बभू ॥१॥ (१६५३)

तृणानि भूमिददकं नाकं अनुर्वी यं सूनृता

सतामेतानि तद्वपु लोच्यते कदाचन ॥२॥ (१६५२)

जातमान न यं सन् व्याधि च प्रथम भवेत् ।

अतिपृष्टान्मुक्तोऽपि च पश्चात्तेन हन्यते ॥३॥ (१६५२)

सर्वं परवशं दुःखं सर्वमारमयत मुक्तम् ।

एतद् विद्यात् समासेन जलशु मुक्तपुत्रयो ॥४॥ (१६५१)

श्रोतो न केनपि न हृत्पूर्वो न धृतो हेमभव कुण्ड

तथापि तृपता रघुनन्दनस्य विनाशकाले विपरीतमुक्तिः ॥५॥

गुणप्राप्त्यापि च बन्धूनि लभ्यन्ते बालिष्ठतानि च

पुत्रैर्वा संशयाद्भिरलसेन कदाचन ॥६॥

पञ्चमोऽपि हि जीवन्ति केचन स्वादरस्थराः ।

तस्यैव जीवितं इत्यस्य च परार्थं हि जीवति ॥७॥

मुक्ता वदति लोकोऽयं ताम्बूनं मुक्तप्रवरम् ।

मुक्तस्य भूषणं पुत्रं स्वादेकैव सरस्वती ॥८॥

सहकारे चिरं तिष्ठत्या सन्दीप्तं बालकाकिम् ।

तं हिस्वाऽऽनन्दवृत्तेषु विचरन्तं विलम्बतः ॥९॥

अनिष्टादिपृक्षाधेऽपि न नतिर्जायते मुक्ता ।

यत्रास्ते विषयसंगर्भोऽमृतं तदपि मृत्सर्व ॥१०॥

अम्भाजिनीवनविहारविभासमेव हंसस्य हन्ति मितरां कुपितो विधाता ।

न त्वस्य दुग्धजलभेदविधौ प्रतिष्ठां वेदग्न्यकीर्तिमपहर्तुमसौ समर्थः ॥११॥

आशति शक्तिं पुनरेव जलं प्रधाति

पञ्चाङ्कुराणि विचिन्ताति बुनोति पत्नी ।

उन्मत्तवद् अयति कूर्जति मन्दमन्द

कान्ताकिर्योगविधुरो निधिः चक्रबाहः ॥१२॥



विद्या विनयोपेता हरति न चेतांसि कस्य मनुजस्य  
 काञ्चनमणिसंयोगो नो जनयति कस्य लोचनानन्दम् ॥१३॥  
 धारम्भगुर्वो क्षयिणी कमला भव्यी पुरा कृत्रिमतो च पदघात  
 दिनस्त पुष्पाधिरावर्जिता ह्यपेक्ष मन्वी लभ-सञ्जनानाम् ॥१४॥  
 स्वोक्षां हि साहस्रपादं भवन्ति चेतांसि भर्तृमहत्तानि ।  
 मधुराणि हि मूर्च्छयते विषवितप-मभायिता कम्पी ॥१५॥  
 कान्तवृषाणाम मुरा स्वर्गे निवसामो यथं भुवि ।  
 किंवा काव्यरस स्नातु किंवा स्वादीयतो मुखा ॥१६॥  
 धनिरसो ननिनोचनमन्त्रम कुमुदिनीवृत्तकेतिकानरसं ।  
 विधियद्येन विदेशमुपागतं कुर्यात्पुष्परसं बहु मन्यते ॥१७॥  
 विभी किञ्चे न यथं ययोनिषो गयोचमिच्छो न मुद्रा म्वाकरो ।  
 न काञ्चिज्ज्ञेति सिध्यति कस्यपादने न हेम हेमप्रथमं गिरावपि ॥१८॥  
 धनमन्त्रं हेमभृगव्यं ज्ञेयं तथापि रामो मुमुक्षे धृमाय  
 माय समापन्नविपत्तिकामे विद्योर्जिपुत्रा मतिनोभयन्ति ॥१९॥ (१९५२)  
 मृतम्रीनसञ्जनानां तुलामसतन्तोषविहितवृत्तोन्माय ।  
 मुग्धकधोवरपिमुक्तः निष्कारणवैरिणो जगति ॥२०॥ (१९५७)  
 रत्नीर्महाहस्तुमुपुर्णं देवा न भेजिरे श्रीमविचेता भीतिम् ।  
 मुखां विना न प्रयमुविशामं न निश्चिन्तावर्द्धितमन्त्रिणी ॥२१॥ (१९५८)  
 जनयति हृदि शैवं मङ्गलं न प्रमृते  
 परिहरति पशंसि प्पानिमाविष्करोति ।  
 उपकृतिरहितानां सद्यमोक्षपुत्रानां  
 कृपणकर्मजानां मयदां दुर्विपाक ॥२२॥  
 पात्रं पवित्रयति तैव गुणान् क्षिणोर्नि  
 स्तेहं न सहति नापि ममं प्रमृते ।  
 दोषापसानवचिच्छमता न यत्नं  
 मन्त्राङ्गम सुकृतसधनि कोऽपि दीप ॥२३॥

## पञ्चमोऽध्यायः

### हिन्दी-संस्कृत-अनुवाद

( १ )

१ वहाँ के उपदेश को ध्यानपूर्वक न करो । २ बन्दी न करो ऐलगाड़ी पर पहुँचने के लिए काफी समय है । ३ किन्तु के साथ मैं अपने तुम को बँटा सकता हूँ ? ४ आपलता न करो इससे तुम्हारा स्वभाव बिगड़ जायगा । ५ तुम दूसरे वपन की क्यों होकने हो। प्रयत्न विषय पर धाँधो ।

संस्कृतानुवादः

१ शुक्लामुषवेणाम् माज्वमस्या । २ मा स्वरिष्टा कालान् प्रयास्यसि रेतयानम् । ३ केन माध्याह्निकीर्णमिदं नृणाम् । ४ मा आपलाम्, विकरिष्यसे ते शीलम् । ५ किमिहप्रस्तुतमात्मपत्तिं प्रस्तुतमनुमत्तव्यताम् ।

( २ )

१ उसने मुझ से एक हजार रुपये उग लिये। पूर्विले जगका गीला कर रही है । २ एक स्त्री जग के धर को लेकर अपनी भिने जा रही है । ३ मुझे की प्रकर किरागी से बल सता सब भूम जाने है । ४ मैं बग जाकर छगने मित्रों से कुछ कर आऊँगा । ५ माना पिता छोड़ मुक्तियों का सम्मान करना उचित है । ६ उधाटने करने से दमोद बनवान् होता है । ७ मैं तुम्हारी जरा भी परवाह नहीं करता मुझ से ही कहें बनत हो ।

संस्कृतानुवाद

१ मा मां कृष्णकसहस्रावयश्चपलः, रश्मिवगमयन्नुत्तरति । २ एका स्त्री जलकुम्भपाटयं जलमानेनृ गच्छति । ३ सूर्यस्य लोहशक्तिर्गर्भं वक्षतस्तं शुष्का भवन्ति । ४ अहं गृहं गत्वा मित्राणि पृष्ट्वा आत्ममिष्यामि । ५ पितरो मुक्तयानाश्च सम्माननीयाः । ६ देशपटनं अग्निं जनयद् भवति । ७ सह त्वां शूराय मन्ये अकारणं मुक्तं कृतम् ।

यहाँ ठगे जाने के भय से पञ्चमी हुई और 'भवन्त्ययम्' यह प्रयोग बहिर्चुरादिगणीय। आत्मनेपद का है ।

१— मन्यं के साथ अनुर्थों का प्रयोग हुआ है ।

( ३ )

१ मेरा भाई और मैं भी बंधने का रहे हैं, पना नहीं कम लीटने । २ हस्तों को तिनकों का सहारा । ३ इस समय मेरी पत्नी में बौने चार बजें हैं । ४ ब्रह्म सदेव मेरी उन्नति में रोड़े भरकरा रहा है । ५ न्यूयार्क में मनुष्यों की सहस्र-सहस्र संख्या होगी । ६ बोधान ने इतने जोर से मद पारी कि शोका हट कर चूर-चूर हो गया । ७ दम्पती सुन्दरता में सन्तुष्ट की अन्य स्थितियों से बाजी ले सकी है ।

संस्कृतानुवादः

१ मम भायस्योक्तं च विजिगीषाक्षेपः संसित् नृपस्य, न विद्ध क्वा पण-  
पताम् । २ मज्जतो हि कुप का काय बाधमभ्यनम् । ३ धनुना मम काश-  
मापनी धटिकापणम् । पादोन्नतयोर्होरा दृशति । ४ स मे समुत्पत्तिपथं  
सर्वे प्रविशन्ति । ५ न्यूयार्कनगरे धनुना वनमञ्जारा दृश्यते । ६ बोधा-  
नस्तथा बोधे कपुक् बाहुरन् वषाऽऽज्ञां परिष्कृत्य वारणोऽभूत् । ७ दम्पती  
नन्दन्येन सर्वान् पुरजितान् प्रविशन्ति । प्रत्यादिशति च,

( ४ )

१ जी होना हो सो हो मैं उसके सामने नहीं झुकूंगा । २ राम ने वन  
में लाखों राक्षसों को मारा । ३ ब्रह्म बालक वृक्ष से उत्पन्न कर भीके बैठा है ।  
४ विद्याहीन मनुष्य और पशुओं में कोई भेद नहीं है । ५ एक पागल लड़का  
बोवता हुआ पाया । ६ ईश्वर की कृपा से उसका शरीर भीरोग हो गया ।  
७ उसने रामेश को सब उन्नी बनाया ।

संस्कृतानुवादः

१ मज्जावि तद्वक्तु, नाह नस्य पुत्र शिरोऽन्नमधिष्ठासि । २ राम वने  
सहस्रैः राक्षसाम् जघान । ३ स बालक वसन्तं अवलोक्य नीचं उपविष्टोऽस्ति ।  
४ विद्याहीनानाम् पशूनाञ्च कोऽपि केदो भवति । ५ कपिबन् (एक)  
उन्मत्तो बालक इतो बाधमागतः । ६ ईश्वरस्य कृपया तस्य शरीरं भीरोगम्  
भवेत् । ७ स रामेन मानुषमुपवर्त्य व्याज्जयत् ।

( ५ )

१ उसकी मुट्ठी गरम करी, फिर तुम्हारा काम हो जायगा । २ मैंने  
घान पड़ा नहीं इतना मेरे पिता मुझ पर नाराज थे । ३ मैं खेलकर समय

नष्ट नहीं करेगा । ४ तुम घर जाओ, तुम्हारे साथ मैं नहीं खेनवा । ५ दक्ष-  
वत्स आज घेरे घर आयेगा । ६ गल बष परीक्षा में वह उभरीएँ नहीं हुआ इस  
कारण परिषद से पढ़ता है । ७ चार दिन की बादनी फिर संघरी रात

### संस्कृतानुवादः

१ उत्तमोत्तमं तस्मै देहि तेन तव कावं सेत्स्यति । २ अतमस्तु नापहम्, अतः  
मम पिता मयि अग्रतन्त्र आसीत् । ३ अहं कान्दिन्वा समय न संभ्रामि । ४  
एवं गृहं गच्छ, स्वया सह अहं न कीदृश्यामि । ५ देवदत्तः अतः मम गृहमाग-  
मिष्यति । ६ नतवर्षं स परीक्षापुस्तोलीं नाधत्तु, अतः व्यथता वर्धति । ७  
अहानि कतिपयाणि तन्मयस्ततो व्यापद

### ( १ )

१ आपको अपने काम से मनमग्न लोगों की बातों में क्या रीति करता है  
हो । २ उसका दंड नहीं चला, नहीं भी तुम इस समय अपना सिर घुमाते  
होते । ३ फिर प्रजापति क्या योगी भूत से कुछ ऐसा बदल गया है कि पहचानना  
नहीं जाता । ४ उसकी ऐसी दशा देखकर मेरा भी घर आया । ५ मेरी सब  
आशाओं पर पानी फिर गया । ६ तुम तो दूसरे के घर में आग लगा कर  
तमाशा देतना चाहते हो । ७ तुम सदा मन से लड़कूँ आते हो

### संस्कृतानुवादः

१ मन्त्रात् पराधिकारवर्ती किमपि करोति । २ न स प्रथमवशात्पत्यस्य  
योग्यता गच्छति स्वानि माग्यानि निन्दयिष्यामि । ३ चिरं विशेषितो ज्ञानवत्तासी  
तथा परिज्ञानो यथा परिशेत् न शक्यः । ४ तस्य तथाकस्यामचलोक्त्य कर्मगार्ह-  
वेता प्रभवम् । ५ सर्वं समाधा मोषा भज्यता । ६ एव तु परगृहेषु विसंवा-  
सुद्धान्य कौतुकं योग्यमिति । ७ मनीष्यस्य मोदकप्राप्त्यतिष्ठानवर्तिन्यं मुहुक्ते

### ( २ )

१ दिल बहलाने को यह क्याल अच्छा है । २ ईश्वर जब देना है तब  
छापर फाड़कर देता है । ३ मैंने सारी रात आँखों में काटी । ४ आजकल  
प्रत्येक मनुष्य अपना ऊँचा सीधा करना चाहता है, दूसरों के हित की ऊँचे  
चिन्ता नहीं । ५ आज सवेरे ही सवेरे बोल कपड़ों पर पानी फिर गया । ६  
मुझे इस बात के सिर पर का पता नहीं लगता । ७ क्यापाम भी दवा की एक  
दवा है फिर हीन लगे न फिटकरी ।

संस्कृतानुवादः

१ आत्मनो विनोदय कल्पतेऽयं विचारः । २ मास्वातां दुर्गाणि भवन्ति सर्वत्र । ३ पञ्चके निषण्णस्य समस्तस्यो प्रभातमस्तीति । ४ अद्यत्वे सर्वं स्वाधमेव समीहते, परहितं तु नैव चिन्तयति । ५ अद्य प्रातरत्र विगतो कृष्णकारणं हानिर्मे जाता । ६ यस्या नारत्यां धलादी (साधनी वा) नाव-  
तच्छामि । ७ व्याघ्रानो हि वेधजानां वेधयन् एतदर्थं कश्चिदप्ययोऽपि नानु-  
श्रवितव्यो भवति ।

( ४ )

पुराणों में कहा है कि एक बार जब धीर सरय से विवाह हुआ धर्म ने कहा— 'मैं कहा हूँ' साथ में कहा— 'मैं' । धर्म ने विनाय कारणों के लिए दोनों शोधनी के पास गये । उन्होंने कहा कि 'जो पृथ्वी धाराएं कर रही हैं', इस प्रतिज्ञा पर धर्म को पृथ्वी दी ता कि व्याकुल हो गये फिर सरय को दी, उन्होंने कई युद्ध तक पृथ्वी को उठा रखा ।

संस्कृतानुवादः

पुराणेषु धूपते एकदा धर्मसंस्थयोः परस्परं विवादोऽभवत् । धर्मोऽब्रवीत् "महं चलमान्" सरयमब्रवीत् "अहम्" इति । धर्मे निरुद्धोऽस्ति सो सर्वराजस्य सदीप गतो तेनोक्तं यत् "ए पृथ्वी धारयेत् स एव चलमान् भवेदिति" अस्य प्रतिज्ञया धर्मस्य पृथ्वी ददो ; स हि धर्मो व्याकुलोऽभवत् । पुनः सरयाय ददो । सरयं च कतिपययुगानि यावत् पृथ्वीमुदस्त्रापयत् ।

( ५ )

१ उसके मुँह में अपना वह बहुत चलता पुरजा है । २ सबने उठपाव पढ़ने बैठ जायो । ३ परोला के बाद छुट्टियों में दूसरी जगह जाता अच्छा है । ४ अचानक तरह पास करावे ता एक पुस्तक मिलेगी । ५ हस्तलिपि को साफ एवं सुदृढ़ बनायो । ६ पढ़ने के समय दूसरी ओर ध्यान मत दो । ७ मेरे हाँव से काँटा चुभ गया है, उस मुँह से निकालो ।

संस्कृतानुवादः

१ तेन साकं नात्रिपरिचयः शक्यः, किन्तोऽप्री । २ प्रातएवायं मध्येतुः सुपविश । ३—परीक्षान्तरम् अवकाशेषु धन्यत्र वयनं वरम् । ४ मध्यगुप्तीरार्थं भवेत्तहि पुस्तकमेकं लभेथा । ५ हस्तलिपि स्पष्टां सुदृढां च कुरु । ६ अध्ययनं समये, धन्यत्र नाववेहि । ७ मम पादे कष्टको लग्नं, तं मुच्या समुद्धर ।



(१०)

१ एक ही ज्ञान धनपने जाले हो। दूसरे की मुनेते ही नहीं। २ प्रति-  
विधोय से वह बलकर काटा हो नई है। ३ कंठ में पोष कर गया है और  
जसाका मुंह भी बल गया है, अब उसे चौर दिया जायगा। ४ जिसका काय  
उसो की भाँजे और करे नां ठोका भाँजे। ५ इस वृषटना में वह बाल-दाभ  
बल गया। ६ पहले उसने अपनी भाषराट बंधक रखी थी अब बल दिवाला  
दे रहा है। ७ जिस बल को भी बाल-बोस करके स्वयं काटना ठोक नहीं

संस्कृतानुवचः

१ एकमेवायंमनुवपति न चान्य मृतापि । २ प्रतिविद्योतेन सा तनुता  
गता । ३ कणः पूर्वविमानो वृद्धभूकश्च जातः इवानाम्ब सात्तावयं करिष्यते ।  
४ यद् व्यस्योचित तत् एव समाचारम् न मोचते इतरम्तु प्रदत्तो लोकस्य हाम्यो  
भवति । ५ अस्मिन् वृषाणि देवान् तन्मयातको रक्षितः । ६ पूर्वं स स्वा  
सम्पत्तिं बन्धकेऽपराधं सम्प्राप्तम् अलमोचनेऽप्यतनानुवचोपयति । ७ विश्वक्षोऽपि  
सकथं स्वयं क्षेत्रमसाग्रजम् ।

(११)

रात्रि समाप्त हुई प्रभात का रघालोक उद्य हृष्टिबोचर होने लगा । तारा-  
गता जो रत्न के धधने में बसक डमक दिवा रहे थे, अपने प्रकाश को धीका  
देवकर धीरे-धीरे मुप्त हो गये । जैसे चोर प्रभात का प्रकाश होने ही धधने-  
अपने निकाने को जागने है, ठेके ही रात्रि की स्याही का रंग उठा पूर्व दिशा  
में सनेही प्रकट हुई बानो प्रेमी मुबल ने प्रेमिका रात्रि के स्याह बिचरे बानों  
को मुल में नमेट लिया और उसका उन्मूलन मन्मक दीक्षने लगा । प्रातःकाल  
को कायु युवकों की तरङ्ग धठकेनियाँ करती हुई बली । प्रक्षिप्तो ने वह-  
बहाता आरम्भ किया । उद्यान में कलिकार्थ मिलने लगी जैसे तीव्र से कोई  
मेघ खींचे

संस्कृतानुवचः

रात्रिगतः प्रातः भुग्म्व हृद्य हृष्टिपञ्चमवाप्यान् । नक्तं तमसि रोचिष्णु-  
न्युद्गनि सम्प्राति सन्वर्चनीनि सन्ति निरोहितानि । यथा तन्कराः प्रातरालोके  
स्वरसामं प्रनि विदयन्ति तथैव रात्रिप्र्यामिकापि । पूर्वस्या दिशि प्रकाश उद-  
गान् अन्य प्रिय प्रातः प्रियाया निआया बसितान् पर्याकुलान् मूषंजान् मुख-  
तप्रनिसमहार्यन् सम्ज्ज्वलं च तन्मूलकं हृष्टिपञ्चमवासरत् । प्रागतिको

चाप्युत्पन्नवत् सविभ्रममयान् ; पलित्वा कलरवं कलमारभन्त । उग्रानि  
कलिका विकसितान्मुग्ध मञ्जवानां यथा नृपान्त्वित कदिशन्निमीलिते लोचने  
समुन्मीलयेत् ।

(१२)

१२, १३ शब्दों में सोपसने शब्दों का प्रयोग किया गया है ।

१—हिमाक्ष से गया निकलती है । २ बन्दसा के निकलने पर संघ-  
कार शुरू हो गया । ३ यह पहलवान दूसरे पहलवान से टक्कर ले सकता है ।  
४ वह पीछे हो बियाग की पीढ़ी का अनुभव करेगा । ५ गुप्त ठीक ही रह  
रहे हो, तुम्हारी युक्ति से मुझे कोई राय दिखाई नहीं देता है । ६ जो  
शारीरिक शक्तियों की बराबरी कर लेते हैं वही सच्चे विरोधी हैं । ७ जो  
रामायण की कथा कहता है वह जनता की सेवा करता है । ८ गौरी जो  
हकूती करो याता घर से बचे ? ९ अब मैं तुम्हारे भाषण पर विचार  
करता हूँ तब उससे मुझे अधिक गुण नहीं दिखाई देते । १० बन्दसा बाण्डास  
के घर में बाँटनी का नहीं होता ।

संस्कृतानुवादः

हिमकलो नृपः उद्भवति । २ पर्वतस्यैव शक्तिरिति व्यपकारमिहोद्भूतः ।  
३ भयं भल्लं क्षण्यर्थं मन्तव्यं प्रभवति । ४ पर्वतमेव स कपिशस्यैव  
अनुभविष्यति । ५ युक्तमेव कथयति अत्रानु नाह भवतस्तर्कं दोषं हिमाक्षयामि  
६ यः शरीरशक्त्या विपुलशक्तित्वे ते नाम विपिनः । ७ यो रामायणं प्रकृते  
स मन्त्रं माधिर्यमुपकारोति लोकस्य । ८ गौरी मन्त्रिपत्न्या गृहं प्रतिनिवृत्तमिह ।  
९ यदाह नक्ष भविष्यति पर्वतशक्तिरिति नदा नाह बहुगुणं विभावयामि । १०  
न हि मन्त्राते ज्योतिर्यथा पादुकावदान्वयमन

(१३)

१ गुप्त निकल रहा है और संघरा शुरू हो रहा है । २ लंका में लौटते  
हुए राम को लाने के लिए मन्त्र पागे बड़ा । ३ हमारे घर आज एक मेहमान  
आया है उसका शक्तिपूर्ण मन्त्रांतर करता है । ४ जो शिष्टाचार की सीमा  
साँघने है व निन्दित हो जाते हैं । ५ बहुत से लोग इस बहक से घाते जाते  
हैं । ६ माँस्य पक्ष में लक्ष्यो जिससे मैं चढ़ सकूँ । ७ नि सन्तुष्ट गुप्त इस  
उज्ज्वल चरित्र से घाते बड़ा को ऊँचा उठा दोग । ८ इस युक्ति का हम इस  
प्रकार विरोध करते हैं । ९ प्रत्येक वय हमें गाँव में सौ रुपये लगान मिलता

हि. १० लोगों की योगविधि का उपदेश करता हुआ बांगी पृथ्वी पर चला ।  
 ११ उस राज्य में पुत्र पिता के विरुद्ध शासन करने में योग नाश्विनीयति के  
 विरुद्ध । १२ जब तक पृथ्वी पर पर्वत स्थिर रहने और नदियाँ बहती रहेंगी  
 तब तक लोगों में रामायण की कथा प्रचलित रहेगी

### सांस्कृतिकानुवादः

१ शानुवदमच्छति तिमिरवशाधमच्छति । २ लङ्काली निवसन्मान राम  
 मरत प्रमुञ्चगाम ३ अद्यास्मद् नृहन्कोश्याचलाऽभ्याससत् स भानिध्वेन  
 सत्किरलीयः । ४ ये समुदाकारमुच्चरन्ते तेष्वनीयन्ते । ५ भूयान् जना  
 मार्गगतान्ते लक्षरन्ते । ६ उपनय मोटरयान वावहारोक्तानि । ७ अवदानेनान्त  
 कुलमुन्नेयसि नाथ सन्दह । ८ शस्त्रकर्त्रेण प्रत्यवलिप्यामहे । ९ प्रत्यहं शत  
 मयाका उत्तिष्ठःस्वस्माद् वामा । १० योगी वाक्य योगविधियुपदिशन् भूष  
 चिचकार । ११ तस्मिन् राज्ये पुत्राः पितृमयाचरन् मायेश्वाभ्यचरन् पत्नीन्  
 १२—यावत्कालमस्ति निरव सरितश्च बहोमने ।

तावतामामयसकथा सांकेय प्रचरिष्यति ।

(१४)

एक समय राजा बिलीय ने चन्द्रविष मार करने के लिए एक कोटा छोड़ा ।  
 लङ्का की रक्षा का भार रघु पर पड़ा । वह कोटा के पीछे पीछे चला । इन्द्र ने इस  
 घर से कि ली धन करके दिगम्बर बेरा पक्ष में लेना छिप कर उस बाढ़ को  
 चुरा लिया । नन्दिनी की कृपा से रघु को यह बात विदित हुई और पक्षमे  
 उभरते साम-नीति से इन्द्र से वह बाढ़ मागा । न मिलने पर रघु ने इन्द्र के हाथ  
 मुठ धारण किया । उनके बीच मुठ होने पर रघु ने ही पहले इन्द्र के हृदय पर  
 बाण मारा प्रहार से क्रुद्ध होकर उसने भी रघु पर बाण मारा । शान्तों के  
 शस्त्र निरन्तर पीले रहने के कारण और मनुष्य के खून का स्वाद न भानते हुए,  
 मानी वह बाण रघु का खून पीने लगा । इसके बाद मुकुमार रघु ने भी अपने  
 नाम वाले बाण को इन्द्र की भुजा पर मारा । बाण फटकर उसने इन्द्र की  
 ध्वजा काट डाली । इस प्रकार उनका भार मुठ हुआ । इन्द्र के पास जो मित्र  
 लोग खड़े थे और रघु के पास जो मैनिक थे वे मुठ की दस्ताने रहे । इन्द्र के  
 आकाश में और रघु के भूमि पर होने के कारण उनके बाणों के मुख भी  
 ऊपर और नीचे थे । समय पाकर रघु ने इन्द्र के धनुष को डोर काट डाली ,  
 इससे क्रुद्ध होकर इन्द्र ने पहाड़ों के पंखों को काटने वाले पक्ष से मुकुमार रघु

के ऊपर उभार किया। उसमें चोट खाकर रघु पृथ्वी पर गिर पड़ा किन्तु लगभग भर में पौड़ा को नुला कर फिर बुद्ध करने के लिए तैयार हो गया। इस प्रकार रघु की धार्मिक चोरता को देखकर देवेन्द्र प्रसन्न हुआ और उसने बुद्ध बन्द कर दिया।

### संस्कृतानुवादः

एतदा राजा दिनापोषद्वयमध्यमं कर्मद्वयकं कृतम् । तस्य रक्षितृत्वं नितुषता रघुस्तमनुषयी । दिनां घतं यजान् विषाय-पदवीं मे प्रदोष्यति” इति भयं प्रसन्नकरो देवेन्द्रस्त बाजिनमपवहारः । मन्दिमोदसादात् किंमत-कृता रघुं प्रथमं सायका देवेन्द्रमस्य पयसि । अनुपलब्धप्रथमं सहे योद्ध प्रथ-कृते तपामिषं पुष्टं सप्रवृत्ते रघुरेव पृथ दन्दं वातने हृदि बिभेद । तत्प्रज-रंण सहाया देवेन्द्राजीय रघुं वातने इत्यविवक्षत् । स तनु मयकः सतनमसुराणं रक्षतपामनाज्ञातन्तराधिरासकाद कुतश्चनेन तत्प्रोत्थितं पयो । तस्य कुमारो रघुरपि स्वनामाङ्कितं सायकं देवेन्द्रस्य भुजं निधायान् इपुणा च तस्य पताकां निधाय, तयारेव तुमुन बुद्धमवनि । इत्यारब्धं विद्वत्सा रघो ममोपे च तस्य सीमिकां बुद्धप्रेषका वभूवु । इत्यग्न्यांगकाशप्रविशकापवृत्तेन तयो सायका ध्वजधोमुखा ऊर्ध्वमुत्तरेण शालान् । यवमरुपकम्भ रघुदेवेन्द्रस्य वनुजर्मामिष-मम् तनानिहृष्टो मयका पर्वतगलच्छेदमोचितं वास्य भुजमारे रघो प्राहितीयत् । तेन संहिता रघुर्ध्व्या पयत । तद्वयवा च सखेनेवावभूय स पुनयोद्ध सज्जीयमान् । रथान्तागमनौक्तिकं वीर्यं निरीक्ष्य भूय पुनोप देवेन्द्रो युद्धाद् व्यारमन्व ।

### (१५)

राजा रघु ने विचरित्ति पत्र में अपनी सम्पूर्ण अजाना पत्र करने वालों और भिक्षुओं को दान किया और अपना स्वानावि काम मिट्टी के घटन में करने लगा। कुछ ही समय के बाद महर्षि करमन्तु का शिष्य कौरव श्रुति गुरुदक्षिणा प्राप्त करने के उद्देश्य से रघु के पास आया, कारण सौदह विद्याएँ सीखकर वह गुरु को दक्षिणा देना चाहता था। रघु ने अपने घर पर आये हुए श्रुतिवि कीर्त्त की धर्मोदि से यदाविधि पूजा की। रघु ने कुशल पूछा तो कौरव ने कहा—‘राजन् आपके समान धर्मिया प्रजापालक राजा के होने हुए प्रजा क्यों सुखी न हो?’ इस समय मैं आपके पास स्वार्थवश आया हूँ, किन्तु आपकी स्थिति को देखकर मैं विचार करता हूँ कि प्रच्छा होता यदि मैं आपके पास पहुँच जाँ या गया होना। इसलिये भय मैं गुरुदक्षिणा के लिए किसी

अन्य राजा के पास जाऊँगा " यह कहकर कोत्स जाता ही चाहता था कि रघु ने उसे रोक कर कहा— 'यमचन्द्र' आपकी सितना घने चर्चछिन्न तब कोत्स ने अपने गुरु महर्षि वसिष्ठ के साथ हुई पहले की बातचीत सुनाई कि उन्हें देने के लिए थोड़ा करोंह की आवश्यकता है। यह सुनकर रघु ने कहा— 'आज तक कभी मैं कोई प्रतिष्ठा रघु के पास से विफल नहीं गया। आप दो तीन दिन में यज्ञगृह में रुकने में प्रयत्न करता हूँ।' कोत्स ने रघु की बात मान ली।

तब रघु ने कुबेर पर बड़ाई करने का निश्चय किया। सुबह वही रथ पर चढ़ कर जाना ही चाहता था कि अच्युतारियों ने धाकर निश्चय किया— 'राजन्' शत की सज्जानों में सन्ति की बर्ण हुई। रघु ने जाकर देखा कि यहाँ सुभद्रा पहाड़ के समान सुषारों का डग पड़ा था। ओ' उसने श्रुति कौशिक की दे दिया। कोत्स भी उस पञ्चमहा का आशीर्वाद देकर गुरु के आश्रम की ओर चल दिया। कुछ समय के बाद रघु की राक्षी के एक पुत्ररत्न पैदा हुआ, जिसका नाम 'अज' रखा।

इस प्रकार जैसे जैसे उचित समय पर शिक्षा प्राप्ति प्राप्त करने का मुका हुआ— पिता की आज्ञा से उसने इन्द्रमयी के स्वयंवर की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में उगने हाथों का रूप पाकर किता हूए प्रियवर्त गंधर्व की पारा जिह्वा भातः मर्द्धि का भाषण। उसने प्रसन्न होकर अज की सम्मोहन प्रस्थ दिया। जब अज विदमराज भोज की नगरी में पहुँचा भोज में उसका स्वागत किया। ओर अपने सुमनस्क महल में उसे ठहराया जहाँ अज ने स्नानादि क्रियाएँ समाप्त करके विश्राम किया। दूसरे दिन प्रातः वह बैरायोग्य वेजभूषा रच कर स्वयंवर महल में पहुँचा जहाँ राजा नन्द एकत्र हुए थे।

### संस्कृतभाषानुवादः

विश्वजित्तामिन् यज्ञं सवसात्मोयं कोषजातमृत्तिराम्यो माचकेभ्यश्च तत्त्वा मृण्मयपात्रेणैव रघुं सवसात्मोयं स्नानादिकं देहकृत्यं प्रकारः।

ततः किमस्तमयानन्दरं महर्षेर्वेग्नन्तोः शिष्यः कौत्सनामा ऋषिश्चतुर्षां विद्यां पश्चिमस्य स्वगुरोरे दक्षितार्णं दातुंक्रम्य रथाः सघोषमाधयी। रघुं स्वगृहं मागतपतिविधिं कौत्सं विरोधय घर्षाविध्यर्ष्यादिभिस्तपपूजयत्। कुशान्प्रज्जना-  
तन्तरं कौरस्तमभाषत "राजन्' जवाहरे घर्षात्मनि प्रज्जयानके भूपती सन्ति कथं न प्रजा सुखितर' रघु ? साम्प्रतमहं तु सवत्मान्निधौ स्वायं त्राघमितुमंवागतोऽस्मि



परं भावत्की वतमानमिति मवलोक्त्वा यथा कल्प्यते बहुबन्धुसन्निधौ समायमन-  
मन् प्रागेव सपुञ्जितमासीद् नाधुना, सम्प्रत्यहं गृहदक्षिणार्धमस्यामेव नम्यचिन्त-  
यते सर्वेषु यामि । इत्युक्त्वा यावत्कौत्सोऽन्यत्र गन्तुमेच्छन् तावदधुस्त प्रत्य-  
नर्त्यामुच्यते—'दिवन्' । किमद्वनमयेत्यतः ववता । तत्र कौत्सो गुरुराग सह  
कृता शयी त्वं घातामुक्त्वा पुनरुवाच—'तदहं चतुर्दशकोटिपरिमितं द्रव्य  
वाञ्छामि इति तदाकस्य रघुरपि—'मत्प्रकाशान्ताद्यावति कश्चिदिति मविपत्नी-  
भूतममोरघोऽन्यत्र गत इत्यतो अकाशं मदीयेऽन्याकारे द्विजाले विनान्यतिवाहयन्  
प्रतापतामहं तापिदुर्बलदर्शनाधनवि प्रमते' कौत्सोऽपि तदङ्गोपकारः ।

रघुरपि प्रातः कुन्तरे प्रसन्नचित्तान् निर्दिष्टकामः । नतो यावत् प्रातरेव रथमा-  
वहन् स तदतिष्ठन् तावदेव भावतामार्गिकैरापत्य चिनयावतते निवर्तितम्—य-  
श्महाराज राजो कोषामारे हेमकुण्डप्रमथदिति । ततो रघुरपि कामवाञ्छीत् ।  
ततश्च भुमेतपतंतमिव स्थित मुचलागमि रक्षः कौत्साय धन्यम् । कौत्साऽपि  
सुतप्राप्त्याजिघत्सुः सदा गुरुरागप्रमथमावतः । ततोऽपि रथेव रथार्थोत्थाया  
सुतरस्त्वमेकमजायत मे लभुः सख" इति मान्तर प्रमिद्विप्रमान् ।

एव क्रमं स पथकाल शिक्षादिकं प्राप्य किशोरवयस्यमवकाशयत् । तत-  
श्च पितुराज्ञावन्दनस्या स्वयं च प्रतिष्ठन् मार्गे च सनत्प्रमथविचारपाद् गजस्थं  
प्राप्तं प्रियंवदं जालोन्माहस्य गजयोनिभस्त बोधयामास—'प्रमथो भूत्वा स तस्मै  
शम्भोहताम्ब समप्यन्' । स चैव विदधराजबोवस्य नगरी प्रातः । भोजोऽपि  
सं भोजयित्वा एकस्मिन् सर्वावकुलभूषितं शोभने राजप्रासादे मवांसयत्  
ततोऽग्नं सक्तान् स्नानादिकाः क्रिया ममलायामास—'प्रमथो प्रातरेव स्वयं-  
वरोचितं जेण विधाय राजावर्जित स्वयंवरं प्रति जगाम ।

### अनुवादार्थं तत्त-सप्रह

(१)

१. महाराज मांघी ने कहा है कि यहिहा ही सत्य प्रेम है । २. किसी वन  
में चार दातों वाला हाथी रहता था । ३. पूर पुरुषों से शायि हुन धर कोत्सागना  
भुगम नहीं है । ४. यह बर्बा बन्द हो गयी है हम नाग धूमने चले । ५. महेश  
की लहको उसके काणी जाने पर इसहावाद जायेगी । ६. लहका सा गया है  
उसको जगाना उचित नहीं । ७. आज आप कहीं चलेगे ? आज क्या है ?

(१) २ चार दातों वाला—चतुर्दश । हाथी—वजः । ३ भुगम—  
सुकरम् । ४ बन्द हो गयी है—प्रवसिता । धूमने—प्रमथाय ।

८ आज दो दिन से मदन और मोहन में बोलचाल नहीं है । ९ पहले इस वेष का नाम अयोध्या था । १० उसके ऐसा संचने-संचने राजा बीत गई

(२)

१ प्राचीन काल में सब बातें पढ़ते थे । २ यदि तुम ऐसा करो तो अपने देश के राजा समझे जायेंगे । ३ यदि हम सूर्य की ओर देखें तो देखेंगे तो हम चन्द सूर्य ही आयेगे । ४ बड़ा चपल, बल और बुद्धि की बढ़ाने वाला है । ५ अपने बहुत सारे की भाँजा में लक्ष्मण ने सीता को बल में छोड़ दिया । ६ पुष्पपुर नाम का एक मुख्य नगर है, उसमें लक्ष्मण नामक राजा रहता था । ७ राजा अपने राज्य में पर विद्वान् सब ब्रह्म पूजा जाता है । ८ प्राचीन काल में बिना बिना मृत्यु ही जाती थी । ९ मन्त्रणा मनुष्य का गुण है । १० कालक बन्दसा को दल कर खुश होते हैं और नाचते हैं

(३)

१ विद्यार्थी को धनिक होना चाहिए । २ विद्या की प्रशंसा लेना में ही है । ३ गोरक्ष ने बरह कर्षों में व्याकरण सीखा । ४ कोशलाधीश राजा दशरथ की राजधानी अयोध्या की । ५ दशरथ के राम, लक्ष्मण भरत और शत्रुघ्न चार लड़के थे । ६ सारे राजपाट की ओर से हार कर राजा बल बल में चले गये । ७ बल, जन और जीवन का सब भल करो । ८ यदि मेहनत करोगे तो फल पाओगे । ९ गोदावरी के किनारे एक बड़ा शास्त्रालय का वृक्ष था । १० मन्त्रण ने धृतराष्ट्र को, कुण्डोष के युद्ध का सब धनान्त भुनाया । ११ प्राण और माय अथवा स्वास्थ्यप्रद है । १२ महाकवि कालिदास को यूपी के विद्वान् भारत का शोकसिंघर कहते हैं ।

(४)

१ जो सीता है वह सीता है, यह किसी महात्मा ने ठीक ही कहा है । २ क्षण क्षण में जो नूतन दिखे वही मोन्दर है । ३ अहिन्यारबाई का राज्य प्रबन्ध वस्तुतः प्रशंसनीय था । ४ पक्षियों के कपट से वह स्थान भानो बोल

८ बालबाल -अज्ञाप । १० बीत गई -व्यतीत । (२) २. सपने जाओगे-मम्पस ३. सूर्य की ओर -सूर्य प्रति । ५ छोड़ दिया-वत्याव । १० खुश होते हैं -असन्ना भवन्ति । नाचते हैं-नृत्यन्ति । (३) ६. हुए में-युते ।

रहा था । ५. भारतवर्ष में श्री शंकराचार्य ने वैदिक धर्म का संशोधन करा दिया ।  
६. दीवानचन्द के सुरीस स्वर पर लोग मुग्ध हो गये । ७. प्राचीन समय में  
भारत माने की विधि काही जाती थी । ८. बकवास न कर, मैं तेरा भाग्य  
कोह दगा । ९. वीर हकीकत यथार्थ में बसवीर था । १०. तू तो कानों से  
बहरा और दाँतों से घन्घा है । ११. सनियक विद्याभ्यास करना लोहे के घने  
खजाना है । १२. इस कार्य को कही कर सकता है जो तलवार की नली बार  
बार खड़ा हो सके ।

### (२)

१. ऐसा सोच कर बग ऐसा के रास्ता में दिन के नींदरे पहर में भारते भिन  
रसनमें की बुलावे के लिए धगराक का बेजा ।

२. जुमाहे ने कहा 'यदि ऐसा हो है, तो मैं अपने घर जाकर अपनी स्त्री  
से पुत्रकर धारा है तब मुझ परदान देना ।'

३. उसने कहा— मैं उस मरवेष्ट की राजसखी है मुझे पत्र उसे स्मरण  
पड़ेगा अतएव मैं दुःखी हूँ ।'

४. महापि बालीकि ने रामायण में बताया कि रावण को मार  
कर श्री रामचन्द्रजी अपने अग्रजों सहित पुष्पक विमान में बैठकर लंका से  
प्रत्योद्या में आये ।

५. शरीर और गुणों में अफास-गाला का अन्तर है क्योंकि शरीर अणु  
भर में सग्न हो जाता है गुण कल्पों तक स्थिर रहते हैं ।

६. वशरथ के बचना का पालन करते हुए श्री रामचन्द्र ने राज्य को छोड़  
कर सीता और लक्ष्मण के साथ विन्धवासन में भुवपूर्वक निवास किया ।

७. पापनुद्धि ने कर्मनुद्धि से कहा—मित्र 'तू बुझाये में अपने किस काम

{४} ५. गात्र दिया—अस्वापयत् + ६. अल प्रलापेन नो चेत् तव रहस्यं  
भेत्स्यामि । ६. यथायं में अस्तुत । १०. त्व अन्तु कर्णभ्यां द्विरी  
मेवाभ्यामन्धेवास्ति । ११. लोहे के घने खजाना है—दुष्कर । १२. स एवंदं  
कनुं वाययति य अन्तु अन्विधागलनमानरति । {५} १. बुझाने के लिए—  
आज्ञातुम् । {५} ५. जमीन-आसमान का कर्क है—महदन्तरमस्ति । समुद्र  
पल्लवप्रोत्किन्तरम् । ७. बुझाये में—बुझावन्वावायम् । याद करेगा—  
स्मरिष्यसि ।

को धाद करेगा, दूसरे दिन की न दलकर आसकी से क्या नयी बात कहेंगा ?

८. यह सुनकर राजपुत्र विस्मय से धमंजुडि के चौथे वण्ड को पश्य को दृष्टि से देख ही रह्य कि धमंजुडि ने अमोक्ष की कोंटर में दात-फूस लपेट कर भाग जगा दी ।

९. इस समय तमो-तमो पनहुन्नी लोकाएँ बन चुकी हैं जो पानी के भीतर ही भीतर चलती हैं और पानी के नीचे जाकर जल के जहाजों को समुद्र में बुधो लेती हैं फलतः उनमें बैठे हुए पनुथ्य बूब जाते हैं ।

१०. उस हासिजबाब जानने में कहा “यगर ऐसा ही है, तो तुने मुझ यही क्यों नहीं बतला दिया कि तू अपने हृदय को रं दे मैं उभी जामुन के वृक्ष की कोंटर से तुझें अपने हृदय को निकाल कर अपनी भाभी के सिध दे देता क्योंकि मेरा अपना हृदय उभी पंच की कोंटर से हमेशा अशुभित है । तू मुझ पहाँ क्यों ले आया ? यह सुनकर मकर ने क्षुद्र होकर कहा — “मित्र यगर मही बात है तो मुझ अपने उस हृदय को अच्छी ना दे, जिसको लेकर यह दुष्ट उभी मरने में बच जाय मैं तुझ उभी जामुन के पेड़ के पास से बलता हूँ ।”

### (६)

१. हम लोग कुथल को ईश्वर का अवतार मानते हैं । हम यहाँ अगिला समय तक नहीं रह सकेंगे कुथल के बिना और कोई यह कार्य नहीं कर सकेगा सब लोगों की धात्रा के अनुसार हम लोगों को काम करना चाहिए । पिता के समान मित्र का आदर करना चाहिए ।

२. कृपा कर साथ अपने पुत्र को अपने साथ मेरे पास लाये । मैं भीतपुर के मेले में भी लपटे में छोड़ा गया । वे लोग धारसे कुछ पूछने मांगें हैं क्या तुम को मेरी बात पसन्द है ? वे शानो भाई इसी स्कुल में पढ़कर पास हुए हैं

८ दात-फूस—तुफादीन् । लपेट कर—संक्षिप्त । ९ पनहुन्नी—जलान्त-रितपोत हुजो देती हैं—पञ्चयति १० हासिजबाब—प्रत्युत्पन्नवर्ति, निकालकर—आदाय भाभी—आनृजाया । ले आया है—आनीतवालिम् । क्षुद्र होकर—सहयम् । (६) २ छोड़ा देना—अशुभितकीम् ।

तुम लोगों में मेरी बात छान देकर उही सुनो।

३ भुम्हें इस रमोदमें ही बनाई रखी नहीं अपनी वाजान् बनो, वही वृषाण पर मैं तुम्हें मिठाई बिनाऊँगा मैं आपकी फुलवागी में सुगत वरते फूल लाना चाहता हूँ। अजकल नटक पहन में रात दिन व्यस्त रहने है। परीक्षा हो जाने पर वे घन जाऊँ धराय करमे लकर यह भय उचित ही है।

४ प्रसन्न को देखकर बेलक ऊपर उठा उनके खानी में पकवा लताया जिसमें पसंज समुद्र में दूध गया देवताया ने नगमाया सुरसर का भोज वृद्ध लोगों ने मया रावण की गर्जो मन्दादरी ने उम ममभाया कि साया की मयास देवी मित्तु रावण ने उनको वत में मानी। भूषणाय की क्षमायत पर रावण ने कहा कि मैं उनके गति को गुरु में प्राप्तमा दधीमा के घान पर गकुलनर की सक्तिता न क्षमा मांगी छोड़ शकुलना की राग ने मुक्त करने की प्राथमा की।

५ कथक—येही मेरे मन में बड़ी चिन्ता रहती थी कि भुम्हें घमसा पति मिले तुम घमसे गुरुको के पोषा गान गया। यह मैं तरी लता का भी विवाह इस धाम में ही उनके निकरवती हो रहा है, पर दया धन तुम देन मत करो, बिदा होया। दाहन्तमा मर्त्य। मैं घमसा प्यारी मायको की भुम्हें गोपनी हूँ तू इसकी दधमाय करन।

६ घमस बिचार में गहन मेरा भारी यधुग में रहता था मोहन। मुझे इस छोटे से लहके को कितने डार (कितने डार) पोषा २ महाशय में गोत्र तीन डार आपके पास घाना है पर आपके डारन नहीं कर सकी। तुम लोगों में कीत चढ़ा धमासा है उसका नाम डनायो। कल दापहर के बाद यहाँ पहन से लोग आचगे उनकी शुभगा कतनी चाहिए।

३ भुम्हें इस रमोदमें अपनी अस्य पाचकस्य परस भोजनं महा न रोषने फुलवागी—पुष्प-वाटिका। ४ ऊपर उठा उन्धित ५ बिदा होओ मच्छ (६) ६ तीन बार—विकृत। वनाया—बाल्याह। दापहर के बाद अपराह्णे



(७)

१ मेरा मन यहाँ नहीं लगता है । मुझे यहाँ आये हुए बहुत दिन बीत गये अब मैं अन्दी प्रयाग जाऊँगा । यहाँ कोई दार्शनिक नहीं है जिसमें मैं दशम शास्त्र पढ़ूँ केवल दिन में बार बार पांच बार इधर-उधर घूमता हूँ यही तो मेरी दैनिक चर्या है, श्रमिक साधना अर्थात् है, धन में रमना

२ विषकाभित नामक एक लड़ जाती भुनि चरमर के पास जङ्गल में रहते थे । वे एक बार लका दशरथ की भया से बड़े लो उन्हें देख कर भया भया भय से उसे घोर प्राणभय करके उनका भयकर किया

३ सोहा चाहते बाने मंग घगने रंगे हुए पुष-कमल को छोड़ कर संन्यासी हो आते हैं । मुझ घोर शक्ति धाम के लिए ज्ञान घोर कम संन्यास मार्ग है जिनके बिना कुछ नहीं होना । अष्टगुण में घगने राज्य की सीमा सिन्धुतरी तक फैलाई थी । एक दिन जब पाषाण पाषाण बन में घूम रही वे एक मुनिगिर को व्यास लगी उन्होंने लज्जोक्त बाने किसी सरावर में जल लाते के लिए सहदेव की भया ।

४ मुझ लोग वाकर उन गरीब भटकियों की भोजन बन घोर कपड़े दो । यदि मुझ मङ्गल के विज्ञान होना चाहते हो तो पहले काशी में जाकर सिद्धात-कौमुदी पढ़ो पीछे इगर्भक वाकर वाकर की उपरि लेना मुमं होना । गरी तो बिना परिणति का ध्याकरणा पढ़े इगर्भक वाकर भी संन्यास पदमे से कोरे रह जाओगे । भुनि लोग बन में रहकर वृक्षों में फल तोड़कर आने से, लपसा करते थे न कि आबसी का मात आ कर ।

५ सीता राजा जनक की पुत्री नहीं थी जिस समय जनक जी पक्ष के लिए मिट्टी खोद रहे थे, उसी समय पृथ्वी के भीतर से सीता निकली घोर राजा जनक उसी क्षण उसको गोद में उठाकर घर ले आये । यह कथा रामायण में है इसीलिए बहुत-से लोग सीता को पृथ्वी की कन्या कहते हैं

(७) ४ करे रह जायाने—ज्ञानन्या भविष्य । भात खकर—भक्त सादित्वा ।

५. मुकुजी ने शिष्या से कहा कि मेरे चारों घोर बैठ जाओ उनके बँडने पर वे गोलें सुनी जहाँ राजा या विद्वान् न रहता ही वहाँ कामी नहीं रहना चाहिए। चारों दिशाओं में जान से बार फल मिलते हैं उन्हें जो अपने परि-  
जस से पा लेगा उसी का जन्म सफल होगा।

७. हृदयकृपण में सगर नाम के राजा हुए थे बड़े पराक्रमी शूरवीर थे उन्होंने कई बार अश्वमेध यज्ञ किये। अन्त में फिर अश्वमेध यज्ञ करने की तैयारियाँ की यज्ञ के लिये घोड़ा छाटा। घोड़े को इन्द्र ने दीधिति दिया। राजा के लड़के और बहुत ही सना पाँहा इतने बची किन्तु घोड़े का कही पता न चला सब नौबत निराश होकर लौट पड़े। अन्त में पाताम में जाकर उन लोगों ने देखा कि कर्मिल मुनि जहाँ उपस्था कर रहे थे वहाँ उनके हमीय घोड़ा बँधा हुआ है।

## ( ४ )

(क) एक पुत्र की दो गिर्याँ थी—एक कुटी और एक मुबनी। वह बाप की मृत्यु होने को था। सिर के बाज कुछ मरुत और कुछ बाले थे। एक दिन तेज लगाने समय मुबनी स्त्री ने सोचा कि मैं युवती हूँ मेरा पति भी मृदा होगा। आश्रित। उसने मन्त्र उच्चारित किये। कुटी स्त्री ने भी तेज लगाने समय सोचा कि मैं युवा हूँ मेरा पति भी मृदा होगा आश्रित। उसने काने बाल उच्चारित किये। कुछ दिन बाद वह मनुष्य केवर्गहित हो गया। मन्त्र है कि दो गिर्याँ बाला की यही दशा होगी है।

(ख) एक समय तक भेदिय ने एक बकरे को मार कर खाया एक हड्डी का टुकड़ा उसके गले में फँस गया। वह व्याकुल होकर शिष्याते जग—“ए बनवासियों” जो मेरे गले से उभ हड्डी के टुकड़े को निकाल देगा मैं उसे बड़ा इनाम दूँगा। इनाम के प्रलोभन में एक बगुने ने अपनी सम्पत्ति श्वन से हड्डी निकाल दी और इनाम पाने लवा। भेदिय ने उत्तर दिया—“रे बूखें मैंने अपने गृह में आपी हुई तेरी मदन की न शबाकर तुम्हें जीवन-दान

(२) (क) सिर के बाज—केजा। उच्चारित किये—उदपादयत्। (ख) भेदिया बूख। हड्डी का टुकड़ा—अम्बिबण्ड। इनाम—पानिनीपिषम्। शबाकर—अवपित्ता।

दिया, उसमें ध्वजक क्या इनाम हो सकता है ? दुष्टों का यही स्वभाव होता है ।

ग. एक जङ्गल में कोई घोंदड़ जंग में घाघ-घाघ फिर रहा था एक शेरज उसने बहुत सुन्दर घोंदड़ घोंदरी में भरी हुई लता देवी । लता भी बहुत लंबी घाघ बार वृद्धन पर भी घोंदड़ के हाथ कुछ न खाया एक बार वह छापी खला छोड़ कहने लगा — इस लता के घोंदूर तो खट्टे हैं खानाक अपनी खानाकी में क्यों हटता नहीं ।

(घ) दो घोंदरी कहों जा रहे थे । उन्होंने प्रतिज्ञा की कि विपत्ति में एक दूसरे का साथ देगा । वे एक बने जङ्गल में जा रहे थे कि एक रीछ हाथ में खाया एक घोंदरी पर पर वह गया और दूसरा निश्चय होने में आता-प्यत्त चढ़ा कर वहीं बैठ गया । रीछ ने उस घोंदरी समझ कर खोंड दिया । रीछ के चले जाने पर वह खाया घोंदरी नीचे उतरा और घोंदरी से पूछने लगा कि रीछ ने तुम्हारे काम में क्या कहा था । उसने उत्तर दिया कि रीछ कहता था कि विश्वासघातियों का कभी विश्वास न पड़े ।

ङ. एक महका छोटी उस में बीच दुर्ग का घोंदरी में की देता था । माँ लता होती थी । इस लता महका पकता बाँट हो गया । एक बार किसी बड़ी काँसे के काटता उसे काँसी की सजा मिली । लता ने उस लता पर उमकी माँ भी वहाँ पर थी । लता उसने माँ का काम फाट दिया । काँसे ने उसे भिक्कावले हुए काटता पूछा । उस बार के उत्तर दिया — 'लता घोंदरी हो इसी का है अगर वह बचपन में ही मुझे छोरी कामे में रोके देती तो आज मुझे काँसी न मिलती ।'

(६)

(क) दो लक्ष्मी शिव के मन्दिर में लक्ष्मी करने लगे । आकाशवाणी हुई — 'तुम पर प्रकल्प है वर माँको । जो पहले भविष्य उससे दूसरे को

(घ) ग. गीदड़ भूगाल । घाघ-घाघ फिर रहा था इतस्ततोऽर्जुनस्य । घोंदरी में — हावाभि । वृद्धन पर भी — उत्कृष्टनीति । लता — घमला । नहीं हटता न विरमति । (घ) रीछ । बट गवा । खरोंह । नीचे उतरा

अवागन्तु विश्वासघातियों का विश्वासघातकानाम् । (ङ) चीजे — सम्पत्ति । काँसी की सजा मिल गयी — याज्ञवल्क्येन दण्डितम् । शक देती — स्वधारयिष्यत् ।

दुग्धनी खोज मिलेगी। उनमें एक मासखो था। यह सोचकर कि मुझे दुग्धनी खोज मिलनी चुप हो गया। दूसरे ने तालचों की चुप होते देखकर बर घोंगा है प्रतीत मरी एक साँस कानी हो जाए। तालचो महत्ता दोनों साँसो से पताची हो गया। सब हे तालच बुरी बला है।

१५ किसी तालच के किनारे पर एक बालक लेव रहा था। बालक के बहमूनी वस्त्रों और गहनों को ढ कर एक ठग ठगके पास धापा। बालक ने ठग का पास धाल देव कर रोना शुरू किया। यह देखकर ठग ने रोने का कारण पूछा। बालक ने कहा—मेरी एक मोने की धगूठी इस तालच में गिर गयी है। ठग ने कपड़े उतारे और पानी में धुव गया। बालक ठग के कपड़े उठाकर धुव दिया। शगरती के साथ जरागत करवा ठीक हो है।

१६ कहने है कि श्री रामचन्द्र जी जब बालक थ मां की गोद में बैठे हुए प्रसिद्धा के बहमा को देख कर कहने लगे—मां मुझे यह बहमा एकदाओ रामचन्द्र जी रोने लगे। मां ने बहुत ममभया मया बालक ने एक न मानी। सब हेगन थे कि बहमा को कैसे एकदा माय। मयरी मुसम ने कहा—‘राम ठगरी में धभी बहमा को एकदा लाता है। यह एक बड़ा हीला लाता और तममे बहमा दिखा दिया। रामचन्द्र जी मुस्कुराते हुए बहुत धम हू।

१७ किसी जङ्गल में एक गेद के पीछे एक भेर लेता था। उसकी गवत के बगल पर एक कुहा कुहन मया। गेद जरा उठा और धूहे को मायता हो बाहता था कि कुहे ने प्रायना की—‘साय भुवराज है, मुक दीन पर दया कीजिए। शर ने उसे खीच दिया। एक समय कह होर किसी बाल में फँसा। धूहे ने धपने उपकार का बहमा बुकाने के लिए बाल को काट दिया और धूहे की प्रसमा कता हुआ बला गया। सब है किसी के साथ की हुई भनाई निश्चक नहीं जाती।

१८ एक समय बड़ी बूढ़ा फिर जेर का जिला हो ने कहा—हे मुक।

६ (क) दुग्धनी खोज—हिमग वन्तु। तालच बुरी बला है—लोभुपत। धनर्षकर्ता। (ख) गहनों को—धामुधरपानि। ठग—बचक। रोना शुरू किया—गोदिवमार्गधकाम्। उतारे—उदभुम्भन्तु। धुव गया—ध्रविजन्तु। शगरती के साथ—वञ्चकन सह। (घ) कहने है—अयते। हेगन थ—धिनानुजा। बालन्तु—शीश।—मुकुर। (ङ) गदन के बालों पर—मटाधाम्।

में नृक पर बहुत प्रसन्न है। और तेरे उस उपकार का बदला चुकाना चाहता है कुछ माँग। चूहा कत गया और माँचने लगा कि मैं तेरा से किस बात में काम है और भी तेरा कृतज्ञ। तबने कहा अपनी लठकी की भारी मुभले का दो। और ने ज्योंही बीसन से भरत अपनी लठकी चुनवाई चूहा उसके पैर के नीचे आकर मर गया। सारा मंह बड़ी बात हानिकारक है।

(१०)

(क) किसी नदी में मिट्टी और पीतल के दो बरतन गिर रहे थे। मिट्टी का बरतन छोटे और पीतल का बड़े थे। मिट्टी का बरतन बहने लगा। पीतल के बरतन ने उसे धीरे धीरे कहा—बहना छोड़ मत। मैं तुम्हें बचा लूँगा। मिट्टी के बरतन ने कहा—बाईं दूर में बीसों कही तुम्हारी हमारी टक्का हो गई तो मैं दूर जाऊँगा, ठीक है। बरतान् और बरतन की लड़ाई में बरतन का ही हानि पहुँचती है।

(ख) एक गहरिये ने अपनी बेटी को शादी के लिए एक कुम्हार पास रखा था। वह उसे कभीही हलका खादि चम्पे खादी बीजे खिलाया करता था। कुम्हार भी गरीबी की अनुपस्थिति के एक न एक भेद की बात ही करता था। जब गरीबी को उसका भेद साक्ष्य हुआ तो वह लज्जित होकर उसे घर ले गया। कुम्हार ने कहा—मैंने तो आपकी बीटी को ही भेद लायी है। ना भेदिया प्रतिदिन कई भेद का खाता है आप उसे क्यों नहीं खाते? गहरिये ने उत्तर दिया कि तुम बरा नमक खाकर नमकहारी की है इसलिए मुँह का स्वाद

(ग) किसी नदी के किनारे पर एक बेहिया और एक भेद का बच्चा पानी भी रहे थे। बेहिया उगर की और और भेद का बच्चा नीचे की घोर था। बेहिया ने भेद के बच्चे से कहा—घो बचकू! पानी क्यों झूठा कर रहा है। रोसता नहीं मैं पानी पी रहा हूँ। भेद के बच्चे ने जवाब दिया—भगवान्! मैं आप से नीचे की घोर हूँ, पानी तो ऊपर से नीचे मेरी ओर आ रहा है फिर

(१) (५) उपकार का बदला—प्रत्युपकार। चुनवाई—आहता (१०)

(क) मिट्टी का—मृत्तिकावा, बरतन—पात्रम्। बहना—व्याकुलमभवन् टक्का—घाघात। दूर जाऊँगा—नष्ट भविष्यादि। (ख) गहरिया—मयपाल कबीरी हनुया—माधवर्षा नयिका च। नमकहारी—प्रभुविहेय। लज्जित—शर्मित। (ग) भेद का बच्चा—मेषजलक। नीचे की ओर—अधोभागे झूठा—उच्छिष्टम्।

सूठा कैसे हो सकता है ? भेदिये ने कहा—ठीक है पिछले साल तुने मुक गाली दी थी भेद के बच्चे ने जवाब दिया— महाराज ! मैं सिर्फ़ दो महीने का हूँ, पिछले साल तो मैं पैदा भी नहीं हुआ था । भेदिये ने कहा— तो फिर तेरा बाप रहा होमा । भेद के बच्चे ने कहा— 'मेरा बाप तो एक वर्ष पूर्व ही मर चुका है । भेदिये ने यह कह कर कि तो वह तूने ज्ञाति का घोर काँट रखा होगा भेद के बच्चे को एकट कर मार मारा दण्ड अपनी दुष्टता के लिए कोई न-कोई बताना बना ही लेता है ।

(४) मछाट विक्रमादित्य का स्वभाव था कि वह बेल बटव पर मकेला शक्ति के समय नगर में घूमा करता था एक दिन की घटना है कि नगर के शहर उसे चार घोर दिखाई दिये । मछाट ने उनमें पूछा— तुम क्यों हो ? उन्होंने कहा हम बोर हैं । मछाट ने कहा— 'मैं तो तुम्हारा साथी हूँ अपना घबरा तुम अपना-अपना कोसल करो । यह सुनकर वह चार में कहा मैं जाम बरों की भाषा ठोक-ठोक जानता हूँ तुमरा बाला मैं भूय बर बाप का स्थान पता कर लेता हूँ । गोसले ने कहा— मैं नानी के बिना ही बाधा खोल लेता हूँ । बीषा कहने लगा— मैं खोले में भी मनुष्य को मर बाप बेल लूँ तो तुम्हारा पक्षपात सकता है । फिर इन चारों ने मछाट से पूछा— भाई तुम में क्या कोसल है ? तुम भी तो बराबरी मछाट ने उत्तर दिया— मुझ में यह कोसल है कि यदि बोर को फाँसी मिलती हो तो मेरे लिए हिन्ना रंग भर से उसकी जान बच सकती है । बोर पर बाप सुनकर हर्षित हुए और नहने लगे कि यह किस बात का दण्ड है कन्ना भाव मछाट के हो महल में खोरी करें ।

(११)

महाकवि कालिदास मग्न कवियों में श्रेष्ठ थे इसमें कुछ भी विवाद नहीं इनके काव्य में माधुर्य-आभा-शक्ति सब सुख है जो कि अश्वमेध काव्या में होते चाहिये इसलिए इनके काव्यों का सम्य समान में बहुत आनन्द है । यह महाकवि कब हुए, यह मतिदग्ध है । कोई कहते हैं कि ८वीं ईस्वी में हुए हैं, दूसरे कहते हैं कि ५वीं ईस्वी में गोमर कहते हैं कि यह विक्रमादित्य की मभा

(१०) (ग) पिछले साल—अतवर्ष । बानी—गाली । बहाना—कारणम् (घ) सुनकर—छात्वा । फाँसी मिलती हो—मृत्युदण्ड दर्शित (११), कवियों में श्रेष्ठ—कविषु कवीनां वा श्रेष्ठः ।



के नौ ग्लो में से एक य ठीक मत गती है कि यह ईसा से ५७ वर्ष पूर्व हुआ है।

यह कवीन्द्र साहस्य था, इसमें सबका सम्मति है किन्तु यह कहाँ के था यह प्रश्न विवाद-बस्त है कोई इन्हें काश्मीर के निवासी समझते हैं, कोई पञ्जाब का और कोई इन्हें मानस देश का बनाते हैं इन महाकवि के विषय में पञ्जाबराजन जनश्रुति यह है कि वे निराश्रय भट्ट थे किन्तु युवा और रूपवान् वे सागपड़ा एक राजा की कन्या विछोसना के साथ इनका विवाह हुआ और एकान्त में वास्तव्यास ले जब उसे मानस हुआ कि यह मूर्ख है तो घर से इन्हें बाहर निकाल दिया। उस समयान से दूधित होकर यह विद्या सीखने में वनचिन्तन हो तब और मन्त्रवर्णी की धाराबना करके बहुत सीधे महाकवि बने। जब विछोसना के पास पर शांति तो विवाह इन्हें पावे। और त रहने लगे—  
'धर्मभुक्तकाष्ठ द्वार वेहि राज्यकथा न पनि की धाराब पहचान कर कला—  
'धर्मि कविचउगिबोध'। फिर साहित्याय में सम्पूर्ण सम्पादन में उसे प्रसन्न किया, उसमें 'धर्मि कविचउ बाक' उसके कहे नीची पदों में त एक एक पद को एक एक महाकाव्य के चारण में रचकर तीन महाकाव्य रहे। उनमें—  
'धर्मभुक्तकाष्ठ द्वारि वेचनारण से 'कुमारमन्त्र' महाकाव्य, 'कविचउकालार-  
विरहमुद्रण' में वेचनून 'रघुवकाव्य' सागपड़ीव लपुकी से 'रघुवंश महाकाव्य' रहा। इन्होंने धर्मिजनशाकुन्तल मन्त्रविकार्यमिध विजयोक्षणीय युतबोध, अनुसन्धार मन्त्रोदय भुगार-निमक और मन्त्रविकार्यमिध धर्मि धर्म्य धर्म्य भी बनाये हैं कहते हैं कि राजनकाव्य भी इन्हीं की रचना है। इस महाकवि ने विरमान तक कुमार-मुक्त भी मोका और महाशरीर से हमेशा जीवित है।

यस्य मुरत के रनिक कवि नित्य मुक्ति धम माहि ।

जिनके यश के काव से बरामरणा धम माहि ।

(१२)

क) कुतलीम ऐसे भी हैं जो मुरत के न रहने पर भी मुरगवान् बन्ना चाहते

ईसा के ५७ वर्ष पूर्व हुए—ईसात सन्तपञ्चागद वर्षासि पूर्वस्त्र मयूव ।  
निराश्रय भट्ट थे मूर्ख धाकीतः निकाल दिया—वहिरकार्योत् धावाब पह  
चान कर स्वयं परिधीय । मय के मरीर से—मय धरीरेण

है । मैंने कोई पुस्तक कविता करना न जानता हूँ पर वह भयना दंग ऐसा बनारस गये जिसमें नांग समझ कि यह कविता करना जानता है तो वह कविता का छायाचित्र रखने वाला मनुष्य मूख है और फिर वह भयना बेश का निर्बाह पुत्री सीति से न कर सकने पर दूख मरता है । अन्त में बंद झल जाने पर वह लोगों की आँखों में झूठा और नाचा मिला जाता है । किन्तु जो मनुष्य सत्य बोलता है वह आदम्बर से दूर भावता है और उसे दिखावा नहीं लगता । उस ती इसी ने कहा तभीय और धानन्द मिलता है कि सत्यता के साथ वह धामन कलंक्य धामन कर रहा है ।

(क) एक दिन विद्यासागर किती भिन्न के साथ सबक पर दखन गये थे । इसने मे सामने से एक गेता हुआ बाइबल का निकला विद्यासागर ने उससे रोम का कारण पूछा किन्तु बाइबल ने उनके साथ की देखकर अपने रोम का कारण बताया अथ समझा उनके पुन आग्रह करने पर बाइबल ने कहा — महाशय मैंने एक मतावन मे अपने उधार लेकर कन्या का विवाह किया था पर ठीक समय पर ही उसके लपट न दे सका अब उसने मुझ पर २४०० रुपये की माँग की है जिसकी परको गारोब है यह सुनकर विद्यासागर ने बाइबल ने उसके घर का पता पूछ लिया और उसे दिखा दिया । तीसरे विद्यासागर ने जाँच की तो बाइबल की बात सही निकली । अब उन्होंने दो हजार बार सी रुपये बाइबल के नाम में प्रदानत में जमा कर दिये बाइबल ने कबहूरी में आकर सूना कि किसी ने तारे रुपये जमा कर दिये हैं इस पद्धति कीवक को देखकर उसका बिभर्जना गदगद हुआ होगा इसे बाइबल ने जानता था कि उसने उसे महापुरुष का नाम जानना चाहा जिसने रुपये जमा किये थे किन्तु कुछ पता न लगा । अन्त में वह दान बाइबल कृतज्ञ हृदय से ग गद कण्ठ हीकर अपने गुप्तदानों का प्रसन्न प्रतीतिदा देता हुआ घर लौटा निदान विद्यासागर की दया की सीमा नहीं थी । जिम घाम में वे या पहुँचते थे वहीं के नाम उनके दर्शन को प्राप्त और भीह लग जाती

(१२) (क) मेद झल जाने पर बंदोद्घाटन दिवाली— अथर्वशी पालन कर रहा है पालन नशानि (१३) २४०० की — कनू उताधिकारहय-उत्पत्ति । तालिम - अभियोध । परमा— पात्र १५ता— स्थानपरिधय मोह नाम जानी जनमम्मर्दोपवन । प्रदानन में - न्यायालये ।

## परीक्षा-प्रश्नपत्र

ग्र० पी० हाईस्कूल परीक्षा

(१९५०)

संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

- (क) विद्या की सोमा वन से होती है ।
- (ख) विद्वान् होकर भी जो व्याघारवान् नहीं है उसकी विद्या व्यर्थ है ।
- (ग) उस विद्या का कुछ मूल्य नहीं जो व्याघारण में नहीं आता ।
- (घ) केवल विद्या से तो उसका ज्ञान बढ़ता है
- (ङ) ज्ञान की महत्ता तो व्याघारण में ही होती है ।
- (च) इसीलिए हम लोग महात्मा की पूजा करते हैं ।
- (छ) विद्या की महत्ता से ही मनुष्य महात्मा होता है ।
- (ज) व्याघारण के बिना ज्ञान भी व्यर्थ होता है
- (झ) व्याघारहीन को तो बंद भी पवित्र नहीं करते हैं ।
- (ञ) इसीलिए जीवन में व्याघारण का महत्त्व है ।

(१९५८)

- (क) राज के छात्र कठिन परिश्रम करना नहीं चाहते हैं
- (ख) इसमें केवल छात्रों की ही नहीं सम्पूर्ण देश की हानि है
- (ग) यह सरोवर जल से पूर्य है ।
- (घ) इसी के जल से हम अपने घेत भी सींचते हैं ।
- (ङ) राजा को पिता की तरह प्रजा का पालन करना चाहिए
- (च) तपस्विनी का काम क्षमा से ही सिद्ध होता है ।
- (छ) क्रोध से चिरकाल मरित नप का उत्पन्न नाश होता है
- (ज) अतः क्रोध ही हमारा प्रधान वैरी है ।
- (झ) सुख चाहने वाले को विद्या छोड़ देनी है ।
- (ञ) सत्य से ही धर्म की रक्षा होती है ।

(१६५३)

- (क) जब मृत्यु निश्चित है तब तुम राघवपुत्रि से क्यों बागते हो ?  
 (ख) पाण्डवों ने इस्तिनापुर छोड़ कर वन के लिए प्रस्थान किया ।  
 ग वन में जाते हुए राघ ने भरद्वाज मुनि को प्रणाम किया  
 घ वन सदा सत्य वासिता है और कदाचित् किसी को कष्ट नहीं देता ।  
 ङ मे कष्ट का नाश करने के लिए पृथ्वी पर आया है  
 (ज) योग्य पुरुष का सदा आदर होता है भले ही वह निधन हो ।  
 (झ) तिमके घर में मैं रहूँगा या वह अनुपम वस्तु धार्मिक या  
 (ञ) नीच पुरुष से ओ उत्तम बिछा बेनी चाहिए ।  
 (भा) गुरुजनों की आज्ञा का पालन करना छात्र का प्रधान धर्म है ।  
 (भ) अपने धर्म की रक्षा करके अनुपम सहाय गुरु प्राप्त करता है ।

(१६६०)

- (१) पाटलिपुत्र नगर में एक ब्राह्मण रहता था, उसकी स्त्री बकंगा थी ।  
 (२) अधिक मात्रा में धन पाकर संगमरमल मूत्र में रहने लगा ।  
 ३ जो सांग घनी है उसका धर्म है कि व शृंगों का उपकार करें ।  
 (४) छोटा शालक कठानी मुने के लिए माता के पास गया ।  
 ५ शास्त्र सबकी धर्म है, जो शास्त्र नहीं जानता वन धर्म है  
 (६) सेवा का गर्जन मुनकर बङ्गल में और गारुड है  
 (७) मन्त्रे विद्याधी आराति के समय एक दूसरे की सहायता करते हैं ।  
 (८) मेरी माइ प्रीति में दद है इससे धान में परकसाता नहीं आऊँगा ।  
 (९) मैं कभी भी दुष्टों के साथ भगद करनी नहीं चाहता ।  
 (१०) यदि आप मुझसे नाराज न हों तो मैं उसे कन साऊँगा  
 (११) परीक्षा का समय पास आ गया है इससे मुझे पढ़ने में बहुत धन  
 करना चाहिए ।  
 (१२) नीनों शक्तियों कला गदा ही राज्य का धारण कर सकता है ।  
 (१३) महाराज राम ने निर्दोष सीता को अपवाद के मंत्र से छोड़ दिया

(१६६०) (१) धन पाकर - वन प्राप्य । रहने लगा - निवस्तुमारभत ।

(२) उपकार कर - उपकुर्वन्तु । (४) मुने के लिए आतुम् । (७) एक दूसरे की - परस्परम् ।

- (१४) सब बोलने वालों की सहा जीत होनी है और झूठ बोलने वालों की हार ।  
 (१५) जब हाथी नज़ाने के लिए शमाव में घूसा तब मगर ने उसका पैर पकड़ लिया ।

(१६६१)

- १) ईश्वर मुक्त अच्छी बुद्धि से और तपस्या प्रमत्त रहे ।  
 २) मज्जन सांगों की रक्षा और दुःखों के नाश के लिए ही मैं जन्म लेता हूँ ।

- (३) हे कुमार ! पाप विलस शीघ्र का उद्धार करने वाले हैं  
 (४) समझाने मनस्य की धर्मता पशु ही अच्छा है ।  
 (५) मायव दश में पञ्चाश्व नाम का एक शान्तर आ  
 (६) माता की प्रणाम करके राम के साथ लक्ष्मण वन को गये ।  
 ७) परिधम के बिना समुद्र्य पवित्र नहीं हो सकता ।  
 ८) वह सदा सत्य बोलता है स्वप्न में भी झूठ नहीं बोलता  
 ९) मैं ज्ञान प्राप्त करने गया अबड़े गुरु सीखने के लिए पाठशाळा जाता हूँ ।

- १०) मगर और त्रिग बोकों, परन्तु परिधम सत्य बात न कहें ।  
 ११) एक समय यहीं की जूत में सब शान्तर और कुर्ण लगे गये ।  
 १२) ईश्वर की मन्त्रि करने से वाणी पुरुष भी समझ सके जाता है  
 १३) एक हाथी पानी पीने के लिए सम्राट से घृणा  
 १४) भारीच का भाग्य रामचन्द्रजी शास्त्र में जोर आये ।  
 (१५) सीता का गंगा स्नान बान्धीक पुनः उनके पास गये ।

(१६६२)

- (१) मगर हिमालय से निकल कर समुद्र में मिलती है,  
 (२) परिधम के बिना विद्या नहीं मिल सकती और बिना विद्या के सुख नहीं मिल सकता ।  
 ३) स्नान के पूर्व भोजन नही करना चाहिए और भोजन करने के बाद स्नान नहीं करना चाहिए ।

(१६६१, १) दं—दद्यात्, कर—कुर्यात् । (२) जन्म लेता हूँ

- (४) संस्कृत के जिनमें पढ़ाकाय है उनमें वात्सिल्य का रचयिता सचरां भन्ना है।
- (५) साहू बनो हो या निम्न हों सबके लिए यह आशय है कि यदि धर्म से निपुण न हो।
- ६ प्रायः भारत के प्राचीन तीर्थ स्थान नदियों के किनारे पर यसे हुए थे।
- (७) मुक्तियों की सेवा करो और मनुष्यों के प्रति प्रेम करो।
- (८) सभी विद्यार्थी अपने मुक्तियों के स्नेह का पालन करें। जो मन लगा कर विद्याभ्यास करता है।

मुक्तिमान् और विद्वान् एतन् ही अपने मुक्तियों का पालन करने के लिये हैं।

- ८ नदियों की प्रशंसा से लोग प्रसन्न होते हैं जो मनुष्यों हैं।
- (९) इस विद्यालय में यदि भी छात्र पढ़ते हैं तो उनके छात्रावास में एक ही कक्षों रहते हैं।

#### अन्तर्देश

जब मैं लगभग पाँच वर्ष का था तब एक दिन कहानी गयी थी।

(१९६३)

- (१) संसार के सभी पहाड़ों में हिमालय बड़ा है।

#### अन्तर्देश

हमारे देश में जितनी नदियाँ हैं, उनमें सेना सबसे प्रसिद्ध और पवित्र पानी जाती है।

- (२) मुक्त की छात्रा का पालन, परस्पर सद्भाव और गवार्द—य तीन अन्तर्देश विद्यार्थी के गुरु हैं।

#### अन्तर्देश

मेरे छोटे भाई और बड़े भाई, दोनों ही मुझसे बहुत स्नेह करते हैं।



- (३) स्वतन्त्रता-दिवस के दिन राष्ट्र-ध्वज के भागों और लोग खड़े होते हैं और राष्ट्रगीत गाते हैं ।

### घबरा

बहु मुझसे पाठ्योपयोगी पुस्तक माँगता है किन्तु मैं उसे देना नहीं चाहता ।

- (१) राजकुल सरनाम है आकाश में बादल सरज रहे हैं और बिजलियाँ चमक रही हैं ।  
 (२) घाज रविवार है, घाज से पोष-छः दिन बाद मैं बनारस जाऊँगा ।  
 (३) घरे विद्यालय के पास एक फुलवाड़ी है जिसमें फूल लाटने के लिए मैं प्रतिदिन प्रातःकाल जाया करता हूँ ।  
 (४) मेरा एक सहपाठी है जो गणित में बड़ा तेज है और मैं उसी से शिष्ट पढ़ता हूँ ।  
 (५) जब मैं घास के पेड़ के नीचे बैठता था तब एक पका घास में मगधों के लिए पड़ा ।  
 (६) परिधम के बिना बिद्या नहीं मिल सकती और बिद्या के बिना मुक्त नहीं मिल सकता ।  
 (७) घरे लठ्ठपाठी ने मुझसे कहा—बिना प्रश्न को समझे उत्तर न देना ।

### एडमिशन परीक्षा (बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी)

(१९५६)

संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

- (a) No pains, no gains.  
 कष्ट के बिना धन की प्राप्ति नहीं होती ।  
 (b) Fortune favours the brave  
 भाग्य सरहस का पक्षपाती है ।  
 (c) Truth is seldom pleasant  
 हितकर बात प्रिय नहीं होती ।

- (d) Might is right.  
जिसकी लाठी उसकी भैंस ।
- (e) God should be worshipped till death.  
आमरण मगध-भजन करना चाहिए
- (f) It is fame that immortalizes a man.  
यशस्वी जीवन समर है ।
- (g) Do or die.  
करो या मरो ।
- (h) Misfortune never comes alone.  
विपत्ति कभी अकेली नहीं आती ।

(१९५७)

- (a) स्वामी सेवक पर क्रोध करता है ।  
The master is angry with his servant
- (b) बिच्छू गोबर से उत्पन्न होता है ।  
The scorpion is produced from cow-dung
- (c) कृष्ण माता से छिप रहा है ।  
Krishna hides himself from his mother
- (d) भुवि वन में रहता है ।  
The sage lives in the forest.
- (e) चूल्हा भर पानी में मछली फुटकती है ।  
A small fish makes a great stir in shallow water
- (f) पुण्यार्थ के बिना भाग्य सफल नहीं होता ।  
God helps those who help themselves.
- (g) मेम से काम बनता है ।  
Union is strength

(१९५८)

- (a) Jayanta is the son of Indrani, the wife of Indra.  
जयन्त इन्द्र की पत्नी इन्द्राणी का पुत्र है ।

- (b) The thirsty traveller drank the turbid water of the river.  
 प्यासे यात्री ने नदी के मँड़न पानी को पिया ।
- (c) Why do you punish the innocent men ?  
 तुम निर्दोष धार्मिकों का क्या सजा देने हो ?
- (d) The deer was killed by the hunter in the forest.  
 जंगल में शिकारी के द्वारा हिरन मारा गया ।
- (e) Many trees have no fruits and flowers.  
 बहुत से वृक्षों में फल और फूल नहीं होते ।
- (f) The eyes of the women became red with weeping.  
 स्त्रियों की आँखें रोते-रोते लाल हो गयीं ।
- (g) The bird flew up from the branches of the tree.  
 पेंट की शाखा से चिरिया उड़ गयी ।
- (h) I shall show the great market.  
 मैं तुमको बड़ा बाजार दिखवाऊँगा ।
- (i) Now permit me to go away.  
 अब मुझको जाने की आज्ञा दीजिए ।
- (j) Poor people will eat even the leaves of the trees in time of famine.  
 निर्धन लोग अकाल के समय पेड़ों की पत्तियाँ भी खा जायेंगे ।

(१८६०)

- (a) The boy carries two books in two hands.  
 लड़का दो हाथों में दो पुस्तकें ले जाता है ।
- (b) Water is drawn up from wells by women.  
 स्त्रियों के द्वारा कुओं में पानी भरा जाता है ।
- (c) Rama killed many demons in the Dandaka forest.  
 राम ने दण्डक वन में बहुत से गलियों को मारा ।
- (d) The husband of my brother's daughter is a rich man.  
 मेरे भाई की पुत्री का पति एक धनी मनुष्य है ।

- c. If he gets twenty-nine rupees he will be satisfied  
यदि उसे उन्नीस रुपये मिल जायें तो वह संतुष्ट हो जायगा
- (f) Should I go to market and bring vegetables for you ?  
क्या मैं बाजार जाऊँ और आपके लिए तरकारी ले आऊँ ?
- g. Hear my advice and then you will succeed in your work.  
मेरी सलाह सुनाओ, तब तुम अपने काम में सफल होगे
- (h) The twenty-fifth boy of the tenth class should get a prize  
दसवी कक्षा के दसवीसवें लड़के को इनाम मिलना चाहिए ।
- (i) The parrot sat on the branches of the trees of their master's garden.  
लाले अण्डे बरगो के बग के पेड़ों की शाखा पर बैठे ।
- j. With whom have you come here from school ?  
तुम किसके साथ पाठशाला से यहाँ आये हो ?

### बाराहमेघसहितविश्वविद्यालय प्रथमपरोक्षायाम्

(१९५७)

१ -अधोलिखितवाक्यानां द्वितीयाकाशायाम् अनुवादः कार्यम् —

- क. अनुसूचितां मुक्तयः समुन्नतये च शानि कावर्णिता वाचस्पतिना ललितं तपुः संवतोऽधिकम् पावसक कार्यं स्वास्थ्यरक्षा अस्ति ।
- (ख) अस्माकं कुरातोषु इतिहासग्रन्थेषु च सत्यवादिनाम् अनेकविधानि चरितानि भिन्नानि शानि पठित्वा महती शिक्षा प्राप्ता भवति ।
- (ग) यस्य यत्कर्म शान्तिं पुनरिच्छति तस्मै यथावत् पावनमपि ईश्वरस्य आराधनायां प्रसन्नतायाश्च परमं साधनमस्ति ।
- (घ) रामो माद्रीं राक्षसं हत्वा स्वाधनं प्रति निवृत्तः स दूरादेव प्रायान् लक्ष्मणं निरीक्ष्य चिन्तां प्राप्तवान् ।

- (३) बंगाला उत्तरे सीरे कपिलवस्तु नाम बहनीयम् एकं नगरमासीत् तत्र सुमुदेन नयेन बहुकालपर्यन्तं राज्यं कृतवान् ।  
 (च) वाराणसी नगरी वज्राया पवित्र तटे विराजमाना अस्ति । अत्र बंगाला स्नानाय श्रीविद्वन्नाथस्य दम्ननाथ च सदैव भिन्न-भिन्न-प्रदेशेभ्यः जना आगच्छन्ति ।  
 (छ) यदा पिशाचिना परीक्षा भवति तदा एव तेषां बुद्धेः प्रतिभायां स्मरणशक्तिं परिधमस्य विद्याबुरागस्य तथा मेखतशक्तेरपि सम्पत् परिजालं भवति ।

२—अधोर्लक्षितानां वाक्यानां तत्कृतवाक्यानुवादं कियताम् -

- (क) मैं भटके दीहते हुए घर वा रहे हूँ ।  
 (ख) तुम लोग योजन करके वहाँ कुछ सामान ले ?  
 (ग) सीता सीर लक्ष्मण के साथ राम वन को गये  
 (घ) श्रीरामचन्द्र ने शंकर की पूजा करके शंका में प्रवेश किया  
 इ प्राचीन काल में सब लोग तत्कृत रहते थे ।  
 (च) आज हम लोग सायंकाल भ्रमंजन में भाग्यशु मुमेंगे

(१६५८)

हिन्दीभाषानुवादः कस्यः :-

- (क) यथा अधविजम्भानवनिर्गतं मुचरुं न कोऽपि परित्यजति तथैव स्वस्मात् सीतादपि विद्यां अवश्यं शङ्क्या ।  
 (ख) ऐतिहासिकग्रन्थानां पठनेन कस्यचिद् ज्ञानं भवति यत् सन्ततिप्रभाषात् कोऽपि निन्दितावस्थां ययि जना महापुरुषाणां पदं प्राप्नु ।  
 (ग) प्राचीनकाले लोकाः सहस्रं पुत्रसंख्यां बभूवु येषामुपाख्यातं श्रुत्वा पठित्वा च महादेशयं नापते । यथा एकलव्यं गुरो मृत्तिकाययी मृत्तिकायं निक्षेप्य शम्भुनाचने महती कुमलनां प्राप  
 (घ) विद्यावृद्धिमेव महास्वयंयपि परमं श्रेष्ठं जनयति, यस्य समीपे इदं धनं नास्ति न सर्वधनसम्पन्नोऽपि सुखं भवितुं नाहति ।

(१६५९) १—(३) महनीयम् प्रतिष्ठा-स्वान . २ —(क) दीहते हुए - जावत . (घ) प्रवेश किया - प्राविश . (च) मुतने - ओष्याम .

- (क) चरित्रनिर्माणो संसर्गस्यापि महान् प्रभावो भवति, संसर्गानि सज्जनानाम् अपि बालका दुर्जेना भवन्ति दुर्जनानाम् सज्जनानाम् अपि बालका दुर्जेना भवन्ति दुर्जनानाम् सज्जनानाम्
- (ख) समाजस्य संख्या लौकिक पारलौकिक च क्षेत्रे मानवाः लब्धवन्तः को न जानाति यद् विनीत कोसलया पृथरस्तु मेमे ।
- (ग) भारतीयप्रशासनस्य अदिकम्बल तथा प्रगत्यर्थं यथा देशस्य प्रत्येक नागरिकः सम्पूर्णतः स्यात्, संस्कृतम् राष्ट्रभाषापर्यन्तं लभेत्

संस्कृतभाषया बहुधा हि विविताम् —

- (क) यज्ञवल्क्य प्रतिदिनं क्षपणे मित्रां के साथ स्नान करने जाता है ।
- (ख) मुम दोनो पदकर मेरे घर आये ।
- (ग) आज प्रातः काल हम सोन बहाई आये ।
- (घ) श्रीरामचन्द्र ने गंगाजी को बार बार बिभीषण को रक्षा की ।
- क परशुराम ने जयकपुर में लक्ष्मण ने कठोर वचन कहा ।
- ख) मे लक्ष्मण दिसोय का चरित्र सुनते हैं ।
- (ग) वृषा से श्रीराम कामल पत्ने निम्ने हैं ।

(१९५९)

१ निम्नलिखितवाक्यानां हिन्दीभाषायां अनुवाद काहें -

- (क) पुरा भारते कनकपुरं नाम नगरमासीत् तत्र भृशालको नाम राजा बभूव । स विद्यावान् सुलभः भक्तिमान्वासीत् । राज्ञो दृष्टे तस्य मन्त्रिणी प्रीतिः, तस्य सज्जनः नाम मित्रमाभवत् । साध्वी स सज्जनः किन्तु कथंस्तु दुर्जनः ।
- (ख) एकदा कश्चिन्निवृत्ते घटन् एकः सिंहः जान्ते भृशालनिघ्नो गतः भस्मिन्तदसरे कश्चिद् बृद्धो भूषिकम्पायुक्ते वतिस्वा तस्य निद्रामङ्गलं पकारः । अतः स सिंहः क्रोधेन तं भूषिकं ध्यापादयितुमैच्छत् यथा कुनो भूषिकः प्रारब्धस्यार्थं तं बहुधा याचितवान् । मिहेनापि यथा प्रदर्शिता तस्मिन् भूषिके ।
- (ग) एवं निश्चित्य राजापि सदवसादाय तदनुसरणकमेव नगराद् बहिर्निजगाम । यत्वा च तेन कापि स्वती रमणी दृष्टा पृष्टा च । का

१ (ख) व्यापादयितुम् — मारने के लिए ।



त्वम् ? किमर्थं रोदिषि ? स्त्रियोक्तम्—अहं राज्ञः शत्रुनाम्य राज्ञः  
लक्ष्मीं कारतुष्यशादिरानीमन्वन ममिष्यामि

२—अथोत्तिष्ठतहिन्दोकाक्षयानां सत्कृतधोषया अनुवाद क्रियताम्

पूरे जन्म का तप बिद्या है विद्वान् की पूजा भव जगह  
होती है, अपने कालक तदा सत्सङ्ग में रहते हैं—मोहन कले  
पिता के साथ काशी जायेगा। राजा दशरथ के चार पुत्र थे।  
मोहन मदा साथ-साथ नाम का दूध पीता है। हर मुझको पत्र  
देता है। पत्र में वक्तियाँ सीधे जाती हैं।

(१६६०)

३—अथोत्तिष्ठतहिन्दोकाक्षयानां सत्कृतधोषया अनुवाद कायं

(क), परमारधनं विचारकचित्तमिति केवल मानशायक इत्या तयैव विचार-  
शक्तिशाली वन्द्या कठिनात्कठिनतामपि कार्यं कुर्वन् स्वस्य स्वदे-  
नाम्य व कीति ततोति नम च नभति। तयता नावत बुद्धिमधावेगोव  
अनुजोष्य ध्यामि चलायामेव पत्नी इव उडडीयते स्वराकेटाभ्यमपि  
अनुजोष्य प्रपयति। अहो, अद्य मानवमस्मिन्कमपि विज्ञानमप्य ज्ञानम्  
अत सर्वविज्ञानयुगमिह कथ्यते।

(ख) संस्कृतभाषा देवभाषा प्रायः सर्वेषां वाग्मीयभाषाणां जननी,  
प्रादेशिकभाषाणां प्रालम्बता इति। तथा प्राचीनं अन्तेन जीवति  
परन्तु हाम् विना धर्ममपि जीवन् गच्छति न ज्ञायति तथैव अरब  
होशम्य कापि भाषा संस्कृतभाषावाम्ब विना जीवितुमशक्नोति  
निःसंशयम्। अस्मादेव अस्माकं चम अस्माकमितिहास अस्माकं  
भूतं प्रविध्यन्म सर्वे मुपनिहितमस्ति।

(ग) कञ्चनचित्ति शान्ति वस्तुमत्तां व्यतीतानि यदा नीतमकुलोत्पन्न  
सिद्धात्मे इमां चारतनुवन् अमन्वकार स्वयन्मत्ता। प्राचीनस्था  
उत्तरे तीरे कचिनवस्तुनाम महतीयं नगरमेकमासीत्। शाक्यवंशो-  
त्पन्नं बुद्धोपनस्तत्र गन्धर्वकरात्। तस्य आमादेवो नाम तनी भार्या-  
ज्जकत्। तस्मात्स्य सिद्धार्थो नाम नूनुर्जन्म लेभे। अ सर्वदादेव भूवृत्तो  
मिमेकी चानूत।

२. पूजा तप जगह होती है—सर्वत्र पूज्यते। सीधे जाती है—अवतरति।

२—निम्नलिखितवाक्योंको संस्कृतभाषया अनुवादो विधाय -

बालको शत-काम हो गया, उठा घोर मङ्गलान्त को जगो  
भयसे बालक प्रातः उठकर नित्य मङ्गलान्त करत है

मङ्गलान्त से बुद्धि निधन घोर म्हास्य उत्तम बनता है ।

मङ्गल का उद्गम भी भारत के हिमालय प्रदेश में ही है

पार्थिव भाषों की उत्पत्ति इसी देश में हुई थी ।

कृत्तव्य में भववान् कृष्ण ने कर्मों की धामन्य का उपदेश दिया था

पवि में छूट बोर्ग तो माप मुझे दण्ड व ।

काशी विद्या की मृत्ति है ।

मैं विद्या पहले को कामो जाऊँगा

हानी अनुप्य पाव मे सदा करते है (विम्वति) ।

(१३५२)

अधोलिखितवाक्यों हिन्दीभाषाअनुवाद कार्य- —

- (क) प्रस्ताव्य भारतदेश बहुप्राचीन सन्निपादो विद्यालयस्य सन्ति  
प्रारंभ बहु ज्ञानस्य मारायलस्य विशिष्य धरमागदस्य भवन्ति  
समारम्भ सन्निपादो हिमालयोप्रीय सन्त्य निरर्थक हेममुकुट इव  
विशालते । इत एव मङ्गल-मनुष्याः बहु शो मयो वदन्ति । प्रारंभ  
काशी-प्रकोप्या-मदुरा-मवाद्यान्ता प्राचीनत सन्त्यपुर्वं सन्ति ।
- (ख) पुरेकया महर्षे करतन्तोः भिष्य कोत्तु मनुदेशविद्या सन्निपादस्य  
मनुष्ये दक्षिणो वातुकामः रथो लसीपामयको । रथु मनुष्यभाषा-  
प्रतिधि कोत्तु विमोक्ष्य कथाविषयाकाविचिन्त्यमपूजयन् कृशाल  
प्रजानन्तर कोत्तुः कुत्सा लह कृतां लवी वातौ तस्य विप्रापितवान् ।
- (ग) सद्य नोवनामये पाषाण बहुस्यजनानि पचन्ति । कुल्यामन्ति मय्यक्त  
न ज्वलन्ति । धूमोप्रीय मन्द मन्त्रं बहि निमरन्ति । हवास्यां मनु-  
मोदकाः पौनिकारण सन्ति । कटाहे तप्तं कृत बनते जलपात्रेषु जलं  
न द्रवते । पीठेषु मनुष्या नोचविहन्ति सन्ति । मिली नानदन्तो न  
नन्ति किन्तु काष्ठाकार सन्ति । तस्योस्ति प्रविषास विद्यते ।
- (घ) ये जना विश्वकारविषयकारान्ति, कुत्राभुक्तनियेक विज्ञास्य मयेष्ट  
व्यवहरन्ति, ते सम्प्रमयां कुतपि समावरं न लभन्ते, अतदिनं

नियमपूर्वकमीमव्यवस्थानेन मनःशान्तिः, चित्तकायता धर्मबुद्धिः,  
आध्यात्मिकवृत्तिवृद्धिः इन्द्रियव्यवस्थेत्यादयो बहवो लाभो  
यमस्ति । अत एव तज्जनो सदा प्रातस्तथाप हृदोदयर स्मरन्ति  
ततोऽन्यकार्येषु वृत्तानां यमस्ति ।

निम्नलिखित हिन्दीभाषाजालाला संस्कृतभाषाजालालादो विषयः -

यज्ञदत्त प्रतिदिन अपने लालकों के साथ बज्जाम्नाम करने जाता है  
यह प्रश्न साथ है कि बिना बज्जाम्नाम से स्वास्थ्य-लाभ होता है ,  
एकपटी की सोया देवकर रामचन्द्र बहुत प्रसन्न हुए  
स्वास्थ्य भारत में संस्कृत-अक्षर के लिए हम प्रयत्न करना चाहिए  
छात्र सायकाल हम दोनों विद्यालय से रास्ते में पड़ते हुए घर आयेगे ।  
यदि हम पढ़ेंगे तो परीक्षा में अवश्य सफल हो पायेंगे  
तुम सब सोचन करके सोचो यही बापों और अपने पाठ पाठ करो ।

## भारत-संस्कृतविश्वविद्यालय

### पूर्वव्यवहारोपायम्

(१९५७)

सर्वसंस्कृतभाषाजालालाजालाला संस्कृतो हिन्दीविषयम्—

१—यदि कुछ है ही नहीं ऐसा मानने वालों की संख्या जगज्जाल की कृपा से  
भारत में अभी नगण्य ही है, परन्तु धार्मिक शिक्षा की दृष्टि यह संबंध  
उत्वासीन है । यदि ऐसा न होता तो यह धार्मिक शिक्षा की, जिसका  
धर्म से कोई नाता ही नहीं है, एक दिन भी सहम न करती । साधारण  
जनता की तो बात ही क्या, बड़े-बड़े पण्डितों को, जो धर्म के संरक्षक  
माने जाते हैं अपने बच्चों को धर्महीन शिक्षा देने की ही चिन्ता  
रहती है ।

निम्नलिखित संस्कृतसदस्यों हिन्दीभाषाजालाला—

२—सांगिता ज्ञाया, स्मयते भक्तिता सम्भ्रान्ति, भ्रुकुन्ता प्रसूनकमिका चकम्पिरे  
ललिका, प्रससार मातरिस्वा, चुक्रुचिहंममकुलानि नेत्रे मेदिनी, लिप्सु-  
देका समुत्पन्न प्रसन्नवदना परिचारिका, सन्दुप्रमनसो द्विजा, प्रमुदितं  
प्रापकवृन्दम्, स्मयमानमालोक्य विदशानं जालमेनं स्मेरानना जननी,  
उत्कुललोचनी जनकः ।

३ - एष भवमान् मलिराकाशमण्डलस्य चक्रवर्ती क्षेत्रचक्रस्य, कुण्डलमा-  
स्रवतलदिशः दीपको ब्रह्माण्डमाण्डलस्य प्रेक्षन् पुण्डरीकपटलस्य शोक-  
विमोक्तं काकलाङ्कस्य, धमनमौरो रोनस्वकदम्बस्य मूषघार संधंधवता  
रत्न इत्येव दिनस्य । धवमेव यद्वाचनं जनयति धवमेव वन्तर द्वादशसु  
भागेषु विभजति, धवमेव काशस्य पञ्चाभ्युत्थताम् एष एवाङ्गीकरोति  
उत्तर दर्शितुं प्रायतम्, एतेनैव तस्यादिनः युगमेदाः ।

४ - लघुविश्वोऽस्यायु शेषतया समुत्पन्ननिर्निमित्तः । शिक्षितरवार्तसम्पादित-  
शरीर कथञ्चिदप्युत्थाय समुत्पन्नमुपपदे तत्र मन्त्रकनमहर्षानि खान  
मृताधारिण मलयन् कतिपयैर्हार्मिहर्षवृषभ दृष्ट पीनं कुकुशाख्यवर्षादक  
संकृतं प्रत्यहं कम्पोकशिशुरारिण भृङ्गाभ्या विद्यायम् गजंमानं प्राप्ते

(१६५८)

क रत्नसंस्कृतभाषयाऽनुचिताम् अपोऽङ्गुली हिन्दीनिबन्ध —

भाषक का मत कच्चे घड़े के समान होता है । कुम्हार छपते चाक के  
सहारे कच्ची घिट्टी को मनोवाञ्छित रूप देता है । इसी प्रकार शिक्षक शिक्षा  
के द्वारा भाषक के अविषय का निर्माण करता है । भाषक के मत में यह भाषना  
भर देने की चार्ज है कि मैं सहान् है । घड़े अचानक प्राण होने पर छपनी तकिलियों  
का पूरा-पूरा विकास कर सकता है ।

निम्नलिखितः संस्कृतनवर्णो हिन्दीभाषयाऽनुचिताम् —

(क, कि कल गिलाया, किमथ येष मन्नेहमुपदीयते पुरा भाग्यीया-  
नामस्मत्प्रवृत्ताया यात्री, शिराभीत किमप्युत्तमि तावन्तो दृष्टि  
रस्ति ? पुरा मृदलायज्ञताऽङ्कुरे भारते मुक्तकहिता शिक्षा विनीयते  
स्य पुरा या प्रणाली प्राप्ते शिक्षाया सा तिराहिता दीभाया-  
वम्पाकम् । इदानीं बहव ता प्रणाली प्रवर्तयितुं वदन्तिरा  
विलोकयन्ते ।

(ख, यावदेव ब्रह्मचारी वदन्तिपुत्रमुद्भूय कुमुदकोर्यान्वचिन्तेति  
तावत् मनोवर्षोऽपरस्तत्समानधवा कस्तुरिकारेणुक्षित इव ध्याय-  
कन्द्यवर्षिणभासः कपू रागुस्त्रोदीच्छुगितवाहदृष्टः भृग्वधपत्न-  
मस्तिदृष्टानिव निद्रामन्वराणि कोरकनिकरम्बकान्तिभानमुत्तानि

मिनिन्वृत्तानि भट्टिनि सप्तपमृत्त्व निवारणम् गोचरदृष्टेः समवायेत—  
 यत्नं यो यत्नम्, परैश्च पूर्वमवचितानि कृमुमानि त्वं तु विर राजा-  
 यजामहीति सिद्धं तन्वापिन ।

- ४ (क) यो यत्नक शृणोषि मन्द दुरान्महान्तम् ? सोऽप्येव स्वामिन्,  
 शृणोषि । तव किम् ? पिङ्गलक आह—यत्र, यत्नमस्मात् यत्नात्  
 गन्तुमिच्छामि दमनक आह—कस्यात् ? पिङ्गलक आह—  
 एतोऽष्टास्वद्वये किमप्यपूर्वं मत्क प्रविष्टं यथायं मन्त्राच्छब्दं ब्रूयते,  
 तस्य च मन्दस्यानुकूपेण सन्धेन माध्यम् सन्धानुद्वेगं च पराक्रमेण  
 माध्यम् इति ।

(१६६२)

**प्रद्योतिजितस्य संस्कृतसम्पत्तयः हिन्दोऽवस्थाधनुषादः कार्यं —**

पूरा मध्ये प्रजाप्रतिनिविधुता परोपकारधारायुता स्वायंमत्पक्ष्म्या  
 राजाणां एव निवर्तननिर्वाहक आयम् । राजानस्तु तानेव विषयान् स्वयं  
 परिपालयन् प्रजान् प्रचारयन्ति स्म । प्रचारनिरिच्छो ह्यहाराणां भविष्यदे  
 न्येयुःपक्ष्म पक्षिमयस्यपरामर्शमन्त्रेण किमपि राज्यकार्यमनुष्ठान् नाथा-  
 म्नुबन्तं राजानं बोद्धवन्तेषु विमोक्षते यः शोभान् प्रशोकयद्वा राजा निमित्तं  
 स्वीयराज्यं बोद्धसंचाप दानुर्भक्षतः किन्तु तदीयो मन्त्री राजाद्युज्ज्वलमेव-  
 कल्पामयपेधम् । प्रवर्तितविषयप्रवृत्त्यानां बहुन् येनप्रभृतीन् शक्तिगर्हितोऽपि  
 राजा भारतीय साधारणमिहामनां पानितवन्त्य एव ।

**प्रधत्ततो हिन्दीविश्वः संस्कृतमाधवात्पुस्तकम्—**

आर्यों ने हमें एक कदम यह कर के पश्चिम में अपनी इस सर्वोत्कृष्ट संस्कृति  
 की रक्षा की है । इसके पुरस्चित रहने से ही न केवल भारत का बरन् विह्व-  
 भन का शत्रु नक कम्पारा हो सका प्रोच भविष्य में भी होना रहेगा । इसी  
 आर्यसंस्कृति के कारण समस्त विश्व में भारत विषयान् ही भका चल  
 भारतीय शासन-सूत्र के मशौ संकानको का यह कर्तव्य है कि वे हमकी विशेष  
 सावधानता से रक्षा कर विदित शासनकाल से इस पर विदेशी संस्कृति की  
 बोझी बहन धूल पड़ गयी है । इस भारतीयों का कलव्य है कि इस अधिलक्ष  
 भाङ्-प्राप्त कर लाभ कर दे, जिससे इस दिव्य संस्कृति के प्रकाश से अन्धित  
 विश्व पुनः उज्ज्वल हो उठे ।





हैं दिवंगत हो गये कन्हो के भाप से राजा दशरथ की मृत्यु भी पत्र-वियोग से हुई ।

**हिन्दीभाषयाऽनुवाकः विवेकः —**

(क) चिरप्रतीक्षितं बाराधनं बभूव कुतः विद्विषानयविधेयवत् उत्तरप्रदेशीय-विधानमण्डलेन परितम् । महामान्येन राज्यपालेन स्वीकृत्याधि-नियमपदवीपारोपितं च । तदनु भाषितं संस्कृतविश्वविद्यालयस्थ कायप्रणाली निषाङ्गितं विशेषाधिकारिणां नियुक्तिरपि कृता प्रशा-सनेन इत्थं संस्कृतविश्वविद्यालयप्रतिष्ठापूर्वाङ्गं सम्पन्नम् ।

(ख) कन्वो महाराज य एव प्रास्तानध्यक्षबलवन् कश्चनया ध्यातव्यमानं कृष्णं चिन्तयति । एवमेव धर्मो राजा यः स्वोपायां प्रतिपालनं सम्माननं तदा कुशलचिन्तनं च भूया हि रोष रोद यक्षो धृती मालं विमुञ्चति केशभूमिबिलुप्यनेनैव रोषो रोदयसी पश्यी तात तामेति कश्चरबभूव क्वं यत पटालमाकर्षणं पृथुकाश्च कृणवत् सिन्धाय स्वार्थिकाय सारपितुं स्वदेहमपयति । शङ्करजतास्वीकारं हि राजां मयमो धर्मः ।

(१९६०)

**१ - अधोलिखितः संस्कृतश्लोको हिन्दीभाषयामुच्यताम्—**

संस्कृतशिक्षणाय प्रथमा भाषा सर्वोदय एव यस्यां शिक्षादिनां प्राधान्याऽभावात् एव जनमे । संस्कृतशिक्षाक्षेपं जनमानस्य शिक्षादिनामभावरूपं यदा कारणावन्निवृत्ते तदाऽस्याभिरंश एव निष्कष्य प्राप्यते यः संप्रति शिक्षायाः उद्देश्यमेव लक्ष्येन स्वीकृतं यत् विश्वविद्यालयमार्गमाध्यापनात्मिकदृष्टेः प्रतापजनस्य सामर्थ्यं प्राप्येत । तस्यै संस्कृतशिक्षणस्य इतरशिक्षाभिरि-दानोपनायासेन स्वल्पायासेन वा भवितुं शक्नोति ।

**२ - अधोलिखितहिन्दीश्लोकाः स्वतंत्ररूपेणानुच्यताम्—**

इस नाटक ने जिस सादश का झुके पर प्रभाव डाला वह यही आदेश था कि लक्ष्य का अनुसरण करना। और कठोर परीक्षाओं में होकर तिकायता जिसमें ये हरिश्चन्द्र निकले । मैं हरिश्चन्द्र की कहानी में पूर्ण-तया विश्वास करता था । सब मेरा सामान्य बुद्धि कहती है कि हरिश्चन्द्र ऐतिहासिक व्यक्ति नहीं हो सकते । फिर भी दोनों हरिश्चन्द्र और अवरा

मेरा लिए जीवित सत्य है और मुझे पूर्ण निश्चय है कि यदि मैं उन मादकों को आज फिर से पट्टे को पुनः की भांति हो प्रसारित हो जाऊँगा।

**अधोनिमित्तसंस्कृतगद्यांशो हिन्दीभाषायानुवृत्ताम्-**

मन्त्रात्मनस्तपस्यया परमात्मनोऽनुग्रहेण च यय स्वराज्यमवाप्नुम । परं स्वराज्यव्यपटितमनु सोहाय्यनोन्मत्तेन केनापि युवकेन स महात्मा दिव प्रापित स्नेहपूरां दीप उपलभाम । येन महापुरुषेण राजनीती मत्प्राप्तमयो सफल प्रयोग कृत मनवशीलनस्य सर्वेषु विषयेषु अथतपूर्वा कालाधर्य सम्प्राप्तता स महात्मानस्य इदानीं लोकद्वन्द्वं विराजते । यदि मामया तत्प्रदर्शितमयेनैव कार्यं करिष्यन्ति तदैव विश्वस्य कल्याणं चाविष्यति ।

**अधोनिमित्तहिन्दीगद्यांश स्वतन्त्रपुनर्वाचनात्-**

महर्षि दयानन्द राजू के उद्धारकों में पहली थे । तब और बहादुरों की मूर्ति थे । इन्हीं गुरुओं के प्रभाव से वे अपने कर्तव्य-पाठन में निर्भीक रहते थे । इन महर्षि ने धर्मकाय से उपेक्षित लोगों का प्रचार किया । इन्होंने साम्प्रदायिक प्रकाश नामक लोकप्रसिद्ध ग्रन्थ की रचना साम्प्रदायिक में की और उस भाषा को राजभाषा पद पर चारोंपित करने का प्रयत्न किया । महर्षि ने देवधारणी का भी महान् प्रचार किया । निचोरी उचित जातियों तथा शीशों के उद्धार के लिए भी यत्न किया । पहले-पहल इसी महापुरुष ने हम लोगों के हृदय में स्वराज्य की भावना भी जागरित की

## पटना की मेंट्रिकपुलेशन परीक्षा

1937 (Compulsory)

**संस्कृत में अनुवाद कीलिए—**

- राजा इन्द्रायुध अपने हाथों पर बड़ा और कई एक देशों में भ्रमण करता हुआ अन्त में अवन्ताध नाम पट्टेका ।
- राज्य में बहुत दिन पूर्व जगन्नाथ नाम का राजा रहता था और एक समय कृष्ण के साथ भीष्मसेन वहाँ आये और उसको मार दिया ।
- उसके दूसरे दिन मरु अपने मित्रों के साथ शोवाग्रम में गये और वहाँ शोवागरी नदी के किनारे घाट में बैठ गये
- जो घम के अनुकूल काम करने और दूसरों की मलाई करने में लगे रहते हैं केवल वे ही ईश्वर के रूपपात्र होते हैं

- (५) उसकी सेना के शत्रु द्वारा पूरी तरह हराव जाने पर कुछ सिपाही गहाड़ों पर चढ़ गये कुछ समुद्रों में उतर गये और दूसरे एकान्त कन्दराओं में बस गये ।

1937 (Additional)

- (१) सब प्रकारों को सबर दो कि सब चन्द्रगुप्त अपने ही राज्यकार्यों को देखेंगे ।  
 (२) अपने पाँचास की छात्रा माना विद्वानों का छात्र करी तुमरो की निन्दा का एक शब्द भी मत बोलो और अपनी अवस्था में सन्तुष्ट रहो ।  
 (३) व्याघ्र को अपनी छात्रा घाले देखकर सब जानवर डर कर भिन्न भिन्न दिशाओं में भाग गये ।  
 (४) मुझ छात्रा है कि आपकी इस छात्रा का स्मरण होगा जिसके बार्द में एक यहीना गले छात्रा से मिले कहा था ।  
 (५) पुरातन समय में धर्म का एक मुनि था जिसने अपने धर्म-चरित्र के लिए देशों के देश में भ्रमण की पदवी प्राप्त की

1938 (Compulsory)

- (१) धर्म से सम्बन्ध और नुं दीनों काज हाने हैं । इसका जैसा व्यवहार करोगे, वैसा ही फल मिलेगा ।  
 (२) तुमको उसमें पुन्य होना चाहिए । इसके लिए पक्षी भण्डाई करो ।  
 (३) अपने धर्म धर्म रामकन्द की छात्रा में लक्ष्मण ने भीता की हल में ले जाकर भकेनी छोड़ दिया ।  
 (४) जब कोई मुन्दाई बन पर या बाघ की उसका छात्रा करो, उसे बीछने के लिए सासन और रंग घोंघे के लिए बन हो  
 (५) धर्म की खीचकर मुझ पान का इसका कोई उपाय नहीं है । इसीलिए कुछ लोग धर्म के हेतु प्राण तक दे देते हैं ।

१९३७ C (५) हराव जाने पर—समाजितायां भनि ।

१९३७ A (३) भाग गये—पनायिका

१९३८ C (१) इसका जैसा व्यवहार करोगे वैसा ही फल पाओगे—धनेन

यथा आवर्तित्यथ नर्षव फलं प्राप्स्यथ (३) धकेसी—सकाकितीम् ।

१९३८ C (X) प्राण तक दे देते हैं—अमृतानुसृजन्ति ।

1938 (Additional)

- (१) मन में अत्यन्त उद्विग्न होकर दुषा सन्यासी नदी के किनारे उड़ाने के सिद्ध निकला ।
- (२) रात बहुत बंधरी थी मधुमन्त्रिणा ही मूँज रही थीं सब विषाग्न कर रहे थे ।
- (३) जहाँ हो, युवा सन्यासी को विषाग्न न था : उसने ध्यानसिक्क धारित ली थी ।
- (४) राजा अपनी प्रजापति को पालता है : यदि कोई कुमाण पर जाय तो राजा को चाहिए कि उसे दण्ड दे ।
- (५) यदि बदमाशों को दण्ड नहीं दिया जायगा तो सम्पूर्ण समाज विभ्रुकल हो जायगा ।

1947 (Annual)

- (१) अनुपम किसी के साथ भ्रमण न करे ।
- (२) भ्रमण लोभ सब का उपदेश देते हैं ।
- (३) कवि सज्जनों की प्रशंसा करता है ।
- (४) बालिका वृक्ष को देखकर बैठ गयी ।
- (५) मैंने यति दुषल बालक को देखा ।
- (६) मैंने गोरोहन काम में कुपल को देखा ।

1947 (Supplementary)

- (a) विष्णु ने श्रीरसमुद्र को पया ।
- (b) ईश्वर की कृपा का फल सबत्र देखा जाता है ।
- (c) हरिण वन में पानी पीने की उच्छा करता है ।
- (d) लक्ष्मी शत्रु से एक ही साथ जीत ली ।
- (e) गुरु छात्रों को पढ़ाते हैं ।
- (f) तुम कहाँ रहते हो, यह मैं जानना चाहता हूँ ।

१९३८ A (५) बदमाशों को—धूर्तान् । १९४७ A (२) धर्म का उपदेश देते हैं—धर्म उपदिशन्ति । (४) बैठ गयी—उपाविशत् ।

1948 (Annual)

- (a) पिता की आज्ञा से रामचन्द्र वन में गये ।
- (b) कृपया मुझे कम दीजिए ।
- (c) परमपिता परमेश्वर सबस है ।
- (d) श्याम पुत्र के लिए पुष्पक लाता है ।
- (e) तुम्हारा भाई कहीं पड़ता है ?
- (f) कम काशी जाओगे ?

1948 (Supplementary)

- (a) कृपया साथ चलिए ।
- (b) तुम्हारा घर कहाँ है ?
- (c) पिता आज जायेंगे ।
- (d) कवियों में कालिदास श्रेष्ठ थे ।
- (e) रामचन्द्र ने रावण को मारा ।
- (f) मैं स्वयं कार्य करूँगा ।

### पंजाब मेट्रिक्यूलेशन परीक्षा (१९५५)

नीचे दिये गये सवालों का संस्कृत में अनुवाद करो—

(१) किसी नगर में मिथशर्मा नाम का एक बाढ़ारण रहता था। एक बार किसी राजमान ने उसे एक पशु दिया। वह वह उसे कबे पर लिये जा रहा था तो मार्ग में उस नील कुंभ मिले। वे उस पशु को लेना चाहते थे उनमें से एक ने उनके सामने होकर कहा - 'घरे रे, वह कुंभ। कान्हे पर क्यों उठाये लिये जा रहे हो ?' उसने क्रोध से कहा - 'क्या तुम जानते हो जो पशु को कुंभ उठाते हो ?' तब दूसरे ने साफर कहा - 'घरे भाई, बाहे यह कुंभ। तुम्हें बहुत प्यारा है, फिर भी यह कुंभ पर चढ़ाने योग्य तो नहीं है।'

(२) किसी नगर में हस्तिन नाम का एक बाढ़ारण रहता था। एक दिन वह गर्मी में हस्तिन कुंभ अपने खेत में एक बृक्ष की छाया में सो गया। तभीप ही एक साँप को डेनकर वह सोचने लगा 'खेत का यह देवता कभी

(१) उस एक पशु दिया—तुम्हें खानेकेमददान कबे पर लिये जा रहा था। स्कन्धे कृत्वा गच्छन् आसीत् ।

नहीं पूजा गया : इसी लिए घेरा सेती-बाड़ी का काम निष्फल रहा है। तो घाज में इसकी पूजा करता हूँ। ऐसा होकर वह दूध खाया और वहाँ रख कर चला गया। दूसरे दिन प्रातःकाल धाकर उसने दूध के वर्तन में एक मोहर (दीनार, बेन्नी)। फिर तीसरे वह प्रतिदिन उसी प्रकार दूध देकर मोहर प्राप्त करने लगा।

(१८५१)

संस्कृत में अनुवाद करो -

(क), (१) मैं पानी पीना चाहता हूँ।

(२) मुझे पके आम अच्छे लगते हैं।

(३) आज शाम को हमारे घर योजन कीजिए।

(४) अनुपम-जीवन का उद्देश्य केवल सब जमाना नहीं है।

(५) मैं यहाँ देर तक बड़ा रहा।

(६) आप प्रयाग के सब धारों ?

(७) इस क्षेत्र का मासिक कौन है ?

(८) विद्वान् स्वभाव से बचानु होते हैं।

(९) भारत सब देशों का शिरोमणि है।

(१०) संस्कृत पढ़कर अनुपम भयना करिष्ये कुछ कर सकता है।

(११) देशों का सा ऊँचा व्यक्ति बन सकता है।

(१२) इसीलिए संस्कृत को देशों की भाषा कहा जाता है।

(ख) हमारी सब पुरानी बात है। अयोध्या में महागात्र नगर राज्य

क्रोध से कहा : सकीधमवदत्। क्रोधे पर चढ़ने को—स्वयमेन मोक्षम्।

(२) गर्मी से दुःखित—धर्मपीडित : तो गया—अस्वपत्। सेती का काम निष्फल रहा—कृषिकर्म निष्फलमकायत् रत्न कर—निषाद्य वर्तन में एक मोहर बेन्नी—पाने दीनारमेकमपश्यत्।

१८५६ (क) २—यद्यपि पञ्चानि आस्राणि रोचन्ते। ३—यद्यपि मय शूरे भुञ्जीत भवान्। ४—अनुपमजीवनोद्देशम्।

५—भारतं सर्वेषु देशेषु श्रेष्ठम्। ६—संस्कृतमधीत्य मानवः स्वचरितं पालयितुं शक्नोति। ७—भारतं संस्कृतं देववाणीति कथ्यते।

१८५६ (ख) सहस्र वर्ष पुरानी सहस्रवर्षीया पुनःपुनः गाथा। राज्य करते थे—शाशास।



करते थे। उनके चार पुत्र थे राम भरत लक्ष्मण और शत्रुघ्न राम की माता कोमल्या की। भरत की माता को कौकयी कहते थे लक्ष्मण और शत्रुघ्न की माता का नाम सुमित्रा था राजा दशरथ जब बूढ़े हो गये थे। उन्होंने राम का राज-तिलक करने का निश्चय किया इस शुभ मयाचार से सब लोग घमन्न थे, किन्तु दशरथ की छोटी रानी कौकयी का यह बात नहीं आयी। उसने महल में दीपक तक न जलाया। वह चाहती थी कि उसका पुत्र भरत राजा बने।

(१६५७)

संस्कृत में अनुवाद करो—

- (क, (१) गंगा त्रिमास्य से निकलती है।  
 (२) काशी यहाँ से बौ कोस है।  
 (३) देर हो चिले हो।  
 (४) भीरु पुत्रय रघुव के माते को नहीं छोड़ते।  
 (५) कट भक्तता नहीं यह राज्य से अस्मि भी नहीं जना मयती।  
 (६) दूध का जला दाँध कक एक का पीना है।  
 (७) इसी हवा चल रही है।  
 (८) आगे संस्कृति की इसी उदानी वालों को धिक्कार है।  
 (९) अनुपम बने का राम है। एक किसी का राम नहीं।  
 (१०) संस्कृत भाषा और साहित्य का पढ़ना अनुपम के लिए कल्याण-कारी है।

उन्होंने राम का राजतिलक—त राममभिषेक्तु निश्चिकारः। न चायी—  
 नारोचत उमने भङ्गल में—ता प्रामादे दीपमात्रमपि न प्राज्वलयत्। उसकी  
 हज्जा थी—ता ऐच्छत्।

१६५७ (क) (२) इत काशी कोषी अस्ति। (३) चिराद् दृष्टोऽस्ति।

(४) त्याध्वान् पश्य प्रविचलन्ति पद न बीरा। (५) नेव क्षियते शस्त्रै न चापि दह्यतेऽग्निना। (६) पयसा श्वः तक्षमपि फल्लस्य धिचति। (७) चिक्र आयसंस्कृतिमुपहसन्ताम्। (११) परान् अर्हिषावभश् उपविशन्ता स्वयं क्रूरव्यव-  
 हारेण्यपि न संकुञ्चन्ति। (१२) कुर्वति हि श्रेष्ठो गुणः।

(११) दूसरों को अहिंसा की शिक्षा देने वाले स्वयं कूर व्यवहार से नहीं क्रिपकते ।

(१२) मुक्त आत्मा ही सत्य व ज्ञानमय है ।

(क) मैं उस उपकुल का वर्णन करने लगा हूँ जिसमें जन्म लेने वाले सारा जीवन विविधता से बिताते थे । वे श्राव्य किये हुए कार्य को समाप्त किये बिना नहीं सोचते थे । उनका राज्य समुद्र के किनारे तक फैला हुआ था । वे विधिवत्क पत्र करते थे । वे अपराधियों को उचित दण्ड देते थे । वे दान के लिए धन इकट्ठा करते थे । वे सत्य-वादी थे । वे केवल यश के लिए विजय प्राप्त करते थे । अक्षय में ही विद्या पढ़कर शीघ्र जीवन में मुक्त योग्यता वृद्धावस्था में लपेटन को चले जाते थे ।

(ग) महापुरुषों में अस्मात्स्व नाम का एक था । किसी समय उसमें एक कीड़ा और एक हिरण रहा करते थे । दोनों एक मित्र थे । हिरण स्वेच्छा से मग के विशिष्ट भक्षण करता था । एक दिन वह भूमि रहा था कि एक गीबद ने उसको देखा : वह हिरण के पास जाकर बोला—'मित्र, क्या कुशल से तो है ?' हिरण ने धावपथ से पूछा—'तुम कौन हो ? मैं तुम्हें नहीं पहचानता' । गीबद ने उत्तर

१६५५ (क) दान करने लगा हूँ—आर्गवामि । जिसमें जन्म लेने वाले—अस्मिन् जाता । वे श्राव्य किये हुए—ले श्राव्य कर्म आत्मोद्योग आत्मजन्म उसका राज्य—आत्ममुक्तिनीशानाम् । वे विधिवत्क यथाविधिहोमानीनाम् । वे अपराधियों की अध्यापनघटनानाम् । दान के लिए धन—दानाय समृद्धिनाम् । वे केवल यश के लिए—अस्ते विजयीप्राप्ताम् । अक्षय में ही विद्या पढ़कर—श्रीशवेत्स्यस्तविद्यानां जीवन विषयविद्याम् । आधक मुनिवृत्तीनाम् (रघुवधे) ।

१६५७ (ग) रहा करते थे—अवसत्ताम् । हिरण के पास जाकर बोला—'मृगमुपेत्य प्रोवाच । क्या कुशल से तो है—अपि कुशल की कबान् ? मैं तुम्हें नहीं पहचानता—नाहं त्वां परिचिनोमि । उत्तर दिया—'अत्यवदत्तु काई साथी नहीं—न कोऽपि सहचरः ।

विद्या—“धोमन्, मैं बुद्धिमान नाम का गोदह हूँ।” इस विद्याल बन में मेरा कोई साथी नहीं।”

(१६५८)

संस्कृत में अनुवाद करो—

(क) (१) विद्यालान्नर अपनी बेलों में सब विद्याधियों से अधिक बुद्धिमान है।

(२) चाप गीघ्र श्राप्ये, धन्वे कामों में डेर करना उचित नहीं।

(३) विद्याल को अपनी विद्या का यह प्रकार कभी नहीं करना चाहिये

(४) राजा के घाने पर सब नगर-निवासी सच के दोनों धोर लगे हों लगे।

(५, मैं कल ही बनारस से आया हूँ।

(ख) गौतमी नाम की एक बूढ़ी विधवा स्त्री पुत्र के साथ बन की गयी। वहाँ पर शान्ति प्राप्त कर कन्द-मूल आदि का भोजन करती हुई तप करने लगी। एक दिन वह पुत्र को आश्रम में छोड़कर किसी काम के लिए बाहर गयी। तब अचानक किसी काले साँप ने आकर उसके पुत्र की काट लिधा और वह डर गया। वह स्त्री काँसे समाप्त कर तब अपने आश्रम को आयी तो उसने अपने पुत्र को मरा हुआ देखा उसे पुत्र प्यारा था। तो भी तपस्विनी ने शोक को ज्ञान

१६५८= (क) (१) अधिक बुद्धिमान—बुद्धिमत्तय। (२) विद्या स्वविद्या-विमान कदापि न कलेषः। (३) धानते नृपं सर्वे धीराः राजबान्मुभयतः स्थिता आसन्। (४) गह इ एव वाराहस्याः प्रावतीऽस्मि।

१६५८ (ख) गौतमी नाम की—नाम्ना गौतमी। कन्द-मूल आदि का कन्दमूलादिकं मुञ्जाना

१६५८ (क) तप करने लगी—तपःप्रवृत्ता बभूव। तब अचानक किसी काले साँप तदा अकस्मादेन एकेन कुम्भप्रसर्पेण प्रागत्य तस्याः पुत्रं दष्ट, उसे पुत्र प्यारा था—सा पुत्रे स्निह्यति स्म। तपस्विनी ने शोक को ज्ञान और तप—सा तपस्विनी निजलोके जानेन धीरेण आनन्दस्य सामान्यजन इव भीत्काराशब्दं नाकरोत्। पुत्र को गोद में बैठकर—अङ्गाधिरोपितसुता किञ्चिद्विन्तव्यमाप्त।

घोर घोर्य के बल से दबाए रखा घोर साधारण मनुष्य की तरह चिल्ला कर विलाप न किया। माता के ग्रंथ से शिखी हुई वह पुनः की मोद में उठाकर कुछ सोचती रही।

(१९५६)

संस्कृत में अनुवाद करो

- (क) (१) माता-पिता की सेवा करो, कर्म पाधोगे।  
 (२) गुजरी बाल का शोक नहीं करना चाहिए।  
 (३) जो काम किया, उसके कारण वह मरने है।  
 (४) राम के मन जाने पर सोता घोर लज्जता घी उनके साथ गये।  
 (५) धिक्कार है उन दुष्टों का जो मनुष्यों में धिक्कार लगाने वेश को हानि पहुँचाते हैं।
- (ख) शोपदेव बचान में बहुत मन्दबुद्धि था। बार-बार के धम्यात से भी घबरा पाठ स्मरण नहीं कर सकता था। उसने बड़े परिश्रम से व्याकरण के अनेक उन्म पड़े पम्पु जब ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ तब पाठशाला स्थान पर एक सरोवर के तट पर जा बैठा और विचार में पान हो गया। कुछ काम के पीछे उसने एक सुबती ली देखा जिसने बड़ा जल से भर कर एक पत्थर पर रखा और स्नान करने लगी। स्नान के बाद वह घर चली। प्रतिदिन बड़े की राइ से वह पम्पु में एक मल हो गया था। उसे देख कर शोपदेव के हृदय

१९५६ (क) (१) पित्रो मेकम्पम् कलं प्राप्स्यसि। (२) गतं न शोकनीयम्। (३) स यत्कर्मकरोत् तेन मोक्षिष्यत। (४) धिक् तान् दुष्टान् ये मनुषिं सह मितित्वा देशान् दुहन्ति अपराध्यन्ति वा।

१९५६ (ख) बार-बार के धम्यात से भी घबरा पाठ स्मरण नहीं कर सकता था। उसने बड़े परिश्रम से व्याकरण के अनेक उन्म पड़े पम्पु जब ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ तब पाठशाला स्थान पर एक सरोवर के तट पर जा बैठा—सरोवरस्य तटं गत्वा उपा-

विशत्। जिसने बड़ा जल से भर कर—वा घटं जलेनापूर्य एकस्मिन् प्रस्तरे प्यथापयत् स्वयं च स्नानमाचरितुं प्रवृत्ता। प्रतिदिन बड़े की राइ से प्रतिदिन घटस्य घटलोत् तस्मिन् पाकामौ एकं सिद्धमवायत्। प्रत्यय भिन्नतर परिश्रम करने से—प्रत्ययं सततप्रयत्ने मे बुद्धिरपि नीक्षणा मविध्यति

में एक मान उदित हुआ और वह प्रसन्नचित्त होकर गुरु के निकट गया और बोला—गुरु जी, यदि वड़े की रम्य से पत्थर में जी बतें हो गया है तो प्रत्यक्ष निरन्तर परिश्रम करने से बेरी बुद्धि की तीक्ष्ण हो जायगी ।

(१६६०)

उत्तर में अनुवाद करो—

- (क) (१) गुणों की छात्रा विचार करने योग्य नहीं होती ।  
 (२) मिट्ट का वर्जन न कर सभी जीव-वस्तु ६१ बने ।  
 (३) पराधीनता के जीवन से तो मृत्यु बली है ।  
 (४) मुपुन किसी छपने वस को कर्मकित नहीं करता ।  
 (५) गुणों के जाने पर सभी छात्र उठ बड़े हुए ।

(ख) श्रीकृष्ण और मुद्राका संभव काम के सिद्ध थे । वे दोनों बचपन से गुरु संवीपनि के घर में रहते थे । दोनों साथ ही गुरु की सेवा करते थे साथ ही विद्या पढ़ते थे । एक बार बुध-पत्नी के कहने पर वे दोनों लकड़ियाँ लाने के लिए वन में गये । वन में लकड़ियाँ काटते हुए उन दोनों को भूख धुल हो गया । साकाश बादलों से एक गया । वर्षा और से होने लगी । दोनों महगठी बचप के जानवरों के दर में एक पेड़ पर बँधकर बैठ गये । महमा रँबरे से श्रीकृष्ण के कानों

१६६० (क) छात्रा गुणानां विचारणीयाः । ३ - वरं मृत्यु न पुन पर-  
 तन्वं जीवितम् । ४—कर्मकितं नहो करता—न कर्मकवति । ५ - आगते गुणी  
 सर्वेऽपि छात्रा उपलिप्तम् ।

१६६० (ख) शौचकाम के सिद्ध थे - शान्तादेव मुद्राकास्ताम् । संवी-  
 पनि गुरु के संवीपनिगुरोः । दोनों साथ ही गुरु की सेवा करते थे—उसी  
 समयैव गुरुम् समवेताम् । बुध-पत्नी के कहने से अनुसार - मुद्रास्तां चादे-  
 शोन । लकड़ियाँ काटते हुए उनके - दम्बनगिनि चिन्दनो तपोः । जंगल के  
 जानवरों के दर से—वन्धेभ्यः पशुभ्यः भवान् लम्बारुह उपविष्टो । श्रीकृष्ण  
 जी के कानों में—श्रीकृष्णस्तु कर्मसो किञ्चिद्वचनं मुद्रास्तुश्चर्यसा-  
 ध्वनिरपतत् । बीड़ा सा छात्र पदार्थ—किञ्चिद् भवत् महामपि दीयताम् ।  
 एकाकी कि प्रसन्नमन्ति भवान् ।

में मुदामा के कुछ खाने की जरूरत पड़ी। वे बोले—बाई, कीड़ा-सा स्वाद पदार्थ हमें भी दे दीजिए, अकेले ही क्या खाने बात हो ?

(१२६२)

संस्कृत में अनुवाद करो-

- (क) (१) काटे से कांटा निकाला जाता है।  
 (२) इस स्कूल की बसों खेती में पचास छात्र हैं।  
 (३) शरत् में घासें हटाने की रक्षा करनी चाहिए।  
 (४) किसी में द्वेष नहीं करना चाहिए।  
 (५) मैं और मेरी बहन चित्र-कला में बहुत कुशल हैं।  
 (६) मान-हीन मनुष्य का जीवन निष्फल है।  
 (७) भारत सब देशों का मिश्रण है।  
 (८) और मनुष्य स्वयं का साथ नहीं छोड़ते।  
 (९) क्या तुम इस काम को साथ हो कर सकते हो ?  
 (१०) मनुष्य-जीवन का उद्देश्य सभी को सुख पहुँचाना होना चाहिए न कि केवल धन कमाना।

(ख) बालक ध्रुव की इच्छा पूर्ण हुई। वह जानन्द से घर की ओर चल दिया। चलते चलते उसने भीखा कि मैं घर पहुँच कर अपनी माता से क्या कहूँगा। जो मैंने पाया है वह तो मैं नहीं बिना सकता। अब

१२६१ (क) १—कष्टकेनैव कष्टकम्। हमनी खेती में पचास छात्र हैं—दशम्यां श्रेण्यां पञ्चाशत् छात्राः। ५—यह सब बिकती व चित्रकलाया-मतीव कुशलौ म्बः। ७—भारतं सर्वेषु देशेषु मिश्रम्। ८—न्यायान् पय प्र-चलन्ति पदं न धीराः ९—कर सन्ते हो—कत्, प्रकरोमि ? १०—मनुष्य-जीवनस्य परं लक्ष्यं सर्वेषु सुखप्रदानं स्यात्, न तु धनसंग्रहः।

१२६१ (ख) इच्छा पूर्ण हुई। जानन्द से घर—माता-दत्त अपनी माता से क्या कहूँगा—स्वयमेव कि कश्चिच्छाति। जो कुछ मैंने



वह पूछेगी—बेटा, तुम क्या लायेजब मैं उसे क्या उत्तर दूँगा ।

इस विचार से दुःखी होकर उसने उसी क्षण एकाग्रचित्त होकर हरि का स्मरण किया । हरि प्रकट हुए ।

हरि ने पूछा—बेटा, धृष्ट धर्म क्या चाहते हो ? ध्रुव भीला—  
प्रभो मैं चाहता हूँ कि पाप मंत्री भाला को भी दण्ड दे । जब वह  
पूछेगी कि मैंने क्या पाया तो मैं उसे उत्तर नहीं दे सकूँगा ।

हरि मुस्कराये । उन्होंने कहा—“अच्छा तुम्हारी धर्म दण्डा भी  
पूरी हो ।” बालक प्रसन्न होकर घर को लौटा ।

(१६६२)

संस्कृत में अनुवाद करो—

- (क) (१) धर्म तुम कहाँ से नहीं लेना तो उसे भुँके दे दो ।  
(२) यदि तुम दरबार में नहीं जाओ तो बता उस किसने कहा है ?  
(३) पहाड़ों में हिमालय सबसे ऊँचा है ।  
(४) गुरु विद्यार्थियों को स्थावरता पढ़ाता है ।  
(५) राजा अपने देश में ही पूजा जाता है, किन्तु विद्वान् की पूजा  
सब जगह होती है ।  
(६) कौन तुम को पाला नहीं चाहता ?  
(७) धर्म नामे वृक्ष ही भुँकते हैं ।  
(८) मैं नहीं जानता कि धर्मकर्म क्या कहाँ है ।  
(९) विद्या से रहित मनुष्य पशु के समान है ।  
(१०) किसने कहा है कि वे दोनों धर्म धर्मों ?

(ग) किसी गाँव में जयदेव नाम का एक ब्राह्मण रहता था । उसने एक

पाया है—यत्किञ्चिन्मया कथं न तद् दञ्जितं यकरोमि । जब वह पूछेगी—  
यथा सा प्रक्यति किं स्वया लब्धं तदाह किं प्रतिमदिव्यानि ? हरि मुस्कराये —  
हरि स्मरते स्म । अस्मात् तेन उच्चा भी पूर्ण होती—अस्तु, तवेयमिच्छामि  
पूर्णा भविष्यति । आन. सानन्द एतं प्रत्ययच्छत ।

१६६२ (क) (१) नहीं लेना है न विकीतमानसि । (२) यदि स्व  
द्वारमपावृतं नाकरो, तर्हि कथं केनेदमपावृतम् । (३) स्वदेशे पूज्यते राजा  
निदान् सर्वत्र पूज्यते । (४) अस्त्वत्पत्नी कुशास्ति इति न जाने । (५) विद्या-  
विहीनः पशुः ।

बंदर पास रहा था जो अत्यन्त दुष्ट प्रकृति का था। एक बार वह उस बंदर को साथ लेकर किसी उद्देश्य से दूसरे गाँव का बना। रास्ते में एक तालाब की ओर कुछ समय विधाम करने के लिए रुक गया। अपने दही चावल के पात्र को एक वृक्ष के मूल में रख कर जब वह वापस बंदर के लिए तालाब के किनारे पहुँचा तो पीछे से उस दुष्ट बंदर ने तब दही-चावल का लिया। फिर वह बंदर अपने हाथ में लगे दही को पास लटकी किसी बकरी के मुँह में लगा कर दूर जाकर ऐसे बैठ गया जैसे कुछ जानता ही न हो। बाह्य ने सोच कर जब बकरी के मुँह में दही लगा देखा तो उसने उसे झूठ पोटा। दुष्ट व्यक्ति धराधर्म तो स्वयं करता है पर दण्ड दूसरों को दिलाता है।

### अनन्य की प्राज्ञ परीक्षा

(१६७५)

संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) किसी वन में यदोक्त नाम का सिंह रहता था। बीला कोयल और गीदड़ उसके नोकर थे। एक बार सिंह ने दधर-उदर घूमते हुए व्यापारी के साथ से बिजुरे हुए एक ऊँट को देखा। वह बोला 'आश्चर्य है यह एक शत्रुत प्राणी है। पला करने यह वन का है अथवा गाँव का है। यह मुनेकर कोयल बोला 'हे स्वामी यह ऊँट नाम का गाँव का प्राणि-विशेष घावके लक्ष्मि योग्य है घात इसे प्राणिये। सिंह बोला 'यै घर में घाव को नहीं भोजनगा उस प्रभय का दान देकर मेरे पास ले आओ जिससे इससे दधर घाने का कारण पूछे।'

(१०) ती घट (तावय) आगमिष्यतः इति केन वक्षितम् ?

१६६२ (ख) धर्मदत्त नाम का प्रयत्नसाम्रिधान। उस बंदर को साथ लेकर त वानर सह नीत्वा केनचिद् हेतुना। अपने दही-चावल के पात्र को स्वकीय दध्योदनपात्रम् एकम्भ्य वृक्षस्य मूलं निधाय। जब वह वापस लौटा। हाथ में लगे दही को पास लटकी किसी बकरी के मुँह में लगा कर—तस्मिन्तनं दधि शभीपस्थाया भज्याया मुञ्चं यालप्य। लोट कर—प्रत्यावृत्त्य दुष्ट व्यक्ति

(स), जेठ महीने करे पुणिमा की पतिवता स्त्रियाँ बट वृक्ष की पूजा और उपवास करती हैं। इस तिथि का प्राचीन काल में सत्यवान् की भार्या मावित्री ने जब द्वारा लिये जाते हुए अपने पति सत्यवान् को छुड़ाया था। तभी से इस व्रत का आरम्भ हुआ है। स्त्रियाँ यह मानती हैं कि इस व्रत के करने से उनके पति की आयु दीर्घ होती है। सब मोहानिन स्त्रियाँ इस व्रत को करती हैं।

(ग) (१) बोकी बने कपड़ों को बाही में गन्कर नदी पर ले जाया।

(२) वृक्षा पाहना है, स्पष्ट क्यों नहीं कहता ?

(३) बारह वर्षों में बारों वेद सः पात्रों सहित पड़े जाते हैं।

(४) बेलने के समय बेनता और पड़ने के समय पड़ना चाहिए।

(५) चण्डाचारी मंत्र-निसात से सदा बरे और पाप से बचे।

(६) यदि श्व परिधाय करते तो परीक्षा में अवश्य सफल हो जाते।

(७) प्राचीन काल में राजा लोग विद्वानों की सेवा करना अपना कर्त्तव्य समझते थे।

(द) संवत् २००३ में इस मकान में एक पुस्तक की स्त्रियाँ, तीन बालक और बार कन्याएँ रहती थीं।

(१९४९)

क, कुछ सोचकर वसिष्ठ ने विनीष से कहा कि यज्ञाग्न्यः । अन्नं चित्तां सोढो और एक काम करो। मेरे आश्रम में यह नाम है जिसका नाम मन्दिनी है और यह कामधनु है। अब तुम इसकी सेवा करो। यह तुम्हारे मनोगत को दूर करेगी। वहाँ यह जाने वाले की सेवा यह करे सेवा ही तुम भी करो।

राजा ने अपने बुद्ध की मान मान ली और उसकी सेवा बड़े

अपराध तो—अपराधन्तु स्वयं करोति पर तद्वन्देन पराम् शोचयति।

१९४८ (स) जुडामा था निर्मोचित। मुहानिन स्त्रियाँ—स्त्रियः सधवा।

(ग) १—बोकी—रजक। ४ भौवविलास से—सविलासजीवनात्।

८—संवत् २००३ में—शुक्लरहस्यहृदयसंस्मरे + १९४९ (क) बात मान ली - कथनं स्वीचकार। (स) बेटा। उठ बैठो—उत्तिष्ठ वत्स। आंक नहीं उठा सकता किमपि कर्तुमसमर्थ।

प्रेम और अज्ञान के साथ की, जिससे वह बहुत प्रसन्न हो गयी।

(५) नन्दिनी ने सीधे स्वर से कहा "बेटा ! उठ बैठो। यह सब बेसी ही भाषा की। श्रुति की तपस्या के बस से प्रसन्न भी मेरी ओर आस नहीं उठ सकते, साधारण पुरुषों की तो बात ही क्या है। मुझे तुम निरद्वय होनेवाली भाव कह सकते हो। मैं दूध से देती हूँ और बरदान भी।"

राजा ने कहा "मैं अपने राज्य का एक उत्तराधिकारी चाहता हूँ।" तो नन्दिनी ने कहा कि तुम ऐसा दूध पी लो। देखो, तुम्हारी इच्छा पूर्ण होगी।"

राजा ने उत्तर दिया कि आपने दूध में सबसे पहले दधने का जान है फिर मुझी का और तब और। समा करना मैं मुझी की आज्ञा के बिना दूध नहीं पी सकता।" इस बात को सुनकर नन्दिनी बहुत ही प्रसन्न हुई और उसे घसीट दी।

सायंकाल की आध्यात्म में पहुँचकर महाराज दिलीप ने कुछ क्षणों को तारा संवाद सुनाया और उनकी आज्ञा से रूप पिया। नन्दिनी की कृपा से रानी मुदक्षिणा ने रघु उत्पन्न हुए रघु से राज और राज से महाराज दशरथ उत्पन्न हुए। महाकवि कालिदास ने रघुवंश में इनका वर्णन किया है।

- (५) (१) अने बादभी सदा भगा हो काम करते है  
(२) मूर्ख की बर्षी से जल मूल जाता है।  
(३) लोक-सभा में चुपचाप बैठ और भाषण सुन  
(४) विताजी ! आप जाइये मैं भी यः जाऊँगा।  
(५) यदि वह बात सुननी है तो बैठ जाइये।  
(६) निदा को परिश्रम से पदो, सुन पाओगे।  
(७) सन् उन्नीस सौ सैतालीस में भारत स्वतन्त्र हुआ।  
(८) सूर्य पुन को चिक्कार है। वह प्रकटा क्यों नहीं ?

१६४६ (५) १ - अने बादभी सत्पुत्रा। २ - यमी त—आतपेन।

३ - सन् उन्नीस सौ सैतालीस में सप्तचत्वारिंशदधिककोनविंशतिवर्षे  
श्रुताब्दे ८—चिक्कार है—चिक्।

- (६) माता बच्चे को बाँह दिखाती है।  
 (१०) हमें सदा मत्स्य जीनना चाहिए।  
 (११) इस समय के भारत के प्रधान मंत्री का नाम प० जवाहरलाल है जो भीमती इन्दिरा गाँधी के पिता हैं।  
 (१२) क्या तुमसे यहाँ ठहरा नहीं जाता ?

(१६२०)

(क) एक समय राजा उषीनर ने यज्ञ करना आरम्भ किया। यज्ञ के लिए सारी सामग्री एकत्र की, जहाँ पर राजा यज्ञ कर रहे थे वहाँ पर हम राजा की परीक्षा लेने गये। राजा की बाँह पर एक कबूतर आकर बैठ गया। यज्ञ ने कहा, राजन् ! यह कबूतर मुझे दे दो। मैं भूक से व्याकुल हूँ। अतएव तुम धर्म के मोक्ष से इसकी रक्षा मत करो। मुझसे भयं नष्ट हो चुका। राजा ने कहा, तुम्हारे भय से व्याकुल होकर प्रार्थना बचाने की इच्छा से यह कबूतर हमारे पास आया है। हम इसकी रक्षा क्यों न करें ? इसकी प्रार्थना-रक्षा करने से क्या तुमको धर्म नहीं दिखाई पड़ता ? यह कबूतर लड़पता हुआ मेरे पास आया है। शरणागत की रक्षा करना समुप्य का धर्म है। जो पृथक् शरणागत की रक्षा नहीं करते, वे महापापा हैं।

राज-कर्म इन्हीं ने कहा, राजन् ! आहार से जगत के सब जीव-जन्तु उत्पन्न होते हैं, आहार से बढ़ते हैं और आहार से जीते हैं। मत्स्य वस्तुधाँ के त्याग से समुप्य कई दिन तक जी सकता है, परन्तु भोजन छोड़कर जीना असम्भव है। इसलिए भोजन न पाने से मेरे प्राण शरीर से निकल जायेंगे। मेरे मरने से भवे स्त्री और पुत्र सब भग्न जायेंगे। साथ एक कबूतर की रक्षा करके सब प्राणियों को मारते हैं जिस धर्म से धर्म का नाश हो, वह धर्म नहीं अधर्म है।

राजा ने कहा तुम ठीक कहते हो परन्तु हम शरणागत को नहीं छोड़ सकते। जिससे तुम इस पक्षी के प्राण छोड़ो मैं नहीं कहूँगा।

१२ ठहरा नहीं जाता है—स्वानु न शक्यते।

१६५० (क, यज्ञ करना आरम्भ किया यज्ञ कर्तृभारसे। जाध पर—जंघायाम्। कबूतर कपोतः लड़पता हुआ—विह्वलः।

(ख), १) गंगा हिमालय से निकलती है।

२) गोपाल माय का दूध दोगता है।

३) विद्या सीखने के लिए एक को छात्र मानना परम आवश्यक है।

४) विद्यार्थी को मुक्त कहाँ और मुत्तार्थी को विद्या कहाँ ?

५) विदुर को क्या शिक्षा में पुराण है।

६) मूठ बोलना सब पापों का मूल है।

७) विदुर के कहें उपदेश अनमोल हैं।

८, दुष्ठा खेतनी धम्मा काम नहीं है।

९) कोई न कोई कला सबको सीखनी चाहिए।

(१०) मित्र पक्षा है जो सकट में मार्ग देता है।

११) पुरातन सदा दुन्दुभे के सिद्ध ईदना रहता है।

(१२) राजाशास के दोनों घोर हरे-हरे वृक्ष हैं।

(१६५१)

(क) एक दिन सुदामा की स्त्री ने पति से विनयपूर्वक कहा — स्वामिन् !

आप कहाँ करते हैं कि श्रीकृष्णजी आपके साथ हैं। आप इस समय दीन-धन्या से हैं। घर में आने का कुछ नहीं है। भला आप उनके पास जायें और कुछ से चायें। सुना है कि वे दीनों पर दया करते हैं। वे शत्रुओं आपकी सहायता करेंगे। आपको ऐसी सहायता में मित्र के पास जाते हुए सज्जा नहीं करनी चाहिए। कहते हैं कि विपत्ति में मित्र ही मित्र के काम आता है। आप उनसे सहायता प्राप्त करें जिससे हमारा निर्बोह बच्चा भीति हो सके। धाशा है कि आप मेरी प्रार्थना पर ध्यान देते और वहाँ जायेंगे।

सुदामा जब कुछ न बोल सका और अपनी पत्नी के कथन को मुक्तिभूत जानकर श्रीकृष्ण के पास जाने की प्रवृत्त हो गया। उसके मन में विचार उठा कि मैं मित्र से कई वर्षों के पदचान् मिलने जा रहा हूँ, भेंट में क्या ले जाऊँ ! वहाँ या ही क्या जो सुदामा ले जाता ?

१६५० (ख) (८) दुष्ठा खेतनी धम्मा कामोदनम् : ११) सिद्ध ईदना रहता है - चिद्वामि अन्विषति ।

१६५१ (क, कहते हैं—कथयन्ति (कथ्यते) । भेंट—उपहार ।



पर सुदामा की स्त्री ने अष्ट पुराने कपड़े में बोले से धावन चाँच कर धूल की धूल और वह उन्हें लेकर अपने ससुरा के पास द्वारका को चल पड़ा ।

(ख) (१) वह क्यों व्यर्थ दुःख सहता है ?

(२) मैं तो देश की रक्षा के लिए कष्ट सहूँगा ।

(३) हम से मरने वृष नहीं बिधा जाता ।

(४) हे प्रभु मेरी विपदा दूरों ।

(५) तुम पुत्रियों के साथ रह ।

(६) विद्वानों का संबंध घायल होता है ।

(७) हमे वृषों की आत्मा भाननी चाहिए ।

(८) जो दाम देना चाहता है वह ।

(९) बर्बा होती तो मुक्ति होता ।

(१०) तुम शीघ्र चले जाओ ।

(१२५३)

(क) धर्म में नवा हुआ अशोक दिन-प्रतिदिन धर्मकार्यक वान करता रहता था । एक बार जब वह पुन धान करने नवा तब मन्त्रि-मण्डल ने उसे रोक दिया । जिस अशोक ने मन्त्रियों से पूछा—अब पत्नी का त्वामी कीन है ? मन्त्री बोले—देव नृभि के धर्मपति हैं ? अशोक ने कहा—क्यों आप असत्य कहते हैं ? हम राज्य में प्रभु हो चुके हैं मन्त्रिमण्डल जानता था कि यदि कोप समाप्त हो गया तो इतना बड़ा साम्राज्य क्षण भर में नष्ट हो जाएगा । राजा और मन्त्री दोनों एक-दूसरे को समझते थे । राजा ने राज्य त्यागने का निश्चय कर लिया, परन्तु मन्त्रियों की निर्भक्ता कितनी विस्मयोत्पादक है । तथा संसार में कितने निष्कविजयी राजा हुए हैं और कितनों के मन्त्री इतने निर्भीक थे ?

अष्ट—सपटि । पुराने कपड़े में—जीलुबस्त्र । बाधन—तण्डुलानु । चल पड़ा—प्रस्थित ।

(ख) (८) बर्बा होती तो मुक्ति होता—वृष्टिश्चेदमविष्यत्तदा ममिहाम-अविष्यत् ।

१२५३ (क) धर्म में नवा हुआ—धर्मनिरत । रोक दिया—रुद्ध ।

- (स), (१) यह आपका अपना ही घर है ।  
 (२) क्या खेल रहा होगा ।  
 (३) क्या तो होती है, घर कोई कुत्ते भी ।  
 (४) क्या जानुकी यहाँ आये थे ?  
 (५) बनी मैं अभी आता हूँ ।  
 (६) मुझ से इतनी बकल कहाँ ?  
 (७) कामा कीजिए फिर ऐसा नहीं करूँगा ।  
 (८) तुम्हारे जैसे बहुतों देखे हैं ।  
 (९) वह इधर से आया और उधर चला गया ।  
 (१०) चायक बिना यह काम नहीं चलेगा ।

बु. पी. शिक्षा-बोर्ड को इंटरमीडियेट-परीक्षा

(१९३५)

Translate into Sanskrit—

The wife of Pandu was known as Pritha or Kunti and became the mother of five Pandavas. They were Yudhishtira, Bhima, Arjuna and the twins Nakula and Sahadeva. Every one loved these boys, for they were full of great qualities. The heart of Bhima was glad, for he saw that Yudhishtira, the eldest of all the princes had taken the making of a perfect king. Prince Pandu, the father, died suddenly in the forest, and Dhritarashtra declared that the young Yudhishtira should be regarded henceforth as the heir to both the kingdoms.

(स)(१) क्या तो होती है, घर कोई कुत्ते भी—क्या तुम सबति पर कश्चित् शूरोष्कम् । (४) क्या जानुकी यहाँ आये थे ?—यदि 'जानुकी' यत्र आगत ? (६) बकल—बुद्धि । (७) कामा कीजिए, फिर ऐसा नहीं करूँगा—अम्यताम् पुनरेवं न करिष्ये । (८) तुम्हारे जैसे बहुतों देखे हैं—अथादृष्ट्वा बहवो दृष्ट्वा । (९) वह इधर से आया और उधर चला गया—ए इत् आयात्स्तत्तत्र च यत् ।

## संक्षेप

पाण्डु की स्त्री दृषा ययवा कुन्ती के नाम से इंसिद्ध थी और वह पाँच पाण्डवों की माँ हुई। ये युधिष्ठिर, भीम, धर्मन तथा बुद्धिमान नकुल और सहदेव थे। सब लोग उनसे स्नेह करते थे क्योंकि वे महान् वुद्धि से पूर्ण थे। भीम का हृदय प्रमत्त था क्योंकि उन्होंने देखा कि सब राजकुमारों से व्येष्ट युधिष्ठिर में उत्तम राजा बनने के गुण विद्यमान हैं। उनके पिता महाराज पाण्डु की वन में शकस्यान् वृक्षों को मारी और बुद्धिमान ने घोषित किया कि पाण्डु से राजकुमार युधिष्ठिर का होना। राज्यों का उत्तराधिकारी समझना चाहिए।

(११२६)

In a few words and to go through all the ordinals Harsh Chandra went through was the one ideal this play inspired me. I thereby believed in the story of Harsh Chandra. The thought of it all often made me weep. My common sense is the only that Harsh Chandra could not have been a man of character. So both Harsh Chandra and Shrivana are being realities for me and I am sure I should be moved as before if I were to read those plays again today.

## संक्षेप

इस नाटक में जिस अर्थ का मुझ पर प्रभाव हुआ वह यही था कि अर्थ का अनुसरण करना और कठोर परीक्षाओं से होकर निकलना जिनमें वे हरिश्चन्द्र निरुक्त हैं। मैं हरिश्चन्द्र की कहानी में पूर्णतया विश्वास करता था। इन सबका विचार प्रायः मुझे बना देता था। जब मेरी सामान्य बुद्धि कहती है कि हरिश्चन्द्र ऐतिहासिक व्यक्ति नहीं हो सकते थे। फिर भी नामा हरिश्चन्द्र और अर्थ के लिए जीवन मर्य है और मुझे पूर्ण निश्चय है कि यदि मैं उन नाटकों को आज फिर से पढ़ूँ तो पूर्व की भाँति प्रभावित हो जाऊँगा।

(११२७)

Gokhale was a real patriot. He loved India, His great desire was to help it to become a great country. His life was very simple and unselfish. He cared neither for time. The height of his ambition was to do his duty. As a speaker

he won fame in his day. But above all, he was a man of action. He did not believe in words alone. He wanted to do things. Whenever he undertook he carried on, in a spirit of unselfishness and that was an example to all his countrymen.

शांख्यने मन्त्र देवाभ्यन्तरे सं प्रमाणवर्षे सं प्रेष करतें थे । उनकी प्रथम प्रवृत्ति थी कि वे उन्हें एक महान् देश बनाने में सहायक हों । उनका जीवन प्रतिभामय और स्वायत्तरहित था । वे न तो धर्म को परमात्मा कहते थे और न कृपाति को । उनकी सबसे बड़ी सहनशीलता थी कि वे धर्म कलंव्य का पालन कर अपने समय में उन्होंने देश के रूप में धर्म को प्राप्त की । तिस्रों सर्वोपरि व प्रियाशील मनुष्य थे । व केवल प्रसी में विन्यास नहीं करते थे वे कार्य का करना चाहते थे । जो काम उन्होंने अपने ऊपर किया ऐसी निर्यात भावना में कार्यनिष्ठ किया और वे अपने देशवासियों के लिए एक उदात्तता बन गये ।

(1994)

घान बाह्यांगों ने ज्ञान प्राप्त करने के लिए दूधो देन ज्ञान का निवेदन किया। तन्नुसार वे सब कर्मजों को गये और वहाँ कायदे बदे तक ध्यानस्थ किया। उन सब ने सभी प्राणों को पहा और अपने घर लौटने का निवेदन किया। अपने प्राणों ने अनुपम नेकर वे कर्मजों से बात पड़े हाथों से उन्हें होयात्री मिले, उनमें से एक ने कहा 'हे भद्र लोगो, हम लोग प्रयोगों पर रहते हैं, किसे राखें हम सब जायें ? उन जायों बाह्यांगों में से एक ने भद्र से अपनी पुस्तक को खाना और उल्लेख दिया 'आप लोगो को आज प्रयोगों पर रहते जाना चाहिए। आप सब को या तो यही राखें दिन उठाना चाहिए या नींद कर अपने घर जाना चाहिए, क्योंकि आप सब के प्रयोगों की स्थिति आज बिल्कुली नहीं है।"

( २६५२ )

राजा श्रीधनचन्द्रन नर्मदा नदी के किनारे घमण्डुर में राज्य करते थे।

(१९६०) अत्यन्त लम्बे तक—द्विदशपर्यन्त । नीचे का—प्रत्यागन्तुम् ।  
 किम राक्षसः—केन पक्षः । काला—उदघान्तु । उत्तर दिशा—प्रत्यवदत् नहीं  
 जाना चाहिये । न गन्तव्यम् । लोट कर—परावस्थ । प्रकृष्टा नहीं है—न शुभा ।

\*१६१—राज्य करना का अन्वय । सरल वज्जों को—सगरी शिष्टान्त

एक दिन उसने एक स्त्री का विलाप सुना । जब करन पर ज्ञान हुआ कि वह स्त्री सपों की घाला है । उसके घात बच्चों को पछियों के राजा गण्ड ने खा लिया है , वह इसलिए रो रही है कि बच्चे उसके शक्तिहीन बच्चे को भी खाना चाहता है । राजा ने उसके बच्चे का बचान का बचन दिया और बच्चे के बदले उसका शरीर लकड़ को दे दिया + बच्चे ने उसके शरीर का धाम प्राप्त कर लिया तब राजा ने दाहिना हिस्सा भी उसके सम्मुख कर दिया । यह देखकर लकड़ ने क्षम्यता प्रकट की कि और राजा के शरीर को पुनः वर्णमय करने के विचार से प्रभुत माने के लिए वह पलायन मोक्ष बना गया और प्रभुत ले चला । ज्योंही लकड़ राजा के शरीर पर प्रभुत छिरकने वाला था कि राजा ने लकड़ में सपिलो के घात बच्चों की भी पुनः जीवित करने के लिए कहा जिन्को वह पहले मार चुका था ।

(१२१२)

संस्कृत का सबसे बड़ा व्याकरण भिन्ने वाले महर्षि पालिनि के बारे में हमें धार्मिक भाव नहीं है । महाभाष्य के अनुसार उनकी माँ का नाम दाली था । इसी तरह कथासरित्सागर के अनुसार वे उपवन के शिष्य और व्यास कात्यायन तथा इन्द्रवज्र के सख के रहे हो सकते हैं । पञ्चतन्त्र के एक पद्य के अनुसार उनकी मृत्यु काश के द्वारा बतलाई जायी है । सुना जाता है कि वे वनवन में बहुत बुद्धिमान नहीं थे । परन्तु निम्न से निरास होकर उन्होंने भगवान् शिव की शराधरा की ओर उनसे बौद्ध प्रत्याहार मूर्तों का पाद , उन्हीं के आधार पर उन्होंने शराधरा की रचना की ।

(१२१३)

गंगा के तट पर स्थित बनारस एक महत्वपूर्ण स्थान है । ऐशान्य मन्दिर और प्रगने घाटों के लिए यह समूह भारत के प्रसिद्ध है , किन्तु हिन्दुओं के पवित्र नगर के रूप में यह अधिक विख्यात है । यह पौड़ियों से हिन्दुओं का प्राथमिक-स्थान रहा है , और सम्पूर्ण भारत का सम्प्रदायी नगर है । प्रत्येक धार्मिक हिन्दु इस पवित्र धार्मिक स्थान के दर्शन करने की आकांक्षा रखता है । वह अपने पापों को इस पुण्य भूमि में बहाने और अनन्त काम तक स्वर्ग में परम सुख पाने की कामना करता है । नदी के किनारे के प्रसाद ऐसे वृक्ष जनों से भरे रहते हैं जो भारत के सभी भागों में आते हैं । वे धैर्यपूर्वक अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा करते हैं , क्योंकि बनारस उनके लिए स्वर्ग का प्रवेशद्वार है





क्षेत्रम् च सस्यमम्यन्ति दृश्यन्ते निधनमायुः शैतनियोगम् तद्विषयाणां प्रोत्पन्नम् ।  
प्रकाशां रमणीय प्रतीयते । नडाभानां मरितां च सुवर्णां दलंतीति । सर्वत्र  
सुनिवृत्त प्रसन्नम् । कपलानि च विकसितानि प्रतिपद्यन्ति । यत्र तत्र विहगानां  
सुमतीन्द्रो निराक । मन्द मन्द प्रवहन्त्यस्य पवनस्य तच्छब्दरागम् सर्वत्रैव  
हरीनिम्न साक्षीजम् । सधनस्य कस्य नन्द नयनालन्दकारि हृदयम् ?

### ३-देशाटनम्

देशाटनस्य बहवो वृक्षा भवन्ति । नानादेशजलज्वायु प्रभञ्जनास्माकं  
स्वाम्यलगाभ्यो भवन्ति । देशाटनस्य कौलमञ्जनेन वयं स्वदेशमपि ज्ञानात्प्रोक्षते ।  
सम्पन्नं कुम्भ । अक्षिकोन्नतस्य देशस्य नागसिन्धु प्रायः पर्वतप्रिया भवन्ति ।  
विजितशासनकाले सासका घातलोभानां देशाटनस्य नागसिन्धु इव  
भारतीयवृक्ष प्रेरणा बिना न किमपि कृच्छन्तीति सकश्चित्तम् । गन्धधुना न  
वयं परमन्त्रा भवते । शासकजनस्य कृतं व्यवसायदने वसे भारतीयानां देशाटनं  
प्रत्यभिप्रेत्य प्रोक्षते । अयुना बहवो भारतीयवृक्षा यमरीका-शुक्लवृक्ष-  
कलमपुत्रिदेशेषु विविधकलाकोशमञ्जनाभेदाय गता भवन्ति । स्वदेशमागत्य ते  
स्वभावात्प्रजायन्ते स्वदेशमवदमन्तीत्यपि व्यक्तं ज्ञायते ।

### ४-उद्यानम्

उद्यमानोद्यानम् । अकाशस्य वृक्षा वपुः विकसिता मञ्जरीं क्षीयन्ते  
वसन्ते मञ्जरीं कुञ्जन्ति मञ्जरीणां गन्ध मञ्जरीं ज्ञायते । धाम्यो मञ्जरीस्य  
कलमपुत्रिदेशेषु विविधकलाकोशमञ्जनाभेदाय गता भवन्ति । गन्धधुना न  
वयं परमन्त्रा भवते । शासकजनस्य कृतं व्यवसायदने वसे भारतीयानां देशाटनं  
प्रत्यभिप्रेत्य प्रोक्षते । अयुना बहवो भारतीयवृक्षा यमरीका-शुक्लवृक्ष-  
कलमपुत्रिदेशेषु विविधकलाकोशमञ्जनाभेदाय गता भवन्ति । स्वदेशमागत्य ते  
स्वभावात्प्रजायन्ते स्वदेशमवदमन्तीत्यपि व्यक्तं ज्ञायते ।

मधुकम्प वृक्षोऽपि विद्यते । वनममयं विमलं वि पीतानि पुष्पाणि  
जायन्ते । अस्यां धाम्यायां ताकिना उपविशन्ति । ते मधुरेण स्वरेण कृञ्जन्ति ।  
पाटलकुमुदानि चापि मन्थयन्ति । पाटलवृक्षेषु वष्टका भवन्ति परं प्रसूनानि नूनं  
मृन्दन्तीति वृक्षानि च भवन्ति ।

### ५-अनुसूयता

अनुसूयतायां उद्यमानो बन्तरी विद्यन्ते । उद्य विचित्र-विचित्रा पक्षिणः सर्पाः  
मत्स्याः पशवश्च सन्ति । अनुसूयस्य उद्यमानस्य सिंहस्य गजस्य मयमुत्पा-

व्यति दशकस्य सर्वेषु चतुर्पदेषु वनवत्तमं तिष्ठति न तस्य वनराज इति कथ्यते । तत्र महाकायो मञ्जीर्य विद्यते । तस्य द्वौ दंष्ट्रा दन्तौ स्त । अतः स दन्तीति कथ्यते । तत्र पाशौका काम्बोजा विविधा प्रदत्ता विद्यन्ते । केचन घोडवा रथहारका । केचन जगद्वारहारका । अन्ये यानां मृगाश्वापि तत्र वसन्ते । एकोकादिनादागतं गुनरकुम्भकृतोऽपि तत्र दृश्यते । तत्र स्युलकायाः हरित-पीत-शुक्ला मर्मा नूनं विमयमृत्पादयन्ति । वनरस्य कृत्तमलि विधिश्च । एको मकंदस्तत्र बहुविधा जीवा प्रदत्ताः । अन्ये च बहवः रक्तमुखा कृष्णमुखा खामुलिनः बभ्रवामनुपातश्च तत्र विद्यते । परितस्तां तु गलनपि कर्तुं न पायते । बहुविधा जुका अपि तत्र विद्यते ।

### ६—सत्यम् (सत्यमेव विद्यते नानृतम्)

अथ विद्यायते—किं माम् सत्यम् ततः (मञ्जुनाथ) । हितं मायं भवति यत् लोकार्थताम् भवति तत् सत्यम् । यत् वस्तु यथा वर्तते तस्य तथैव भावः । वेदान्तं, प्रकाशानं वा सत्यमित्युच्यते । विद्यायां सत्यमेव जिह्वा सद्व्ययोगार्थं वला, तस्याश्च सद्व्ययोगः सत्यभाषणेर्भव भवति । अत एवोच्यते—

सत्यमेवमहत्त्वं च सत्यं च तुलनां वृत्तम्  
सत्यमेव सत्यभाद् हि सत्यमेव विदिष्यते ।

यादृक् सत्यस्य महत्त्वं न तादृगं व्यक्तं कस्यापि वस्तुनः । सत्यमेव जगतः स्थितिः वर्तते । सत्यमेव महिम्ना भवनं परम्बरं विद्यमानं । यदि सर्वेऽपि जनाः अस्त्यभादिनं स्युस्तदा न कोऽपि कस्मिंश्चित् विद्यते । लोकार्थतां जगत्प्रभुरा निर्मयता च स्यात् ।

सत्यभाषणेन निर्भीका प्रवायः । सत्यभाषणेन चात्माकं यथा प्रतिष्ठा गौरव च वर्धते । सत्यज्ञानं न कस्मिंश्चित् पक्षे प्रवर्तते । स यद्यहमसत्यं वदेयं तदाहं पतितो भवेयम् इति विचार्य सर्वेभ्यः पापेभ्यः किरमति ।

महाराजो वराहः सत्यस्य पालनार्थं प्रवृत्तः । अस्त्वभ्योऽपि प्रियं पुत्रं रामं वनं प्रेषयामास । सुविष्टिः सत्यस्य प्रवृत्तये विद्यते । तेने महाराजो हरिश्चन्द्रः सत्यस्य पालनार्थं विविधानि कृतानि कुरुते स्म । महाराजो गच्छि सत्य-पालनार्थं प्रियान् प्राज्ञान् त्यजत् । 'अहिं सत्वात्परो धर्मो नामुत्तमं पालनं महत् ।' 'सत्यमेव विद्यते नानृतम्' इति नान्तमह्यपि प्रवृत्तं वर्तते ।

अस्य प्रतिष्ठयेवं लोक-कल्याणस्य, उत्तमैरभ्युदयस्य च सम्भवः अतः

एवाप्यते— सर्वे सन्ते प्रतिष्ठितम् । य सत्यमाधयति मरुत नस्य जीवितम्  
यश्चामास्य जयते त महत्त्वात् कृते पापवशाद् नश्यति च । अतस्त्यमाधतेन  
प्राप्तं देशस्य, समाजस्य च विनाशः सम्पद्यते । अत एवास्माभिः सदा सत्य-  
वादिभिर्वर्तितव्यम् ।

### ७—विद्याकर्म सर्वधनप्रधानम्

‘विद्याकर्म सर्वधनप्रधानम्’ इति यदुक्तं तत्सत्यमेव । विद्याकर्मस्यैव  
वैशिष्ट्यं वर्तते यत् सर्वं धनं अद्यात् ज्ञयमाप्नोति परं विद्याकर्मं व्यवहृत् कृद्धि  
नश्यति, मरुतवाद् नाशयामाति । कुपेरस्मापि धनोद्यः कोसो अध्यात् केषुचित्  
दिनेषु निश्चितमेव रिक्तो भविष्यति, परम् अतो विद्याधनस्य वैशिष्ट्यं यदिह  
बुद्धमुद्यमपादपि न क्षमं नश्यति ।

सम्यग्बोक्तं केनचित् कविना—

अपूर्वं कोपि कोसोऽयं दृश्यते तत्र धारति ।

अध्यात् कृद्धिभाष्यति जयमाधयति तन्मया ।

ज्ञानार्थकस्य विद्-शालोविद्यामयः । कस्याचिदपि पदाचस्य सम्यक् ज्ञानं  
विद्येति कथ्यते । विद्यया यय स्य कर्तव्यं ज्ञानोद्यः । विद्यार्थं धनं प्राप्तं भवति ।  
कर्मार्थकर्मवयो पापपुण्ययोश्च ज्ञानमपि विद्यार्थं । विद्यार्थिभ्यो हि मानवः कर्म-  
व्याकर्तव्ययोश्चाज्ञात् पशुः । प्राकृति । अतः “विद्याविहीनं पशु” इति कथ्यते ।

विद्ययाैव मानवः सर्वं प्रसिद्धां भवते । नृपणयोऽपि विदुषः पुरस्तात् नत-  
गिरतो भवति । विद्या मानवस्य दिव्यं कीर्तिं विन्याययति । विद्ययाैव रक्षिणः  
बेङ्गुदेगस्यसुप्रभृतयः जयप्रसिद्धा जाताः । विद्ययाैव च कालिदासः सर्वभूति-जाया-  
हर्षप्रभृतयः कवयो जगति कथानि मताः ।

विद्या मानवस्य यदा अनुबन्धं सहाय्यं करोति । विविचनं प्रकारेण सास्य  
उपकारं कृते । मानवः रक्षति, पित्रे हिनकार्यं नियोजयति । राजसभायां  
विद्वान्त्र गौरवं कीर्तिं च लभते । विद्याधनमेव जगति श्रेष्ठं धनम् । न हि  
कविचैव विद्यां कोरयितुं समर्थः न कश्चित् वन्द्यमित् शक्तः । विद्या कुक्ष्यस्य  
कायम् सा निम्नपदस्वमपि पुरुषम् उच्चपदे स्थापयति ।

विद्या विनयमेता हरति न चेतांसि कस्य अनुजस्य ।

काञ्चनमस्तिष्ठयावो नो जनसति कस्य सोधननन्दम् ।

चतुर्वर्गकनप्राप्तिरपि विद्यमानं संश्रयानं विद्यया विमयो जायते । चित्तयेन  
योग्यता मच्छानि योग्यतया यत्नं प्राप्त्यानि चेतनं दानं ददाति दानेन तृण-  
मनर्थानि पुष्पानि धर्मं सन्निर्याति । धनेन इच्छा पूयते : धनेन धर्मानि  
प्राप्तास्तं निर्माति स्वादिनं पदयास्य मुदकं बहुमुदकानं बहुप्राप्तिं यत् एव  
कामान् भजयति ध्यात्मपदमात्मतारं ब्रह्म पश्यति ब्रह्मवद् ब्रह्मैव भवति  
मतेन शिषिता स्वकीयनय्य चतुर्वर्गोन्मदं पश्यति कस्य न भवेत् यत् एवोन्म-  
दात्तं यत्सति पितृव हिनं निमुदको कालं च चाश्चिन्मदात्तपनाथं यदम् ।  
नक्षत्री यनानि विहन्ति च दिक्षु कोति किञ्चि न माधयति कल्पयतश्च विद्या

## ८—साधारः परमो धर्मः (सभाषारः)

मनाम् साधारः महावारः सन्तुष्टः साधनोपेक्षाणि वहीहृत् परम्पर  
व्याख्यानं उपकथयति । मरुतं बदन्ति मुक्तयाम् बुद्धयश्च ध्यातिपत्तं तेषामाका  
पालयति मन्त्राय एव दृष्टव्यम् । मरुतं चेतनं महाधारिणं विनीतं बुद्धि-  
मग्नं च ज्ञायते ।

साधारनिष्ठादयो भाग्यं गतो मानवे च समाप्ता धर्मिण्यन्तु पवित्रं  
चित्तभ्रमं भ्रमं को हि मानवे चतुर्वर्गिणः । गोष्ठं च यत् एव यत् मानवो  
धियते यो यत् मानव धरति । दशाङ्गो धर्मः सन्तुष्टो एव भवति

धर्मिण्यन्तु पवित्रं धर्मिण्यन्तु पवित्रं

धर्मिण्यन्तु पवित्रं धर्मिण्यन्तु पवित्रं

साधारः धर्मोऽयं सन्तुष्टः एव मानवे मानव इति ज्ञायते सन्तुष्टः धर्मो-  
क्तयेन स धर्मो जायते सन्तुष्टः एव मानवे मानव इति ज्ञायते सन्तुष्टः धर्मो-  
साधारः मरुतं चेतनं महाधारिणं विनीतं बुद्धि-  
मग्नं च ज्ञायते ।

मानवजन्मोपेक्षा नवीनतमः यत्नः यत्नः सन्तुष्टः धर्मोऽयं सन्तुष्टः धर्मो-  
निष्ठादयो भाग्यं गतो मानवे च समाप्ता धर्मिण्यन्तु पवित्रं  
चित्तभ्रमं भ्रमं को हि मानवे चतुर्वर्गिणः । गोष्ठं च यत् एव यत् मानवो  
धियते यो यत् मानव धरति । दशाङ्गो धर्मः सन्तुष्टो एव भवति

मनुष्यो हि सामाजिक प्राणी समाजस्थित तस्य जीवनम् सदाचरणैरेव  
 तस्य उन्नतिर्भवति सदाचरणेन मानवा बहुचार्मिणो भवन्ति सदाचरणेन  
 तेषां दुष्टिं यच्छेत् धर्मोऽयं च पश्यति । सदाचार्मिणो दुष्टिं श्लाघन्ति न मनसापि  
 यथा नि न चिन्तयति स सर्वत्र लोकस्य दंष्ट्रस्य वा हिताय प्रयत्नः । महा-  
 चार्मिणः समन्त्रेण वाधर भवन्ते ।

### ६—सन्तोष एव पुत्रस्य परं निधानम्

संस्मिन् जगति सर्वे जना मूलमोहान्ते परं सन्तुष्ट एव ज्ञानं सुखी जगत्—  
 सन्तोषमूलं हि सुखं दुःखमूलं विषयः ” इत्यत्र सन्तोषं प्राप्त्यनन्तरं तदेव  
 सम्भाव्यते यदा यदा सन्तुष्टा मयः यत्किञ्चिदपि स्वीकृत्य धर्मेण प्राप्नुय  
 यदि तस्मिन्नेव सुखानुभव कुमलदा यदा सन्तुष्टा— ये कस्य यस्तुष्टौ ते घन  
 भाग्येऽपि घातलोभाद् व्यर्थं यदा प्राप्तुमिच्छन्त इत्यन्तर्ध्वंस्य न कदापि  
 सुखमनुभवन्ति तेषां जीवनं निम्नं दुःखमयं धार्मिकजीवं च उन्नतं च—

सन्तोषाद्भुतकृत्यानां यत्सुखं ध्यान्तेतसां  
 कुलस्वर्गनिर्मुक्त्यानामित्येतावत् श्रुतम् ।

संगते न हि कश्चित् परमबुद्धिमानपि शीघ्रं पञ्चकमी अपि भर्तुं कामा-  
 नर्थाय शक्तः । अधिकार्थकं भुञ्जतेऽपि न कश्चित् परमार्थं  
 सुखी भवति । सन्तोषसाधनमयं भूयसी पुनरायं जगद्भूतः जगत्— सन्तोष एव  
 सुखमिति न वासन्तोषे ।

नायमयं सन्तोषस्य ग्रहणं भवति केन त्वज्जंभं सन्तोषस्य तु घनमेवायं यत्सु  
 यत्किञ्चिदपि यदा यदा प्राप्नुयते तेनैव तुष्टोऽयं अनुचितधनार्जने न प्रयत्नयति ।  
 यत्तार्थं न विज्ञेयं यदा यदा न च सर्वधर्मप्रवा भवेत् । सुखाय शान्तये  
 च घनं भवति । घनं तामन् घनमयं कृते घातं न यदा यत्तार्थं मयः सन्तो-  
 ष्माभिः सुखशान्तिप्राप्त्यर्थं सन्तोष एव उपादेयः । सन्तोषे हि महती धीर्बलंते ।  
 तथा हि—

सर्पा पिबन्ति पवनं न च दुःखनाम्ने  
 शुक्रैश्चुल्लोदनज्जा वसिष्ठो भवन्ति ।  
 कन्दं फलेर्मुनिवरा यदावन्ति काम  
 सन्तोष एव पुत्रस्य परं निधानम् ।

### १०—परोपकारस्य सतां विभूतयः । (परोपकारः)

परिचाक्षु उपकार परोपकाराः चतुरः । अन्वष्टाशितानां हिताय यत्किञ्चित्  
दीयते तेषां सहायता वा क्रियते ननु सर्वं परोपकारपदेन व्यवहित्यते । यत्रनेषु  
परोपकारस्य बहु महत्त्वं वाञ्छितमस्ति । परोपकारस्य संसारस्य कल्याणाय जायते  
मानकता वर्तते । मुक्तं च विधत्ते । परोपकारः सर्वधर्मासु ईशाना मान्यतः उच्यते  
न—

सहायसमुदायेषु स्वात्मस्य वचनमुच्यते ।

परोपकारं पृथ्वाय पापाय परोपकृतम् ।

परोपकारः एवैकोऽस्य मूलः । येन प्राप्तं मुक्तं वचनं । एतदस्य सारम्भ  
यत् सारवेण सहायसमवाधानां दशधर्मिकाणां धर्माद्वाराणां भावना महामु-  
भूतिश्च वर्तते । यः सन् परोपकारं करोति तस्य सारसं पवित्रं विनष्टं  
सर्वं सरलं च जायते । परोपकारिणां अन्येषां कष्टं स्वकीयं कष्टं सभा-  
सम्भाषणं कष्टम् । ते सन् बुद्धिमान्वाञ्छन् पिपासितेभ्यो जपं, वस्त्रहीनेभ्यो  
वस्त्रं, शिथिलेभ्यो धनम्, दासिहितेभ्यो शिक्षां ददति । सत्पुरुषा स्वकीयं दत्तं  
विस्मृत्य परोपकारकरणे प्रवृत्ता भवन्ति । तथा हि—

योऽत्र धर्मेनैव न कुरुतेन दानेन पाणिना न कच्छुनोम ।

विभानि कायं कस्य सङ्गतानां परोपकारेण न चन्दनम् ।

न केवलं ज्ञानस्यैव देहेषु पशुपक्षितुर्धारादिवर्षि परोपकारः भावना । तन्मे  
केन स्वार्थेन प्राप्तं किं पश्यते धानि ? किञ्चिद्विषयं भयं वा ज्ञानं सततं  
प्रकाशत ? किं कारणं निशान्तप्रेषणद्वये वैराग्यस्य भावनायति । न हि मावी  
यत्किञ्चिद्वच स्वार्थं च समुत्प्रेष्य दत्तं ददति । परोपकारपरां कृत्वा धीराभ्यस्य  
पश्यतु । साधनप्रदानेन आत्मोपपन्नयेन च स्वापकारिसामर्थ्यात्कुरुवन्ति ।

परोपकारभावनायैव महाप्राज्ञः शिवि कपीनपत्रिणां स्येदम्ताभ्यां नैज  
मांसमन्तुत्स्य इत्येतावत् वदती । जीमूकनाम्नो भर्षति शङ्खं नृहं नायं चान् स्वदंष्ट्र  
शक्तमते प्रायच्छन् । महाप्राज्ञो दधोविचित्रं ददर्शितव्यं स्वानि अस्त्रीनि प्रादात् ।  
अस्त्रिण् सुतेऽपि मदनभाजनमानवीयं कामगङ्गाधरनितकं मार्गध्वजं भृतयः देशस्य  
कृते महानि कष्टानि अन्वभुवन्, किमहं स्वान् प्रियान् प्राशानपि प्रादु-  
ष्यतोऽस्माभिर्गपि सर्वदा परोपकारो विधेयः । उच्यते च—

पिबन्ति नरा स्वयमेव नाश्रयं स्वयं न स्वादन्ति फलानि वृक्षा

घाराघरो वपति नात्महेतोः परोपकाराय धनां विभूतयः



## ६१ अङ्गिरसा वनयो जमः

निर्धनः पालनं शक्तिभा विमान न कृतम्बु इत्यादिनाया माव । यस्मात्  
 धर्मोक्तिनाया स्थान वदमहत्त्वपुण्यमस्ति । अहिमाधर्मस्यैव पालनं भगवतो  
 बुद्धस्य गणना दत्तानामप्यु विद्यते । अथवान् महाबोधिपि अहिमाधर्मस्यैव  
 पालनं मन्वा पुत्राभ्यामप्यसीत् । यथवान् धनुर्गवि दद्यात्तर्हि कृत्यमंगलाना-  
 नाम् अहिमाया प्राथम्यमुत्थापयन् ।

सर्वज्ञः सर्वसत्त्वः सर्वविन्दित्यनिरुद्धः ।

पौर्विका मलयजंशो कदाक घमंसक्षरास

निराशाशब्दं कस्यापि भूत्वा दिनन नूनं निन्दनीयम् । यस्मिन्माया गानन  
मेनगा बाधा कलङ्कः च कलङ्कयाम् । कस्यापि विषयं दुःखं वादुःखप्रयत्नं  
निर्गुणं यस्यामे

भाष्योपसंस्कृतो केवलः पारमिकोचैः अतिव्यापनस्य परिभाषा गीतः अ हि  
राजभौतिकं व्यवहारोऽप्यधिकृतः अथवा ननु नृ-स्वतन्त्रो न्यायः ननु गुरु,  
मार्गः गुरु वा ध्यानवापिभ्योऽप्यन्यस्य पक्षेवाप्यनेन स्यात् ।

गुरु का शासन-विदुषा का शासन का विपरिधायन

ज्ञान-विधि-पाठ-१      ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

पञ्चमः अथ ब्राह्मणः ३-युक्तम् । १२ अथ ब्राह्मणः धानतापी स्यात्  
तद्दिनेऽपि ब्रह्मः स्यात् ।

नन्वादि भगवता योऽप्यस्य इत्यादि इत्येकान्तबुद्धिः हिमाभागाद्वलस्त्वित् ।  
नन विष्णु नमोऽस्ति ते इति शब्द कृत् एव ननु विधिति गच्छति भीति  
प्रत्ययान्न ननु भगवत् भगवत् नन्वादि भगवत् नन्वादि भगवत् ।

मन्त्राणां व्याख्यानं प्रतिपादयति यत्र च तन्त्रिके व्याख्यानिके च लेख  
प्रकाशितः हिमाश्रमः, अत्र प्रतिपाद्यते तन्त्रिके विमर्शनात् युधि  
विज्ञानं पवित्रमन्त्राणां उपायः सत्यमर्थः च, अमनःसहिता च मुनयः सिद्धि  
प्राप्तिः च कुत्रापि यत्र च तन्त्रिके व्याख्यानं विमर्शनात् युधि  
प्रकाशितः हिमाश्रमः

१२. एतमङ्गानि कथय किं न विरोति पञ्चाब्द

नमः सङ्गतिं गन्तव्यं कुरुष्वते सनां सङ्गत्या मानव सञ्जको विनीत  
 विष्णोः सव्यं अमरा च सङ्गत्या न एव दुःखो जायते अथर्व पत्रि ।  
 मानव पादोऽप्युक्तं सङ्गतिं कुरुष्वते सञ्जको विनीत । पादोऽप्युक्तं सङ्गतिं कुरुष्वते

उपविशति स्वादति पिबति निवसति च त आदय एव भावते । तथा बोध्यते  
'ममंगला दोषगुणा भवन्ति ।'

यत्नाङ्गुथा मानव उन्नतिपदं भाति । सप्तङ्गुथा मानवस्य प्रणिष्ठा  
कीलितेषु वर्धते । यत एवोच्यते-

सद्भिरेव महाभोग सद्भिः कुर्यात् संवतिम् ।

सद्भिर्विवादं देवी च नासद्भिः किञ्चिदप्यरेत् ॥

मङ्गुथा शक्य ब्रह्मभोग इतरे वासकस्य कोवत् मरीरम् अपरिपक्वं च  
मन्त्रिक प्रवृत्ति स पात्रं वासके सङ्ग पठति कीदृति, पश्यति कारुण्य  
एव ज्ञायते यतः संवत्सरे बहुनि कष्टान्तरपतति । यतः सङ्गतिवर्तिने  
कामाणि न विधेय । यमत्रा मन्त्रेण न च सङ्गति दुर्विचारवाग्ध्रुवायते तन्म  
दुर्विचाराणां भवति दुर्विचारद्वाराणां दुष्प्रसन्नमन्त्राणां अप्रियमन्त्रेण  
तस्य यतो नश्यति न मन्त्रानां विधेयं यत विद्यायोगेन मन्त्राणां विधेयं  
पात्रा दुर्जनमङ्गुथं हेतु । मायुक्तं केनापि विना

पात्रान्वितमप्यति पौडयते हिताय

गुण निगुहति गुणान् प्रकरोकरोति

भाष्येन न च न जहति दृष्टानि कानि

मन्त्राङ्गुति कथं वि न करोति पुनः ।

१३. उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथं

भूतार्क परमेस्वर मयस्तमपि भूतज्ञानम् उद्योगनिरत निमित्तवान् । तथा  
हि पूर्वोक्तं भवति इगन्तादीन् ज्ञेयं च वाचयति । पूर्वोक्तादिसारणिवृ  
त्तं जगत् प्रकाशयति चाम् सर्वेषां जीवन् मन्त्राणां भवति । नत नदीनदीदिभि  
सेवनक्रियाभिः सम्यक्कार्यं करोति । मन्त्रमेतन् यन् भूतज्ञानं स्वभावत एव  
उद्योगनिमित्तं वर्तते ।

मन्त्रेणैव कार्याणां कृत उद्यम परमावश्यक । केवलं न मनोरथेन न  
कोऽपि ज्ञेयं कार्याणि यदि लभते पृथ्वावहीना यमा न निमपि कर्तुं शक्ता ।  
पुनश्चायं विना मन्त्रोऽपि मन्त्रात् निष्क्रिय निरर्थकश्च भवेत् ।

मन्त्र एव मानवा सुसमिच्छन्ति । नत हि उद्यमेन विना नैव सिध्यन्ति ।  
उद्योगेनैव जन जगति विद्या यत प्रणिष्ठा का नभतं उद्योगेन विना न कोऽपि  
भुञ्जं प्राप्नोति । उक्तं च—

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः  
न हि सुखस्य सिद्धयश्च इति शान्ति मूलं भूषणम् ।

न वैश्वमर्षितं सचिन्त्य त्वज्जुष्टोऽगमात्मनः  
अनुद्यमेन तैत्तानि मिलेभ्यः तान्नायद्वेति

अनुद्योगं मानवस्य मनोभान् विष्णुः, न त्वसु सदेव दुःखस्य कारणम्  
तथा हि—

यामस्य हि मनुष्याणां शरीरस्यो महान् विष्णुः ।

नाम्युद्यमगमां वन्द्यं यः कृत्वा नावमोदति ॥

प्रतात्मा हि तिलगाम् उद्योगपरिधायिणम् । परमेस्वरस्य हस्मभ्यम् उद्योग  
समाहितः वैश्वं तु तेन स्वापसीकृतम् । उद्योगमाश्रित्य स्वयमेव भगवता राधेया  
मृगीव मूढान् कृतं राधाशेषं निहतम् । उद्योगेनैव पाण्डवाः सपथं गच्छन्त्युप-  
भक्त्यवस्थं निधेना यदितं निवृत्ताः सद्यसाः पञ्चाविधो ज्ञानिनः प्रवृत्तिः ।  
उद्योगमेव महाकवि कामिदासः कथिकमकूरायणिकृत्वा धार्मिकविद्यान्मोक्षिणश्च  
कथितवान् महाज्ञानम् । को न ज्ञानानि लोकमान्यनिमक-तोषणे-गायिप्रभृतिभिः  
वैश्वभक्तं पृथग्येनैव ईदृशिकचारकान्यान् प्राप्नुमि स्वतन्त्रीकृता उद्योगेनैव  
सर्वं सिध्यति, अनुद्योगेन च नश्यति । मय्यनुभव केनचित्कविना—

उद्योगिनं पुरुषमिह भूषेति लक्ष्योर्द्वेषेन वैश्वमिति कापुरुषा बह्विति ।

वैश्वं निहत्य कुरु गोमयमारमजशरया यत्ने कृते यति न सिध्यति कोऽपि दोषः ।

## १४—जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि शरीरयोः

श्रीरामः यद्यपि मन्त्रं नीरं नीरजराजितम्

रमते न मरानस्य मानसं यामलं दिना ॥

माता भानुभूमिश्च वै ज्वेतं श्रेष्ठं । जनकस्य कृते मातुः सहस्रं प्रेम दहते ।  
जानकस्य कृते सा सर्वमपि वन्तुवान् स्थितुं शक्नोति । तस्याः सर्वशायमभिमात्र  
यन्मम जानकः सदा मुक्ती, पुराणान् विद्वान् भवेत् । तत्कृते यो स्वकष्टं नैव  
चिन्तयति सा स्वप्राणानपि शत्रुं समर्था । पृथोऽपि जाल्यादेव मानसं सर्वा-  
धिक्कं मन्यते । यथा माता जानकं स्वसर्वस्वं मन्यते, तथैव पृथोऽपि मानसं  
स्वदक्षस्वं मन्यते । मानवः कदाचिदपि मातुरानुणां वन्तु न समर्थः ।

यत्र मानवः जन्म लभते तत्रैव मय्य जन्मभूमिः । सा मानवस्य सर्वदैव  
अद्विष्टणीया जायते । मानवः विद्वान् महात्मनादरं सम्मानं वा लभेत, किन्तु

जन्मभूषि मदा स्मरितेव स्वदेश-द्वन्द्वनामज्ञा तस्य हृदये सर्वदेव जागति ।  
 शारदभूरस्माकं देशः स्वदेशं प्रति ग्रन्थाक्रमनुरागः शारदस्य स्वाभाविक एव  
 सर्वोपि जनः शरदत्वे स्वदेशान्तर्गत्य नमग्न इत्यने स्वदेशान्तर्गतम् अस्माकं  
 परमं धर्मं । अस्माकं देशः स्वतन्त्रास्ति । तस्यान्तर्नि रक्षा न अस्माकं  
 परमा धर्मः ।

देशः प्रति शक्तिदेशान्तर्गतः मूलकारणम् । देशान्तिभावनया धेरितो  
 मानसो देशान्तर्गतस्य देशं समानादाय धरति देशदर्शित्वं दूरीकरोति  
 शक्तिक्षितान् शिक्षयति अपाठसुन्दरति यातृभूमिक्षणाय च स्वभार्यान्  
 त्यजति ये हि स्वार्थान्तरं देशस्यानुवांशः इव दृश्यन्ते ते हि मिथ्याभक्ता  
 देशाभ्यासिणः । अतः निस्वार्थः देशशक्तिभक्तता यस्या न तु विपरीतः यत्र-  
 राणीप्रवापस्य वृक्षपि सधर्मोद्वेगः । तत्रस्थित्या देशोपपादय वराभभूता-  
 न्ता धर्मोन्मुक्तान्तरति नै नमु यन्नाक वचनदशनामम्

### १५—संस्कृतभाषाया महत्त्वम्

व्यवहारभाषाविशेषोपादिरहिता अक्षस्वित्त-क्रियाकारक-विभागसमन्विता या  
 भाषा सा संस्कृतभाषाति कथ्यते । इयं हि भाषा सर्वदेशग्रन्था धर्मि सतः  
 वेदवाणी गीतागुमारदी पद्यभाषा इत्यादिभि लक्ष्य अर्हद्विधने भाषागत-  
 मुत्तमैव भाषैव मनाग्रस्य कान्या वेदिग्रन्थम् ।

सर्वं संस्कृतभाषा अवयव सर्वम् भाषायां प्राचीनतया सर्वोत्तम-साम्राज्य  
 समुक्ता च धरति । धनन्तानन्तवर्गे अविगतेष्वपि अस्या मधुसूय उदारत्वं न  
 साधारणं विहृतम् पाश्चात्त्यदेशीया विचारधोना कोनहानि-यैकमूलर-जका-  
 शानालङ्कीपादस विद्वंसं संस्कृतभाषाया प्रशंसामकुर्वन् । सर्वोपायायमाकारा  
 मुत्पत्तिः अतः एव कथ्यते । पुरा सर्वे जनाः संस्कृतभाषयेकाभाषसः । अतः सर्वेयपि  
 प्राक्तनं साहित्यं संस्कृतभाषायायैव उपलभ्यते । सर्व प्राचीनग्रन्था जन्मानो  
 वेदायैव संस्कृतभाषायायैव सन्ति अदृष्टं मानवकतव्याकतव्ययो सम्यक् विधी  
 रणमस्ति नतो वेदाना अन्तर्धानमूनां वाङ्मयधन्वा धरन्ते सद्यः सर्वोपाय-  
 विधायप्रतिपादिका उपनिषदा विद्वन्ते यासां गरिमा पाश्चात्यवृत्तैरपि गीयते  
 सतोऽस्माकं गौरवधन्वा वदन्तानि सन्ति । एवमद्यापि विश्वस्य साहित्ये  
 महत्त्वं धरते ततः श्रीनमूत्रणां मृदुमूत्रणां वेदध्यायनमूत्रणां पदज्ञानां  
 गणनास्ति महर्षिवाल्मीकिरचितस्य रामायणस्य महर्षिव्यासरचितस्य महा-

मागतस्य निर्माणात्पूर्वघटनेन वतंते चिद्वसाहित्ये न च दुर्लभस्य कश्चित्स्य  
नैसर्गिकसौन्दर्यस्य अज्यान्मज्जानस्य नीतिज्ञानस्य च दशत जायते । तदा  
मासाभ्यधीन-कार्त्तिकदास भवभूति इष्टि जाल-सुखम्-द्वयप्रभृतयो महावक्तव्यो नाट्य-  
कारादयः समापन्ति यथासुदयत न कवित्त्वमावावतं ययि तु सकलमनन जगत्  
धन्यमानमान मय्यते । कश्चिदपिमासनेषा वसति विद्वत्साध्वि न क्षमा श्रौमद्  
मगवद्गीता स्मृतिद्वया पुराणानि च नस्कृतगार्हिषस्य माहात्म्य प्रकटयन्ति  
संस्कृतसाहित्य सारस्य गौरवमुदघाटयन्ति । समस्त देश च एकतायुक्तं  
क्षमन्ति ततः यस्य साहित्यस्य प्रचार प्रसारश्च निताल नमप्रद एतज्ज्ञान-  
विहीनस्तु पशुरिव । तदुक्तम्—

गार्हिषस्यगौतमसावित्रीन साक्षरं पशु पुंस्यविवासाहीन

### १६-क. पर प्रियवादिनाम्

लोकोक्तिम् कठोरभाषण अनुना वधयति प्रियभाषणेन परकीया क्षति  
जना स्वकीया भवन्ति । इदं हि समस्तस्य वशीकरणम् । परमस्ति कोऽपि  
जयति नाट्य पण्यभाषण उप सव विवागाय मयु येन सर्वं जगत्पूजितं  
कुपु य च सर्वं प्रतयतु इत्यत एव धर्मि ता शोधि । धिक्कशोस्मिन्  
तस्याने जाति किञ्चिद्वचनम् । प्रियवादी एव जनना शोडिन् य तिज  
वधनापुण्य सर्वसागपि प्रीत्यजन भवत य सर्वदा प्रभुत्ववदन प्रपन्नयत ।  
तत्तत्प्राप्तमदमात्म जायते

एतद् वस्तु विचारणीय य यदि ज्ञानज्ञानतः कानि रस्य प्रयत्नेना वाक्  
अन्धाकं मनसि वधयति तदा उन्मत्तजननना प्रियभाषणशीलाना मनुष्याणा-  
मपवतो मधुरा वाक् पश्येत् कृपा । नदा नन्दः क्षात्रवम् । प्रिया वाक्  
शत्रून्पि अनुनुनान् करोति चिन्ताद्वन्द्वना चिन्तयमानयन् पिडापलाया धाति  
जयति । परतपि स्वान् करोति मवाणि काष्ठोश्च माजयति यत यमृतं  
स्वानु प्रिय वध प्रधीतव्यम् । मत्पमपि धिक् न वाञ्छी मनुक्तमगुवावहं  
भवति । तत्तत् च—

वृत्तेप्रियं योऽय वक्त्रे त्रिमूर्धनी तद्वचः स्याद्विषयेव नवच ।

मयं एव जानन्ति यन् कोक्ति काकद्वय इत्यपि कार्त्तिकना तुल्यौ एकस्या-  
मंनं साक्षाद्यो लिच्छत । यावद् वाच नान्वारयत तावन्मयो भेदो न जायते ।

पर वायुत्वादिभूतमप्येकान्तर्भवः कोक्तिः सादर सन्नेहज्ज्वल इत्यन्ते प्रमाणं च  
 कदाचिद्वाक्यं 'कां कां' इति शब्दं च प्रत्ययसक्तं वाक्यं । प्रियभाषणे  
 हि न कादृच्छं न्यायो भवति न कष्टं वापनति, प्रसूतं प्रियवक्त्रं वपंगता  
 लोकास्तमनुसादने । प्रियवक्त्रं प्रपञ्चकावधारजतिः । प्रियभाषिणां नमस्ते  
 कोटिपुत्र उतोरुष्माभिः प्रितकदिदिभांज्यम् ।

१७ संघ शक्ति कला प्रगति

एकदशमोऽध्यायः एतत्काण्डं क्रियते न च सप्तमोऽर्थि कथ्यते अफतया  
मात्रस्यैवावधानं भवति अफतयोऽपवादः शुद्धावस्थाम् उन्मत्तिसम्प्रदाहनि

यथासं लोकं एकतया धनोवाचमहता वनते । यस्मिन् दश एतनाया  
अभ्यासोऽस्ति स देशः निजव्यक्तस्य गतिम् नरकं गच्छति । अस्माकमपि देश  
एतनाया अभ्यासान् विर पश्यतः प्रीतिः परं यदा भारतं तदाभ्यासवता  
समर्थः नरकं दश स्वानुभवमश्नुते । यदा एकतया प्रभावं यन्ममपुत्रेन  
मुक्तं गता गच्छति । तदा निन्दमपुत्रेन मरणं न गच्छति । अस्मिन् भुक्तानां  
मृताणां यदा एकतया धनोवाचमहता वनते । तं नरकम् गच्छति । अस्माकं  
एतनाया—

सम्यक्साधनं मयि च त्रुणां मूलनिः कल्पयामि

भुक्तं तदा यथाप्राप्तं च ध्यायेत् ॥ १५ ॥

[illegible]

॥ गच्छन्तु सर्वे सुखं ॥ ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

समानो प्रश्नः परिगति ० शब्दो मयान गन सह चित्तमेपाय

ममान म-क्याभिम-कंग वा ममानन वो हविषा जतापि

समानमरुतं श्री पनो पश। व मृगदामति ।

इत मत्पमेतत् यत् पदेकता नत्र सुखद्वान्तियमृदुर्था जायन्त एव नैकता  
नत्र हानि विनाशश्च सम्पद्यते ।

१८ व्यायामः

व्यायामाप्रवृत्तस्य नृद्विस्त्रंबो यदा व्रतम्

प्रवृत्तं पशुधनं तस्माद् व्यापार्यमाणरेत ।



मन्त्रसम्मतोऽयं सिद्धान्तः यदस्माकं शरीरे प्रतिलिख्य शीघ्रं यत्नस्तस्य पूर्ति-  
रपि परमपश्यतः निश्चयतः सिध्यमाणा व्यापार्य नित्यं फलप्रदा भवति । एषा  
शास्त्रात्मनो विहाय हि दुष्कृतं सर्वेषु व्यापार्यपि नयः निश्चयान् प्राप्तयेत् ।

द्विप्रकारेण व्यापार्यमां भवति — शारीरं मानसञ्च । भ्रमणं धावनं क्रीडना-  
दिकं शारीरं व्यापार्य मनसः कल्पने-निदिध्यासनादिकं च मानसं व्यापार्य ।  
परमपश्यन् व्यापार्यमां भवेत् शारीरिकञ्च मनसञ्च । स्वस्थं शरीरं मन्त्रि-  
कस्य वि व्यापार्य परिवर्तति । परं कालनिवर्तयितुं कार्यान्तिकी व्यापार्य-  
नेष्टकलाय कल्पतः व्यापार्य मनसस्य नवपुत्राणां रक्तसंचारी जायते । मनसि  
रस्य वेदोक्तं राजा पलायनं लोकमहाहृदिमयं अभ्यस्य नवोद्यमेषु कर्मव्यवसा-  
यैर्बलितः सङ्गठनना वापयति वाग्धाकलादिकवचने यदस्य मनोज्ञं प्रसीदति ।  
यस्य प्रसादेन नवोद्यमेषु कार्याणि सिध्यन्ति । स्वस्थं मानसं रक्तसंचारप्रदं  
यथा प्रसन्नमनसं उत्साहमयं भवेत् ।

इह वदति याज्ञिकः सिद्धिं महापुरुषा गन्तुं त सर्वं व्यापार्यप्रिया  
यामिन् । सिद्धिं विहाय न क्रीडनीयं चारिन् भ्रातृभ्यामप्यप्यस्य व्यापार्यस्य  
परमात्मकं चासीत् । न-मन्त्रिणश्च नम्यं वदन्त्यं विद्वान् ब्राह्मणेनो कश्चन  
च गुह्यं समजायते । नम्यं नवोद्यमेषु तेन व्यापार्येन समुत्प्रादितम् । मह-  
त्सङ्कल्पः शीघ्रं विहाय व्यापार्यमनसं स्वस्थं शरीरं स्वार्थं यदस्येति साहस्यं  
च क्रीडमकरान् । तस्य सर्वं मैत्रिकं । एषा गोहर्षिणः पुरा बभूवुः ।

व्यापार्यस्य धनं वेदापवेदा मन्त्रि-  
केन विहाय नवोद्यमेषु एव पुत्रो भवति । यथा बलश्रीवदः हारीकिकेष्टादि  
क्रीडनेन वा । तस्य मानसं स्वार्थं विहाय एकतममाधयेत् । ये व्यापार्य कर्तुं  
न शक्नुवन्ति ते भ्रमणमेव कुर्वन्तु । भ्रमणं हि नाम लब्धौ हि व्यापार्य । धनेन  
मन्त्रिकस्य शक्तिर्वृद्धं पावनमास्यं च जायते । नम्यं वदन्ति शुद्धकामपुत्रे  
तेन धावनमपि बहुलाभकारि कर्तव्यं ।

### ११—धर्म्याकं विद्यालयः

धर्म्याकं विद्यालयः समया नमस्तेकस्मिन् भुग्म्ये स्थले स्थितोऽस्ति ।  
विद्यालयस्यास्यैकाभिः धर्म्यकारिणः भवनानि बलाद् हरन्ति दक्षकानां चेत्तसि  
धर्म्याकं विद्यालयः रम्योऽस्त्यस्य भवति । यस्य वृद्धे मूलद्वारे दाह्यमाना  
पताका द्वावेव दृश्यते ।

अस्माकं विद्यालयेऽभ्यासकानां संख्या यदि छात्राणां संख्या पञ्चानादधिकं  
सहस्रं वर्तते विद्यालयस्यभ्यासका विविधविद्याप्रवृत्तयोः शिक्षणकार्यानिपुणत्वे  
हन्ति यत् एव स्वस्वविक्रयं पात्रं भूता । तेषां मनोऽपि शिक्षापत्राया आकृष्टा  
इच्छाया चान्तरादमथाप्यपि बहिष्मन्तु नोत्सुका । छात्रा अपि ध्युत्पन्नाधिक्यं  
सन्ति । यथायामस्माकं शिक्षालये समस्तप्रदेशे क्वचित् गतं छत्रे दूरलोऽपि  
छात्रा अत्राभ्यासनायैषांमच्छन्ति । यत्र न केवलं पुस्तकानामेव पठनं पाठनम्  
अपि तु गद्याद्यास्य वाङ्मोर्षि पाठ्यतः किनवाभ्यासनामनस्यापि शिक्षणा अस्ति  
देशाभक्तं समस्तसंवादाद्वर्णादि शिक्षा दीयते कर्मभ्यासकस्यप्यप्यपि सम्पन्नं ज्ञानं  
जायते प्रतियोगिता-वर्गेष्वाम् अस्माद्विद्यालयोपादृष्टाया प्रवेशे मद्वै विनाशट  
स्थानं प्राप्नुवन्ति ते ननु न केवलं पठनं एव निपुणताया अपि तु क्रीडने  
हावनं मन्त्रो भावलाघातयोर्मिहस्तुति । देशभवाया समस्तसंवायामपि यं ते  
विक्षिप्तं स्थानं कथ्यते ।

अत्र छात्राणां क्रोडनाय मुक्तिनृपं क्रोडाखेत्रं विद्यते । अत्र मैत्रिकशिक्षाया  
अपि प्रवर्धः वर्तते क्रोडनादिप्रतिस्पर्धनाय् धावनमात्रद्वाराः कार्यलोचकमपि  
प्राप्नुवन्ति विविधभाषात् कल्याणार्थं विविधा परिषद् पठ्यन्ते । विद्यार्थिना  
स्वास्थ्यवृद्धयै व्यायामस्यपि प्रवर्धोऽस्ति । अत्र छात्रा मय छात्राङ्गणप्रवेशीया  
विकसितवदनो यद्वर्षावस्य सन्ति

अस्माकं विद्यालयं सर्वत्र स्वगुणानुरूपं क्वचित् प्राप्य । अस्माकमपि  
कृतैर्यत्नेनदत्तं यद् यद्य् अस्मै क्रीडिन् अनुदिशु दिस्वारयम् ।

## २०—शामोत्सवः.

अथदेशेन केनचित् प्रमुदितवैभवा शामोत्सवानामेकं मध्यात् शामोत्सवो  
जायते । कदाचित् कस्यचित् शामोत्सवदेवताया गुणानुरागनाय, कदाचित्  
कस्यचित् वीरप्रवर्गस्य यदा क्रोडनाय, कदाचित् कस्यचित् साधो दशनायोपवेश  
ग्रहणाय च कदाचित् कस्यचित् महापुरुषस्य चरित्रोपवर्णनाय शामोत्सवा एकैव  
सम्पन्नन्ति यथा यथा जायन्तेत्येव समोपमागच्छति तदा तथा लोकानामौ-  
त्सुक्यं वर्जने उत्सवदिने पुरुषा उत्सवसम्पन्नानि परिधाव नारीभिः सह माद-  
माना बहुधा गृहेभ्य निष्क्रामन् उत्सवचैराकन्दै हवयोत्सासं प्रकटयन्ति ।

उत्सवर्जस्वम् आपूर्णिका पीठिका अन्ये च विद्यालविकेताव अपूपान्  
मोदकान् अन्धानि च मिष्ठान्तानि सम्पन्नं श्यायन्तुकान् इत्येवमपि यैर्जप  
आपूरिका तवणमयानं चरकचूर्णादीनि आद्यान्तानि विक्रीयते तेभ्योऽपि



स्वयम् द्वे प्रज्ञे पद्यमिदं कथादम्प्यं नरो पात्राणि प्रीयन्ति हिनीकृतिने  
मरकतवृक्षो ज्ञानेन धर्म्या नियो रगवत् भूकृष्येन मरकामरा इव ॥ ३३ ॥  
सापि मलमृष्टिं नरकं प्रहृष्टिं मांशजं । रात्री यस्योत्पद्य च गीतान्  
जिह्वते

धर्म्यास्तस्यैव प्रज्ञां प्रीयन्ति प्रीयन्त्या नतन धर्मिणु दिने सर्वे ज्ञानं  
प्रत्यक्षमुपमुद्रा रयम् । मन् बहु-द्वार रम्या-श्यामामांशु सशोषयन्ति नरा  
नाथं च शरीरं विभूषयन्ति ज्ञानात् मनसि मिष्टान्तांनि पूरा प्रसीदन्  
पश्यवीक्ष्य पश्यमानदृष्टे महति यत्नं । ११३ ॥ नृ रम्याचितं मत्पंसीक

धर्म्य महान्सर्वस्य सतकीरा महान् इत्येव महतीषु कृष्या विराटागत।  
धनिनिष्ठ कर्मन् महदयकारिणीय प्रवा देशस्य जनस्य सांख्यमहाप्रपरी  
सत्त्वा ज्ञेया तस्यैवैव श्रमयण महाभारतकथाजीतन यम्यन, यत इदमस्य  
जाओ भवेत् ।

## २२ महामन्त्र महनमोहनमालवीय

वाङ्मन्त्रिज्ञाप्रणाली भागवीयमाकते धनमुत्तमार्जितवरी च विलोभ्य  
उत्तमशिक्षाप्रमरगय श्रीमान् मदनमोहनमालवीयमहोदय १९१६ ख्रिस्ताब्दे  
भारतीयपुष्पाभूषो कथया हिन्दुविश्वविद्यालय संस्थापनस्य लक्ष्मिदेवकृत्यपति-  
पव ज्ञानरूपकार । म प्रणामानांशाय न राजनीतिक्षेत्रे धार्मिकक्षेत्रे  
धार्मिकक्षेत्रे च महाप्रभा विश्वमरणेण सेवा चकरोत् ।

श्रीमान् मदनमोहन विष्णुचरणान्ध १९ व-क्रिस्ताब्दे १८९२ ख्रिस्ताब्दे  
प्रयागीपर्वतिनि यामे वाङ्मन्त्रिज्ञा ज्ञानमुगतये स प्रयोगस्य प्रयोग मण्डनमहा-  
विद्यालय शिक्षाप्रमरण १८८४ ख्रिस्ताब्दस्य १८८७ प्रदे-ले नवनंमण्ड-  
हर्ष-रूपे श्रीय कथाकाकर्मस्य राज मन्त्रित्वनायं कृत्वा 'हिन्दुविश्वविद्यालय'  
इतिवृत्तपत्रस्य इतिवृत्त प्रोरीनियन इति साक्षात्कृत्य च सम्पादकत्वं  
भकरोत् ।

१८८५ ख्रिस्ताब्दस्य प्रवनत्या गण्डियमहासभाया स प्रथममन्त्रानकेषु  
प्रमुखतमो बभूव । १८९२-९३ ख्रिस्ताब्दयो गण्डियमहासभाविश्वशक्तयो  
धर्म्यादे निर्वोविनीप्रमविश्वशक्त्यायेव आतकवर्गस्य निगृहीतोऽयम् १९०२-  
०३ ख्रिस्ताब्दयो हिन्दुमहासभाया धर्म्यो बभूव स महाप्रभा १९०४  
ख्रिस्ताब्दे समुद्रनगरादधानस्य विरोधप्रदशनार्थ केन्द्रियविधानसभाया  
मदस्यतामत्यज । १९०३-०४ ख्रिस्ताब्दाभ्यां पूर्वमनेन देशनायकत्वमङ्गीकृत्य

काराशसिद्धादिपि कृताः परमस्यै राष्ट्रियसहायभावाः दास्यन्त्य मुक्तिय-  
तोपिप्राप्ते नोतिन कदापि रोचते स्म ।

महाभारतं सदैव हिन्दूनामुन्वयनाय दुर्गन्धमयया श्रुतिविधानाय सर्वस्वभ्रंश  
क्षयपंक्तिं सन्तुष्टयामास । अन्ततो पवनप्रायेण नवोत्थानप्रभृतिषु स्वातंत्र्य  
मुस्मिन्मनोवर्धयितुं परितोषानि चरमान्पयवनाया निष्पराधहिन्दुषु हरेषा-  
काविवशस्त्वैषादिदृष्टुं तानि धाकञ्च दुःसितद्वयया वृद्धत्वेन जर्जरितमात्र  
१६६६ क्रिस्ताब्देऽयं नवम्बरमास द्वारमनारिकायां ईशवासिनः नाकिनाकुल्ययन्  
पञ्चम्य गतः ।

### २३—मातरं सर्वभूतानां माताः सर्वभुक्तप्रदाः गो

मात्रो ययंयतः सन्तु मात्रो मे सन्तु पृथक्ते ।

मात्रो मे शिवं तन्तु नवा ययं वसाम्यहम् ।

मातरंजीवनम् नार्हति कोऽप्यगो ययं संश्रितोऽप्ययते । यया माता पुत्रं  
प्रापति पालयति तथैव गोर्नपि रक्षति पालयति दुग्धपटिना घनिमरणा मुग्धा  
काया धाकृतिः सुहृन्नि चरित्वा धमृन्मय दुग्धं रक्षति मातृश्रेष्ठ्यं अन्त्या  
वाया बलोर्ध्वं भुक्त्वा हस्तकटादिषु पुत्र्याते । मात्रो हि श्रेष्ठा कृत्वा  
रक्षिता, रक्षा कर्तृप्रायेणि नैकरिषा । दुग्धपचनस्य भक्षणस्य मातृ एव  
सर्वस्वम् गोत्राया वृथा हर्षार्थमि कथंति उवगाम्य कुर्वन्ति । तैरेव लोकाणि  
मिष्याते कृषोऽप्यो कनधुदस्य । एषिपकं च मय्य तैरेव संशोष्यते गृह-  
भातीत्येव च ।

ऐहलोकीककारणौकिकप्रवृत्तयस्तस्य ययम् मात्रः प्रधानमङ्गम् । गो-  
दुग्धं पचि-पत्ते पुराणि कथन्ति गरीराणि । अगुर्वेदशास्त्रेषु दुग्धेषु गोदुग्धमेव  
उत्तममुदुग्धम् सर्वलोकेषु शोद्धमप्योपापवीचं क्रियते । नव्यं घृतं जलं दद्याति ।  
गवां श्वाश्वैर्यवन्ता रोसां श्विनश्चन्ति । गवां भुञ्ज शीमय च रोगाणां परममौषधम्  
गोमूत्रंरोगोदग्नेयां श्विनयन्ति । गोमूत्रस्य पानेन स्नानेन च कुष्ठं विनीयते ।  
गोमयं हि चर्मरोगाणां मिद्धमौषधम् । शोषघ्नस्य बन्धुः संक्रामकरोगाणाम-  
संख्या कोटिशतौ नश्यन्ति । गोव्रजानां प्रतीकदीनां कृपया उपलब्धानामिषु  
रम्यैतन्यकारणमुपादौना संमिच्छतेन प्रगुणोद्भूतोऽप्येव पादसङ्गतविभि  
निमित्तेरनेकविधैर्मिश्रालैः प्रविष्टितं रमान्बादानन्दयत्प्रभवति जनां अन्तः  
कान्तेऽपि गोदानमयं पारलौकिकश्रेयसाचनं मन्वते हिन्दुधर्मानुयायिनः

यस्य मारुते पूरा दुष्मदधि घनानां भक्ष्यं प्रवहन्ति न्ये तस्य हा शीतघिरिवन्त्यं  
नद्यः प्रवहन्ति दुष्मदधिवनादयः हि दुर्लभा मज्जायते । कथमसौ वयं वसिन्तो  
भवेम? शुष्कप्राञ्चनानिनामस्माकं कथं दधिं च भायुं स्यात् । यद्यन्तं स्वतन्त्रं  
देशे साक्षात्पश्येत् यद् योष्यशस्यं रक्षा क्रियते राष्ट्रं च नमृद्धं त्वानि पुनः  
शोधयानि दिनानि कथमेव ।

गवां मयया लोफिक ध्वज लम्पसे इतीतिहासे तवात्र प्रभासाम् को न  
धीनोति सद्यःपुष्पादयस्ता राज्ञा दिधीधो मांसयया पृथगन्त तत्र शोधयितव्यस्य  
सत्यनामस्यार्थं गोसंवर्यं नम्यमानं कपूरः ।

भारतसंस्कृतिशी मासः घन्यते बह्विधं वा मानं च । वा सकोण्यपि  
साध्यते पातयति न केनच नोक्षकस्य तत्र ददाति गुणानि यमि नु पांषातः  
केस्योऽपि तर्पेव मुष्मानि धितयति कुपुषो जायेत कश्चिदपि कुमारा न भवति

## २४ — विज्ञानं वंशानिका आविष्कारादयः

विचारशक्तिः केवलं मानवस्यैव स्वयम् बह्विधं साधन्यज्ञानानन्तरं  
मानवस्य प्रकृतिः विवेकशाला जायते । प्रकृतिसंभवात् प्रायश्चित्तमनसि  
ज्ञानेन मानवमस्तिष्कं साक्षात्तकथायां भवति । यन्ने यन्ने मानवस्योपदेयता  
यमि कृति यथा साधुस्यै वर्य सा साकारा विज्ञानवर्धनी ह्येता यत् प्रायः  
ह्यधिका हि आविष्काराणां भवन्ति ।

विज्ञानप्रधानं पुनर्विधं नान्यत्र मन्दैः । यद्यप्यनुमानं विज्ञानविचारानाम्  
देशेन प्रकृतिर्जातिः पर मानवस्य प्रकृत्या नान्यथा लोकायतया म्वायया यथा-  
नया च साधुनिक विज्ञानम् आविष्कारज्ञानं च रक्षणाग्रक समग्रं विज्ञानमात्र-  
कर्मभवेत् । तथापि मानकेन स्वनाभाय साकुलिकशक्त्या वशोकरणे श्रमणात्न्य  
प्राप्तं तदपि विन्दतु न शक्यते

कतिपये आविष्काराः—

१. पत्रप्रपलाप्रपलनी—यथा पुत्रनाम्रेषणं समाचारज्ञानं ह्येव दृष्ट्या  
ज्वालायां परमस्य विविक्तिकायां साक्षात्तयां वापयतकीनां साक्षात्तयेन नान्य  
एव काले दूरकोऽपि समाचारज्ञानं नमुनं जायते । अधुना जगतः प्रतिकीर्ण  
वृत्तपत्रविनगराण्येन्द्राणि मन्थयितवानि भवन्ति ।

२. टेलिफोन-तलिकाफो—यथा दुर्घटाय विद्युत्संज्ञाद्वयेन कार्यं करोति ।  
दूरदेशीया अपि पातया परस्परं वार्तायां कर्तुं शक्नुवन्ति । दूरदेशस्थे  
व्यापारप्रसारं सुरक्षाप्रवन्धनं नृणां नज्जान ।





## संक्षिप्त धातु पाठ

इस धातु पाठ में मुख्य मुख्य धातुओं के रूप दिये हैं। प्रत्येक धातु का केवल कोष्ठ में निहित है कि वह किस भाग की है और किस पद, परस्मैपद या अस्मैपद, मध्यम, उभयपद, में उसके रूप बनने पर धातु-पाठ प्रकारादि जग में रक्ता गया है।

प्रत्यय धातु के रूप पर मात्र लड़ विधिलिङ और लट में दिये गये हैं। धातु के कोष्ठ में नीचे कमलाध्य भावशेष के प्रथम पुरुष एकवचन में रूप दिये हैं। संज्ञा का प्रयोग संक्षेप में इस प्रकार विधाय गया है:

१—कार्त्तिकारण । २—छटादिगण । ३—तुल्यकार्त्तिकारण । ४—विवादिगण । ५—स्वादिगण । ६—तुल्यदिगण । ७—उपदिगण । ८—तत्तादिगण । ९—कथादिगण । १०—कृतिदिगण । क—कथ्यदिगण

५ = परस्मैपद । ६ = आत्मनेपद । ७ = उभयपद यदि दोषगत पदा या लड़, धातु का प्रयोग लट में करना हो तो य प्रपदा या लुट धातु के पहले लगाना चाहिए। उपसर्ग के पूर्व नहीं। जैसे—नि + चरतन = गच्छतु ।

प्रत्येक प्रकार का प्रथम पुरुष के एकवचन में ही रूप दिया है जो धातु जिस भाग की है उस धातु के रूप उस भाग की धातुओं के समान चलने। तब उभयपद की धातु परस्मैपद में ही अधिक प्रचलित है उनके परस्मैपद की ही रूप दिये हैं।

अ० विरतर चलता १ प०, अस्ति, अस्तु अति, अस्मान् अतिष्यति  
धातु

अद् आता ० प०। अति अत आति अदाद् अन्वदात् (अधने अद् (जाना १ आ०) अति अतनाम् आतन अति अतिष्यति अत्यति अत् (पूजना १ प०) अति अतनु आतनु अति अतिष्यति अतिष्यति अति (कमाना, १ प०) अति अतनु आतनु अतन अतिष्यति अतिष्यति अति (आतन, १ प०) अति अतनु आतनु अतन अतिष्यति अतिष्यति







३। इत्यादि ४ धातुः शीघ्रतः शीघ्रताम्, धीमन्तः धीमेन उचिष्यतः । शीघ्रतः ।  
तद्ध शीघ्रता १० उ० । लाङ्गमिन्, उचिष्यन्, अताडयन्, शिष्यन्, ताडयिष्यन् ।  
(माकलं)

तन् ॥ कृतिवन्ता ॥ उ० ५० -- तन्नाति तन्नाम् धननाति तन्नुदात्तं तन्निष्यति ।  
 धः० तन्नुते तन्नुताम्, धननुतं तन्नाति तन्निष्यते तिङ्शत नन्त्यते

[illegible]

सुद १५ व १६ उ० सुदनिने सुदनु भगुदु सुदु १ नामयनि सुयन।  
सुन (नामना १० उ०) नामयनि नामयनु यतलयु तोलय १ नामविध्यनि  
नामयने)

[illegible][illegible]

दृष्ट (विमान कारना ४ १०) दृश्यति. दृश्यन्तु दृष्टव्यन्तु दृष्टव्यन्तु दृष्टव्यन्तु दृष्टव्यन्तु

१५०—दत्त दत्ताय, यदत्त, यदीदं, दास्यते । (लीयन्,

दिव जुष्टा सेलनामः दोष्यति शीवन् यदीव्यत् दीव्यत् रेविष्यति (दीव्यन्)





वा २५० कर्त्ता २ ५०) गाति वात् अपात् पायान्, पाय्यति पायन्  
पात् रक्षा कर्त्ता १० ३०) पात्पात-न पात्पातु अपात्पात पात्पात पात्  
विध्यति १ (पात्पाते)

पीड् कृत् द्वेना १० ३०) पीडयति पीडयन्, अपीडयत् पीडयत्, पीडयिष्यति  
(पीडयते)

पुष्ट् (पुष्ट् कर्त्ता ४ ५०) पुष्टयति पुष्टयन् अपुष्टयत् पुष्टयत्, पुष्टयति पुष्टयते  
पु पातना १० ३०) पातयति पातयन्, अपातयत् पातयत्, पातयिष्यति  
(पातयते)

प्रक्ष् प्रक्षणा ६ ५०, प्रक्षयति प्रक्षयन् अप्रक्षयत् प्रक्षयत्, प्रक्षयति प्रक्षयते  
प्रक्ष् कर्त्ता १ ५०) प्रक्षयते प्रक्षयन्, अप्रक्षयत् प्रक्षयत्, प्रक्षयिष्यति प्रक्षयते  
प्र+ङ् प्रेरणा द्वेना १० ३०) प्रेरयति प्रेरयन्, अप्रेरयत् प्रेरयत्, प्रेरयिष्यति  
(प्रेरयते)

शब्द् शोधना ६ ५०) शब्दयति शब्दयन्, अशब्दयत् शब्दयत्, शब्दयति शब्दयते  
शब्द् कर्त्ता १ ५०) शब्दयते शब्दयन्, अशब्दयत् शब्दयत्, शब्दयिष्यति शब्दयते  
(शब्दयते)

शुष् शुष्कता १ ५०) शुष्कयति शुष्कयन्, अशुष्कयत् शुष्कयत्, शुष्कयति शुष्कयते  
शु शुष्कता १ ५०) शुष्कयति शुष्कयन्, अशुष्कयत् शुष्कयत्, शुष्कयति शुष्कयते  
शुष्कता १० ३०) शुष्कयति शुष्कयन्, अशुष्कयत् शुष्कयत्, शुष्कयति शुष्कयते  
शुष्कता—शुष्कयते शुष्कयन्, अशुष्कयत् शुष्कयत्, शुष्कयति शुष्कयते

शब्द् शेषा कर्त्ता १ ३०) शब्दयति शब्दयन्, अशब्दयत् शब्दयत्, शब्दयति शब्दयते  
शब्दयते,

भा शम्भकता २ ५०) भाति भात्, अभात् भायति भायन्  
भाप् (भातना १ ५०) भायते भायन्, अभायत् भायत्, भायिष्यति भायते  
भाप् (भातना १ ५०) भायते भायन्, अभायत् भायत्, भायिष्यति भायते  
मिक्ष् मिश्रता १ ५०) मिश्रयति मिश्रयन्, अमिश्रयत् मिश्रयत्, मिश्रयति मिश्रयते  
(मिश्रयते)

मिष्ट् (मिष्टता ३ ३०) मिश्रयति मिश्रयन्, अमिश्रयत् मिश्रयत्, मिश्रयति मिश्रयते  
मिष्ट् (मिष्टता ३ ५०) मिश्रयति मिश्रयन्, अमिश्रयत् मिश्रयत्, मिश्रयति मिश्रयते  
मिष्ट् (मिष्टता ३ ५०) मिश्रयति मिश्रयन्, अमिश्रयत् मिश्रयत्, मिश्रयति मिश्रयते  
(मिश्रयते)

भूम् सान्ना ३५० धा० भूङ्कते भूङ्कताम् समुङ्कते भोजनं भोज्यते ।  
(भुज्यते)

भू होना १५०) भवति भवतु भवतु भवतु भवति । (भूयते)  
भू पातन करना १३० भगति न भवतु, भवतु भवतु, भवतु भवति भिषतं  
भू भवति भवति क० ३ उ०) भवति भवति भवति भवति भवति भवति  
(भिव्यते)

भ्रम् भ्रमना १५०) भ्रमति भ्रमतु भ्रमतु भ्रमति भ्रमति भ्रमति  
भ्रम् भ्रमना १५०) भ्रमति भ्रमतु भ्रमतु भ्रमति भ्रमति भ्रमति  
भ्रम् भ्रमना १५०) भ्रमति भ्रमतु भ्रमतु भ्रमति भ्रमति भ्रमति  
भ्रम् भ्रमना १५०) भ्रमति भ्रमतु भ्रमतु भ्रमति भ्रमति भ्रमति  
(भ्रम्यते)

भण्ड भण्डना १०३० भण्डति भण्डतु भण्डतु भण्डति भण्डति  
भण्डति । (भण्ड्यते)

भण भणना १५०) भणति भणतु भणतु भणति भणति  
भण भणना १५०) भणति भणतु भणतु भणति भणति  
भण भणना १५०) भणति भणतु भणतु भणति भणति  
भण भणना १५०) भणति भणतु भणतु भणति भणति  
भण भणना १५०) भणति भणतु भणतु भणति भणति  
(भण्यते)

भण्ड भण्डति भण्डतु भण्डतु भण्डति भण्डति  
भण्ड भण्डति भण्डतु भण्डतु भण्डति भण्डति  
(भण्ड्यते)

भा नापना ४५०) भाति भातु भातु भाति भाति  
भूम् भूङ्कना ६३०) भूङ्कति भूङ्कतु भूङ्कतु भूङ्कति भूङ्कति  
भूङ्कति—भूङ्कते भूङ्कतु भूङ्कतु भूङ्कति भूङ्कति  
(भूङ्क्यते)

भुद् भुङ्गना १५०) भुङ्गति भुङ्गतु भुङ्गतु भुङ्गति भुङ्गति  
भुप् भुङ्गना १५०) भुङ्गति भुङ्गतु भुङ्गतु भुङ्गति भुङ्गति  
(भुङ्ग्यते)

भूञ् भूञ्जना १५०) भूञ्जति भूञ्जतु भूञ्जतु भूञ्जति भूञ्जति  
भूञ्जति । (भूञ्ज्यते)





व्यप् (वृत्तित होना १ धा०) व्यपते, व्यपताम्, व्यपयत, व्यपेत्, व्यपिष्यते ।  
(व्यप्यते)

व्यब् (वेधना ४ प०) विध्यति, विध्यतु, व्यबिध्यत, विध्येत, वेत्स्यति । (विध्यते)  
व्यक् (शक्तता ५ प०) व्यक्तोति, व्यक्तोतु, व्यक्तोतु, व्यक्तुयात, व्यक्तुमि ।  
(व्यप्यते)

वाङ् (वांका करना १ धा०) वाङ्कते, वाङ्कताम्, वाङ्कयत, वाङ्केत, वाङ्किष्यते ।  
(वाङ्क्यते)

वाप् (वाप देना १ व०) वापति-ते, वापतु, वापयत, वापेत्, वाप्यति । (वाप्यते)  
वाष् (शान्त होना ४ प०) वाप्सति, वाप्सतु, वाप्साम्पत, वाप्सेत्, वाप्सिष्यति ।  
(वाप्स्यते)

वास् (शिक्षा देना २ प०) वाप्ति, वाप्तु, वापयत, वाप्तात, वाप्तिष्यति । (वाप्तिष्यते)  
विद् (सीखना १ धा०) विदते, विदताम्, विदित, विदित, विदित्यते ।  
(विदित्यते)

वी (मौला २ धा०) वीते, वीताम्, वीत, वीत, वीतिष्यते । (वीतिष्यते)  
वृक् (वीक करना १ प०) वीचति, वीचतु, वीचयत, वीचेत्, वीचिष्यति ।  
(वृच्यते)

वृष् (वृद्ध होना ४ प०) वृषति, वृषतु, वृषयत, वृषेत्, वृषिष्यति । (वृष्यते)  
वृम् (वृक्षता लपना १ धा०) वृम्पते, वृम्पताम्, वृम्पयत, वृम्पेत्, वृम्पिष्यते ।  
(वृम्प्यते)

वृष् (वृक्षता ४ प०) वृषति, वृषतु, वृषयत, वृषेत्, वृषिष्यति । (वृष्यते)  
भृ (भृष्ट होना २ प०) भृशति, भृशतु, भृशयत, भृशेत्, भृशिष्यति ।  
(भृशित्यते)

वि (आश्रय लेना १ प०) विधति-ते, विधतु, विधयत, विधेत्, विधिष्यति । (विधित्यते)  
भृ (भृष्ट होना २ प०) भृशति, भृशतु, भृशयत, भृशेत्, भृशिष्यति । (भृशित्यते)  
विष् (घातिगन करना ४ प०) विष्पति, विष्पतु, विष्पयत, विष्पेत्, विष्पिष्यति ।  
(विष्पित्यते)

वृत् (वृत्ति लेना २ प०) वृत्तिषति, वृत्तिषतु, वृत्तिषयत, वृत्तिषेत्, वृत्तिषिष्यति ।  
(वृत्तिष्यते)

मद् (मैठना १ प०) मीदति, मीदतु, मीदयत, मीदेत्, मीदिष्यति । (मीदित्यते)  
मह् (महना १ धा०) महते, महताम्, महत, महत्, महिष्यते । (महिष्यते)



सान्स् (घेयं बंधना १० उ०) सान्स्वयति, सान्त्वयन्, असान्त्वयन्, सान्त्वयेत्, सान्त्वयिष्यति । (सान्त्वयते)

सिञ्च् (सौजन्य ६ उ०) सिञ्चति, सिञ्चन्, असिञ्चन्, सिञ्चेत्, सिञ्चिष्यति । (सिञ्चते)

सिञ्च् (सौजन्य ६ उ०) सिञ्चति, सिञ्चन्, असिञ्चन्, सिञ्चेत्, सिञ्चिष्यति । (सिञ्चते)

सु (सुनता १ प०) सुनति, सुनन्, असुनन्, सुनेत्, सुनिष्यति । (सुनते)

सृ (सृजता १ प०) सृजति, सृजन्, असृजन्, सृजेत्, सृजिष्यति । (सृजते)

सृ (सृजता १ प०) सृजति, सृजन्, असृजन्, सृजेत्, सृजिष्यति । (सृजते)

सो (नष्ट होना ४ प०) स्यति, स्यत्, अस्यत्, स्येत्, स्यास्यति । (स्यते)

स्तु (स्तुति करना २ उ०) स्तौति, स्तौत्, अस्तौत्, स्तुयेत्, स्तुयिष्यति । (स्तुयते)

स्था (स्थापना १ प०) तिष्ठति, तिष्ठन्, अतिष्ठन्, तिष्ठेत्, स्थास्यति । (स्थायते)

स्ना (नहाना २ प०) स्नाति, स्नात्, अस्नात्, स्नायेत्, स्नायिष्यति । (स्नायते)

स्निह (स्नेह करना ४ प०) स्निहति, स्निहन्, अस्निहन्, स्निहेत्, स्नेहिष्यति । (स्निहते)

स्पन्द (हिलना १ प०) स्पन्दते, स्पन्दताम्, अस्पन्दत्, स्पन्देत्, स्पन्दिष्यते । (स्पन्दते)

स्पर्ध (स्पर्धा करना १ प०) स्पर्धते, स्पर्धताम्, अस्पर्धत्, स्पर्धेत्, स्पर्धिष्यते । (स्पर्धते)

स्पृण (सूना ६ प०) स्पृणति, स्पृणन्, अस्पृणन्, स्पृणेत्, स्पृष्यति । (स्पृणते)

स्पृह (चाहना १० उ०) स्पृहति, स्पृहन्, अस्पृहन्, स्पृहेत्, स्पृहिष्यति । (स्पृहते)

स्मृ (याद करना १ प०) स्मरति, स्मरन्, अस्मरन्, स्मरेत्, स्मरिष्यति । (स्मरते)

ख (गिरना १ प०) खसते, खसताम्, अखसत्, खसेत्, खसिष्यते । (खस्यते)

खव (खाद लेना १० उ०) आम्बादयति, आम्बादयन्, आम्बादयन्, आम्बादयेत्, आम्बादयिष्यति । (आम्बादयते)

खव (खाद लेना १० उ०) खसति, खसन्, अखसन्, खसेत्, खसिष्यति । (खसते)

ह (हंसना १ प०) हसति, हसन्, अहसन्, हसेत्, हसिष्यति । (हस्यते)

हा (छोड़ना ३ प०) जहाति, जहानु, पजहातु, जहायतु, हाम्यति । (होयते)  
 हृ (यत्न करना ३ प०, ब्रूहीति, ब्रूहीतु, ब्रूयहीतु, ब्रूय्यातु, ह्राम्यति । (ह्रियते)  
 हृ (ले जाना, चुराना ३ व०) १०—हरति, हरतु, ग्रहरतु, हरेत, हरिष्यति ।  
 आ०—हरते, हरताम्, ग्रहरत, हरेत, हरिष्यते । (ह्रियते)  
 हृष (प्रसन्न होना ४ प०) हृष्यति, हृष्यतु, ग्रहृष्यतु, हृष्येत्, हृषिष्यति । (हृष्यते)  
 हृष (हिनहिनाना १ आ०) हृषते, हृषताम्, ग्रहृषत, हृषेत, हृषिष्यते ।  
 (हृष्यते)  
 ज्ञा (ज्ञानस्थित होना १ आ०) ज्ञायते, ज्ञायताम्, ग्रज्ञायत, ज्ञावेत,  
 ज्ञायिष्यते । (ज्ञायते)  
 ह्वे (पुकारना १ व०) आह्वयति-ते, आह्वयतु, आह्वयेत्, आह्वयिष्यति ।  
 (आह्वयते)

## बृहद् अनुवाद-चन्द्रिका

### चक्रधर नौटिकाल 'हंस'

'अनुवाद-चन्द्रिका' के प्रकाशक लेखक श्री चक्रधर नौटिकाल 'हंस' शास्त्री जी ने प्रस्तुत : इस अध्याय की पूर्ति की है जिसका अनुभव संस्कृत-प्रेमी वर्षों से कर रहे थे। अनुवाद-चन्द्रिका में सुपाठ्य सामग्री का सम्पादन एवं संकलन निःसन्देह अतीव रोचक ढंग से किया गया था किन्तु रीढ़ छात्रों एवं उच्च कक्षाओं के छात्रों की आवश्यकता-पूर्ति तबसे नहीं हो पायी थी। उस अध्याय की पूर्ति 'बृहद् अनुवाद-चन्द्रिका' ने की है।

बृहद् अनुवाद-चन्द्रिका में व्याकरण के विद्वानों का आधार पाणिनीय सूत्रों को बनाया गया है और उपयुक्त व्याकरण, जैसे सन्धि-प्रकार-समास-क्रिया-फुटन-तद्धित-स्रोतप्रत्यय-प्रकरणों के अतिरिक्त इसमें संस्कृत के मुहावरों, श्लोकोक्तियों, पत्र-लेखन-प्रकार, भावना व्यापहारिक शब्द-संग्रह, मुक्त-परिचय, अनुच्छिन्नप्रदर्शन, संस्कृत परीक्षाओं के अनुवाद-सम्बन्धी प्रश्न-पत्र और निबन्ध-रूपमात्र का संग्रोह किया गया है। इन विषयों की अतिरिक्त इसमें लगभग १२५ शब्दों के सत्तों विभक्तियों के रूप, २०० धातुओं के २५० एकवचनों के रूप तथा ५०० धातुओं के संक्षिप्त रूप दिये गये हैं। साथ ही स्रोतसंग्रं धातुओं के उद्धरण महाकवियों की सुप्रसिद्ध रचनाओं से उद्धृत किये गये हैं। अनुवादार्थ गद्य-पद्य-संग्रह में महाकवियों की अन्य रचनाओं से उद्धरण दिये गये हैं, जिनके द्वारा पण से उद्धृत उन कवियों की कविताओं के एकत्रवदन का आनन्द भी ले सकते हैं।

युष्माक की एक और विशेषता यह है कि इसमें व्याकरण तथा अनुवाद की द्वारिभाष मुद्रण द्वारा नहीं पाई है। इससे अल्प ज्ञान वाले तथा प्रीय ज्ञान वाले दोनों ही प्रकार के छात्र लाभान्वित हो सकते हैं। एक ओर इसमें विद्यालयीन, उच्चतर माध्यमिक एवं महाविद्यालयीन त्रिवर्षीय परीक्षा के तथा ग्राज़, प्रथमा आदि कक्षाओं के छात्र लाभ उठा सकते हैं, तो दूसरी ओर एम०ए०, शास्त्री तथा आचार्य आदि कक्षाओं के छात्र भी लाभ उठा सकते हैं। अनुवाद के अभ्यासार्थ प्रश्नों के विभिन्न शिक्षा-संस्थानों-हाई स्कूल, बोर्ड, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालयों की परीक्षाओं के प्रश्न-पत्र भी सहायक दिग्गमियों के साथ दिये गये हैं।

**मोतीलाल बनारसीदास**

दिल्ली वाणिज्यी गेट नगर बंगलौर पदम